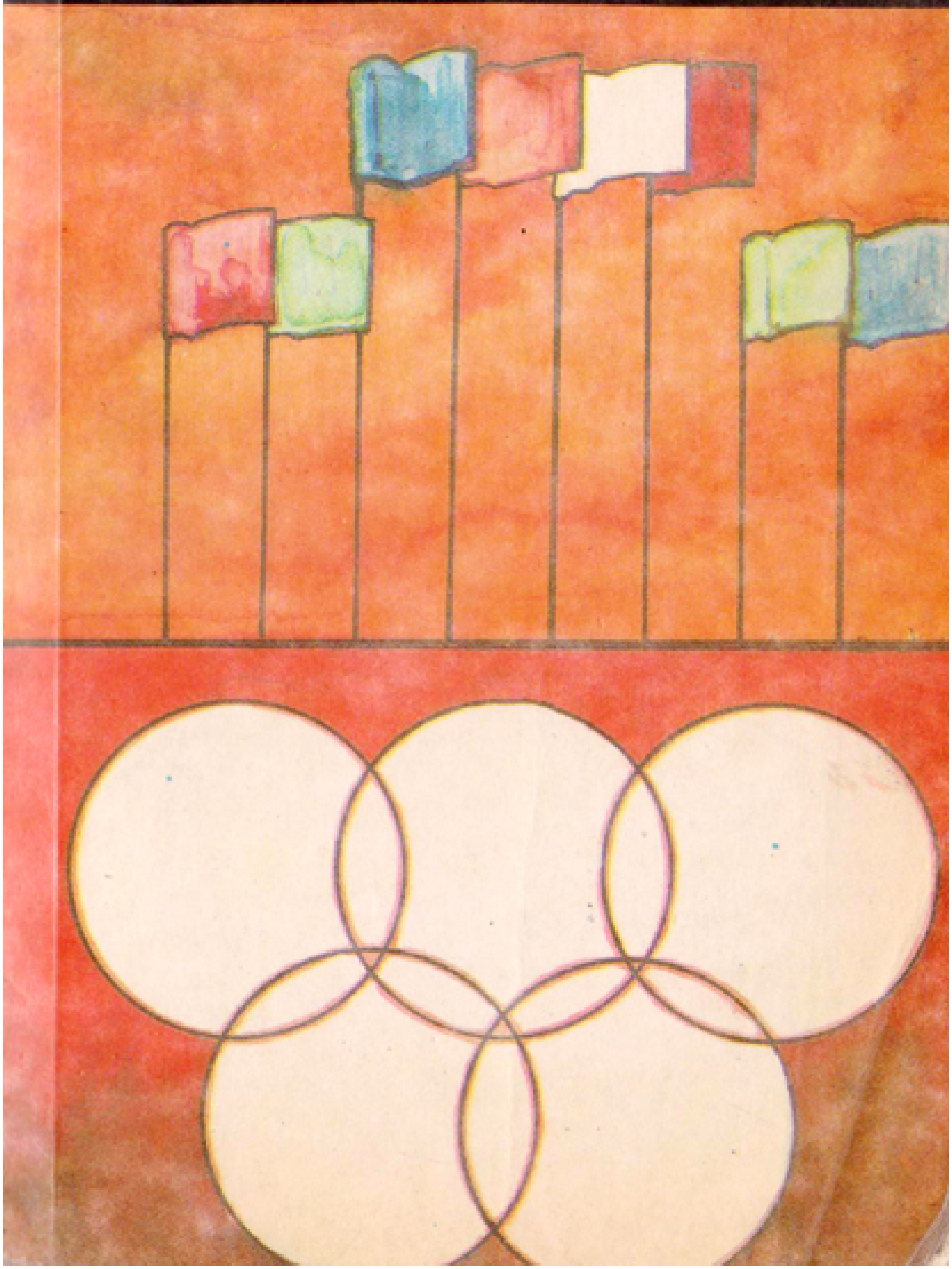
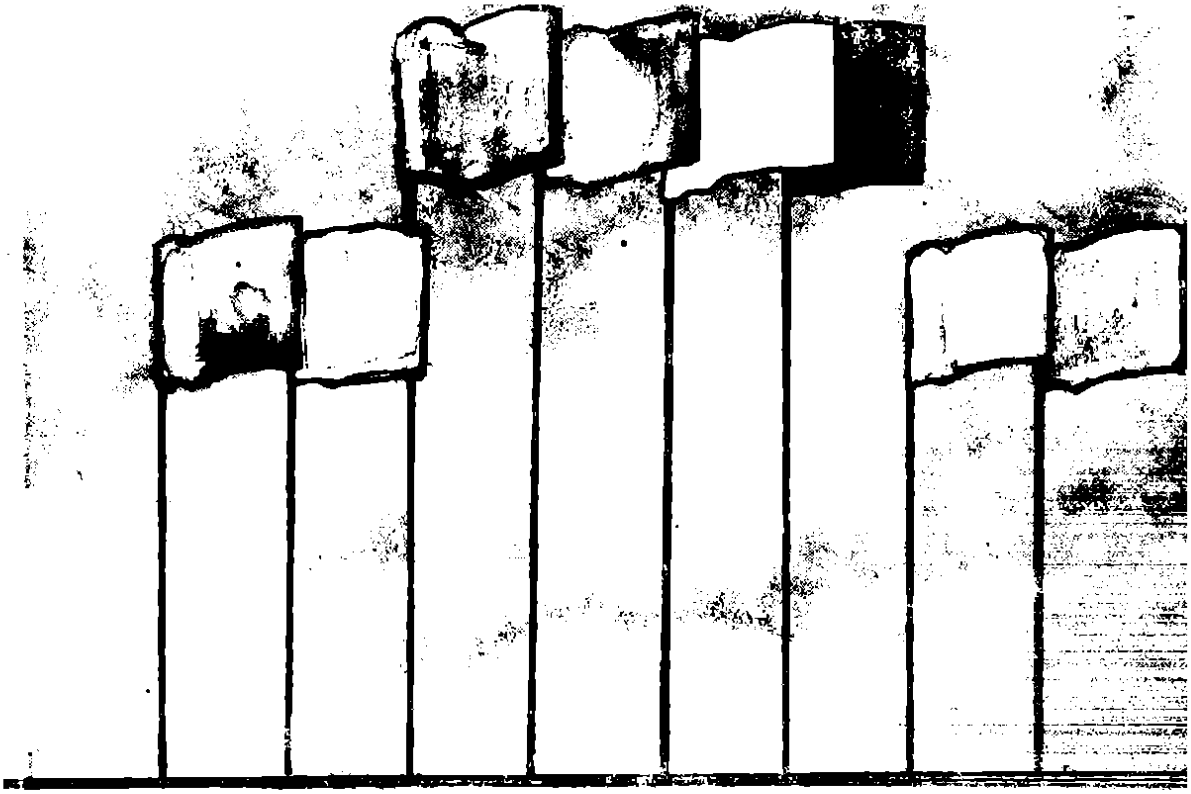
राजकमल पेपरबैक्स

हरेंद्र नागेश साहू

ओलंपिक सफरनामा





ओलंपिक सफरनामा

हरेंद्र-नागेश साहू

खेल-लेखन के क्षेत्र में साथ-साथ कार्यरत सगे भाई। हरेंद्र जी की जन्म-तिथि 28 जून, 1961 तथा नागेश जी की 9 मई, 1963 ई.। दोनों का जन्मस्थान रायपुर (म. प्र.)। दोनों की प्रारंभिक शिक्षा भी वहीं। बाद में क्रमशः पोलिटेकनीक बालाघाट तथा दुर्ग से सिविल इंजीनियरिंग में डिप्लोमा। पिछले ग्यारह साल से लगातार खेल-लेखन। कविताओं में भी रुचि।

पहली खेल-रचना 1978 में 'क्रिकेट सम्राट' नई दिल्ली में प्रकाशित। अब तक खेल संबंधी 700 से भी अधिक लेख एवं समीक्षाएँ धर्मयुग, स्पोर्ट्स वीक, स्पोर्ट्स स्टार, इंडियन क्रिकेट, खेल-हलचल, कुश्ती-सम्राट, साप्ताहिक हिंदुस्तान, चौथी दुनिया, जनसत्ता, क्रिकेट-सम्राट, इंडियन एक्सप्रेस, ट्रिब्यून, हिंदुस्तान, राजस्थान पत्रिका, स्पोर्ट्स वर्ल्ड, नई दुनिया, नवभारत एवं अमृत संदेश आदि पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित।

पत्र-पत्रिकाओं के अलावा आकाशवाणी के रायपुर केंद्र से भी समय-समय पर खेल-समीक्षाएँ प्रसारित।

हरेंद्र-नागेश साहू

ओलंपिक सफरनामा

राजकमल पेपरबैक्स

राजकमल पेपरबैक्स में
पहला संस्करण : 1989

राजकमल पेपरबैक्स : उत्कृष्ट साहित्य के जनसुलभ संस्करण

प्रकाशक : राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड,
1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग,
नई दिल्ली-110 002

टाइपसैटिंग : जोतासा एंटरप्राइजेज़,
101-ए, सूर्यकिरण,
कस्तूरबा गांधी मार्ग,
नई दिल्ली-110 001

मुद्रक : मेहरा ऑफसेट प्रेस,
नई दिल्ली-110 002

आवरणचित्र : प्रमोद गणपत्ये

मूल्य : रु. [redacted].00

OLYMPIC SAFARNAMA
by Harendra-Nagesh Sahu

ISBN : 81-7178-057-1

दो शब्द

विश्वबंधुत्व एवं एकता के आदर्शों को प्रस्तुत करनेवाला ओलंपिक खेल आज विश्व का सबसे बड़ा खेल आयोजन है। यद्यपि आज से लगभग 3200 वर्ष पूर्व जब इस आयोजन का प्रादुर्भाव हुआ था तब इन आदर्शों की महत्ता कोई जान नहीं पाया था, परंतु ज्यों-ज्यों इसकी परंपरा ने आगे कदम बढ़ाया त्यों-त्यों इसकी महत्ता स्पष्ट होने लगी और एक समय यह ग्रीस की पवित्र परंपराओं का एक अभिन्न अंग भी बन गया। लेकिन धीरे-धीरे यह भी काल के गाल में समाता गया और 394 ए.डी. में रोमन शासक थियोडीस ने इन खेलों के आयोजन पर पाबंदी लगाकर इनके आदर्शों का गला दबा दिया। परंतु इतिहास सदैव अपने को दोहराता है और यही कुछ ओलंपिक खेलों के साथ भी हुआ। एक फ्रांसिसी व्यक्तित्व बैरन पियरे डि कुबरटिन ने इन खेलों को पुनर्जीवित करने का बीड़ा उठाया और 1896 एथेंस में आधुनिक ओलंपिक खेलों का सफल आयोजन कर उन्हें नया जीवन प्रदान किया।

कुबरटिन के प्रयासों से आरंभ ये खेल पुनः ओलंपिक की प्राचीन परंपराओं के अनुसार ही, चार वर्ष के अंतराल से आयोजित होने लगे हैं, परंतु इनका आयोजन स्थायी रूप से किसी एक स्थान के बदले विश्व के अनेक नगरों में किया जा रहा है। ओलंपिक खेलों के पितामह कुबरटिन का भी यही सपना था कि ये खेल विश्व के हर हिस्से में आयोजित होकर विश्वबंधुत्व एवं मैत्री-भावना का प्रसार करें। आज उनका यह सपना सफल होते दिख रहा है। परंतु हर सफल कार्य में कहीं-न-कहीं बाधा उत्पन्न होती ही है। अनेक राष्ट्र आज इसका राजनीतिक प्रचार के रूप में इस्तेमाल करने लगे हैं जो इन खेलों के बहिष्कार के रूप में सामने आता है। यही बुराई आज अंतर्राष्ट्रीय ओलंपिक समिति के सामने एक गंभीर समस्या के रूप में सिर उठाए खड़ी है। यदि इसका प्रभाव बढ़ता ही गया तो वह दिन दूर नहीं, जब इन आयोजनों का अस्तित्व पुनः खतरे में पड़ जाएगा। इसके अलावा इस आयोजन का बढ़ता व्यवसायीकरण भी इसमें आग का काम कर रहा है। व्यवसायीकरण की एक सीमा होनी चाहिए; तभी इसके आदर्शों की रक्षा हो सकती है, अन्यथा नहीं।

आधुनिक ओलंपिक खेलों के आँकड़ों पर यदि हम निगाह डालें तो पाते हैं कि द्वितीय विश्वयुद्ध तक इन खेलों में अमरीका, फ्रांस, स्वीडन, ग्रेट ब्रिटेन का वर्चस्व रहा, लेकिन 1952 में सोवियत संघ के ओलंपिक प्रवेश के साथ ही इसके समीकरण बदलने लगे और श्रेष्ठता की होड़ केवल अमरीका एवं सोवियत संघ के बीच ही सिमटकर रह गई। सोवियत संघ के प्रवेश के बाद आयोजित 10 आयोजनों में अमरीका 4 तथा सोवियत संघ 6 बार चोटी पर रहा। एक-एक अवसर पर दोनों ही देशों ने इन खेलों का बहिष्कार किया। वैसे अब तक संपन्न इन आयोजनों में अमरीका 746 स्वर्ण, 560 रजत एवं 475 कांस्य पदक (कुल 1781 पदक) लेकर सबसे आगे है, जबकि सोवियत संघ 395 स्वर्ण, 323 रजत एवं 299 कांस्य (कुल 1017 पदक) के साथ दूसरे स्थान पर है। प. जर्मनी 169 स्वर्ण सहित 647 पदक तथा फ्रांस 152 स्वर्ण सहित 617 पदक लेकर क्रमशः तीसरे एवं चौथे स्थान पर हैं।

आधुनिक ओलंपिक आयोजनों में अब तक 170 देश शिरकत कर चुके हैं, जिनमें आस्ट्रेलिया, फ्रांस, ग्रीस, ग्रेट ब्रिटेन तथा स्विट्जरलैंड ही ऐसे देश हैं जिन्होंने अब तक संपन्न सभी 22 आयोजनों में हिस्सा लिया है, जबकि अमरीका, आस्ट्रिया, डेनमार्क एवं स्वीडन ने एक-एक बार इन खेलों में हिस्सा नहीं लिया।

इस पुस्तक में प्राचीन से लेकर आधुनिक ओलंपिक खेलों का विस्तृत वर्णन किया गया है, जिसमें एक अलग अध्याय ओलंपिक खेलों में भारतीय प्रदर्शन पर लिखा गया है। इसके अलावा शीतकालीन ओलंपिक, जो एक अलग ही विषय है और इस पर एक अच्छी-खासी किताब भी लिखी जा सकती है, पर भी एक अध्याय बतौर जानकारी शामिल किया गया है।

पूरी पुस्तक में ओलंपिक के प्रसिद्ध खिलाड़ियों के जीवन पर अधिकाधिक प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है, ताकि पाठक उनके खेल-जीवन के अलावा व्यक्तिगत जीवन के बारे में भी जानकारी पा सकें। जैसे कुछ खिलाड़ी जो अपने बचपन में अपंग रहे, बावजूद इसके उन्होंने ओलंपिक में हिस्सा लिया और स्वर्ण पदक जीता। इसी तरह कई खिलाड़ियों ने ओलंपिक के पश्चात फिल्मों में अभिनय भी किया, तो कइयों ने खेल से राजनीति के क्षेत्र में छलाँग लगाई। इसके अलावा खिलाड़ियों के पारिवारिक रिश्तों पर भी प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।

आज हमारी राष्ट्रभाषा में इस विषय पर विस्तृत जानकारी देनेवाली कोई भी पुस्तक उपलब्ध नहीं है। इसी शून्य ने हमें इस विषय पर लेखन के लिए प्रेरित किया। यद्यपि पुस्तक-लेखन का यह हमारा पहला ही प्रयास है, फिर भी हमने अपने अर्जित अनुभवों, मित्रों के परामर्श एवं सहयोग से अपने प्रयास में कोई कसर नहीं छोड़ी है। इस संदर्भ में हम अपने छोटे भाई हरीश हर्ष के सहयोग को नहीं भुला सकते, जिसने हर पल पुस्तक के

लेखन तथा रूपरेखा तैयार करने में हमारी मदद की । हम खेल लेखक श्री अरुण अर्णव के प्रति आभारी हैं, जिनके रचनात्मक सुझावों से इस पुस्तक को निखारने मे मदद मिली । हम अपने परिजनों के भी आभारी हैं, जिन्होंने पुस्तक लेखन के दौरान हमें सदैव प्रोत्साहित किया । हम प्रकाशक को भी धन्यवाद देते हैं, जिन्होंने पुस्तक प्रकाशन का हमारा सुझाव सहर्ष स्वीकार किया ।

अंत में एक निवेदन अपने प्रबुद्ध पाठकों से भी है । सारे प्रयासों के बावजूद इस पुस्तक में कुछ त्रुटियों का रह जाना स्वाभाविक है । यदि उन्हें ऐसा कुछ लगे तो भले ही प्रकाशक के मार्फत, हमें पत्र अवश्य लिखें, ताकि भविष्य में उन त्रुटियों और कमियों को दूर किया जा सके ।

रायपुर — हरेंद्र-नागेश साहू
1 जनवरी, 1989

विषय-सूची

प्राचीन ओलंपिक

प्राचीन काल से ही मनुष्य के जीवन में खेलों का विशेष महत्त्व रहा है। इसका प्रमाण यूनान में फ्रांसिसी एवं जर्मन पुरातत्ववेत्ताओं द्वारा की गई खुदाई से प्राप्त हजारों वर्ष पुराने रेखाचित्र हैं, जिनमें इसका स्पष्ट उल्लेख मिलता है। समझा जाता है कि उस समय भी खेलों की महत्ता केवल शारीरिक क्षमता के प्रदर्शन तक सीमित नहीं थी वरन् सैनिक युद्ध में दक्षता प्राप्त करना भी एक उद्देश्य था। इस विशेषता के कारण ही ओलंपिक खेलों की परंपरा आरंभ हुई।

ओलंपिक खेल कब एवं कैसे प्रारंभ हुए, इसका कोई ठोस प्रमाण नहीं है। परंतु प्राप्त अभिलेखों के अनुसार लगभग 3500 वर्ष पूर्व पेलोप्स ने, जिन्हें यूनान (ग्रीस) में 'उपज का देवता' माना जाता था, कुछ खेल कराए थे। एक और तथ्य के अनुसार इन खेलों की शुरुआत 1253 ईसा पूर्व में 'अथाह शक्ति के देवता' हरक्यूलिस ने कराई थी, जो प्राचीन यूनान के उत्तर-पश्चिम में स्थित एलिस नगर-राज्य की मनोरम और पवित्र घाटी 'ओलंपिया' में संपन्न हुए थे। इसे ही लोगों ने ओलंपिक समारोह कहा। फिर हर चार साल के अंतराल से ये खेल आयोजित होने लगे।

अंतराल चार साल क्यों?

किंवदंती के अनुसार प्राचीन काल में यूनान में सम्राट एवं सम्राज्ञी का चुनाव उनकी शारीरिक शक्तियों के आधार पर होता था। सम्राज्ञी के लिए तो सिर्फ पवित्र दौड़ या कभी-कभी कुश्ती के मुकाबले होते थे, जिसमें विजेता उम्र-भर के लिए सम्राज्ञी बन जाती थी, परंतु पुरुषों के लिए ऐसा नहीं था। पुरुषों को सम्राट बनने के लिए दौड़ का विजेता होना तो अनिवार्य था ही, साथ ही हर पचासवें चंद्रमास में उन्हें अपने ताज को बनाए रखने के लिए पुनः शक्ति-प्रदर्शन कर विजेता होना भी जरूरी था। यदि इस दौड़ में तत्कालीन सम्राट हार जाता था, तो एक विशाल देव-प्रतिमा के सामने उसकी बलि चढ़ा दी जाती थी।

पुरुषों के लिए चार वर्ष या 50 चंद्रमास समय के निर्धारण के पीछे यूनानियों का

विश्वास था कि सिर्फ इस अवधि (यानी चार वर्ष) तक ही पुरुष अपनी शारीरिक क्षमता की चरमसीमा पर होता है। उनका विश्वास इस तथ्य से सही सिद्ध होता है कि कोई भी पुरुष दुबारा सम्राट नहीं बन सका था।

उत्पत्ति एथलीट शब्द की

खेलों की इन परंपराओं को एलिस के प्रथम सम्राट इथेलियस ने आगे बढ़ाया। उन्हीं के नाम पर प्रतियोगियों को 'एथलीट्स' एवं प्रतियोगिता को 'एथला' नाम दिया गया। उन दिनों इस आयोजन में भाग लेने के लिए एलिस एवं आसपास के राजाओं के बीच पवित्र युद्धविराम घोषित होता था। इस बीच किसी भी किस्म के हथियार उठाने पर सख्त पाबंदी थी। सभी हथियार ओलंपिया जाने के पूर्व एलिस में जमा करने होते थे। इस दौरान मृत्युदंड भी नहीं दिया जाता था। युद्धविराम की शर्तें काँसे के एक चक्र में लिखी जाती थीं, जो पाँच समान आकारवाले छल्लों के जोड़ से बना होता था। बाद में इसे ही आधुनिक ओलंपिक खेलों में प्रतीक-चिन्ह के रूप में शामिल कर लिया गया।

मगर ओलंपिक-आयोजन से जुड़ी उक्त किंवदंतियों के बावजूद अधिकांश इतिहासकार 776 ईसा पूर्व में आयोजित खेल को पहला ओलंपिक मानते हैं। यहीं से ओलंपिक खेलों की गिनती भी शुरू होती है।

प्राचीन ओलंपिक खेल

शुरू में एक निश्चित दूरी की दौड़ जीतनेवाले धावकों को ही ओलंपिक-विजेता कहा जाता था। यह निश्चित दूरी 'स्टेड' कहलाती थी। इसी से स्टेडियम शब्द की उत्पत्ति हुई। यह दूरी लगभग 190 मीटर (210 गज) थी। कहा जाता है कि यह दूरी हरक्यूलिस ने एक साँस में पैदल चलकर पूरी की थी। बाद में 724 ईसा पूर्व में दो स्टेड (डियाउलस) की दौड़ और फिर 720 ईसा पूर्व में 24 स्टेड (डोलीकस) की दौड़ होने लगी। धीरे-धीरे इसकी संख्या बढ़ती गई। ईसा पूर्व 708 में कुश्ती तथा पेंटाथलन (दौड़, कूद, फेंक एवं कुश्ती की सम्मिलित प्रतियोगिता), ईसा पूर्व 688 में मुक्केबाजी और ईसा पूर्व 680 में चार घोड़ों की रथ-दौड़ प्रतियोगिताओं का समावेश इस खेल में किया गया। 648 ईसा पूर्व में एक क्रूरतम खेल पैंक्रेटियोन, जो कुश्ती और मुक्केबाजी का सम्मिश्रण था और जिसमें प्रतिद्वंद्वी को जान से मारने तक की छूट थी, को भी इसमें शामिल किया गया। इसके बाद समय-समय पर कुछ और खेल भी, जैसे किशोरों एवं खच्चरों की दौड़, इसमें शामिल कर लिए गए।

आरंभकाल में ये प्रतियोगिताएँ धार्मिक मेले के रूप में आयोजित होती थीं, जिसमें बलि-प्रथा का उल्लेख मिलता है। प्रतियोगिता के आरंभ में ज्योति जलाई जाती थी, जो

समाप्ति तक लगातार जलती थी। यह परंपरा आज भी कायम है। उस युग में यह प्रतियोगिता मात्र एक दिन में संपन्न हो जाती थी, लेकिन जैसे-जैसे अन्य खेलों का इसमें समावेश होता गया, प्रतियोगिता के दिन बढ़ने लगे। काफी अर्से तक यह प्रतियोगिता पाँच दिनों में संपन्न होती रही।

संभवतः जुलाई माह में संपन्न होनेवाली इस पाँच दिवसीय प्रतियोगिता के पहले दिन प्रतियोगिता में शामिल होने आए सभी प्रतियोगियों, निरीक्षकों एवं अधिकारियों को यूनानी देवता 'जीसस' की चालीस फुट ऊँची प्रतिमा के सामने शपथ लेनी पड़ती थी कि वे किसी भी तरह की धोखाधड़ी नहीं करेंगे, न दुर्भावना रखेंगे और खेलों की पवित्रता बनाए रखेंगे। दूसरे दिन का आरंभ रथ-दौड़ और समापन पेंटाथलन से होता था। तीसरे दिन दौड़ की विभिन्न स्पर्धाएँ होती थीं, जबकि मुक्केबाजी, कुश्ती एवं पैंक्रेटियोन के मुकाबले चौथे दिन होते थे। अंतिम दिन पुरस्कार-वितरण का होता था, जिसमें विजयी प्रतियोगियों को पुरस्कृत किया जाता था। ये पुरस्कार आज की तरह सोने, चाँदी या काँसे के तराशे हुए मैडल नहीं, बल्कि जैतून की पत्तियों का ताज, कई मूल्यवान वस्तुएँ, विवाह-प्रस्ताव के रूप में होते थे। इसके अलावा विजेताओं का उम्र-भर सम्मान होता था। संगीतज्ञ उनकी स्तुति में गीत रचते थे, जबकि मूर्तिकार उनकी प्रतिमा तराशते थे। लेकिन यह सम्मान भी हर विजेता को नहीं मिलता था। कम से कम तीन बार विजयी खिलाड़ी को ही यह गौरव प्राप्त था। इसके विपरीत पराजितों को काफी अपमानित किया जाता था, यहाँ तक कि मित्र भी उनसे रिश्ता तोड़ लेते थे। यही वजह थी कि प्रत्येक प्रतियोगिता प्रतिष्ठा की लड़ाई समझी जाती थी।

उन दिनों में भी प्रतियोगियों को दस माह पूर्व से ही कड़ी निगरानी में प्रशिक्षण दिया जाता था। आरंभ में प्रतियोगी मूलतः ग्रीसवासी होते थे। किसी भी प्रतियोगी को प्रतियोगिता से नाम वापस लेने या बीच में ही स्पर्धा छोड़ देने पर जुर्माना भरना पड़ता था।

महिलाओं को प्रतियोगिता में भाग लेना तो दूर, देखने तक की अनुमति नहीं थी। इस नियम को तोड़ने की सजा थी—मौत। वह भी उन्हें पहाड़ों की ढलान से ढकेलकर। सिर्फ देवी देमित्रा मंदिर की पुजारिन को खेल देखने की इजाजत थी। इस संदर्भ में एक महिला रोड्स की फेरीनीस् का उल्लेख मिलता है जिसने अपने पुत्र, मुक्केबाज पिस्सीडोरस को चैंपियन बनते देखने की इच्छा को न रोक पाने के कारण यह नियम तोड़ दिया था।

फेरीनीस् ने अपने पति की मृत्यु के बाद अपने पुत्र पिस्सीडोरस को प्रशिक्षित किया। जब पिस्सीडोरस चैंपियन बनने के लिए अंतिम मुकाबला कर रहा था, तब उसकी माँ एक बहुरूपिए प्रशिक्षक के रूप में स्टेडियम में मौजूद थी। लेकिन उसकी प्रसन्नता की

उस समय कोई सीमा नहीं रही जब पिस्सी चैंपियन घोषित हुआ। खुशी से पागल वह अपने पुत्र को गले लगाने के लिए दौड़ी, परंतु दौड़ते हुए उसकी चोली नीचे खिसक गई और सभी ने उसे पहचान लिया। उसके लिए मौत की सजा निश्चित थी, परंतु उसके पति, पिता डियगोरस तथा भाई, जो भूतपूर्व ओलंपिक चैंपियन रहे थे, उन सभी को ध्यान में रखकर उसे माफ कर दिया गया।

चैंपियन भी एक से बढ़कर एक

प्राचीन ओलंपिक ने भी एक से बढ़कर एक विजेता पैदा किए थे। यूँ तो प्राचीन ओलंपिक का पहला विजेता खिलाड़ी होने का सम्मान एलिस प्रदेश के कोरोबस को जाता है, लेकिन उसके बाद कई और खिलाड़ियों ने अपने जानदार प्रदर्शन से इन आयोजनों को अमर बना दिया। इनमें रोड्स प्रदेश के नियोनीडस ने जहाँ लगातार 164 से 152 ईसा पूर्व ओलंपिक खेलों में स्टेड, डायउलस एवं डोलीकस का खिताब जीता था; वहीं जैंटो का हर्मोजिनस 215वें व 217वें ओलंपिक की सभी दौड़ प्रतियोगिताएँ तथा 216वें ओलंपिक में डायउलस एवं होप्लाइट (युद्धबंदी सैनिकों की दौड़) प्रतियोगिताएँ जीतने में सफल रहा। इतना ही नहीं, केटामोस के पोलाईट्स ने 69 ए.डी. में एक ही दिन में स्टेड, डायउलस एवं डोलीकस की स्पर्धाएँ जीतकर दर्शकों को आश्चर्यचकित कर दिया था।

शक्ति-परीक्षण के मुकाबलों में थामोस के थियाजिनेस 78वें ओलंपिक में कुश्ती, मुक्केबाजी एवं पैंक्रेटियोन का चैंपियन बना था। इससे पहले वह 75वें आयोजन में मुक्केबाजी, 76वें में पैंक्रेटियोन एवं 77वें में कुश्ती-प्रतियोगिताएँ जीतने में भी सफल रहा था। कैरिया का मुक्केबाज मेलागोमस बिना मुक्का चलाए ही विजेता बना था। उसका कहना था कि मारना, घायल करना या हो जाना, कोई बहादुरी का काम नहीं है। इसी से प्रभावित होकर उसके प्रतिद्वंद्वी ने बिना लड़े ही हार स्वीकार ली थी। इतना ही नहीं, प्रसिद्ध दार्शनिक प्लूटो भी ओलंपिक चैंपियन था। वह कुश्ती के मुकाबले में विजेता रहा था। प्रसिद्ध गणितज्ञ एवं दार्शनिक पाइथागोरस भी ओलंपिक चैंपियन (मुक्केबाजी) था।

लेकिन धीरे-धीरे इन खेलों की गरिमा कम होने लगी। 431-404 ईसा पूर्व में एथेनियन एवं स्पातीयक के बीच लड़ाई में एलिस के भाग लेने से ओलंपिया की तटस्थता संदेहास्पद हो गई। फिर रोमन शासकों की राजनीति ने भी इस खेल के दामन पर दाग लगाया। उन्होंने खेलस्थल को रंगभूमि में परिवर्तित कर दिया, जहाँ गुलाम अपनी जिंदगी की खातिर जंगली पशुओं का मुकाबला करने लगे। घूस देकर विजेता होने के भी कई प्रमाण मिले। इनमें रोमन सम्राट नीरो का नाम भी शामिल है। वह 65 ए.डी. में जजों को रिश्वत देकर रथ-दौड़ का विजेता बना था।

अंतिम प्रहार इन खेलों पर रूढ़िवादी ईसाइयों ने किया, जब उनके शासक थियोडोसिस ने 393 ए.डी. के पश्चात इन खेलों के आयोजन पर पूरी तरह से पाबंदी लगा दी। इस तरह 1168 वर्षों के 293 आयोजनों की यह कड़ी टूट गई। इसके बाद बर्बर आरमेनियनों ने ओलंपिया की सुंदरता को अपना निशाना बनाया। रही-सही कसर प्रकृति ने पूरी कर दी। भूकंप के दो झटकों से ओलंपिया में बहनेवाली दोनों नदियाँ अल्फास एवं क्लेडस का रास्ता बदल गया और पूरा इलाका रेत एवं कचरे की 25 फीट मोटी परत से ढक गया।

फिर अगले 1500 वर्षों तक ओलंपिक खेल नहीं हुए। दूसरे शब्दों में कहें तो ओलंपिक मशाल ही नहीं जली।

आधुनिक ओलंपिक का जन्म

प्रकृति एवं क्रूर मनुष्यों के हाथों ओलंपिया की गरिमा एवं पवित्रता भले ही नष्ट हो चुकी थी, किंतु यूनानी कवि पिंडार की रचनाओं से आनेवाली हर पीढ़ी इन खेलों की गौरव-गाथा से परिचित होती रही। पिंडार की पंक्तियों से ही प्रेरित होकर अनेक पुरातत्ववेत्ता भूगर्भ में दबे ओलंपिया की खोज में लग गए। अंततः 1760 ई. में एक अंग्रेज रिचर्ड शैंडलर की खोज रंग लाई और उन्होंने ओलंपिया को खोज ही निकाला। परंतु स्वतंत्रता के लिए यूनानियों की तुर्की के खिलाफ लड़ाई से आगे की खुदाई में बाधा आई। आखिर अपनी आजादी के बाद 1827 में यूनानी सरकार ने एक फ्रांसीसी दल को आगे खुदाई की इजाजत दी। इस दल ने जीसस मंदिर के आसपास खुदाई की और प्राप्त अवशेषों को अपने साथ फ्रांस ले गया। इस पर यूनानियों ने ऐतिहासिक वस्तुओं के बाहर ले जाने पर पाबंदी लगा दी, जिससे खुदाई का काम फिर से ठप्प हो गया।

बाद में एक महत्त्वपूर्ण प्रयास एक पुरातत्ववेत्ता कुर्टियस ने किया। 1874 में उन्होंने अपने और यूनानी सरकार के बीच हुए समझौते के तहत सुनियोजित ढंग से खुदाई का बीड़ा उठाया और उनकी खुदाई से लगभग डेढ़ हजार साल पहले दबे ओलंपिया के खेल-स्थल, इमारतें, भव्य मंदिर, मूर्तियाँ, शिलालेख, बर्तन आदि मिलने लगे। फलस्वरूप इसके साथ जुड़ा ओलंपिक का गौरवमय इतिहास लोगों को पुनः आकर्षित करने लगा। इन्हीं लोगों में से एक यूनानी करोड़पति इवांगलियास जाप्पास भी था।

सन 1856 में जाप्पास ने सारे खर्चों का जिम्मा खुद उठाने की पेशकश के साथ ही अपने सम्राट को इन खेलों को पुनः आरंभ करने के लिए पत्र लिखा, परंतु तत्कालीन यूनानी विदेशमंत्री ने यह कहकर उसकी माँग रद्द कर दी कि यह समय कुश्ती या मुक्केबाजी को प्रोत्साहित करने का नहीं, बल्कि औद्योगिकीकरण एवं समाज की प्रगति का है। इस निराशाजनक उत्तर के बावजूद उसने अपने प्रयास से नवंबर, 1859 में आठ खेल करवाए, जो स्टेडियम में न होकर एथेंस की सड़कों पर संपन्न हुए। आयोजन की दृष्टि से यह प्रयास असफल जरूर रहा, परंतु उसका यह प्रयास ओलंपिक खेलों के पुनर्जन्म की एक महत्त्वपूर्ण कड़ी अवश्य बन गई। फिर 1870 में भी खेलों की अगली कड़ी संपन्न हुई, परंतु ओलंपिक खेलों को सही मायने में आयोजित करनेवाला एक फ्रांसिसी बैरन पियरे डि कुबरटिन था।

ओलंपिक-पितामह कुबरटिन

पेरिस के एक कुलीन परिवार में जनवरी, 1863 को पैदा हुआ कुबरटिन जब आठ वर्ष का था, तभी उसका देश फ्रांस पर्शियन युद्ध में जर्मनी से बुरी तरह पराजित हुआ था। देश की यह पराजय हमेशा उसके मन को कचोटती रही। आखिर उसने कुछ ऐसा करने की ठानी, जिससे उसके देश की प्रतिष्ठा फिर से स्थापित हो सके। परंतु इसके लिए उसे राजनीति एवं सेना का सहारा लेना कतई पसंद नहीं था।

इसी दरम्यान उसने एक पत्रिका में इंग्लैंड रग्बी स्कूल के प्रधानाध्यापक डॉ. थामस आर्नल्ड का अनुभव पढ़ा। उनके अनुभव से वह इतना प्रभावित हुआ कि उसने तुरंत ही डॉ. थामस से मिलने की योजना बना डाली। यहाँ आकर उसने खेलों के जरिए शारीरिक शिक्षा एवं विकास के महत्त्व को समझा। उसने पाया कि उसके देशवासी खेलों के महत्त्व से कितने अनजान हैं। उसने यह भी महसूस किया कि खेलों के जरिए न केवल शारीरिक शिक्षा प्राप्त की जा सकती है, अपितु इससे विश्व-भर में युवाओं के बीच मित्रता, भाईचारा एवं आपसी समझ भी स्थापित की जा सकती है। इस निष्कर्ष के आधार पर उसने वर्ष 1887 में एक सम्मेलन के दौरान खेलों को शिक्षा से जोड़ने की बात कही। 1890 में उसने इंग्लैंड के शोर्पशायर स्थित डॉ. डब्ल्यू. पी. ब्रूक के मचवेनलॉक खेलगाँव का दौरा किया और यहीं उसके मन में ओलंपिक खेलों के पुनर्जन्म की बात उठी। वैसे वह स्वयं भी मुक्केबाजी, तलवारबाजी एवं नौकायन का अच्छा खिलाड़ी था।

किंतु आरंभ में उसके ही देशवासियों ने उसे अंग्रेजी विचारधारा का हिमायती बताते हुए उसके विचारों का विरोध किया। तब उसने इंग्लैंड, अमरीका का दौरा किया, परंतु परिणाम शून्य ही रहा। फिर भी उसने हार नहीं मानी। जून, 1894 सोरवान (पेरिस) में

शौकिया स्तर पर आयोजित एक अंतर्राष्ट्रीय कांग्रस सम्मेलन में उसने बड़े ही चातुर्य से अपनी बात पेश की। 12 देशों के 29 अधिकारियों को, जिनमें बेल्जियम के सम्राट तथा वेल्स, यूनान एवं स्वीडन के राजकुमार भी शामिल थे, उसने बारी-बारी से प्राचीन ओलंपिक के गीतों को मधुर संगीत के साथ सुनवाया, जिसकी सभी ने तारीफ की और उसके विचारों से पूरी सहमति जताई।

खेल समिति का गठन

आयोजन की संभावनाओं को हरी झंडी मिलते ही तीन सदस्यों की एक समिति गठित की गई, जिसमें कुबरटिन के अलावा ग्रेट ब्रिटेन एवं अमरीका के भी सदस्य थे। उद्देश्य था कि सन 1900 में पहले आयोजन का पूर्ण ब्यौरा तैयार किया जाए। परंतु वह समिति इतनी अधिक उत्साहित थी कि उसने 1900 के बदले 1896 में ही पहले खेल कराने का निर्णय लिया। पहला खेल आयोजित करने का दायित्व ओलंपिया को सौंपा गया, लेकिन कम समय और भारी निर्माण-कार्य को देखते हुए उन्होंने अपनी असमर्थता दिखलाई। इस पर यूनान की राजधानी एथेंस को इस आयोजन का भार सौंपा गया। लेकिन एथेंस ने भी आर्थिक परेशानियों की वजह से अपनी असमर्थता व्यक्त की। तब एक ग्रीस व्यापारी जार्ज एबरॉफ ने 9.20 लाख ड्रेचमस (ग्रीस की मुद्रा) सोने के रूप में प्राचीन पैनाथोनिक स्टेडियम के पुनर्निर्माण के लिए दिए। वास्तुकार एनास्तिसॉस ने खूबसूरत डाक टिकट जारी कर 4 लाख ड्रेचमस तथा अन्य राजसी परिवारों ने भी आर्थिक सहयोग देकर इस पहले आयोजन को बल प्रदान किया। इस प्रकार एथेंस में आधुनिक ओलंपिक खेलों का बीज बोया गया।

कुबरटिन जबर्दस्त क्षमतावाला व्यक्ति था। आगे के आयोजन में उसे भारी विरोध का सामना करना पड़ा। बावजूद इसके, बिना विचलित हुए वह ओलंपिक-आंदोलन का अगुवा बना रहा। खिलाड़ियों के शौकिया स्तर का भी वह पक्का हिमायती था। 2 सितंबर, 1937 की सुबह भ्रमण के दौरान उसे दिल का दौरा पड़ा और वह चल बसा। उसे अंतर्राष्ट्रीय ओलंपिक कमेटी के मुख्यालय लुसाने (स्विट्जरलैंड) में दफनाया गया, किंतु उसके दिल को निकालकर ओलंपिया में बनी एक समाधि में रखा गया। खेलों के लिए समर्पित इस व्यक्ति के प्रति यह सच्ची श्रद्धांजलि थी।

इस प्रकार 1896 एथेंस-आयोजन के साथ ही आधुनिक ओलंपिक का जन्म हुआ, जिसके लिए ओलंपिक खेलों के पितामह बैरन पियरे डि कुबरटिन को सदैव याद किया जाएगा। उसकी लगन, मेहनत एवं प्रयास ने ही आनेवाली पीढ़ी में खेलों के प्रति एक नया उत्साह जाग्रत किया।

पहला ओलंपिक : 1896–एथेंस

आधुनिक ओलंपिक खेलों के आयोजन का पहला सफर 7 अप्रैल से 15 अप्रैल, 1896 तक ग्रीस की राजधानी एथेंस में तय हुआ। हालाँकि इस आयोजन में भाग लेने के लिए 34 देशों ने उत्साह दिखाया था, परंतु अंतिम समय में प्रतियोगी देशों की संख्या मात्र 13 ही रही, जिनके 311 खिलाड़ियों ने 9 खेलों की 43 विभिन्न स्पर्धाओं में हिस्सा लिया। इसमें ज्यादातर यूरोपीय देश थे, जिनमें मेजबान ग्रीस के अलावा आस्ट्रिया, डेनमार्क, हंगरी, स्वीडन, स्विट्जरलैंड, फ्रांस, बुल्गारिया, ग्रेट ब्रिटेन एवं जर्मनी शामिल थे। शेष तीन देश थे–अमरीका, आस्ट्रेलिया और चिली। इस स्पर्धा में 230 खिलाड़ियों के साथ मेजबान ग्रीस का ही सबसे बड़ा दल था। इसके विपरीत आस्ट्रेलिया, बुल्गारिया, चिली, स्वीडन और स्विट्जरलैंड का तो मात्र एक-एक खिलाड़ी ही स्पर्धा में हिस्सा लेने आया था। पदक-तालिका में स्वीडन, चिली व बुल्गारिया को छोड़कर शेष 10 देशों के नाम थे। यूँ तो 11 स्पर्धाओं में पहला, 6 में दूसरा तथा 2 में तीसरा स्थान बनाकर अमरीका चोटी पर रहा, लेकिन मेजबान ग्रीस 10 में पहला, 19 में दूसरा तथा 18 में तीसरा स्थान पाकर प्रतियोगिता का अनधिकृत चैंपियन घोषित हुआ।

जार्ज प्रथम द्वारा उद्घाटन

इस पहले आयोजन में सर्वाधिक चहल-पहल का केंद्र एथेंस का पैनाथोनिक स्टेडियम रहा, जो पुनर्निर्माण से काफी भव्य हो गया था। यहाँ एथलेटिक्स के अलावा जिमनास्टिक, कुश्ती व भारोत्तोलन की स्पर्धाएँ हुई थीं। इसी भव्य स्टेडियम में लगभग अस्सी हजार दर्शकों के सम्मुख 7 अप्रैल को यूनान (ग्रीस) के सम्राट जार्ज प्रथम ने घोषणा की–

"मैं एथेंस में होनेवाले पहले अंतर्राष्ट्रीय ओलंपिक खेलों के शुभारंभ की घोषणा करता हूँ।"

इस घोषणा के बाद यूनान के राष्ट्रकवि कासटिस पालागास के गीत की स्पारोस साकारास द्वारा बनाई गई ओलंपिक धुन बजाई गई। उद्घाटन के बाद अगले 9 दिनों तक खेल-प्रतियोगिताएँ जारी रहीं।

एथलेटिक्स मुकाबलों में अमरीकी एथलीटों ने 9 में पहला, 7 में दूसरा एवं 1 में तीसरा स्थान पाकर अपना दबदबा बनाया। इनमें सबसे सफल प्रिंसटन यूनीवर्सिटी का 24 वर्षीय छात्र राबर्ट गैरेट रहा, जिसने डिस्कस (95′-7.5″) एवं शाटपुट (36′-9.75″) में पहला तथा लांग जंप एवं हाई जंप में दूसरा स्थान पाया। लेकिन सही मायने में स्पर्धा का हीरो अमरीका का ही जेम्स ब्रेडंन कोनाली रहा।

मैसाचुसेट्स, दक्षिण बोस्टन के एक गरीब आईरिश अमरीकी परिवार में जन्मे कोनाली को जब अपने देश में ओलंपिक खेलों के पुनर्जन्म की बात मालूम हुई, तभी से वह एथेंस जाने का निश्चय कर चुका था। दल में शामिल होने के पश्चात् उसने अपने हॉवर्ड यूनीवर्सिटी के डीन को छुट्टियों की अर्जी दी, जिसे डीन ने अस्वीकार कर दिया। फिर भी क्योंकि 27 वर्षीय राष्ट्रीय चैंपियन कोनाली एथेंस जाना ठान ही चुका था, इसलिए 17 दिनों की लंबी समुद्री यात्रा के बाद वह नेपल्स पहुँचा जहाँ से रेलगाड़ी द्वारा वह एथेंस आया।

यहाँ पहुँचने पर जब उसे मालूम हुआ कि ओलंपिक का आयोजन अगले ही दिन से है, तो वह आश्चर्य में पड़ गया, क्योंकि उसका अनुमान था कि उसे तैयारी के लिए लगभग 12 दिन मिलेंगे। कठिन एवं लंबी यात्रा की थकान के बावजूद अगले दिन उसने ट्रिपल जंप (हाप, स्टेप एंड जंप) में हिस्सा लिया और 44 फुट 11.75 इंच की छलाँग लगाकर आधुनिक ओलंपिक खेल का पहला विजेता होने का श्रेय प्राप्त किया। बाद में उसने लांग जंप में तीसरा (20′-0.5″) और हाई जंप (5′-5″) में दूसरा स्थान प्राप्त किया। बाद में खेलों से अलग होकर कोनाली एक पत्रकार और कहानीकार के रूप में भी काफी विख्यात हुआ। 1957 में 88 वर्ष की आयु में उसका देहांत हुआ।

एक अन्य अमरीकी राष्ट्रीय चैंपियन 20 वर्षीय थामस बुर्के ने पहले 400 मीटर 54.2 सेकेंड में और फिर तीन दिन बाद 100 मीटर की दौड़ 12 सेकेंड में जीतकर वाहवाही लूटी। आस्ट्रेलिया के एकमात्र प्रतियोगी 22 वर्षीय एडविन 'टैडी' फ्लैच ने, जो वास्तव में उस समय लंदन की एक फर्म में एकाउंटेंट था, तीन दिन के भीतर ही मध्यम दूरी की दो दौड़ें 800 एवं 1500 मीटर क्रमशः 2:11.0 तथा 4:32.2 सेकेंड के समय से जीतकर अपने देश का गौरव बढ़ाया।

लेकिन इस प्रतियोगिता (एथलेटिक्स) में मेजबान टीम की असफलता ने वहाँ के दर्शकों को काफी निराश किया। अब उनकी सारी आशाएँ केवल आखिरी स्पर्धा मैराथन पर ही टिकी थीं। मैराथन दौड़, जिसे शामिल करने का सुझाव फ्रांसीसी अधिकारी माईकेल ब्रियल ने दिया था, यूनान के एक वीर योद्धा की दर्द-भरी कहानी से जुड़ी हुई है।

कोई 2400 वर्ष पूर्व की बात है, एथेंस से 25 मील दूर मैराथन के मैदान में एक लाख से भी ज्यादा पर्शियनों की सेना ने एथेंस पर अचानक धावा बोल दिया। ऐसे में सहायता की आशा से एथेंस के सम्राट ने अपने एक वीर योद्धा एवं ओलंपिक चैंपियन फिडीपीडेस को लगभग 150 मील दूर स्पार्ता भेजा। किंतु दो दिन और दो रात के लगातार सफर के बाद जब फिडीपीडेस वहाँ पहुँचा तो स्पार्ता के शासकों ने तुरंत सहायता देने से इनकार कर दिया। फिडीपीडेस उसी क्षण लौटकर युद्ध में शामिल हो गया।

घमासान युद्ध के बाद जब एथेंस की सेनाओं ने पर्शियनों को परास्त कर दिया, तो इस जीत का समाचार अपने नगरवासियों को सुनाने का दायित्व पुनः फिडीपीडेस को ही सौंपा गया। उसने बगैर कोई क्षण गँवाए मैराथन से एथेंस का फासला दौड़कर तय किया। एथेंस पहुँचकर उसने 'खुशी मनाओ, हम जीत गए' कहा और वहीं गिरकर अपना प्राण त्याग दिया। यूनान के इसी महान योद्धा की याद में मैराथन दौड़ की शुरुआत हुई।

ग्रीस ने जीती प्रतिष्ठा की लड़ाई

मैराथन दौड़ को अपनी प्रतिष्ठा मानकर ग्रीसवासियों ने इस प्रतियोगिता में अपना सारा ध्यान लगा दिया। जीत के लिए ग्रीसवासियों ने अपने प्रतियोगियों को विभिन्न उपहार देने की भी घोषणा की। एक ने विजेता को अपनी पुत्री का हाथ और एक लाख मुद्रा दहेज के रूप में देने की घोषणा की, तो शराबखाने के एक मालिक ने विजेता को बड़े बैरल भरकर मीठे अंगूरों की शराब देने की घोषणा की। एक दर्जी ने उम्र-भर विजेता के कपड़े मुफ्त सीने का ऐलान किया, तो एक नाई ने आजीवन बाल एवं दाढ़ी बनाने की घोषणा की और चाकलेट बनानेवाली एक कंपनी ने दो हजार पौंड चाकलेट देने की पेशकश की थी।

फिर 10 अप्रैल की वह घड़ी भी आ गई, जब पाँच देशों के 25 धावकों ने ठीक दो बजे मैराथन के पूल से 40,000 मीटर की यह कठिन दौड़ आरंभ की। पिकेर्मी (लगभग 23 कि.मी.) तक फ्रांस का दुबला-पतला धावक एल्विन लेमूसिए अन्य धावकों से लगभग तीन कि.मी. आगे था, लेकिन आगे कारबेती की पहाड़ियों पर दौड़ते हुए उसके पैर में मोच आ गई, फलस्वरूप उसे दौड़ से हटना पड़ा। तब आस्ट्रेलियाई 'टैडी' फ्लैच ने, जो 800 तथा 1500 मी. का चैंपियन था, बढ़त ली परंतु उसकी बढ़त अभी केवल 4 कि.मी. तक ही थी कि अचानक ही पाँच फुट चार इंच लंबा एक ग्रीक धावक उससे आगे निकल गया। फ्लैच ने उस धावक की बराबरी करने की काफी कोशिशें कीं, मगर वह इस बुरी तरह से थक चुका था कि अंत में उसे स्ट्रेचर की मदद से बाहर लाया गया।

इस दरम्यान जैसे ही यह समाचार एथेंस स्टेडियम में उपस्थित करीब एक लाख दर्शकों को मालूम हुआ, सारे स्टेडियम में खुशी की लहर दौड़ आई। फिर जब उस धावक ने स्टेडियम में प्रवेश किया तो ग्रीसवासियों की खुशी दुगनी हो गई। महिलाएँ तो इतनी अधिक भावविभोर हो गईं कि अपने जेवर तक उस धावक की ओर फेंकने लगी थीं। इतना ही नहीं, स्टेडियम में उपस्थित ग्रीस के युवराज जार्ज और कास्टेंटाईन भी इस खुशी से अपने आपको रोक नहीं पाए और वे उस धावक के पीछे-पीछे दौड़ने लगे। स्टेडियम में बैंडवालों का दल भी उस धावक के पीछे हो गया। जब इस धावक ने दौड़

पूरी कर ली तो उसके चहेतों ने उसे उठाकर पूरे स्टेडियम का चक्कर लगाया। ग्रीस की प्रतिष्ठा को बरकरार रखनेवाला वह धावक मारुषी का 25 वर्षीय गडरिया स्पिरीडान लुईस था, जो ओलंपिक-पूर्व आयोजित दूसरी मैराथन दौड़ में पाँचवें स्थान पर रहा था। इस बार उसका समय रहा 2 घंटा 58 मिनट और 50 सेकेंड। ग्रीस का ही वेसिला कोस (3:06:03) दूसरे स्थान पर रहा।

ओलंपिक खेलों के पश्चात् जब सम्राट जार्ज प्रथम ने लुईस से उपहारस्वरूप कुछ माँगने को कहा, तो विनम्र लुईस ने बजाय किसी भव्य और कीमती वस्तु के एक घोड़ागाड़ी माँगी, ताकि वह अपने गाँव पानी ले जा सके, क्योंकि उन दिनों पानी की काफी समस्या थी।

नियोजन कालेरान वेलोड्रम में संपन्न साईकिल चालन के मुकाबलों में फ्रांसीसी साईकिल चालकों ने सिक्का जमाया। उनके पाल मैसन ने एक ही दिन (11 अप्रैल, 1896) में 1000 मीटर स्प्रिंट (4:58.2) 333.33 मीटर टाइम ट्रायल (24 सेकेंड) एवं 10 कि.मी. ट्रैकरेस (17:54.2) की स्पर्धाएँ जीतीं, जबकि लियोन फ्लेमेंग ने 100 कि. मी. ट्रैकरेस (3:08:19.2) में पहला, 10 कि.मी. ट्रैकरेस में दूसरा एवं 1000 मीटर स्प्रिंट में तीसरा स्थान पाया।

जिमनास्टिक मुकाबलों में जर्मनी के करतबकारों ने 8 में से 5 स्पर्धाओं में शीर्ष स्थान पाया। हारीजेंटल बार का टीम खिताब उन्हें बगैर किसी परेशानी के मिला, क्योंकि इस स्पर्धा के लिए वही एकमात्र टीम थी। जर्मन जिमनास्टों में हर्मन विनगार्टनर, एल्फ्रेड फ्लेटो व कार्ल शूमैन ने 3-3 प्रतियोगिताओं में पहला स्थान बनाया। आधुनिक ओलंपिक में ग्रीस को पहला स्थान भी इसी स्पर्धा में मिला। रिंग्स में उनके खिलाड़ी आयोनिस मिट्रोपाड-लस ने शानदार प्रदर्शन कर पहला स्थान हासिल किया।

भारोत्तोलन मुकाबलों में कोई निश्चित भार-वर्ग नहीं था, परंतु प्रतियोगिता एक हाथ और दोनों हाथ से भार उठाने की थी। ग्रेट ब्रिटेन के लाउंससेस्टन इलियट और डेनमार्क के विग्गो जेंसन ने दोनों हाथ से भार उठाने की स्पर्धा में बराबर (111.5 कि.ग्रा.) भार उठाया, परंतु जेंसन को अपने अच्छे स्टाइल की वजह से पहला स्थान मिला। बहुमुखी प्रतिभावाले जेंसन ने बाद में शूटिंग की फ्री रायफल थ्री पोजीशन में भी तीसरा स्थान पाया।

शूटिंग के मुकाबले में, जो कालिथी शूटिंग रेंज में संपन्न हुए थे, मेजबान टीम का पलड़ा भारी रहा। उनके खिलाड़ियों ने 5 में से 3 में पहला स्थान जीतकर नाम कमाया। अमरीकी पेन बंधुओं ने इसी मुकाबले में पहला स्थान पाया और इस तरह वे ओलंपिक खेलों के पहले रिश्तेदार विजेता कहलाए। यहाँ एक दिलचस्प तथ्य यह भी है कि दोनों

ही भाइयों (समर व जान) ने 442-442 अंकों के साथ ही पहला स्थान प्राप्त किया था।

पिरायूईस केजीबे के ठंडे पानी में संपन्न तैराकी मुकाबलों में हंगरी के 28 वर्षीय तैराक अल्फ्रेड हाजोस ने 100 मीटर (1:22.2) एवं 1200 मीटर की फ्री स्टाइल (18:22.2) में पहला स्थान जीतकर तहलका मचाया। ग्रीको-रोमन कुश्ती में जर्मनी के कार्ल शूमैन ने, जिसने दो दिन पूर्व ही जिमनास्टिक की 3 प्रतियोगिताओं में पहला स्थान बनाया था, ग्रीस के जार्जियर स्सीलस को हराकर इसमें भी पहला स्थान पाया। इस तरह ओलंपिक खेलों में चार बार पहला स्थान बनानेवाला वह पहला खिलाड़ी बना।

लॉन टेनिस मुकाबलों में आयरिश जान पियस बोलैंड ने, जो कि एक पर्यटक के रूप में एथेंस आया था, एकल एवं युगल दोनों ही मुकाबलों में बाजी जीती। युगल में उसका साथी एम. फ्रट्नट्रान (जर्मनी) था। दूसरा स्थान ग्रीस को मिला।

वैसे इस ओलंपिक में पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार रोइंग, सेलिंग और क्रिकेट-प्रतियोगिताएँ भी होनी थीं, लेकिन खराब मौसम के कारण रोइंग व सेलिंग को अंतिम समय में रद्द कर दिया गया, जबकि क्रिकेट-मुकाबले के लिए कोई भी टीम नहीं आई।

ओलंपिक के इस पहले आयोजन में सिर्फ पहले और दूसरे स्थान पर आनेवाले प्रतियोगियों को ही पुरस्कार दिया गया। पहले स्थान के विजयी प्रतियोगियों के लिए एक प्रमाणपत्र, चाँदी का पदक और पवित्र जैतून की शाख का मुकुट तथा दूसरे स्थान के खिलाड़ियों के लिए प्रमाणपत्र, काँसे का पदक एवं चमकदार पत्तियों का मुकुट निर्धारित था। इसके अतिरिक्त प्रत्येक प्रतियोगी को स्मरण पदक दिया गया।

विजेताओं को दिए गए पदकों का डिजाइन फ्रांसीसी मूर्तिकार जुल्स चैपलेन ने तैयार किया था, जबकि स्मरण पदक (कामेमोरेटिक मेडल) ग्रीक चित्रकार निकेफोरोस लिट्रास ने तथा प्रमाणपत्र निकोलस गीजीस ने बनाया था। सभी पुरस्कार बरसते पानी में सम्राट जार्ज प्रथम ने प्रतियोगिता के समापन समारोह में प्रदान किए। उसके बाद जबर्दस्त हर्षध्वनि के बीच सभी प्रतियोगियों ने मार्चपास्ट किया, जिसका नेतृत्व यूनान की लाज रखनेवाला स्पिरीडान लुईस कर रहा था। अंत में सम्राट ने इस पहले खेल के समापन की आधिकारिक घोषणा इन शब्दों में की—

"मैं एथेंस के इन पहले आधुनिक ओलंपिक खेलों के समापन की घोषणा करता हूँ।"

चार साल बाद पुनः मिलने का संकल्प लेकर सभी प्रतियोगी, अधिकारी अपने-अपने देश लौट आए। खेलों का यह अंतिम दृश्य देखकर बैरन डि कुबरटिन की आँखों में खुशी के आँसू छलक आए, और आते भी क्यों नहीं? आखिरकार बरसों की उनकी तपस्या जो सफल हो चुकी थी। ये तो वही जानते थे कि इस दिन के लिए उन्होंने

कितनी रातें एवं दिन बेचैनी में गुजारे थे।

कुल मिलाकर एथेंस में दस दिनों तक चला, खिलाड़ियों का भव्य मेला काफी सफल रहा। हर दिम मुख्य स्टेडियम दर्शकों से भरा रहा। इस तरह इस खेल-मेले की सफलता ने आगे के खेल-आयोजनों को एक नई दिशा प्रदान की।

पदक-तालिका—1896

देश	स्वर्ण	रजत	कांस्य
अमरीका	11	7	1
ग्रीस	10	19	17
जर्मनी	7	5	2
फ्रांस	5	4	2
ग्रेट ब्रिटेन	3	3	1
हंगरी	2	1	2
आस्ट्रिया	2	—	3
आस्ट्रेलिया	2	—	—
डेनमार्क	1	2	4
स्विट्ज़रलैंड	1	2	—

दूसरा ओलंपिक : 1900—पेरिस

एथेंस में पहले आयोजन की सफलता पर खुशी जाहिर करते हुए समापन समारोह के समय ग्रीस के सम्राट ने यह प्रस्ताव रखा कि स्थायी रूप से एथेंस को ओलंपिक खेलों का मेजबान बना दिया जाए। अमरीका ने भी उनके इस प्रस्ताव पर अपनी सहमति प्रकट

की, परंतु कुबरटिन इससे सहमत नहीं था। वह चाहता था कि ये खेल हर बार नई जगह आयोजित हों, ताकि खेलों की लोकप्रियता बढ़े और विश्व-मैत्री की भावना का विस्तार हो।

उधर 1897 में तुर्की के साथ युद्ध ने ग्रीस को आर्थिक रूप से काफी क्षति पहुँचाई और अब उसकी स्थिति ऐसी नहीं थी कि वह पुनः ओलंपिक खेलों की मेजबानी सम्हाल सके। इसी वर्ष अंतर्राष्ट्रीय ओलंपिक कमेटी के सम्मेलन के दौरान कुबरटिन ने भारी विरोध के बावजूद आयोजन का भार पेरिस को सौंप दिया। इसी सम्मेलन में अरसुइल कालेज, पेरिस के शिक्षक फादर हेनरी डाइडांन के आदर्श सीटिअस, आल्टिअस एवं फोर्टिअस यानी और तेज, और ऊँचा तथा और मजबूत को ओलंपिक खेलों का आदर्श स्वीकार किया गया।

गलती जो महँगी पड़ी

पेरिस के इस आयोजन को कुबरटिन ने वहाँ हो रहे विश्वमेले के साथ कराने का निर्णय लिया जो बाद में भारी पड़ा। स्वयं उनके देश के अधिकारियों एवं राजनीतिज्ञों ने अंतर्राष्ट्रीय ओलंपिक संघ को ताक में रखकर अपनी मनमानी शुरू कर दी। इतना ही नहीं, इसका नाम बदलकर 'विश्वमेले की अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता' कर दिया गया। इससे क्षुब्ध होकर अप्रैल, 1899 में कुबरटिन तथा आयोजन समिति के अध्यक्ष विकोक्ट डिलारोचेफाकांड ने अपने पद से इस्तीफा दे दिया।

इस स्थिति के बावजूद कुबरटिन का खिलाड़ी मन नहीं माना। उसने अनेक देशों की यात्रा कर, उनसे प्रतियोगिता में भाग लेने का आग्रह किया। अंततः निश्चय-अनिश्चय की स्थिति में 20 मई, 1900 को दूसरे आयोजन का शुभारंभ हुआ, जो 20 अक्तूबर, यानी लगभग 5 माह तक चलता रहा। विवादपूर्ण स्थिति के बावजूद 22 देशों के 1330 खिलाड़ियों ने इस प्रतियोगिता में शिरकत की जिनमें 11 महिलाएँ भी थीं। इस बार नए प्रतियोगी देशों के रूप में कनाडा, क्यूबा, स्पेन, बेल्जियम, हैती, हालैंड, भारत (ब्रिटिश साम्राज्य के भाग के रूप में), इटली, चेकोस्लोवाकिया एवं नार्वे ने कदम रखा। इस बार भी सबसे बड़ा दल 884 सदस्यों का मेजबान देश का ही था। 18 खेलों की विभिन्न प्रतियोगिताएँ हुईं, जबकि कई अन्य खेलों को अधिकृत नहीं माना गया।

एथलेटिक्स के मुकाबले एक खेलप्रेमी हेनरी डेसग्रेंज द्वारा प्रदत्त 'ब्यांस द बाउलोग्न' के रेसिंग क्लब मैदान में संपन्न हुए, जो किसी भी प्रकार से प्रतियोगिता के लिए उपयुक्त नहीं था। 500 मीटर के ओवल आकारवाले इस मैदान की सतह समतल नहीं थी, और मैदान के बीच कुछ पेड़ भी खड़े थे, जिससे गोला एवं चक्का फेंकनेवाले प्रतियोगियों को काफी मुश्किल हुई। इस सबके बावजूद प्रतियोगियों का प्रदर्शन स्तरीय था।

परंतु एथलेटिक्स आरंभ होने के पहले ही फ्रांसिसी अधिकारियों एवं अमरीकी खिलाड़ियों के बीच उद्घाटन-तिथि को लेकर विवाद छिड़ गया। फ्रांसिसियों ने इन मुकाबलों की शुरुआत पहले 14 जुलाई से तय की थी, किंतु बाद में उन्होंने महसूस किया कि इस दिन फ्रांस में बैसिले दिवस के राष्ट्रीय अवकाश के कारण दर्शकों की उपस्थिति काफी कम होगी, इसलिए उन्होंने उद्घाटन दिवस रविवार 15 जुलाई कर दिया। इस पर अमरीकी प्रतियोगी खफा हो गए, क्योंकि वे रविवार को प्रार्थना में शामिल होने के कारण खेलना धर्म-विरुद्ध मानते थे। उन्होंने प्रतियोगिता से हटने की धमकी भी दे दी। आखिर फ्रांसिसी अधिकारियों को झुकना पड़ा और 14 जुलाई को लंबी कूद-प्रतियोगिता के हिट्स के साथ ही इसका शुभारंभ हुआ।

रे एवरी का यादगार प्रदर्शन

एथेंस की तरह यहाँ भी एथलेटिक्स में अमरीकी खिलाड़ियों का बोलबाला रहा। इसका प्रमाण इस बात से मिलता है कि 23 मुकाबलों में मात्र 6 को छोड़ शेष सभी में उनके खिलाड़ियों ने शीर्ष स्थान पाया। इस बार का हीरो अमरीकी रेमंड एवरी था, जो एक ही दिन (16 जुलाई को) तीनों स्टैंडिंग जंप (हाई, लांग एवं ट्रिपल) प्रतियोगिताएँ काफी अंतर से जीतने में सफल रहा। इतना ही नहीं, ऊँची कूद में तो उसने अपने विश्व कीर्तिमान 5 फुट 4½ इंच को भी पीछे छोड़ दिया। 6′-3″ की ऊँचाई वाले एवरी का जन्म 14 अक्तूबर, 1873 को लाफायेट्ट (इंडियाना) में हुआ था। वह बचपन में गठिया रोग से पीड़ित था, लेकिन विभिन्न प्रकार की कसरतें एवं संतुलित भोजन से न केवल उसके स्वास्थ्य में धीरे-धीरे सुधार आया बल्कि एक कुदाक का गुण भी पनपने लगा। उसकी यही कठिन मेहनत एवं साधना एक दिन उसके-जैसे लोगों के लिए प्रेरणा भी बनी। पेरिस ओलंपिक के बाद वह सेंटलुई : 1904 तथा लंदन : 1908 में भी काफी सफल रहा और 5 स्वर्ण पदक जीते। एवरी ने अपने ओलंपिक जीवन के चार अवसरों (1906 में भी शामिल) पर कुल 10 स्वर्ण पदक जीते। यह गौरव पानेवाला वह पहला खिलाड़ी बना। 29 सितंबर, 1937 को उसका निधन हो गया।

एवरी के हमवतन 24 वर्षीय एल्विन क्रेजलिन ने भी इस ओलंपिक में अपनी चमक दिखाई। यहाँ उसने 60 मीटर दौड़, 110 मी. एवं 200 मी. के हर्डल्स तथा लंबी कूद में न केवल पहला स्थान पाया बल्कि एक नया इतिहास बनाने में भी सफल रहा। पैर फैलाकर बाधा पार करने की तकनीक अपनाते हुए जहाँ उसने 60 मी. की दौड़ में 7.15 सेकेंड से विश्व-कीर्तिमान बनाया, वहीं 110 मी. हर्डल्स (15.4 सेकेंड), 200 मी. हर्डल्स (25.4 सेकेंड) तथा लंबी कूद (7.18 मी.) में भी ओलंपिक रिकार्ड बनाने में सफल रहा। 200 मी. हर्डल्स में कलकत्ता में रहनेवाले नार्मन प्रिचार्ड ने अनधिकृत रूप से भारत का

प्रतिनिधित्व करते हुए 26.6 सेकेंड से दूसरा स्थान पाया। इसके पहले 200 मी. की दौड़ में भी वह 22.8 सेकेंड का समय लेकर दूसरे स्थान पर आया था। प्रिचार्ड बाद में अमरीका चला गया और वहाँ उसने कई मूक फिल्मों में अभिनय किया।

सबसे तेज धावक के खिताब पर जार्ज टाउन विश्वविद्यालय के छात्र आर्थर डफले की नजर थी। दौड़ की आधी दूरी तक वह सबसे आगे था भी कि तभी उसे चक्कर आया और वह गिर पड़ा। दौड़ उसके ही देशवासी फ्रेंक जार्विस ने 11.0 सेकेंड का समय लेकर जीती। 200 मी. एवं 400 मी. (हर्डल्स) में भी अमरीका के ही 25 वर्षीय जान वाल्टर ट्विक्सबरा ने क्रमशः 22.5 तथा 57.4 सेकेंड का समय लेकर पहला स्थान बनाया। मध्यम दूरी की दौड़ों में अमरीकी खिलाड़ियों के भाग न लेने का लाभ ब्रिटिश खिलाड़ियों ने उठाया। ब्रिटिश खिलाड़ी चार्ल्स बेनेट ने न केवल 1500 मी. में पहला स्थान पाया, बल्कि 4:06.2 सेकेंड का समय लेकर नया विश्व-कीर्तिमान भी रच डाला।

रविवार, 15 जुलाई को अमरीकी खिलाड़ियों के प्रतियोगिता में भाग न लेने का सबसे ज्यादा दुख लंबी कूद के विश्व-कीर्तिमानधारी सायराक्यूस विश्वविद्यालय के छात्र म्थेर प्रिसटीन को हुआ, जिसे निश्चय ही अपना पहला स्थान गवाँना पड़ा। लेकिन अपनी इस कमी को उसने त्रिकूद में पूरा किया और 14.40 मी. की छलाँग लगाकर पहला स्थान बनाया। इस प्रतियोगिता में उसने पिछले ओलंपिक के हीरो जेम्स कोनाली को भी पीछे छोड़ दिया।

लापरवाही के आलम से पोलवाल्ट की स्पर्धा भी बच नहीं सकी। फाइनल पहले 15 जुलाई को होना तय था, लेकिन इस दिन अधिकारियों ने दो अमरीकी खिलाड़ियों–डेनिस होरटन तथा चार्ल्स इवोरेन को यह कहकर वापस भेज दिया कि वे इस प्रतियोगिता को पुनः आयोजित करेंगे, परंतु फिर अचानक आयोजकों का मूड बदला और उन्होंने इसी दिन स्पर्धा करवा दी। इसमें अमरीका के ही इर्विंग बैक्सटर ने, जिसने कुछ ही घंटे पहले ऊँची कूद में 1.90 मी. की ऊँचाई नापकर पहला स्थान पाया था, 3.30 मी. की उछाल लगाकर पहला स्थान बनाया। उक्त दोनों खिलाड़ियों के विरोध पर सांत्वना स्वरूप यह स्पर्धा एक बार पुनः आयोजित हुई, जिसमें होरटन ने पहला तथा इवोरेन ने दूसरा स्थान पाया, लेकिन रिकार्ड पुस्तिकाओं में बैक्सटर को ही तरजीह दी गई।

पिछले आयोजन की तरह यहाँ भी मेजबान देश को एथलेटिक्स में एकमात्र सफलता मैराथन दौड़ में हासिल हुई। यह दौड़ 19 जुलाई को ब्यांस व बाऊलोग्न से आरंभ हुई जो पेरिस की सड़कों से गुजरकर पुनः उसी स्थान पर समाप्त हुई। इस स्पर्धा में 5 देशों के 17 धावकों ने हिस्सा लिया। तेज धूप (39° सेंटीग्रेड) के कारण मात्र 8 धावक ही दौड़ पूरी कर सके। डबलरोटी बेचनेवाले फ्रांस के 23 वर्षीय माहकल पीथों ने, जोकि अपने धंधे की वजह से पेरिस की इन सड़कों से वाकिफ था, 'शार्टकट' रास्ता

अपनाकर 2:59.45 सेकेंड का समय लेकर सबसे पहले दौड़ पूरी की। उसके पीछे उसके ही देशवासी एमिल क्लेंपियन (3:04.17) ने दौड़ पूरी की।

कानराड का अचूक निशाना

निशानेबाजी की प्रतियोगिता अनेक स्थानों पर हुई। मुकाबलों की संख्या भी अपेक्षाकृत ज्यादा (11) थी, क्योंकि आयोजन समिति का अध्यक्ष ही शूटिंग फेडरेशन का भी अध्यक्ष था। उसने जीवित कबूतर मारने की भी एक स्पर्धा रखी। इसमें वर्चस्व फ्रांस तथा स्विट्जरलैंड के निशानेबाजों का रहा, जिन्होंने 9 वर्ग में पहला स्थान आपस में बाँटा, एक-एक स्थान डेनमार्क एवं बेल्जियम के निशानेबाजों को मिला, स्विट्जरलैंड की जीत में सबसे प्रमुख भूमिका कानराड स्टेहाली की रही, जिसने 300 मी. नीलिंग के अलावा मिलिटरी रिवाल्वर टीम 50 मी. तथा मिलिटरी रायफल टीम 300 मी. में भी पहला स्थान प्राप्त किया।

तैराकी प्रतियोगिता एसनीरेस में सीन नदी के कीचड़ युक्त पानी में संपन्न हुई। इस बार 220 गज की फ्रीस्टाईल प्रतियोगिता में आस्ट्रेलिया के फ्रेड्रिक लेन ने 2:25.2 सेकेंड का समय लेकर नया विश्व-कीर्तिमान बनाया। इसके अलावा बाधा दौड़ (पानी में) में भी वह 2:38.4 के समय से पहले स्थान पर आया। ग्रेट ब्रिटेन के जान आर्थर जार्विस ने भी दुहरी सफलता पाई। वह 1000 मी. फ्री स्टाइल 13:40.2 तथा 4000 मी. फ्री स्टाइल 58:24.0 सेकेंड के समय से जीतने में सफल रहा। जर्मनी के अर्नेस्ट इपरबर्ग ने 200 मी. बैकस्ट्रोक के बाद 2000 मी. टीम मुकाबले में भी पहला स्थान पाया।

वाटरपोलो के मुकाबलों में देश की राष्ट्रीय टीम के बजाय क्लब की टीमों ने प्रतिनिधित्व किया। ग्रेट ब्रिटेन का ओसबर्न स्वीमिंग क्लब, मानचेस्टर के स्वीमिंग इल वाटरपोलो ब्रुसेल्स (बेल्जियम) को 6-2 से हराकर चैंपियन बना।

कई नए खेलों का प्रवेश

इस बार प्रतियोगिता में काफी संख्या में नए खेलों को भी शामिल किया गया था, जिसमें तीरंदाजी भी था। इन मुकाबलों में केवल पुरुषों की ही प्रतियोगिता हुई। इस प्रतियोगिता के नियम-कानून फ्रांसिसी ढंग से तैयार किए गए थे, जिसका लाभ उठाकर वहाँ के तीरंदाजों ने 6 में से 4 में पहला स्थान जीता। इन विजयी प्रतियोगियों में इगिन मांगुन भी था, जिसने 47 वर्ष 193 दिन की आयु में आं चैपलेट (50 मी.) वर्ग में हिस्सा लिया था। वह इस खेल का सबसे बुजुर्ग चैंपियन था। दो अन्य स्पर्धाएँ बेल्जियम के हयूबर्ट इन्नीस के हिस्से में आईं।

राइंग, जो सीन के 1750 मी. लंबे कोर्स में संपन्न हुआ था, में भी टीम मुकाबलों में

क्लबों ने हिस्सा लिया था। सबसे शानदार नजारा काक्सड् फोर्स में देखने को मिला, जिसके लिए दो अलग-अलग फाइनल हुए। पहले फायनल में फ्रांस की सर्कल डी-1 एवीरांड रोबिक्स और दूसरे में जर्मनी की जर्मेनियाँ रोहंग क्लब हैमबर्ग की टीमें विजयी हुईं। इस विजयी जर्मन दल में तीन सगे गौस्लर भाई आस्कर, गुस्ताव एवं कार्ल शामिल थे। इसी मुकाबले के पेयरस् की विजेता हालैंड टीम में एक फ्रांसिसी बालक भी शामिल था, जिसे अंतिम समय में काक्सवेन हर्मनस ब्रुकमेन की जगह शामिल किया गया था। हर्मनस को भारी वजन के कारण शामिल नहीं किया गया था, लेकिन विजय के बाद वह फ्रांसिसी बालक एकाएक गायब हो गया तथा फिर नहीं मिल सका। ऐसा समझा जाता है कि उस समय उस बालक की उम्र 7 से 10 वर्ष के बीच ही थी तथा वह ओलंपिक इतिहास का सबसे युवा विजेता माना जाता है।

महिलाओं का प्रवेश

गोल्फ तथा लॉन टेनिस इस ओलंपिक के दो ऐसे खेल थे, जिनके सहारे पहली बार महिलाओं को ओलंपिक खेलों में प्रवेश मिला। पहली महिला ओलंपिक चैंपियन का श्रेय ग्रेट ब्रिटेन की शार्लेटी कूपर ने पाया। उसने लॉन टेनिस में मेजबान फ्रांस की हेलेन प्रीवोस्ट को 6-1, 6-4 से हराया। बाद में कूपर रेजिनाल्ड डोहर्ती के साथ मिलकर मिश्रित युगल का खिताब भी जीतने में सफल रही। इन मुकाबलों के चारों ही वर्ग में ग्रेट ब्रिटेन को पहला स्थान मिला, जबकि गोल्फ में अमरीका की 22 वर्षीया 5 फुट 11 इंच ऊँची मारग्रेट एब्बोट 10 खिलाड़ियों में सफल रही। पुरुषों के मुकाबले में भी अमरीकी गोल्फर चार्ल्स सैंड्स की जीत हुई।

पोलो एवं फुटबाल में भी क्लब की टीमों ने शिरकत की। पोलो में ग्रेट ब्रिटेन की फाक्स हंटरस हर्लिंघम अमरीका के रग्बी क्लब को 3-1 से हराकर शीर्ष स्थान पर रही, जबकि फुटबाल में भी ग्रेट ब्रिटेन के अपटन पार्क फुटबाल क्लब ने फ्रांस की यूनियन डेस सोसायटी फ्रांसेस डी स्पोर्ट्स एथलेटिक्स को 4-0 से हराकर विजय पाई।

क्रिकेट स्पर्धा ओलंपिक खेलों में पहली और अंतिम बार यहीं हुई, जिसमें ग्रेट ब्रिटेन के डेवोन वांडर्स क्रिकेट क्लब ने कई ब्रिटिश खिलाड़ियों से भरी फ्रांसिसी टीम को 12 खिलाड़ियों के मैच में 163 रनों से हरा दिया। स्कोर इस प्रकार रहा :

ग्रेटब्रिटेन — 117 एवं 145/5 घोषित
फ्रांस — 73 एवं 26 रन।

इसी तरह क्रिकेट का भी ओलंपिक खेलों में एकमात्र आयोजन यहीं हुआ, जिसमें सिर्फ फ्रांसिसी खिलाड़ियों ने हिस्सा लिया। टैग ऑफ वार (रस्साकसी) की स्पर्धा डेनमार्क एवं स्विट्जरलैंड की संयुक्त टीम ने जीती, जबकि विसेन्नास्ट में संपन्न रग्बी के

मुकाबले में मेजबान फ्रांस जर्मनी को 3-1 से हराकर चैंपियन हुआ।

पहली बार ही शामिल घुड़सवारी के मुकाबलों की ऊँची कूद स्पर्धा में दो प्रतियोगियों ने संयुक्त रूप से पहला स्थान पाया। यह प्रतियोगिता एवेन्यू डी ब्रेटीईल में हुई थी केनल पर सवार फ्रांस के डोमिनिक मैक्सिमेन गार्डनूस व ओरेस्ट पर सवार इटली के गियान गिरोंगियो ट्रिस्सिनो ने 1.85 मीटर की बराबर ऊँचाई नापी, दो अन्य स्पर्धाओं में बेल्जियम के घुड़सवारों ने बाजी मारी।

तलवारबाजी की इस बार 6 स्पर्धाएँ तुलेरियस में हुईं, जिनमें से 5 में फ्रांसिसियों को सफलता मिली। एल्बर्ट अयात (फ्रांस) ने दोहरी सफलता पाई, जबकि उसके ही शागिर्द क्यूबा के 16 वर्षीय रोमन फ्रोस्ट ने इपी का मुकाबला जीता। शार्टिंग में भी 6 मुकाबले हुए, जीतने के लिए जिसमें काफी संघर्ष देखने को मिला। मेजबान तथा ग्रेट ब्रिटेन ने 3-3 मुकाबले जीते। ये मुकाबले मेयुलन में हुए थे। अन्य खेलों में साईकिलिंग तथा जिमनास्टिक की एक-एक प्रतियोगिता हुई थी।

इस प्रकार दूसरे ओलंपिक खेलों का आयोजन समाप्त हुआ। परंतु ये खेल उस ढंग से नहीं हुए, जिसकी कल्पना कुबरटिन ने की थी। हर जगह विवाद, अव्यवस्था तथा आयोजकों की लापरवाही देखी गई, जिसकी मुख्य वजह कुबरटिन द्वारा इन खेलों को विश्व-मेले के दौरान आयोजित करवाना था, इसी वजह से इन खेलों को पर्याप्त प्रचार भी नहीं मिल सका। और तो और, किसी भी रिपोर्ट में कुबरटिन का नाम तक देखने को नहीं मिला। इन खेलों की चर्चा विश्व-मेले तथा उस वक्त निर्मित हो रहे एफिल टॉवर की खबरों में दबकर रह गई। खेलों के परिणाम भी ठीक तरह से प्रकाशित नहीं हो पाए, जिन्हें फिर 1912 में अंतर्राष्ट्रीय ओलंपिक समिति ने आवश्यक सुधार करके प्रकाशित किया।

पदक-तालिका–1900

देश	स्वर्ण	रजत	कांस्य
फ्रांस	27	35	34
अमरीका	19	15	16
ग्रेट ब्रिटेन	17	8	12
बेल्जियम	5	6	3
स्विट्जरलैंड	5	3	1

जर्मनी	4	2	2
आस्ट्रेलिया	2	—	4
डेनमार्क	2	3	2
इटली	2	2	—
नीदरलैंड	1	2	3
हंगरी	1	2	2
क्यूबा	1	1	—
कनाडा	1	—	1
स्वीडन	1	—	1
आस्ट्रिया	—	3	3
नार्वे	—	2	3
चेकोस्लोवाकिया	—	1	2
भारत	—	2	—

तीसरा ओलंपिक : 1904—सेंट लुई

ओलंपिक आयोजनों के पड़ाव के लिए वर्ष 1894 में ही आई. ओ. सी. ने यह तय कर लिया था कि आयोजन का दायित्व अमरीका को भी सौंपा जाएगा। अत: 29 मई, 1901 में आई. ओ. सी. की पेरिस बैठक में पूर्ण बहुमत से तीसरे ओलंपिक खेलों का आयोजन-स्थल शिकागो को चुना गया तथा यह निर्णय लिया गया कि ये खेल केवल 12 दिन में ही संपन्न होंगे। इस बीच लुशियाना ने, जोकि 1903 में अपने राज्य के नेपोलियन से खरीदे जाने की सौवीं वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में एक विशाल विश्व-मेला आयोजित करनेवाला था, वित्तीय संकट के कारण उक्त आयोजन एक वर्ष आगे टाल दिया। फिर अगले वर्ष उसने विश्व-मेले के साथ ही ओलंपिक खेलों के आयोजन की भी पेशकश की और उसकी स्वीकृति के अभाव में उनके समानांतर ही अपने यहाँ खेल आयोजित करने की धमकी भी दी। इससे पहले कि यह मामला और तूल पकड़ता, तत्कालीन अमरीकी राष्ट्रपति और अमरीकी ओलंपिक कमेटी के अध्यक्ष थियोडोर रूजवेल्ट ने हस्तक्षेप करते हुए लुशियाना की राजधानी सेंट लुई के पक्ष में अपना मत देकर मामले को शांत कर दिया। अंतर्राष्ट्रीय ओलंपिक समिति ने ज़रूर राष्ट्रपति के

निर्णय का अनुमोदन किया, लेकिन विश्व-मेले के साथ होने के कारण यहाँ भी उन्हें पेरिस-जैसी अव्यवस्था नजर आई। इस स्थिति में कुबरटिन ने भी इस आयोजन से स्वयं को अलग कर लिया। अंततः ये खेल विश्व-मेले के साथ-साथ 1 जुलाई से 23 नवंबर, 1904 तक चलते रहे।

लंबी दूरी ने उत्साह तोड़ा

यूरोप और अमरीका के बीच की लंबी दूरी को ध्यान में रखकर अमरीकी अधिकारियों ने जहाज भेजकर यूरोपीय देशों के प्रतियोगियों को लाने का वायदा किया था, परंतु वे इसे पूरा नहीं कर सके। फलस्वरूप कई यूरोपीय देशों ने इनमें हिस्सा नहीं लिया। इस स्थिति के कारण इस बार सिर्फ 12 देशों के मात्र 625 खिलाड़ी, जिनमें आठ महिलाएँ थीं, इनमें हिस्सा ले सके। प्रतिस्पर्द्धी खिलाड़ियों में 85 प्रतिशत (533) अमरीकी थे। शेष बचे खिलाड़ियों में भी 41 पड़ोसी देश कनाडा के थे। दक्षिण अफ्रीका पहली बार इन खेलों में शामिल हुआ।

इस बार कड़ी चुनौती के अभाव में अमरीकी दबदबा बना रहा। जिमनास्टिक्स की आलराउंड नाईट इवेंट्स, एक मील फ्री स्टाइल तैराकी तथा वाटरपोलो ही मात्र ऐसी स्पर्धाएँ थीं, जिनमें प्रथम तीन स्थान पाने में असफल रहे। इसके विपरीत तीरंदाजी, मुक्केबाजी, रोइंग (एक में कनाडा द्वितीय), फ्री स्टाइल कुश्ती, लॉन टेनिस एवं रॉक में उनके प्रतियोगी पूरी तरह से छाए रहे।

एथलेटिक्स के मुकाबले वाशिंगटन विश्वविद्यालय के 550 मीटर परिधिवाले मैदान में 29 अगस्त से 3 सितंबर तक संपन्न हुए, जिसमें अमरीकियों ने 25 में से 23 स्पर्धाएँ जीतीं। इस प्रतियोगिता के दरम्यान कई बार तो ऐसा महसूस हुआ, मानो यह अंतर्राष्ट्रीय मुकाबला न होकर अमरीकी क्लब स्तर की प्रतियोगिता है। इस बार अमरीका के लिए सफलताएँ जुटानेवाले धावकों में आर्ची हान, हैरी हिलमैन, जेम्स लाईटवाय एवं रे एवरी प्रमुख थे। इन सभी खिलाड़ियों ने 3-3 मुकाबले जीते।

आर्ची हान ने, जो कि 14 सितंबर 1880 को डॉजविले में जन्मा और 'मिलवॉकी मेटीयर' नाम से मशहूर हुआ, पहले 60 मीटर (6.0 सेकेंड), फिर 200 मीटर (21.6) सेकेंड तथा अंत में 100 मीटर की दौड़ 11.0 सेकेंड में पूरा करके जीती। 200 मीटर दौड़ के फाइनल में तीन अन्य प्रतियोगियों को गलत शुरुआत करने के कारण एक-एक गज पीछे कर दिया गया था। फिर भी हान ने यह दौड़ 3 गज के फासले से जीती। शिकागो एथलेटिक्स क्लब के स्काटिश मूल के 22 वर्षीय धावक जेम्स डेतविस लाईटबॉय ने 3 सितंबर को तीसरी बार इस आयोजन में पहला स्थान पाया। 1500 मी. की दौड़ में वह चार्ल्स बेनेट्स (पेरिस 1900) के विश्व रिकार्ड-समय (4 : 6.2) 0.8

सेकेंड.पीछे छोड़कर जीता। इसके पहले वह स्टीपल चेस एवं 800 मीटर (ओलंपिक कीर्तिमान 1 : 53.4) जीत चुका था।

एक अन्य अमरीकी, बैंक-कर्मचारी 22 वर्षीय हैरी हिलमैन ने लगातार तीन दिन में 400 मी. की दौड़ (49.2 सेकेंड), 200 मी. हर्डल्स (24.6 सेकेंड) तथा 400 मी. हर्डल्स (53.0 सेकेंड) जीतकर दर्शकों की वाहवाही लूटी। इसमें 400 मी. की दौड़ सबसे ज्यादा रोमांचक रही। चार अमरीकियों की होड़वाली इस दौड़ में आधी दूरी तक हर्मन ग्रोमैन सबसे आगे था, लेकिन आया पहले हिलमैन, फिर फ्रैंक वालेर और फिर अमरीका का ओलंपिक में प्रतिनिधित्व करनेवाले पहले नीग्रो मिलवॉकी क्लब के जार्ज पोग ने बढ़त बनाई। अंतिम 100 मी. पर पोग सबसे आगे था, तभी वह लड़खड़ाया और गिर पड़ा। तब हिलमैन ने अपनी गति बढ़ाकर मुकाबला जीत लिया। वालेर ने दूसरा एवं ग्रोमैन ने तीसरा स्थान पाया। दो दिन बाद 400 मीटर हर्डल्स में पोग ने तीसरा स्थान पाया और वह पदक पानेवाला पहला अश्वेत खिलाड़ी हुआ।

26 वर्षीय म्येर प्रिसस्टीन ने एक ही दिन (1 सितंबर) में लांग जंप व छठवें प्रयास में ट्रिपल जंप का खिताब जीता। इससे पहले वह 400 मी. तथा 600 मी. की दौड़ में भी अपनी किस्मत आजमा चुका था, लेकिन पिछड़कर पाँचवें स्थान से ही उसे संतोष करना पड़ा। चक्का फेंक के अंतिम दौर में अमरीकी मार्टिन शेरीडान तथा राल्फ रॉस ने, जो पहले गोला-फेंक की स्पर्धा जीत चुका था, 128 फुट व साढ़े 10 इंच की बराबर दूरी तक चक्का फेंका। इस पर पहले स्थान का फैसला 'वेस्ट आफ थ्रीथ्रो' के जरिए हुआ, जिसमें शेरीडान ने रॉस से लगभग पाँच फुट ज्यादा दूर चक्का फेंका।

जीत से नौकरी बची

56 पौंड की चक्का फेंक स्पर्धा में अमरीकियों को मात मिली। इसमें पहला स्थान फ्रांसिसी मूल के मांट्रियलवासी (कनाडा) पुलिस के सिपाही एटीने डेसमारटाड को मिला। डेसमारटाड जब ओलंपिक खेलों में भाग लेने के लिए छुट्टियाँ नहीं पा सका तो वह बगैर किसी को बताए सेंट लुई चला आया। इस पर उसे नौकरी से निलंबित कर दिया गया, लेकिन जब अधिकारियों को उसके स्वर्ण पदक जीतने का समाचार मिला, तो उसे फिर से नौकरी पर रख लिया। अमरीकियों को एक और मात पहली बार सम्मिलित डेकाथलन में मिली।

पिछले ओलंपिक के 'हीरो' रे एवरी के अलावा जान फ्लैगन (हैमर थ्रो) ने भी इस बार अपना खिताब बचाया, जबकि स्टैंडिंग हाई जंप में दूसरा स्थान पानेवाला जोसफ स्टीडलर 'फील्ड' मुकाबलों में सफल रहनेवाला पहला अश्वेत खिलाड़ी बना।

लोर्ज की चुहुलबाजी

तपती दोपहर में आयोजित मैराथन दौड़ पिछले दो आयोजनों की तरह ही घटनापूर्ण रही। इस बार कुल 32 धावक मैदान में थे, जिनमें यूनानी डेमेटर वेलोइस, फ्रांसिसी एलबर्ट कोरी तथा क्यूबा के फेलिक्स कार्वोजल के अलावा शेष सभी अमरीकी थे। पाँच फुट ऊँचा कार्वोजल पेशे से डाकिया था और ओलंपिक में भाग लेने के लिए अपने मित्रों द्वारा एकत्रित चंदे से हवाना से न्यू ओर्लियंस पहुँचा, जहाँ वह अपनी बची हुई राशि एक जुआघर में हार गया। फिर भी किसी तरह लिफ्ट लेकर वह सेंट लुई आया और सीधे ही मैराथन दौड़ में भाग लेने पहुँच गया। 25 कि. मी. तक वह सबसे आगे था, तभी उसे भूख सताने लगी और वह पास के ही फलों के बाग में जा घुसा। लेकिन उसने कच्चा सेब खा लिया, जिससे थोड़ी देर बाद ही उसका पेट दर्द करने लगा और उसकी गति धीमी पड़ गई।

सबसे पहले स्टेडियम में प्रवेश करनेवाला अमरीकी फ्रेड लोर्ज था, जिसका दर्शकों ने जबर्दस्त अभिवादन किया। अमरीकी राष्ट्रपति की पुत्री एलिस रूजवेल्ट ने तो उसके साथ तस्वीरें भी उतरवाईं। 15 मिनट बाद जब थका-हारा, धूल से सना दूसरा धावक थामस हिक्स स्टेडियम में पहुँचा तो सारे अधिकारी सकते में आ गए। तब लोर्ज ने ही बताया कि 5 कि. मी. की दौड़ के बाद उसके पैर की मांसपेशियाँ खिंच गईं। तब उसने एक ट्रक से लिफ्ट ली जो 30 कि. मी. के बाद दुर्घटनाग्रस्त हो गया। इस दरम्यान उसके पैर का खिंचाव ठीक हो गया और घर जल्दी पहुँचने के प्रयास में उसने फिर दौड़ना आरंभ किया और स्टेडियम पहुँच गया। लोर्ज की इस चुहुलबाजी पर अमरीकन एथलेटिक्स यूनियन ने उसे जीवन-भर के लिए निलंबित कर दिया, परंतु अन्य प्रतियोगियों के अनुरोध पर अगले वर्ष यह प्रतिबंध उठा लिया गया। इंग्लैंड में जन्मे, परंतु बोस्टन निवासी हिक्स ने, जो कि पेशे से जोकर था, रास्ते में ताकत बढ़ानेवाली गोलियाँ खा ली थीं; परंतु किसी ने भी प्रोटेस्ट नहीं किया।

तैराकी के मुकाबले अनियमित आकार की झील में संपन्न हुए, जिनमें गिने-चुने यूरोपीय प्रतियोगियों ने ही अमरीकी तैराकों को चुनौती पेश की। अमरीकी तैराकों में 20 वर्षीय चार्ल्स डेनियल ने 200 गज फ्री स्टाइल व 400 गज फ्री स्टाइल में पहला तथा 100 गज फ्री स्टाइल में दूसरा स्थान पाया, जबकि 50 गज की फ्री स्टाइल में वह तीसरा रहा। इसी मुकाबले में हंगरी के जोल्टन हाल्मे और अमरीका के जे. स्काट लियरी ने एक ही समय (28.2 सेकेंड) के साथ पहला स्थान पाया, जिस पर चैंपियन का फैसला 'स्विम ऑफ' से हाल्मे के पक्ष में हुआ। वैसे हाल्मे ने एक दिन पूर्व ही 100 गज की फ्री स्टाईल में भी पहला स्थान पाया था। डाइविंग मुकाबलों में डायविंग के तरीके को लेकर अमरीकी एवं जर्मन अधिकारियों में विवाद छिड़ा रहा, जबकि वाटरपोलो में जर्मनी ने अमरीकी

ढंग से नहीं खेलने का फैसला किया। कुल मिलाकर 12 स्पर्धाओं में जर्मनी 4 तथा हंगरी 2 में चैंपियन रहा, जबकि अमरीकियों ने 5 स्पर्धाओं में अपनी श्रेष्ठता दिखलाई।

तीरंदाजी में पुरुषों के डबल यार्क राउंड व डबल अमरीकन राउंड में परिणाम एक-जैसा रहा। 60 गज टीम राउंड में पहले स्थान पर आनेवाला पोटोमेक आर्चूस वाशिंगटन डी.सी. टीम का एक सदस्य पादरी गेलन स्पेंसर 64 वर्ष 2 दिन का था और वही इस आयोजन का सबसे बुजुर्ग चैंपियन भी रहा। पहली बार आयोजित महिलाओं की स्पर्धा में सिनसिनाटी आर्चूस क्लब की सदस्या लिडा हावेल तीनों ही वर्गों में पहले स्थान पर रही।

किर्क की अनूठी उपलब्धि

पहली बार शामिल मुक्केबाजी में सिर्फ अमरीकी बाक्सर ही नजर आए। ओलीवर किर्क एक ही दिन में बेंटमवेट एवं फीदरवेट वर्ग का चैंपियन बना। ओलंपिक इतिहास में एक ही मुक्केबाज द्वारा एक ही आयोजन के दो वर्गों में चैंपियन बनने का यह एकमात्र उदाहरण है। किर्क के अलावा जार्ज फिन्नरगन हैरी स्पेंजर तथा चार्ल्स मेयर भी दो विभिन्न वर्गों में विजेता एवं उपविजेता बने थे। हैवीवेट वर्ग (158 पौंड या 71.6 कि.ग्रा.) में 19 वर्ष, 274 दिन की उम्रवाला सैमुअल बर्गर चैंपियन बना।

रोईंग के सभी पाँचों मुकाबले अमरीकी मल्लाहों ने जीते। इस स्पर्धा में केवल क्लब टीमों ने हिस्सा लिया था। कुश्ती पुनः शामिल की गई, जिसमें सिर्फ फ्री स्टाइल के मुकाबले हुए और अमरीकी पहलवानों की धाक रही। परंतु तलवारबाजी में क्यूबा के तलवारबाजों ने मेजबानों को जमने का मौका नहीं दिया और सभी पाँच मुकाबले जीत लिए। 20 वर्षीय रोमन फोस्ट न केवल इपी मुकाबलों में अपना पेरिस का ताज बचाने में सफल रहा, वरन वह एक ही ओलंपिक में फॉयल एवं इपी का व्यक्तिगत खिताब जीतनेवाला भी पहला और अब तक का एकमात्र खिलाड़ी हुआ। इसी तरह अल्बर्टवान जो पोस्ट ऐसा पहला तलवारबाज हुआ, जो अपने सभी 5 मुकाबलों में पहले तीन स्थान पर ही रहा। उसने इपी (टीम) व सिंगल स्टिक्स में पहला, फॉयल में दूसरा तथा इपी व सैब्रे (व्यक्तिगत) में तीसरा स्थान पाया था। पोस्ट यूँ तो अमरीकी नागरिक था, लेकिन वह अपने जन्म देश क्यूबा के लिए खेला।

जिमनास्टिक के 11 मुकाबलों में आलराउंड व नाईन इवेंट्स स्पर्धाओं को छोड़ शेष 9 स्पर्धाओं के सभी तीनों स्थान पर मेजबान देश के ही करतबकार थे। इसमें टर्नेजमीड फिलाडेल्फिया के जार्ज आयसर ने 3 स्पर्धाओं में पहला स्थान पाया। टीम कंबाइंड एक्सरसाइज का खिताब जीतनेवाली टर्नेजमीड क्लब टीम का एक सदस्य जूलियस लेन्हार्ट आस्ट्रेलिया का रहनेवाला था।

दोनों हाथ से भारोत्तोलन की स्पर्धा में ग्रीस के पेरीक्लस काकाडसीस ने शेष तीनों अमरीकी भारोत्तोलकों को पीछे छोड़ा। नौ विभिन्न तरीकों से भार उठाने की स्पर्धा (आल अराउंड डबल कानटेस्ट) मेजबान देश के आस्कर ओस्तहाफ ने जीती, लॉन टेनिस की दोनों स्पर्धाओं में अमरीकी खिलाड़ियों को चुनौती देनेवाला कोई दूसरा देश नहीं था। इसमें बील्स राईट ने राबर्ट्स लिराय को 6-4, 6-4 से हराकर सिंगल्स तथा एडगर लियोनार्ड के साथ मिलकर राबर्ट्स लिराय व अलोंजो बेल की जोड़ी को 6-4, 6-4, 6-2 से पीटकर डबल्स के साथ दोहरी सफलता हासिल की।

फुटबाल में चैंपियन कनाडा का गाल्ट फुटबाल क्लब रहा। उसने क्रिश्चियन ब्रदर्स कालेज, अमरीका को 6-0 से और फिर सेंट रोज़ स्कूल अमरीका को 4-0 से पीटकर यह श्रेय पाया। कनाडा की ही शैम्रॉक लैक्रोस टीम लैक्रोस में चैंपियन हुई, जबकि गोल्फ में कनाडा को सफलता मिली। 46 वर्षीय टोरंटोवासी लियान ने कनाडा के लिए यह सफलता जुटाई। वह गोल्फ के अतिरिक्त टेनिस, क्रिकेट, बेसबाल व पोलवाल्ट का भी अच्छा खिलाड़ी था।

रॉक, टग ऑफ वार में भी अमरीकी दलों ने कामयाबी पाई। बास्केटबाल के प्रदर्शन-मैच में अमरीका बफैलो जर्मन वाई.एम.सी. ए. को सफलता मिली। सायकिलिंग की भी कुछ स्पर्धाएँ हुईं, जिसमें पेशेवर चालकों ने भी हिस्सा लिया। इसी वजह से इस खेल को बाद में अनधिकृत घोषित कर दिया गया।

इस प्रकार सेंट लुई का यह आयोजन मेजबान देश की जबर्दस्त सफलता (84 प्रतिशत) के साथ समाप्त हुआ। इस आयोजन से पृथक रहने के बावजूद आयोजन की प्रत्येक गतिविधि से कुबरटिन को अवगत कराया जाता रहा। प्रतियोगिता के दौरान पक्षपातपूर्ण निर्णय, काले लोगों का मजाक उड़ाना-जैसी अनेक बातें भी उभरकर सामने आईं, फिर भी कुबरटिन ने एक सच्चे खेल पितामह की तरह अमरीकी प्रयत्नों की सराहना की।

पदक-तालिका—1904

देश	स्वर्ण	रजत	कांस्य
अमरीका	70	74	67
क्यूबा	5	2	3
जर्मनी	4	4	5
कनाडा	4	1	

हंगरी	2	1	1
आस्ट्रिया	2	1	—
ग्रेट ब्रिटेन	1	1	—
स्विट्ज़रलैंड	1	—	1
ग्रीस	1	—	1
फ्रांस	—	1	—

अंतरिम ओलंपिक : 1906—एथेंस

ओलंपिक खेलों के पुनरुद्धार के बाद कई समीक्षकों का मत था कि इसे स्थायी रूप से ग्रीस में ही आयोजित किया जाना चाहिए। दरअसल ग्रीस को स्थायी आयोजक बनाने के पीछे सिर्फ एक ही मकसद था कि ये खेल अपनी ख्याति के अनुरूप होते रहें। लेकिन इन खेलों के जन्मदाता कुबरटिन को यह गवारा न था, उसी के प्रयासों से ग्रीस को स्थायी स्थल बनाए जाने का प्रस्ताव सफल नहीं हो सका। परंतु जब तीन ओलंपिकों को आशानुरूप सफलता नहीं मिली तो यह बात और जोर पकड़ने लगी, लिहाजा कुबरटिन ने यह तय किया कि ओलंपिक खेलों के 4 वर्षों के अंतराल में हर दूसरे वर्ष ठीक ऐसे ही खेल ग्रीस में आयोजित किए जाएँगे। साथ ही यह भी तय किया कि इन खेलों की गिनती ओलंपिक खेल के रूप में नहीं होगी।

इस प्रकार एथेंस में 21 अप्रैल, 1906 से 2 मई तक ये खेल संपन्न हुए, जिसमें 11 खेलों की 77 विभिन्न स्पर्धाओं के लिए 20 देशों के 7 महिला खिलाड़ियों सहित कुल 884 खिलाड़ियों ने हिस्सा लिया। इस बार प्रतियोगिता में अमरीका का पहला अधिकृत दल शामिल हुआ, मिस्र एवं फिनलैंड ने भी पहली बार ओलंपिक खेलों में शिरकत की।

अमरीकी वर्चस्व कायम

एथलेटिक्स के मुकाबले उसी भव्य पैनाथिनिक स्टेडियम में संपन्न हुए। इस बार भी यहाँ अमरीकी खिलाड़ियों का वर्चस्व रहा। इस बार 21 में से 11 मुकाबलों में उनके खिलाड़ियों ने पहला स्थान पाया। सेंट लुई (1904) में 100 मीटर व 200 मीटर की दौड़ जीतकर डबल बनानेवाला 26 वर्षीय आर्चीहान इस बार अपने खेल के चरमोत्कर्ष पर था। यहाँ भी 100 मीटर दौड़ में उसने पहला स्थान पाया, लेकिन मुलायम ट्रेक होने के कारण पिछली बार की तुलना में यहाँ उसने 0.2 सेकेंड का ज्यादा समय (11.2

सेकेंड) लिया। 400 मीटर (53.1) तथा 800 मीटर (2:01.5) की दौड़ अमरीकी पाल पिलग्रिम ने सनसनीखेज तरीके से जीतकर शानदार डबल पूरा किया। इन दौड़ों के संभावित विजेताओं में उसका कोई नाम नहीं था, क्योंकि इसके पहले वह कोई भी बड़ी स्पर्धा नहीं जीता था, लेकिन यहाँ की जीत ने उसे रातों-रात 'स्टार' बना दिया।

मगर इस बार सर्वाधिक ख्याति आयरिश मूल के एक पुलिस सिपाही मार्टिन शेरीडन ने पाई। उसने चक्का फेंक में तो अपना वर्चस्व कायम रखा ही, साथ ही गोलाफेंक में भी 12.32 मीटर की दूरी नापकर वह अव्वल रहा। लेकिन उसका यह प्रदर्शन सेंट लुई ओलंपिक के अमरीकी विजेता राल्फ रॉस के ओलंपिक-रिकार्ड 14.80 मीटर से बहुत ही कम था। इसके अलावा उसने स्टेंडिग हाई जंप, स्टेंडिग लांग जंप एवं स्टोन पुट (6.40 कि. ग्रा.) में दूसरा स्थान हासिल किया। इन खेलों में पहला स्थान 1900 व 1904 के हीरो रे एवरी ने हासिल किया। इस बार एवरी ने स्टेंडिग हाई जंप में 1.565 मीटर की ऊँचाई नापी, जबकि स्टेंडिग लांग जंप में 3.30 मीटर के साथ पहला स्थान बनाया। स्टोन पुट का खिताब 19.925 मीटर दूर फेंककर मेजबान देश के निकोलस ने हासिल किया।

यूरोपीय खिलाड़ियों में स्टाकहोम के पुलिस सिपाही एरिक लेमिंग ने फील्ड मुकाबले में अच्छा प्रदर्शन किया। पहली बार शामिल भाला फेंक में 6 फुट 3 इंच कद के 26 वर्षीय लेमिंग ने 53.9 मी. भाला फेंककर पहला स्थान पाया। बाद में 1908 एवं 1912 के ओलंपिक खेलों में भी उसने अपना खिताब बरकरार रखा। उसका इस स्पर्द्धा में 1899 से ही आधिपत्य रहा था और 13 वर्ष तक विश्व-कीर्तिमान उसके ही नाम था। यहाँ उसने गोला फेंक तथा पेंटाथलन में भी तीसरा स्थान पाया।

यूनानी पद्धति से चक्का फेंकने की स्पर्धा एक फिन वर्वर जारवेनेव ने जीती और ओलंपिक खेलों में फिनिश खिलाड़ियों की सफलता का सूत्रपात किया। बाद में जारवेनेव के चार पुत्रों में से तीन ने 1932 ओलंपिक में भाग लिया।

मैराथन दौड़ एथलेटिक्स की अंतिम स्पर्धा थी, जिसमें दस वर्ष पूर्व की भाँति इस बार भी ग्रीसवासियों ने ग्रीस-विजेता को अनेक उपहार देने की घोषणा की, परंतु कनाडा के बिली शेरिंग के इरादे कुछ और थे। शेरिंग रेलवे में ब्रेकमैन का काम करता था और अपनी जीत के प्रति वह शुरू से ही आश्वस्त था, लेकिन जब एथेंस आने के लिए उसके पास पर्याप्त धन इकट्ठा नहीं हुआ तो उसने अपना संपूर्ण धन घुड़दौड़ में लगाकर धन इकट्ठा किया और दो माह पूर्व ही एथेंस पहुँच गया। वहाँ उसने कुली का काम शुरू किया और अपना अभ्यास जारी रखा। अंततः ग्रीसवासियों की आशाओं पर तुषारापात करते हुए उसने बड़ी आसानी से यह दौड़ जीत ली। कनाडा लौटने पर उसे अनेक पुरस्कारों से पुरस्कृत किया गया।

अचूक निशानेबाज गुड ब्रांड

एथलेटिक्स के बाद सबसे बड़ी स्पर्धा शूटिंग की थी, जिसमें 17 प्रतियोगिताएँ रखी गई थीं। नार्वे के गुड ब्रांड स्टार्ट वोई ने फ्री राइफल थ्री पोजिशन (973 अंकों), 300 मीटर प्रोन तथा 300 मीटर स्टेंडिंग में पहला स्थान बनाकर अपने देश का नाम ऊँचा किया, जबकि ग्रेट ब्रिटेन के मार्लिन बंधुओं—जेराल्ड एवं सिडनी ने ट्रेप शूटिंग में अपना दबदबा बनाया। सिंगल शूट में जहाँ जेराल्ड पहले एवं सिडनी तीसरे स्थान पर रहा, वहीं डबल शूट में इसका ठीक विपरीत परिणाम आया। रैपिड फायर पिस्टल में पहले स्थान पर आनेवाला फ्रांस का मौरिस लेकोक इस प्रतियोगिता का सबसे बुजुर्ग विजेता खिलाड़ी था। जीत के समय उसकी आयु 52 वर्ष 15 दिन थी।

फोरॉन के समुद्रतट पर तैराकी की स्पर्धाएँ संपन्न हुईं, जिसमें तैराकों को काफी परेशानी उठानी पड़ी। 47 वर्षीय विलियम हेनरी ने ग्रेट ब्रिटेन टीम का प्रतिनिधित्व करते हुए 4×250 मीटर फ्री स्टाइल रिले में तीसरा स्थान पाया।

साईकलिंग में इटली के फ्रांसिस्को वेरी ने 333.3 मीटर टाईम ट्रायल, 1000 मीटर स्प्रिंट व 5000 मीटर ट्रेक रेस जीतकर तिहरी सफलता अर्जित की। 2000 मीटर वैंडम में दूसरा स्थान जर्मनी के मैक्स एवं ब्रून्नो गोट्ज भाइयों ने पाया।

तलवारबाजी के मुकाबलों में बेल्जियम के सिरिल वब्रूर्ग ने मास्टर्स की इपी एवं सेब्रे का खिताब जीता। जिमनास्टिक में फ्रांस के पियरे पैस्से ने व्यक्तिगत मुकाबलों के दोनों ही खिताब (5 व 6 इवेंट्स) जीते, जबकि इन्हीं दोनों मुकाबलों में इटली के अल्बर्टो ब्रेग्लियों एवं फ्रांस के जार्जेस चारमोइले का स्थान क्रमशः दूसरा व तीसरा रहा।

प्रथम विजेता पति-पत्नी

लॉन टेनिस के 4 में से 3 मुकाबले फ्रांसिसियों ने जीते। इनमें मैक्स डेकुगिस ने अपने ही साथी मौरिस गेरमोट को 6-1, 7-9, 6-1, 6-1 से हराकर पुरुषों का एकल खिताब जीता, साथ ही अपनी पत्नी मेरी के साथ मिलकर यूनानी जोड़ी जार्जियस एवं सोफिया मैरीनोव को 6-1, 6-1 से हराकर सहयुगल का खिताब भी जीता। इस प्रकार पति-पत्नी के रूप में जीत हासिल करनेवाली वह पहली जोड़ी हुई।

भारोत्तोलन में इस बार भी एक और दोनों हाथों से भार उठाने की स्पर्धा हुई, जिसमें जोसफ स्टीनवाख (आस्ट्रिया, एक हाथ) और डिमीट्रियास तोफालास (ग्रीस, दोनों हाथ) ने सफलता पाई। कुश्ती में ग्रीको-रोमन ढंग की तीन प्रतियोगिताएँ हुईं, जिनमें लाईटवेट में रूडोल्फ वाल्टजल (आस्ट्रिया), मिडिलवेट में वार्नर वेकमैन (फिनलैंड) तथा हैवीवेट में सोरेन जेनोन (डेनमार्क) को चैंपियन होने का गौरव मिला।

रोइंग में इटलावी खिलाड़ियों ने 6 में से 4 मुकाबले जीतकर अपना दबदबा बनाया।

जियोर्गियो सिजेना ने तीन मुकाबलों में काक्सवेन (मार्गदर्शक) की भूमिका निभाकर अपने दल को विजयी बनाया। उस समय उसकी उम्र मात्र 14 वर्ष 10 दिन थी और वह इस आयोजन का सर्वाधिक अल्पायु विजेता था।

इस तरह एथेंस में संपन्न इस प्रतियोगिता को भले ही अंतर्राष्ट्रीय ओलंपिक समिति ने अधिकृत प्रतियोगिता की मान्यता नहीं दी, लेकिन यह निर्विवाद सत्य है कि इस आयोजन की वजह से ओलंपिक खेलों की शान पुन: लौटी। ग्रीस के खेल प्रेमी दर्शकों से भरे स्टेडियम इसके गवाह रहे।

पदक-तालिका—1906

देश	स्वर्ण	रजत	कांस्य
फ्रांस	15	9	16
अमरीका	12	6	5
ग्रीस	8	13	13
ग्रेट ब्रिटेन	8	11	6
इटली	7	6	3
स्विट्ज़रलैंड	5	4	2
जर्मनी	4	6	4
नार्वे	4	1	—
आस्ट्रिया	3	3	2
स्वीडन	2	5	7
हंगरी	2	5	3
बेल्जियम	2	2	3
डेनमार्क	2	2	1
फिनलैंड	2	—	1
कनाडा	1	1	—
नीदरलैंड	—	1	2
आस्ट्रेलिया	—	—	3
चेकोस्लोवाकिया	—	—	2
दक्षिण अफ्रीका	—	—	1

चौथा ओलंपिक : 1908–लंदन

वर्ष 1905 में अंतर्राष्ट्रीय ओलंपिक समिति के अगले खेल-आयोजन के लिए बर्लिन तथा रोम में से किसी एक शहर का चुनाव करना था, लेकिन बर्लिन ने जब अपना नाम वापस ले लिया तो मेजबानी दूसरे दावेदार रोम को सौंप दी गई। परंतु 1906 में इटली के वेसावियस ज्वालामुखी के फट जाने से काफी धन-जन की बर्बादी हुई, कारणवश इटली ने इन खेलों के आयोजन के प्रति अपनी असमर्थता जाहिर की। तब 1906 (एथेंस) में आयोजित अंतरिम ओलंपिक के दौरान अंतर्राष्ट्रीय ओलंपिक समिति ने ब्रिटिश प्रतिनिधि लार्ड डेसबॉरो को अपने यहाँ लंदन में ये खेल आयोजित कराने की जिम्मेदारी सौंपी तथा यह भी तय किया गया कि ये खेल 13 जुलाई, 1908 को वापर्ड बुश में उद्घाटित होंगे।

दो वर्ष से भी कम समय में अंतर्राष्ट्रीय ओलंपिक समिति द्वारा मान्य 21 खेलों की तैयारी कर पाना कोई आसान काम नहीं था, लेकिन ब्रिटिश ओलंपिक संघ ने विभिन्न खेल-संगठनों की सहायता से यह काम आसान बना लिया। इस दौरान पश्चिम लंदन में 40 हजार पौंड की लागत से लगभग 68 हजार दर्शकों की क्षमतावाला एक नया स्टेडियम भी बनाया गया, जो आधुनिकतम स्टेडियमों में गिना गया। यहाँ एथलेटिक्स के अलावा सायकिलिंग, तैराकी, कुश्ती, फुटबाल एवं जिमनास्टिक की प्रतियोगिताएँ संपन्न हुईं।

पदक की परंपरा शुरू हुई

लंदन आयोजन की तैयारी में पूरी तरह जुट गया, समय-समय पर आयोजन-संबंधी बैठक होती रही तथा कई महत्त्वपूर्ण निर्णय लिए जाते रहे। ऐसे ही महत्त्वपूर्ण निर्णयों में एक था, स्पर्धा में पहले तीन स्थान पानेवाले खिलाड़ियों को पुरस्कृत करने का। इसमें पहले स्थान पर आनेवाले खिलाड़ी को स्वर्ण, दूसरे स्थानवाले खिलाड़ी को रजत तथा तीसरे स्थान पर आनेवाले खिलाड़ी को कांस्य पदक दिया जाना तय हुआ। खेल-नियमावली से ब्रिटिश प्रेक्षकों के अच्छी तरह वाकिफ होने की वजह से कुबरटिन ने इन खेलों में ब्रिटिश प्रेक्षक रखने की भी अनुमति दे दी।

इस बार आयोजन में न केवल हिस्सा लेनेवाले देशों की संख्या में वृद्धि हुई, बल्कि खिलाड़ियों की संख्या भी बढ़ी। 28 देशों के 2056 खिलाड़ियों ने, जिनमें 36 महिलाएँ भी शामिल थीं, प्रतियोगिता में शिरकत की। इस बार आइसलैंड एवं तुर्की ने पहली बार ओलंपिक खेलों में अपने कदम रखे, जबकि आस्ट्रेलिया तथा न्यूजीलैंड की संयुक्त टीम

आस्ट्रेलेशिया के नाम से प्रतियोगिता में उतरी।

यद्यपि ये खेल 27 अप्रैल को रैकेट की स्पर्धा से प्रारंभ होकर 31 अक्टूबर तक चलते रहे, परंतु एथलेटिक्स एवं अन्य ग्रीष्मकालीन खेल जुलाई के दूसरे एवं तीसरे सप्ताह में संपन्न हुए। इसी दौरान 13 जुलाई को ब्रिटेन के सम्राट एडवर्ड सप्तम ने नवनिर्मित वाईट सिटी स्टेडियम में बरसते पानी के दौरान इन खेलों का विधिवत् उद्घाटन किया, परंतु मार्च पास्ट के दौरान अमरीकी एवं स्वीडिश टीमों ने सम्राट के सम्मुख अपना झंडा झुकाने से इंकार कर दिया, क्योंकि स्टेडियम में उनका झंडा नहीं फहराया गया था। फिनलैंड ने भी, जो उस समय रूस के कब्जे में था, रूसी झंडा लेकर चलने से इंकार कर दिया और बगैर झंडे के मार्च पास्ट किया। अमरीकियों की झंडा न झुकाने की वह प्रथा आज भी चली आ रही है।

पक्षपात के बाद भी अमरीकी श्रेष्ठ

पिछले तीनों ओलंपिकों की तरह ही इस बार भी एथलेटिक्स के मुकाबलों में अमरीकी आधिपत्य कायम रहा। ब्रिटिश प्रेक्षकों द्वारा पक्षपात किए जाने के बाद भी 26 में से 16 स्वर्ण अमरीकी दल के हिस्से में आए। इस बार इस मुकाबले में 7 विश्व तथा 7 ओलंपिक-रिकार्ड भी कायम हुए, जिनमें से 4 विश्व तथा 5 ओलंपिक-रिकार्ड अमरीकी खिलाड़ियों ने स्थापित किए, न्यूयार्कवासी मेल्विन, शेपर्ड ने अकेले ही 800 मी. (1:52.8 सेकेंड) तथा 1500 मीटर (4:03.8 सेकेंड) में दो विश्व-रिकार्ड स्थापित किए,

शेष दो—फारेस्ट स्मिथसन ने 110 हर्डल्स में 15 सेकेंड का समय देकर तथा चार्ल्स बैकॉन ने 400 हर्डल्स में 55 सेकेंड का समय देकर बनाया। किस्मती बैकॉन को, जिसने दूसरे धावक की बाधा पार कर अपनी दूरी तय की थी, अयोग्य करार नहीं ठहराया गया। पाँचवाँ विश्व-कीर्तिमान स्वीडन के एरिक लेमिंग ने 179 -10" दूर भाला फेंककर बनाया।

चिकित्साशास्त्र का छात्र अमरीकी जान टेलर 4×400 मी. की रिले स्वर्ण जीतकर ओलंपिक इतिहास का पहला अश्वेत खिलाड़ी बना, जबकि दौड़ में श्रेष्ठता दिखानेवाले अन्य अमरीकी खिलाड़ियों में सदाबहार रे एवरी तथा मार्टिन शेरीडान का भी नाम था। इन दोनों ने 2-2 स्वर्ण जीते। रे एवरी ने 1906 के अनधिकृत ओलंपिक के साथ ही चौथी बार इस प्रतियोगिता में हिस्सा लिया तथा इस दौरान 10 प्रतियोगिताओं में हिस्सा लेकर सभी में अव्वल रहा, जोकि एक कीर्तिमान बना।

इस बार प्रतियोगिता में सबसे तेज धावक होने का गौरव दक्षिण अफ्रीका के एक अनजान खिलाड़ी रेजिनाल्ड वाकर ने हासिल किया। उसने कई दिग्गजों को पीछे छोड़ते हुए 100 मी. की यह दूरी नया ओलंपिक-कीर्तिमान बनाते हुए 10.8 सेकेंड से जीती।

इसके सम्मान में स्टेडियम में उपस्थित लगभग 50 हजार दर्शक देर तक ताली बजाते रहे। 200 मी. की दौड़ कनाडा के आयरिश मूल के राबर्ट कार ने 22.6 सेकेंड के समय में जीती। इसके पहले 100 मी. में वह तीसरे स्थान पर था। 400 मी. की प्रतियोगिता विवादास्पद रही, लेकिन यही विवाद बाद में इतिहास बन गया। घटना कुछ यूँ हुई—

इस दौड़ के फाइनल में पहुँचनेवाले चार खिलाड़ियों में से तीन डब्ल्यू. सी. राबिस, जे. सी. कारपेंटर एवं जान टेलर अमरीकी थे, जबकि चौथा 26 वर्षीय लेफ्टिनेंट विंघम हाल्सवेल ब्रिटिश था। ब्रिटिश अधिकारियों को यह शक था कि जीतने के लिए अमरीकी जरूर गलत तरीका अपनाएँगे। अतः उन्होंने प्रत्येक 20 मीटर के फ़ासले पर एक-एक तकनीकी अधिकारी खड़ा कर दिया। जब दौड़ में अंतिम 100 मीटर की दूरी शेष रह गई, तब कारपेंटर एकाएक अपनी लाइन छोड़ हाल्सवेल की लाइन में आ गया, जिससे ब्रिटिश अधिकारियों ने 'फाउल' चिल्लाकर फिनिश लाइन का फीता हटा लिया। इस घटना पर काफी हो-हल्ला मचा और अंततः कारपेंटर को अयोग्य ठहराकर दौड़ दूसरे दिन पुनः कराने का निर्णय लिया गया। इस पर शेष दोनों अमरीकी अड़ गए और उन्होंने फिर दौड़ने से इनकार कर दिया। तब हाल्सवेल ने यह दौड़ अकेले ही 50.0 सेकेंड में पूरी की और वह अनोखे ढंग से विजेता घोषित हुआ।

पोल वाल्ट की स्पर्धा में मैराथन दौड़ की वजह से काफी बाधा आई। अमरीका के एडवर्ड कूके एवं अल्फ्रेड गिल्बर्ट ने 3.20 मीटर की ऊँचाई नापकर समान रूप से पहला स्थान पाया। दोनों को स्वर्ण पदक दिया गया। गिल्बर्ट ने बाद में स्पाईक शूज का प्रचलन किया तथा खेलों से निवृत्ति के बाद वह इलेक्ट्रानिक्स एवं जादुई वस्तुएँ बनाने वाली एक फर्म ए. सी. गिल्बर्ट कंपनी का अध्यक्ष भी नियुक्त हुआ।

ब्रिटेन के जार्ज लार्नट ने 3500 मी. और 10 मील की पैदल चाल में तथा भालाफेंक में विश्व-कीर्तिमान बनानेवाले स्वीडेन के एरिक लेमिंग ने भालाफेंक की फ्री स्टाइल में भी स्वर्ण जीता। हैमर थ्रो में अमरीकी जान फ्लेनगन ने लगातार तीसरी बार यह स्पर्धा जीती। इस बार उसने 51.92 मीटर दूर हैमर फेंककर ओलंपिक रिकार्ड भी बनाया।

डोरेंडो का साहस

वातावरण में यद्यपि ब्रिटिश एवं अमरीकी खिलाड़ियों के बीच विवादों की कड़वाहट थी, लेकिन मैराथन दौड़ में सभी के मन में एक विशेष उत्सुकता थी। इस बार इस दौड़ की दूरी 40 हजार से बढ़ाकर 42.195 मीटर (26 मील, 385 गज) कर दी गई। दूरी बढ़ाने का केवल एक ही मकसद था—दौड़ का समापन वाईट सिटी सी. टी. स्टेडियम में ठीक रायल बाक्स के सामने हो। बाद में यह दूरी ओलंपिक मैराथन के लिए निश्चित कर दी गई।

24 जुलाई को आयोजित इस दौड़ में 16 देशों के 56 प्रतियोगियों ने हिस्सा लिया। पहले 5 मील तक स्काटलैंड का टी. जैक सबसे आगे था, लेकिन चार्ल्स हैफ्रेसन (द. अफ्रीका), डोरेंडो पैट्री (इटली), जैक प्राईस एवं फ्रेड लार्ड ने भी बराबर अपनी गति बनाए रखी। अंतिम 2 मील की दूरी शेष रहते डोरेंडो एवं हैफ्रेसन में से किसी एक के विजेता बनने का आसार नजर आने लगा, लेकिन इस अंतिम दूरी में दोनों ने भयंकर गलतियाँ कीं। हैफ्रेसन ने रास्ते में कुछ शैंपेन पी ली, जिससे उसके पेट में दर्द होने लगा और वह सुस्त हो गया, जबकि डोरेंडो ने दर्शकों की उत्तेजना पाकर एकाएक अपनी रफ्तार और तेज कर ली जिससे वह जल्दी ही थक गया और सुस्त भी हो गया, फिर भी स्टेडियम में प्रवेश करनेवाला पहला धावक डोरेंडो ही था। परंतु तब तक वह बुरी तरह थक चुका था, दूसरे अनभिज्ञतावश वह स्टेडियम में दाएँ के बजाय बाईं ओर मुड़ गया। इसी दरम्यान वह लड़खड़ाकर गिरा, उठा, फिर दौड़ा और फिर गिरा। पाँचवीं बार लड़खड़ाकर गिरने के पहले भी विजय-लक्ष्य उससे कुछ दूरी पर था। कुछ लोगों का सहारा पाकर वह फिर उठा और दौड़ पूरी की। उसका समय रहा 2 घंटा, 54 मिनट और 46.4 सेकेंड। दौड़ पूरी करने के बाद ही वह पुनः गिर पड़ा और उसे स्ट्रेचर पर लादकर अस्पताल ले जाया गया। डोरेंडो के कुछ समय बाद अमरीका के 22 वर्षीय जान जे. हैयंस ने दौड़ पूरी की। फिर हैफ्रसन तथा जोसेफ फोरशा ने भी एक के बाद एक दौड़ पूरी की।

डोरेंडो ने जब दौड़ पूरी की तो उसकी जीत की खुशी में इटाली स्वर लहरी आकाश में गूँजने लगी, लेकिन अपनी दौड़ पूरी करने के बाद जान हैयस ने इस बात पर आपत्ति उठाई कि डोरेंडो ने यह दूरी सहायता लेकर पूरी की है, इसलिए उसे अयोग्य माना जाए। बाद में यही हुआ, डोरेंडो को अयोग्य करार दे दिया गया।

अगले दिन जब डोरेंडो पूरी तरह स्वस्थ्य हो गया तो उसने निर्णायकों के निर्णय को चुनौती दी, लेकिन अंतिम क्षणों में खिचे चित्रों में भी इस बात के प्रमाण मिल गए कि डोरेंडो ने यह दौड़ सहारा लेकर पूरी की थी। बाद में 22 वर्षीय डोरेंडो को उसके साहस के लिए ब्रिटिश महारानी एलैक्जेंडर ने अपनी ओर से एक विशेष 'स्वर्ण कप' प्रदान कर सम्मानित किया। बाद में वह पेशेवर खिलाड़ी बन गया।

पिता-पुत्र साथ-साथ विजेता

9 देशों के बीच हुई शूटिंग में इस बार 15 मुकाबले हुए और सभी परिणाम एक ही दिन में—11 जुलाई को आ गए। ग्रेट ब्रिटेन ने 6 मुकाबलों में स्वर्ण पाकर धाक जमाई। इनमें से तीन मुकाबलों के तीनों ही स्थान उसके खिलाड़ियों ने जीते। यहीं से स्वीडन के इवान पिता-पुत्र की उपलब्धियाँ शुरू हुईं। रनिंग डियर शूटिंग (सिंगल शाट) में जहाँ 60

वर्षीय आस्कर ने स्वर्ण जीता, वहीं उसने इस प्रतियोगिता के टीम मुकाबले में अपने 32 वर्षीय पुत्र एल्फ्रेड के साथ स्वीडन को स्वर्ण दिलाया। इस तरह ओलंपिक इतिहास में एक ही खेल में पिता-पुत्र द्वारा स्वर्ण जीतने की यह पहली घटना थी। इन दोनों ने 1920 तक ओलंपिक खेलों में साथ-साथ शिरकत की और 15 पदक जीते। इसमें आस्कर ने 2 स्वर्ण, 2 रजत एवं 2 कांस्य तथा एल्फ्रेड ने 3 स्वर्ण, 3 रजत एवं 3 कांस्य पदक जीते। आस्कर को ही आज भी ओलंपिक खेलों का सबसे बुजुर्ग खिलाड़ी तथा पदक-विजेता होने का गौरव प्राप्त है। पेरिस (1924) के ओलंपिक खेलों में भी वह 77 वर्ष की आयु में टीम में चुना गया था, लेकिन खराब स्वास्थ्य के कारण हिस्सा नहीं ले सका।

तैराकी स्पर्धाएँ पहली बार घिरे हुए पूल में हुईं। इसके लिए मुख्य स्टेडियम के बीच में 100 मीटर लंबा तरणताल बनाया गया। इस बार 9 स्पर्धाएँ हुईं, जिनमें 4 विश्व-कीर्तिमान दर्ज हुए। सबसे पहले 18 जुलाई को 200 मीटर बैक स्ट्रोक में 25 वर्षीय ब्रिटिश फ्रेडरिक होलमैन ने 3:09.2 सेकेंड का समय लेकर नया कीर्तिमान बनाते हुए मुकाबला जीता। फिर दो दिन बाद अमरीकी चार्ल्स डेनियल्स ने 100 मी. फ्री स्टाइल में न केवल चार वर्ष पुराना (सेंट लुई) अपना खिताब बरकरार रखा, बल्कि इस बार 1:05.6 सेकेंड का समय लेकर विश्व-कीर्तिमान भी स्थापित किया। 4×200 मीटर फ्री स्टाइल में मेजबान देश के तैराकों ने 10:56.5 सेकेंड का समय निकालकर तथा एक दिन बाद ही तैराकी की सबसे लंबी स्पर्धा 1500 मीटर फ्री स्टाइल में मेजबान देशवासी हेनरी टेलर ने अंतिम विश्व-कीर्तिमान स्थापित किया। हेनरी 4×200 मीटर की स्पर्धा-टीम में भी शामिल था, जबकि इसी रिले में 18 वर्ष 6 दिन की आयु का विलियम फोस्टर भी था, जोकि इस आयोजन का सबसे युवा विजेता था।

हार्डबोर्ड डाइविंग का स्वर्ण स्वीडिश गोताखोर हैल्मर जानसन ने जीता। इस स्पर्धा में एक ब्रिटिश गोताखोर बोर्ड से टकराकर न केवल जख्मी हो गया, बल्कि बेहोश होकर नीचे पानी में गिर गया, जिसे हैल्मर ने ही बचाया। बाद में हैल्मर ने उसके दुर्भाग्य को समझते हुए अपनी ओर से उसे एक चाँदी का कप भेंट किया। वाटरपोलो में चार देशों के बीच हुए मुकाबलों में ग्रेट ब्रिटेन ने बेल्जियम को हराकर अपना खोया ताज पुनः हासिल किया।

मेजबान हावी

रोइंग-मुकाबलों में पूरी तरह ब्रिटिश खिलाड़ी छाए रहे। हेनले में संपन्न इस मुकाबले के चारों स्वर्ण उसके खिलाड़ियों ने हथिया लिए। इसमें सिंगल स्कल्स के मुकाबले में 40 वर्षीय हैरी ब्लैकस्टाफ ने अपने से आधी उम्र के हमवतन अलैक्जेंडर मैककूलोच को पराजित कर स्वर्ण जीता। वैसे इस दौड़ के अंतिम 50 मी. तक हैरी, अलैक्जेंडर से पीछे

चल रहा था। इसी मुकाबले के एटस् में स्वर्ण जीतनेवाले ब्रिटिश दल के दो सदस्यों—गे निकल्स तथा चार्ल्स बुनेल के पुत्रों ने भी बाद में इसी मुकाबले में पदक जीता।

यार्टिंग के मुकाबलों में भी मेजबान पूरी तरह हावी रहा और 6,7,8 तथा 12 मी. के वर्ग में स्वर्ण जीत। इन्हीं स्पर्धाओं के 7 मी. कयाक में मेजबान देश की फ्रांसिस क्लांटी एवेट अपने पति चार्ल्स के साथ स्वर्ण पदक जीतने में सफल रही। अधिकृत ओलंपिक खेलों में पति-पत्नी द्वारा स्वर्ण पदक जीते जाने की यह पहली घटना थी।

कुश्ती मुकाबलों में फ्री स्टाइल के साथ ही ग्रीको-रोमन शैली को भी शामिल किया गया था और दोनों वर्गों की कुल 9 स्पर्धाएँ आयोजित हुईं। पिछले ओलंपिक में फ्री स्टाइल शैली के फ्लाईवेट वर्ग में पहला स्थान पानेवाले अमरीकी पहलवान जार्ज मेनर्ट ने यहाँ बेंटमवेट वर्ग में स्वर्ण जीता। ब्रिटिश जार्ज डी रेल्विस्कोव ने पहले मिडिलवेट वर्ग में रजत पदक जीता, फिर तीन दिन बाद लाइटवेट वर्ग में स्वर्ण पाया। इन दोनों ही वर्गों के सभी तीनों स्थान ब्रिटिश पहलवानों ने जीते।

ग्रेट ब्रिटेन का दबदबा मुक्केबाजी के रिंग में भी पूरी तरह से रहा : 5 स्पर्धाओं के 15 में से 14 पदक (एक रजत छोड़कर) ब्रितानी मुक्केबाजों ने जीते। एकमात्र रजत पदक आस्ट्रेलिया के रेजिनाल्ड बेकर ने मिडिलवेट वर्ग में पाया। फीदरवेट वर्ग का चैंपियन रिचर्ड गन इस प्रतियोगिता में सबसे अधिक उम्र (37 वर्ष, 254 दिन) का स्वर्ण पदक विजेता हुआ। गन इसके पहले 1894, 95,96 में ए. बी. ए. चैंपियनशिप भी जीत चुका था तथा 1900 में वह रिटायर भी हो चुका था, लेकिन ओलंपिक में भाग लेने के जोश ने उसे 8 वर्ष बाद फिर से रिंग में खींच लिया। मिडिलवेट वर्ग में स्वर्ण पदक क्रिकेट के मशहूर खिलाड़ी और कप्तान जान डगलस ने जीता।

तलवारबाजी के 4 मुकाबलों में 13 देशों ने हिस्सा लिया, जिसमें हंगरी के जेनों फुच ने सेब्रे में टीम तथा व्यक्तिगत खिताब का स्वर्ण जीता, जिसे उसने 1912 में भी बरकरार रखा। पेशे से डाक्टर फुच बाबस्लेज़ तथा रोइंग का भी अच्छा खिलाड़ी था। इसी के व्यक्तिगत मुकाबले में डेनमार्क के 19 वर्षीय छात्र इवान ओसिर ने पहली बार भाग लिया। फिर वह अगले 7 आयोज़नों (1948 लंदन) तक भाग लेता रहा।

तीरंदाजी में जहाँ पिता विलियम डाट ने यार्कराऊंड में स्वर्ण पदक जीता, वहीं उसी दिन पुत्री लोटी डाट ने, जो टेनिस एवं गोल्फ की भी अच्छी खिलाड़ी थी, महिला वर्ग का रजत पदक जीता। पिता-पुत्री द्वारा एक ही ओलंपिक में पदक जीतने की यह पहली घटना थी।

साईकिलिंग के 1000 मी. स्प्रिंट में किसी भी खिलाड़ी को पदक नहीं मिला क्योंकि पहले एवं दूसरे स्थान पर आनेवाले दोनों खिलाड़ी निर्धारित समय के भीतर अपनी दौड़ पूरी नहीं कर सके थे; जबकि इस स्पर्धा में शामिल दो अन्य प्रतियोगी साईकिलें पंचर

होने के कारण पहले ही अलग हो गए।

लॉन टेनिस में इनडोर तथा आउटडोर के रूप में दो बार मुकाबले हुए जिसमें मेजबान देश के ही खिलाड़ी छाए रहे। जीतनेवाले खिलाड़ियों में आर्थर गोरे, रेजिनाल्ड डोहर्ती, डोरेथी चैंबर्स-जैसे नाम थे। टेनिस की ही एक प्रतियोगिता जेए डी पॉस में अमरीकी जे. गुल्ड ने स्वर्ण जीता। रैकेट एवं पोलो की स्पर्धा में सिर्फ ग्रेट ब्रिटेन के खिलाड़ी थे।

एबी में केवल आस्ट्रेलिया तथा ग्रेटब्रिटेन की ही टीमें आई थीं, जिसमें आस्ट्रेलिया ने स्वर्ण जीता। आस्ट्रेलियाई टीम में 16 वर्ष, 149 दिन की आयु का एक युवा खिलाड़ी डेनियल कैरोल भी था, जिसने 12 साल बाद इसी मुकाबले में अमरीकी टीम का प्रतिनिधित्व कर स्वर्ण जीता। लेक्रोस में भी सिर्फ दो ही टीमें थीं, जिसमें मेजबान देश को कनाडा के हाथों 14-10 से शिकस्त खानी पड़ी। हाकी में केवल ब्रिटिश द्वीपों ने भाग लिया, और फाइनल में इंग्लैंड ने आयरलैंड को 8-1 से हराया। फुटबाल में ब्रिटेन ने डेनमार्क को 2-0 से हराकर स्वर्ण पदक हासिल किया। इसके अलावा क्रिकेट की भी प्रतियोगिता होनेवाली थी, लेकिन उसे इस आधार पर हटा दिया गया कि यह खेल गिने-चुने देशों में ही खेला जाता है।

इस ओलंपिक में बर्फ पर खेला जानेवाला खेल फिगर स्कैटिंग भी आयोजित किया गया, जिसके चार मुकाबले हुए। स्पेशल फिगर स्कैटिंग वर्ग में 219 अंक बनाकर निकोलाई पैनीन ने रूस (जार) को इन खेलों में पहला स्वर्ण दिलाया। चार वर्ष बाद पैनीन रूस के शूटिंग दल के साथ फिर ओलंपिक में उतरा, लेकिन इस बार फ्रीपिस्टल के मुकाबले में वह 8वें स्थान पर आया, जबकि मिलिट्री रिवाल्वर टीम 50 मी. में वह चौथे स्थान पर रहा। वैसे पैनीन 10 बार शूटिंग का राष्ट्रीय चैंपियन रह चुका था।

इस प्रकार लंदन का आयोजन काफी सफल रहा। शेपर्ड बुश के नवनिर्मित स्टेडियम में करीब 2,50,000 दर्शकों ने खेल का आनंद लिया। इस खेल में पहली बार किसी व्यक्तिगत स्पर्धा में भाग लेने के लिए खिलाड़ियों की संख्या अधिकतम 12 निश्चित कर दी गई। प्रतियोगिता के दौरान निर्णायकों की स्थिति पर ब्रिटेन तथा अमरीकी खिलाड़ियों के बीच तनाव बना रहा। इतना ही नहीं, अमरीकियों ने ब्रिटिश अधिकारियों के निर्णय से खफा होकर उनके विरुद्ध पर्चे भी बँटवाए। कुबरटिन ने भी यहाँ पक्षपात की गंध महसूस की और अंतर्राष्ट्रीय ओलंपिक समिति की अगली बैठक में यह निर्णय लेने पर मजबूर हो गया कि अब ओलंपिक खेलों में मेजबान देश के अधिकारी निर्णायक नहीं होंगे। इस सबके बावजूद ये खेल काफी सफल रहे और इसी आयोजन की सफलता से प्रेरित होकर कुबरटिन ने ग्रीस (1910) में होनेवाले दूसरे अंतरिम ओलंपिक खेलों के आयोजन का विचार त्याग दिया।

पदक-तालिका—1908

देश	स्वर्ण	रजत	कांस्य
ग्रेट ब्रिटेन	57	50	40
अमरीका	23	12	11
स्वीडन	8	6	11
फ्रांस	5	5	9
जर्मनी	3	5	4
हंगरी	3	4	2
कनाडा	3	3	8
नार्वे	2	3	3
इटली	2	2	—
बेल्जियम	1	5	2
आस्ट्रेलेशिया	1	2	1
रूस (जार)	1	2	—
फिनलैंड	1	1	3
दक्षिण अफ्रीका	1	1	—
ग्रीस	—	3	1
डेनमार्क	—	2	3
चेकोस्लोवाकिया	—	—	2
आस्ट्रिया	—	—	1
नीदरलैंड	—	—	1
न्यूजीलैंड	—	—	1

पाँचवाँ ओलंपिक : 1912—स्टाकहोम

1909 में ओलंपिक खेलों के पाँचवें आयोजन का भार स्वीडन की राजधानी स्टाकहोम को सौंपा गया। कुबरटिन भी इस स्थल के चयन से पूर्णतः संतुष्ट था। फिर स्वीडिश

आयोजकों ने भी आयोजन को यादगार बनाने में कोई कसर नहीं रख छोड़ी। एथलेटिक्स मुकाबलों के लिए 31 हजार दर्शकों की क्षमतावाला एक नया दो मंजिला स्टेडियम बनवाया गया, जिसके सभी दरवाजे 'आर्च' से सुसज्जित थे। ब्रिटेन के अनुभवी ग्राउंडमैन चार्ल्स पेरी की देखरेख में इस मुख्य स्टेडियम में सिंडर ट्रैक भी बिछाया गया। चार्ल्स ने इसके पहले 1896 तथा 1908 और बाद में 1920 में भी यह कार्य किया। ट्रैक पर अलग-अलग लेन बनाए गए और फेंक-प्रतियोगिताओं में जाली का प्रयोग किया गया।

प्रतियोगिता में हिस्सा लेने आए खिलाड़ियों के ठहरने का इंतजाम शहर के विभिन्न हिस्सों में किया गया, लेकिन अमरीकी खिलाड़ियों ने इन स्थानों के बदले अपने जहाज ट्रांस एटलांटिक लाईनर में ही ठहरना पसंद किया। शहर के विभिन्न हिस्सों में ठहरे खिलाड़ियों ने स्वीडिश माहौल का भरपूर लुत्फ उठाया; जिसमें पहली बार इन खेलों में शिरकत करनेवाले देश जापान, लक्समबर्ग, पुर्तगाल एवं यूगोस्लाविया के खिलाड़ी भी शामिल थे।

यूँ तो खेलों की शुरुआत 5 मई को लॉन टेनिस के इनडोर मुकाबले से हुई, लेकिन अधिकांश मुकाबले जुलाई माह में संपन्न हुए। स्वीडिश नरेश गुस्ताव पंचम ने एक आकर्षक रंगीन परेड के बाद इन खेलों के विधिवत् उद्घाटन की घोषणा की। प्रतियोगियों को पहली बार व्यक्तिगत आधार के बदले राष्ट्रीय आधार पर भाग लेने दिया गया। मार्च पास्ट में फिनलैंड को मजबूरन रूस (जार) का झंडा लेकर चलना पड़ा।

उड़न फिनो का उदय

इस बार कुशल व्यवस्था के साथ ही साथ प्रतियोगिताओं की संख्या में भी वृद्धि की गई। एथलेटिक्स में 30 मुकाबले हुए, जो आज भी—92 वर्ष के लंबे इतिहास में—सर्वाधिक हैं। इन मुकाबलों में हालाँकि अमरीका ने 16 स्वर्ण जरूर जीते, लेकिन यहीं से इन मुकाबलों में उसकी पकड़ ढीली पड़नी शुरू हो गई। दूसरी ओर फिनलैंड के उड़न फिनों का उदय यहीं से हुआ। फिनिश एथलीटों में सबसे जानदार प्रदर्शन जोहंस पेट्री कोलेहमैनेन का रहा, जिसे समीक्षकों ने 'हेंस दी माईटी' की भी संज्ञा दी।

9 दिसंबर, 1889 को कुओपिओ में जन्मा हेंस असाधारण प्रतिभा का मालिक था। उसका पेशा ईंट बनाना था। इस ओलंपिक में वह 10 जुलाई को पहली बार शामिल 5000 मी. की दौड़ में फ्रांस के जीन बायन को मात्र एक गज के फासले से मात देकर न केवल 14:36.6 सेकेंड से चैंपियन हुआ, बल्कि विश्व-कीर्तिमान बनाने में भी सफल रहा। इससे दो दिन पहले ही उसने 10.000 मी. की दौड़ जीती थी, जबकि पाँच दिन

बाद 12 हजार मी. की क्रास कंट्री दौड़ के व्यक्तिगत मुकाबले में स्वर्ण तथा टीम मुकाबले में अपने देश को रजत पदक दिलाया। हेंस के बारे में समीक्षकों का मत था कि यदि 1916 का ओलंपिक स्थगित नहीं होता, तो उसका कारनामा और विस्तृत होता। अलबत्ता 1920 के ओलंपिक खेलों में वह फिर उतरा और ठंडे मौसम में 42 प्रतियोगियों के बीच मैराथन का स्वर्ण जीत लिया। वैसे हेंस परिवार को इससे पहले एक विलक्षण गौरव भी हासिल हुआ। इस परिवार के तीन भाइयों ने अलग-अलग समय में विश्व-कीर्तिमान स्थापित किया था। सबसे बड़े विल्जामी ने 1912 में पेशेवर धावकों की मैराथन दौड़ में, मँझले टाटू ने 1912 में 20 हजार मी. दौड़ में तथा सबसे छोटे हेंस ने 1912 में ओलंपिक के 3000 मी. तथा 5000 मी. दौड़ में विश्व-कीर्तिमान बनाया था।

अमरीकी धावकों में मिशिगन विश्वविद्यालय का 23 वर्षीय छात्र राल्फ क्रेग अपने ही हमवतन आर्चीहान (1904) के बाद 100 मी. तथा 200 मी. की दौड़ जीतकर डबल पूरा करनेवाला अगला धावक बना। इस बार 100 मी. का यह अंतिम मुकाबला सात बार गलत शुरू हुआ, जिसमें तीन वार क्रेग ने फाउल किया था। 36 वर्ष बाद लंदन ओलंपिक में वह यार्टिंग टीम के कप्तान के रूप में ओलंपिक खेलों में पुनः उतरा।

400 मी. की दौड़ काफी रोमांचक रही, जिसमें सेकेंड के दसवें हिस्से से अमरीकी धावक 18 वर्षीय टेड मेरेडिथ ने अपने ही देशवासी एवं विश्व-रिकार्डधारी मेलविल शेपर्ड को हराकर स्वर्ण पदक जीता। 1500 मी. की दौड़ में भी तगड़ा मुकाबला हुआ, जिसमें आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय (ब्रिटेन) के छात्र अर्नोल्ड जैकसन ने विश्व-रिकार्डधारी अमरीकी एबेल किवीएट को मात्र एक मीटर के अंतर से हराया। जैकसन ने बाद में विश्वयुद्ध में भी हिस्सा लिया। रजत पदक जीतनेवाला किवीएट आज भी जीवित है। आज उसकी उम्र 92 वर्ष है तथा ओलंपिक खेलों में पदक जीतनेवाला वह सबसे बुजुर्ग खिलाड़ी है। कुछ वर्ष पहले उसका रजत पदक चोरी चला गया, जिसका प्रतिरूपी पदक हाल ही में स्वीडिश ओलंपिक समिति ने उसे भेंट किया।

मैराथन दौड़ पिछली बार की तरह ही भरी दुपहरी में आयोजित हुई। शुरुआत में बढ़त हेंस के बड़े भाई टाटू कोलेहमैनेन ने ली, लेकिन शीघ्र ही उसे दो दक्षिण अफ्रीकी धावकों ने पीछे छोड़ दिया और अंततः यह दौड़ दक्षिण अफ्रीका के ही पुलिस सिपाही केनेथ मैक आर्थर ने 2 घंटे 36 मिनट 54.8 सेकेंड के समय से जीत ली। उसके पीछे उसका ही देशवासी क्रिस्टीन गिट्सहेम रहा।

लेकिन इस दौड़ के दौरान एक दुर्घटना भी घटी। पुर्तगाल का 21 वर्षीय फ्रांसिस्को लजारो सूर्य की तेज गर्मी सहन नहीं कर सका, फलस्वरूप दौड़ के अंत में वह गिर पड़ा। उसे अस्पताल पहुँचाया गया, जहाँ अगले दिन उसकी मृत्यु हो गई।

जिम थोर्पे का दुर्भाग्य

लेकिन इन तमाम खिलाड़ियों से कहीं बढ़कर प्रदर्शन एक रेड इंडियन जिम फ्रांसिस थोर्पे ने किया, जो ओलंपिक खेलों की सबसे कठिन प्रतियोगिता डेकाथलन एवं पेंटाथलन का मुकाबला भारी अंतर से जीतकर एकाएक लाखों लोगों का चहेता बन बैठा।

28 मई, 1888 को एक निर्धन परिवार में पैदा हुए जिम ने सरकारी स्कूल में रहकर अपनी आरंभिक पढ़ाई पूरी की। वहीं उसकी जबरदस्त खेल-प्रतिभा उभरकर सामने आई। उस समय तक वह बेसबाल, फुटबाल, बास्केटबाल के अलावा दौड़-कूद में भी काफी प्रवीणता हासिल कर चुका था और इसी आधार पर उसे 1912 के ओलंपिक खेलों में चुना गया।

यहाँ आकर उसने 7 जुलाई को पेंटाथलन की स्पर्धाओं में, जिनमें लंबी कूद, भाला फेंक, 200 मी. दौड़, चक्का फेंक एवं 1500 मी. दौड़ स्पर्धाएँ थीं, स्वर्ण पदक हासिल किया। फिर अगले दिन ऊँची कूद में हिस्सा लेकर चौथा स्थान पाया। पाँच दिन बाद 29 प्रतियोगी होने के कारण तीन दिनों तक चलती रहनेवाली डेकाथलन प्रतियोगिता में हिस्सा लिया और 8412 अंक लेकर स्वर्ण पदक का हकदार हुआ। उसके इस जबरदस्त प्रदर्शन से खुश होकर रूस के जार निकोलस ने उसे माणिक-जड़ित कप भेंट किया, जबकि स्वीडिश नरेश गुस्ताव पंचम ने काँसे की प्रतिमा भेंट करते हुए कहा था—"श्रीमान, आप दुनिया के महानतम खिलाड़ी हैं।"

अमरीका पहुँचने पर उसका भव्य स्वागत हुआ। अनेक स्थानों पर उसका नागरिक सम्मान भी हुआ, लेकिन जनवरी 1913 को आई एक खबर ने सभी को चौंका दिया। खबर थी कि 1909 एवं 10 में बेसबाल लीग में खेलने के लिए जिम ने 25 डालर प्रति सप्ताह का पारिश्रमिक लिया था। जिम ने भी मेहनताना लेना स्वीकार किया और कहा कि अनजाने में ही उसने यह कार्य किया था। फिर भी अमरीकन एथलेटिक्स यूनियन ने सख्त कार्यवाही करते हुए उसे पेशेवर करार दिया और उसका ओलंपिक पदक वापस ले लिया। यह पदक दूसरे स्थान पर आनेवाले स्वीडिश ह्यूगो विस्डलेंडर को देने का निश्चय किया गया, परंतु ह्यूगो ने जिम थोर्पे की महानता स्वीकारते हुए पदक लेने से इनकार कर दिया।

इस घटना के बाद जिम पूरी तरह पेशेवर बन गया। फिर भी अंतिम दिनों में उसकी निर्धनता पुनः उजागर हो गई। पैसों के लिए उसे फिल्मों में छोटे-छोटे रोल करने पड़े। 1950 में अमरीकन प्रेस ने उसे अर्द्धशताब्दी का सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी घोषित किया। इसके बावजूद उसकी गरीबी ज्यों की त्यों बनी रही। इससे कोई दस साल पहले उसके द्वारा जीते गए पदक वापस दिलाने की प्रक्रिया शुरू हुई, जो अक्टूबर 1982 तक चलती रही। उस वर्ष उसे शौकिया खिलाड़ी माना गया तथा वर्ष 1983 में वह पदक उसके पुत्रों को

वापस दिया गया, लेकिन जिम इन पदकों को पुनः देखने के लिए जीवित नहीं था। 28 मार्च, 1953 को हृदय गति रुक जाने से उसकी मृत्यु हो गई।

अन्य स्पर्धाओं में रिले दौड़ (4×100 मी.) में जर्मन टीम, ग्रेट ब्रिटेन के बाद दूसरे स्थान पर आई, लेकिन उसके धावकों को दूसरे ट्रैक में दौड़ने के कारण अयोग्य घोषित कर दिया गया। इससे पहले सेमीफाइनल में ऐसी ही गलती अमरीकी धावकों ने भी की थी, जिन्हें यही परिणाम भुगतना पड़ा था। इस बार स्वीडन की परंपरानुसार दाएँ तथा बाएँ हाथ से भाला एवं चक्का फेंकने की भी स्पर्धा आयोजित की गई थी।

एथलेटिक्स के बाद निशानेबाजी में सबसे ज्यादा 18 मुकाबले हुए, जिसमें स्वीडिश एवं अमरीकी निशानेबाजों ने 14 स्वर्ण आपस में बाँट लिए। न्यूयार्कवासी 20 वर्षीय एल्फ्रेड लेन ने सबसे जानदार प्रदर्शन करके 3 स्वर्णपदक जीते। लेन आठ वर्ष बाद एंटवर्प ओलंपिक खेलों में भी 2 स्वर्ण तथा एक रजत पदक जीतने में सफल रहा। मिलिटरी रिवाल्वर टीम स्पर्धा (30 मीटर) का स्वर्ण जीतनेवाली स्वीडिश टीम में दो जुड़वाँ भाई विल्हेम तथा एरिक कालबर्ग भी शामिल थे।

तैराकी के 14 विभिन्न मुकाबलों में 13 देशों के 319 तैराकों ने हिस्सा लिया, जिसमें पुरुषों के अलावा महिलाएँ भी थीं। इस स्पर्धा में सर्वाधिक चर्चित हवाई द्वीप (अमरीका) का ड्यूक पौआ कोहानामोकू रहा, जिसने 100 मी. फ्री स्टाइल का मुकाबला बड़े आराम से जीता। बाद में उसने 4×200 मी. फ्री स्टाइल की रिले में अपनी अमरीकी टीम को रजत पदक दिलाने में काफी परिश्रम किया। खेलों के दौरान वह स्टाकहोम की सड़कों एवं गलियों में घूम-घूमकर काफी लोकप्रिय हो गया था। कुल मिलाकर उसने 4 ओलंपिक खेलों में भाग लिया और 3 स्वर्ण एवं 2 रजत पदक जीतने में सफल रहा। 1912 से 22 तक 100 मी. फ्री स्टाइल का विश्व-कीर्तिमान भी उसी के नाम रहा। आकर्षक व्यक्तित्व के मालिक ड्यूक ने बाद में कुछ फिल्मों में अभिनय भी किया।

तैराकी की ही स्पर्धा में कनाडा के मांट्रियलवासी जार्ज होजसन ने पहले 1500 मी. फ्री स्टाइल में बड़ी आसानी से स्वर्ण जीता, जबकि चार दिन बाद 400 मी. फ्री स्टाइल में भी उसने यही कारनामा दुहराया। इसी दौरान वह 1000 मी., 1500 मी. तथा एक मील की स्पर्धाओं में विश्व-कीर्तिमान स्थापित करने में भी सफल रहा।

महिलाओं की तीन स्पर्धाएँ हुईं, जिसे देखने के लिए काफी संख्या में दर्शक स्टेडियम में आए। प्लेटफार्म डाइविंग में स्वीडिश गोताखोरों ने पहले 8 में से 7 स्थानों पर कब्जा जमाया, 17 वर्ष 186 दिन आयुवाली ग्रेटा जोहनसन ने 39.9 अंक जीतकर स्वर्ण पदक पाया। वह इस खेल की सबसे कमउम्र स्वर्ण पदक विजेता बनी। 100 मी. फ्री स्टाइल में आस्ट्रेलियाई फैनी डुराक विश्व-कीर्तिमानधारी डैजी कुर्वेन को पीछे छोड़ते हुए पहले स्थान पर आई। यहाँ उल्लेखनीय है कि डुराक को पहले आस्ट्रेलियाई टीम में स्थान नहीं

दिया गया था, परंतु अपने पक्ष में जबरदस्त समर्थन जुटाकर आखिरकार वह स्टाकहोम पहुँचने में सफल रही। वैसे एक जमाने में वह 50 मीटर से लेकर 1 मील तक की फ्री स्टाइल तैराकी के सारे विश्व-कीर्तिमानों की मालकिन थी।

लंबा मुकाबला, स्वर्ण फिर भी नहीं

कुश्ती में 17 देशों के पहलवानों ने हिस्सा लिया, जिनमें मेजबानों का पलड़ा भारी रहा और उनके हिस्से में 5 में से 3 स्वर्ण रहे। इस बार ग्रीको-रोमन स्टाइल की कुश्ती लड़ी गई, जिसमें एक सेमीफाइनल मुकाबला 11 घंटे 40 मिनट तक चलता रहा। मिडिलवेट वर्ग का यह मुकाबला रूस (जार) के मार्टिन क्लेन तथा फिनलैंड के अल्फ्रेड एसीकैनेन के बीच हुआ, जिसमें रूसी पहलवान विजयी रहा। इस जीत के बाद मार्टिन के पास इतनी शक्ति नहीं थी कि वह फाइनल में स्वीडन के क्लाज जोहानसन का मुकाबला कर पाता, अलबत्ता वह बगैर लड़े रजत पदक से संतुष्ट हो गया। लेकिन इस स्पर्धा का सबसे रोमांचक मुकाबला लाइटवेट वर्ग में मेजबान एंडर्स एलग्रेन और फिनिश इवार बोहलिंग के बीच हुआ। ये दोनों पहलवान एक दूसरे पर बीस साबित होते हुए 9 घंटे तक चैंपियन बनने के लिए जूझते रहे। अंत में अधिकारियों ने दोनों ही पहलवानों को उपविजेता घोषित कर रजत पदक दिया, जो ओलंपिक इतिहास की एक और अनूठी घटना बनी। यह ओलंपिक की एकमात्र घटना है, जिसमें स्वर्ण पदक नहीं दिया गया।

साईकिलिंग में ट्रैक उपलब्ध नहीं होने के कारण सिर्फ व्यक्तिगत एवं टीम रोड रेस की स्पर्धा हुई। रोड रेस में इस बार दूरी 199 मील (320 कि.मी.) तय की गई, जो अब तक की सबसे अधिक दूरी की स्पर्धा है। 7 जुलाई को ठीक दोपहर 2.00 बजे से यह दौड़ आरंभ हुई, जिसमें 16 देशों के 123 साईकिल चालकों को 2-2 मिनट के अंतर पर छोड़ा गया। दक्षिण अफ्रीकी रुडोल्फ लेविस 10 घंटे 42 मिनट 39.0 सेकेंड में यह दूरी तय करके विजयी हुआ। इस प्रतियोगिता के कुछ अरसे बाद ही उसे जर्मनी की गलियों में साईकिल चलाते हुए सैनिकों ने पकड़ लिया और काफी समय तक बंदी बनाकर रखा।

तलवारबाजी में 16 देशों ने हिस्सा लिया, लेकिन फ्रांस ने इस स्पर्धा का बहिष्कार किया, क्योंकि अधिकारियों ने उनके इस सुझाव को रद्द कर दिया था कि कंधों से ऊपर का हिस्सा भी आक्रमण क्षेत्र में शामिल किया जाए। मुक्केबाजी की स्पर्धा इस बार नहीं हुई, क्योंकि मुक्केबाजी स्वीडन में प्रतिबंधित थी।

घुड़सवारी का मुकाबला एथलेटिक्स मुकाबले की समाप्ति के बाद मुख्य स्टेडियम में हुआ, जिसमें 8 देशों ने हिस्सा लिया। 5 स्वर्ण के लिए हुई कशमकश में मेजबान के हिस्से में 4 स्वर्ण पदक आए। लॉन टेनिस में भी इस बार इनडोर तथा आउटडोर मुकाबले हुए जबकि रोइंग के मुकाबलों में इस बार भी क्लबों की टीमों ने शिरकत की।

यांटिग की 6 मीटर क्लास स्पर्धा में विजेता फ्रांसिसी दल में तीन खिलाड़ी—थुबे बंधु—एमेडी, गास्टन एवं जैक्यूस शामिल थे।

फुटबाल का मुकाबला एथलेटिक्स मुकाबलों के बाद सबसे रोमांचक सिद्ध हुआ। इस बार कुल 11 देशों (सभी योरोपीय) ने हिस्सा लिया, जिसमें स्वर्ण पदक के लिए 25000 दर्शकों के सामने डेनमार्क तथा ग्रेट ब्रिटेन के बीच मुकाबला हुआ। ग्रेट ब्रिटेन 4-2 से विजयी रहा। कांस्य पदक के लिए हुए मैच में हालैंड ने फिनलैंड को 9-0 से पीटा। प्रारंभिक दौर के एक मैच में जर्मनी के गाटफ्रीड फुचस् ने रूस (जार) के विरुद्ध अकेले 10 गोल दागकर कीर्तिमान स्थापित किया।

नए खेलों में माडर्न पेंटाथलन, जो कि कुबरटिन का प्रिय खेल था, शामिल किया गया। यह खेल 5 विभिन्न स्पर्धाओं—निशानेबाजी, तलवारबाजी, घुड़सवारी, 4000 मी. क्रासकंट्री दौड़ तथा 3000 मी. तैराकी का सम्मिश्रण था तथा स्पर्धा पाँच दिन तक चलती थी। इसमें पहले तीन स्थान मेजबान देश को मिले, जिसके गुस्ताव लिलीड्रक नामक खिलाड़ी ने स्वर्ण पाया। इसमें पाँचवा स्थान पानेवाला ब्रिटिश जार्ज पेट्टोन था जो कि कमजोर निशानेबाजी के कारण स्वर्ण पदक से वंचित हो गया। 'ब्लड एंड गट्स' नाम से मशहूर पेट्टोन बाद में, दूसरे विश्वयुद्ध में, एक जनरल के रूप में काफी विख्यात हुआ।

इस प्रकार ओलंपिक खेलों का यह पाँचवा पड़ाव हर दृष्टि से पहले आयोजनों में बीस रहा। कुबरटिन ने स्वीडिश माहौल में सही ओलंपिक भावना का अनुभव किया। विभिन्न देशों के प्रतियोगियों के बीच परस्पर सहिष्णुता की भावना ने उसे काफी प्रभावित किया। तकनीकी दृष्टि से भी यह आयोजन श्रेष्ठ रहा। ओलंपिक खेलों में इलेक्ट्रानिक्स घड़ियों तथा फोटो फिनिश कैमरों का पहली बार प्रयोग यहीं हुआ। खेलों के अतिरिक्त इस दौरान विभिन्न कलाओं, मसलन वास्तुकला, चित्रकारी, मूर्तिकला एवं संगीत की भी प्रतियोगिताएँ हुईं। आयोजन समिति ने अनधिकृत रूप से प्रतियोगी देशों की परस्पर स्थिति जानने के लिए गणना-पद्धति (3-2-1) अपनाई, जिसमें मेजबान देश 136 अंक लेकर चोटी पर रहा। 124 अंक लेकर अमरीका ने दूसरा स्थान पाया।

पदक-तालिका—1912

देश	स्वर्ण	रजत	कांस्य
अमरीका	27	19	19
स्वीडन	24	24	17
ग्रेट ब्रिटेन	10	15	16

फिनलैंड	9	8	9
फ्रांस	7	4	3
जर्मनी	5	13	7
दक्षिण अफ्रीका	4	2	—
नार्वे	4	1	5
कनाडा	3	2	3
हंगरी	3	2	3
इटली	3	1	2
आस्ट्रेलेशिया	2	2	2
बेल्जियम	2	1	2
डेनमार्क	1	6	5
ग्रीस	1	—	1
न्यूजीलैंड	1	—	1
स्विट्जरलैंड	1	—	—
रूस (जार)	—	2	3
आस्ट्रिया	—	2	2
नीदरलैंड	—	—	3

छठवाँ ओलंपिक : 1916—बर्लिन

छटवें ओलंपिक खेलों के लिए बर्लिन, बुडापेस्ट तथा सिकंदरिया ने अपनी दावेदारी पेश की, लेकिन कुबरटिन तथा अंतर्राष्ट्रीय ओलंपिक समिति के अन्य सदस्यों को उस समय जर्मनी की शक्ति का आभास हो गया था। फिर भी कुबरटिन ने ओलंपिक स्थल के रूप में बर्लिन को ही चुना। उसका विश्वास था कि जिस प्रकार स्टाकहोम आयोजन से स्वीडन को प्रसिद्धि प्राप्त हुई थी, उसी प्रकार इन खेलों के आयोजन से संभवतः जर्मनी शांति की स्थापना में आगे बढ़े तथा किसी प्रकार का युद्ध न हो।

परंतु जर्मनी के सम्राट ने अपनी शक्ति जाहिर करते हुए आखिरकार बेल्जियम पर हमला बोल दिया और 1914 में प्रथम विश्वयुद्ध भी छिड़ गया। तब समिति के सदस्यों ने कुबरटिन से आयोजन-स्थल बदलकर अमरीका या स्कैंडेनेविया करने का अनुरोध

किया, परंतु इसे ओलंपिक भावना के विरुद्ध मानते हुए उसने आयोजन-स्थल बदलने से साफ इनकार कर दिया, और ओलंपिक की कड़ी टूट न जाए, इस कारण इस आयोजन को भी क्रम दे दिया।

विश्वयुद्ध के कारण छटवें आयोजन की सभी संभावनाएँ तो खत्म हो चुकी थीं, लेकिन कुबरटिन ने समय का सदुपयोग करते हुए वर्ष 1915 में अंतर्राष्ट्रीय ओलंपिक समिति का मुख्यालय लुशाने (स्विटज़रलैंड) में स्थापित करा दिया। इसके पहले 1913 में समिति की बैठक में कुबरटिन ने ही सफेद रंग की पृष्ठभूमि में पाँच भिन्न रंगों से जुड़े छल्लों के रूप में ओलंपिक ध्वज का स्वरूप प्रस्तुत किया। इन गोलाकार छल्लों का रंग क्रमशः नीला, काला एवं लाल (ऊपर) तथा पीला एवं हरा (नीचे) है। इन रंगों में से कम से कम एक रंग विश्व के किसी भी देश के ओलंपिक ध्वज में शामिल होता है।

सातवाँ ओलंपिक : 1920—एंटवर्प

प्रथम विश्वयुद्ध की भीषणता के बाद अप्रैल, 1919 में आई.ओ.सी. की लुसाने बैठक में सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया गया कि सातवें ओलंपिक खेलों का आयोजन अगस्त, 1920 में बेल्जियम की राजधानी एंटवर्प में होगा। परंतु बेल्जियम के सामने इतने कम समय में इस बड़े आयोजन की तैयारी कर पाना आसान नहीं था। फिर विश्वयुद्ध के कारण उसके अनेक महत्त्वपूर्ण शहर व स्थान नष्ट हो चुके थे, जिससे यह कार्य और भी दुष्कर लग रहा था। बावजूद इन कठिनाइयों के, बेल्जियम शीघ्र ही तैयारी में जुट गया और अंततः 20 अप्रैल से 12 सितंबर तक वह इस सातवें खेलकुंभ का भव्य आयोजन करने में सफल रहा। यह बेल्जियम के उन महान योद्धाओं का भी सम्मान था, जिन्होंने विश्वयुद्ध में अपने देश की रक्षा के लिए अपनी जान दे दी थी।

इस बार इन खेलों में खिलाड़ियों का अभूतपूर्व उत्साह नजर आया और 29 देशों के 2692 खिलाड़ियों (64 महिलाएँ) ने हिस्सा लिया। अर्जेंटाईना, ब्राजील, एस्टोनिया व मोरक्को पहली बार इस खेल में जुड़े। रूस ने भाग नहीं लिया, जबकि आस्ट्रिया, बुल्गारिया, जर्मनी, हंगरी एवं तुर्की को प्रथम विश्वयुद्ध में पराजित होने के कारण आमंत्रित ही नहीं किया गया। इसी आयोजन से प्रत्येक खेल में एक देश से अधिकतम चार प्रतियोगियों की संख्या भी निर्धारित कर दी गई। प्रतियोगियों को एंटवर्प के विभिन्न स्कूलों में ठहराया गया।

एंटवर्प आयोजन से ही ओलंपिक खेलों की एक अभिन्न परंपरा 'शपथ ग्रहण' की

शुरुआत हुई। सम्राट अल्बर्ट द्वारा इन खेलों के विधिवत उद्घाटन के पूर्व मेजबान देश के विक्टर बोईन ने, जिसने 1908 में रजत तथा 1912 में कांस्य पदक (वाटरपोलो) जीता था, खिलाड़ियों की ओर से सच्ची खेल भावना की शपथ ली। बोईन वाटरपोलो के अलावा एक कुशल तैराक, तलवारबाज, स्केटर एवं मोटरचालक भी था। वह इंटरनेशनल एसोसियेशन ऑफ स्पोर्ट्स जर्नलिस्ट का संस्थापक और बाद में बेल्जियम ओलंपिक कमेटी का अध्यक्ष भी बना। बोईन के शपथ ग्रहण के पश्चात ओलंपिक ध्वजारोहण भी यहीं से प्रारंभ हुआ।

इस बार आयोजित ये खेल भी लगभग 5 महीने (20 अप्रैल से 12 सितंबर तक) चले, जिसमें 21 खेलो की 151 स्पर्धाएँ हुईं। इनमें 4 बर्फीले खेल थे। इन खेलों में सिर्फ आइस हाकी ही एक नया खेल था, जबकि तीरंदाजी, मुक्केबाजी, हाकी, पोलो, रग्बी एवं फिगर स्केटिंग प्रतियोगिताओं की लंदन के बाद वापसी हुई।

पावो नूरमी का उदय

एथलेटिक्स के मुकाबलों में अमरीकियों को फिनलैंड एवं ग्रेट ब्रिटेन के प्रतियोगियों से कड़ी टक्कर मिली। 'हम किसी से कम नहीं' के अंदाज में तीनों देशों के खिलाड़ियों ने 29 में से 23 सोने के तमगे आपस में बाँटे, लेकिन अमरीका यहाँ पहले की तुलना में कमजोर साबित हुआ। उसने अपने खराब प्रदर्शन का दोष रहने एवं खाने की बदइंतजामी को दिया। परंतु फिन्निश धावकों के शानदार प्रदर्शन ने उनकी कमजोरियाँ उजागर कर दीं। लंबी दूरी की दौड़ों में फिन्निश धावकों का वर्चस्व बना रहा, जिसका मुख्य वास्तुकार पावो नूरमी था, जिसे बाद में फ्लाइंग फिन्न, फैंटम फिन्न, पियरलेस पावो, ऐल ऑफ ऐबो और न जाने कितनी ही संज्ञाओं से विभूषित किया गया।

13 जून, 1879 को एक काष्ठकार (बढ़ई) के घर में पैदा हुआ पावो नूरमी अपने पाँच भाई-बहनों में सबसे बड़ा था। बचपन में ही उसकी प्रतिभा नजर आ गई, जब मिलिट्री सर्विस के दौरान उसे पूरे किट के साथ 20 कि.मी. दौड़ने के लिए कहा गया। नूरमी ने यह फासला इतनी तेजी से पूरा किया कि सहसा उसके अधिकारियों को यह विश्वास ही नहीं हुआ। वे यही मानते रहे कि नूरमी ने शार्टकट अपनाया है, लेकिन शीघ्र ही उन्हें उसकी प्रतिभा का अहसास हो गया। वैसे भी नूरमी दौड़ के दौरान पूर्णतः वैज्ञानिक तरीकों का इस्तेमाल करता था। संतुलित भोजन, दौड़ते समय हाथ में घड़ी लेकर दौड़ना उसकी सफलताओं का आधार रहा।

एंटवर्प में 7 जुलाई को उसने अपनी पहली ओलंपिक स्पर्धा में 5000 मी. दौड़ में भाग लिया, परंतु अंतिम चक्र में 5 फुट 3 इंच कद के फ्रांसिसी जोसफ गुलेमाट ने तेजी दिखाकर उसे पीछे छोड़ दिया। किंतु तीन दिन बाद उसने 10,000 मी. की दौड़ में

गुलेमाट को पीछे छोड़कर अपना हिसाब चुकता किया। तीन दिन बाद पुनः 8000 मी. क्रास कंट्री दौड़ में भी उसने व्यक्तिगत एवं टीम का स्वर्ण पदक जीता। लेकिन इससे भी बढ़कर उसका प्रदर्शन 1924 के ओलंपिक खेलों में रहा, जहाँ सिर्फ तीन दिनों में पाँच स्वर्ण पदक जीतकर ओलंपिक खेलों के एथलेटिक्स मुकाबलों में सफलता हासिल करनेवाला वह पहला खिलाड़ी बना। वहाँ यदि फिन्निश अधिकारियों ने उसके साथ पक्षपात नहीं किया होता तो वह संभवतः 10,000 मी. की दौड़ का भी स्वर्ण जीत लेता। फिर 1928 के एमस्टरडम ओलंपिक में भी उसने दो और स्वर्ण पदक जीते। इस तरह ओलंपिक खेलों में 9 स्वर्ण एवं 3 रजत पदक उसके हिस्से में आए। इसमें और बढ़ोतरी होती, यदि उसे 1932 के ओलंपिक में पेशेवर घोषित करके 10,000 मी. एवं मैराथन में भाग लेने से न रोका जाता। अलबत्ता अपने जीवन में उसने 16 विभिन्न स्पर्धाओं में 29 विश्व-रिकार्ड स्थापित किए। खेलों से संन्यास लेने के पश्चात वह मकान खरीददारी का धंधा करने लगा और काफी पैसा बनाया। उसके यादगार प्रदर्शन का सही सम्मान 1952 के हेलसिंकी ओलंपिक में किया गया। यहाँ उसकी एक काँसे की प्रतिमा मुख्य स्टेडियम के बाहर लगाई गई तथा उसे स्टेडियम में ओलंपिक टॉर्च लाने का भी सम्मान दिया गया। 7 अक्टूबर 1974 को ओलंपिक खेलों का यह अप्रतिम व्यक्तितत्व सदा के लिए दुनिया छोड़ गया।

नींद का शौकीन एल्बर्ट हिल

अन्य सफल खिलाड़ियों में ब्रिटेन के 36 रेलवे गार्ड एल्बर्ट हिल ने पाँच दिनों में 800 मी. एवं 1500 मी. की दौड़ में जहाँ बड़ी आसानी से स्वर्ण पदक पाया, वहीं 8000 मी. क्रास कंट्री टीम दौड़ में अपने देश को रजत दिलाने में भी उसने काफी परिश्रम किया। हिल ने ओलंपिक के पहले चार वर्ष विश्वयुद्ध में बिताए थे। निहायत ही मस्त तबीयत के मालिक हिल को दौड़ के पूर्व अन्य धावकों की तरह कसरतें करना या दौड़ना नहीं भाता था। वह तो गहरी नींद में सोता मिलता था। 1500 मी. दौड़ में दूसरा स्थान ग्रेट ब्रिटेन के ही फिलिप बेकर ने पाया, जो बाद के 36 वर्षों तक ब्रिटिश सांसद भी रहा और 1959 में निशस्त्रीकरण के प्रयास के लिए उसे नोबल शांति पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया।

ब्रितानी हिल के ही मिजाज का दक्षिण अफ्रीकी बेविल रुइड भी था। उसने भी पहले विश्वयुद्ध में हिस्सा लिया था और लगभग मरते-मरते बचा था। उसने 800 मी. की दौड़ में हिस्सा लिया और अंतिम 100 मी. तक सबसे आगे रहा, परंतु एकाएक पाँव में मोच आ जाने से वह तीसरे स्थान पर पिछड़ गया, लेकिन तीन दिन बाद 400 मी. की दौड़ 49.6 सेकेंड के समय से जीतने में वह बड़ी आसानी से सफल रहा।

अमरीका में छात्र, लेकिन कनाडावासी अर्ल थांपसन ने अपने जन्म देश का प्रतिनिधित्व किया और 110 मी. हर्डल्स में 14.8 सेकेंड का समय लेकर विश्व-रिकार्ड बनाते हुए स्वर्ण पदक जीता, जबकि 20 वर्षीय अमरीकी छात्र चार्ल्स विलियम पैडॉक सबसे तेज धावक सिद्ध हुआ। उसने 100 मी. दूर टेप को छूने में मात्र 10.8 सेकेंड का समय लिया।

फील्ड स्पर्धाओं के पोल वाल्ट में अमरीकी फ्रेंक फॉस ने 13 फुट 5 इंच की उछाल लगाकर न केवल स्वर्ण पदक पाया, वरन विश्व-रिकार्ड भी बनाया। उसके और दूसरे स्थान पर आनेवाले डेनमार्क के हेनरी पीटरसन के बीच साढ़े 16 इंच का फासला था। हैमर थ्रो में विश्व-रिकार्डधारी अमरीकी पैट्रियान ने बड़ी आसानी से पहला स्थान पाया।

पेंटाथलन में फिन्निश ईरो लेहटोनेन ने अपना खिताब बरकरार रखा, जबकि डेकाथलन में नार्वे के हेल्ज लोवलैंड ने अंतिम स्पर्धा 1500 मी. दौड़ में अमरीकी ब्रूटस हैमिलटन को हराकर स्वर्ण पदक जीता। 3000 मी. एवं 10,000 मी. की पैदल चालन स्पर्धा इटली के उगो फ्रिगेरो ने जीती। पैदल चालन के दौरान वह अपने अजीब करतबों से दर्शकों में काफी लोकप्रिय हो गया था। चार वर्ष बाद पेरिस में वह फिर 10,000 मी. की स्पर्धा जीतने में सफल रहा।

तरणताल में अमरीकी तैराकों की धूम रही। 16 में से 12 स्वर्ण उनके हिस्से में रहे। ड्यूक कोहानामोकू के अलावा उसके हवायन साथी पुआ कीलोहा, 17 वर्षीय उसके छोटे भाई वारेन कीलोहा एवं नार्मन रास ने भी यहाँ अपनी पहचान बनाई। संपन्न मुकाबलों में 100 मी. फ्री स्टाइल का फाइनल दो बार हुआ, क्योंकि पहली बार आस्ट्रेलियाई विलियम हेराल्ड को नार्मन रास ने बाधा पहुँचाई थी। परंतु दोनों ही फाइनल का परिणाम एक ही रहा। ड्यूक कोहानामोकू ने स्वर्ण, पुआ कीलोहा ने रजत तथा विलियम हैरिस ने कांस्य पदक जीता।

24 वर्षीय रास ने 1500 मी. फ्री स्टाइल (22 मिनट 23.2 सेकेंड) तथा 400 मी. फ्री स्टाइल (5 मिनट 26.8 सेकेंड) में जहाँ व्यक्तिगत स्वर्ण जीता, वहीं 4200 मी. फ्री स्टाइल रिले में भी अपने देश को विजयी बनाया। रास वाटरपोलो में कांस्य पदक विजेता अमरीकी टीम का भी सदस्य था। वारेन कीलोहा ने 100 मीटर बैकस्ट्रोक्स के हीट्स में नया विश्व-रिकार्ड बनाया, जबकि फाइनल में 1 मिनट 15.2 सेकेंड का समय लेकर स्वर्ण जीता।

महिलाओं के वर्ग में 18 वर्षीया अमरीकी तैराक इथेल्डा ब्लिबट्रे न केवल तीनों मुकाबलों में स्वर्ण पदक जीतने में सफल रही, वरन वह यह कारनामा करनेवाली पहली महिला भी बनी। वह चौथा स्वर्ण पदक जीतने में भी कामयाब हो जाती, यदि 100 मी. बैकस्ट्रोक्स, जिसका विश्व-कीर्तिमान उसके ही नाम था, प्रतियोगिता में शामिल किया जाता।

डाइविंग के स्प्रिंग बोर्ड मुकाबलों में 14 वर्ष 119 दिन आयुवाली अमरीकी खिलाड़ी एलीन रिग्गीन स्वर्ण पदक जीतकर न केवल इस स्पर्धा की सबसे युवा विजेता सिद्ध हुई, बल्कि उसका यह कीर्तिमान 1936 तक कायम रहा। अगले ओलंपिक में भी वह डाइविंग में रजत एवं तैराकी (100 मी. बैक स्ट्रोक्स) में कांस्य पदक जीतने में सफल रही।

फिलाडेल्फिया में ईंटें बनानेवाला अमरीकी जान कैली (सीनियर) रोइंग के सिंगल एवं डबल स्कल्स मुकाबलों का स्वर्ण मात्र 30 मिनट के अंतराल से जीतने में सफल रहा। यह वही कैली था, जिसे ओलंपिक के कुछ सप्ताह पूर्व लंदन की प्रसिद्ध 'डायमंड स्कल्स रेग्रेटा' में पेशेवर खिलाड़ी होने का आरोप लगाकर भाग नहीं लेने दिया गया था। यहाँ सिंगल में उसने अपने चिरपरिचित प्रतिद्वंद्वी ब्रितानी जैक बेरेस्फोर्ड को हराया तथा डबल्स में अपने चचेरे भाई पाल कौस्टेलो के साथ विजयी रहा। दोनों भाइयों ने डबल्स का यह मुकाबला 1924 के ओलंपिक में पुनः जीता। बाद में कैली के पुत्र ने भी चार बार ओलंपिक खेलों में हिस्सा लिया, मगर उसे प्रसिद्धि तब मिली, जब उसकी अभिनेत्री पुत्री ग्रेस कैली का मोनक्को के राजकुमार से विवाह हुआ। बाद में पाल के पुत्र वर्नाड ने भी 1956 में रजत पदक जीता। काक्सडलेस फोर्स में विजयी स्विस दल में मेक्स एवं पाल रुडोल्फ नामक दो भाई शामिल थे।

भाइयों ने बाजी मारी

यार्टिग स्पर्धाओं के 12 मीटर वर्ग (1907 रेटिंग क्लास) में विजयी नौ सदस्यीय नार्वे दल में चार ओस्टरवोल्ड बंधु हेनरिक, यान, ओल एवं क्रिस्टेन तथा दो बर्कलैंड भाई रेसमस एवं हालवोट शामिल थे। डिंगी की स्पर्धा में हालैंड के जोहानेस हिन ने अपने साढ़े चौदह वर्षीय भाई फ्रांसिसकस के साथ स्वर्ण जीता। 6 मीटर वर्ग (1907 रेटिंग क्लास) में बेल्जियम के पिता-पुत्र की जोड़ी एमिल एवं फ्लोरिमॉड कोरनीली को सफलता मिली।

शूटिंग में भी अमरीकी निशानेबाज हावी रहे और उन्होंने 21 में से 15 स्वर्ण पदक हथियाए। सर्वाधिक चार स्वर्ण पदक अमरीकी नौसेना के कमांडर कार्ल ओस्बोर्न ने जीते। 1912 से 1924 तक शूटिंग में सबसे अधिक 11 पदक (5 स्वर्ण; 4 रजत व 2 कांस्य) जीतने का भी उसका रिकार्ड रहा। अमरीका के ही विलिस ली टीम मुकाबलों में शिरकत करके पाँच स्वर्ण, एक रजत तथा दो कांस्य पदक जीतने में सफल रहा।

बेल्जियम में काफी प्रसिद्ध होने की वजह से तीरंदाजी की प्रतियोगिता इस बार पुनः शामिल की गई। इसमें मेजबान के अलावा भाग लेनेवाली अन्य टीमें हालैंड एवं फ्रांस की थीं। अपने नियमों का लाभ उठाकर मेजबान तीरंदाजों ने 10 में से 8 स्वर्ण पदक जीत लिए। 54 वर्ष 187 दिन उम्रवाला ह्यूबर्ट वान इन्निस तहलका मचाते हुए न केवल 4

स्वर्ण एवं 2 रजत पदक जीतने में सफल रहा, बल्कि वह इस आयोजन का सबसे बूढ़ा स्वर्ण पदक विजेता भी हुआ। 20 वर्ष पहले पेरिस में भी वह 2 स्वर्ण एवं 1 रजत पदक जीतने में सफल रहा था।

साईकिलिंग में 6 स्वर्ण पदकों के लिए हुए मुकाबलों में अलग-अलग देशों का वर्चस्व रहा। 175 कि.मी. रोड रेस में एक अजीब घटना घटी। पहले दक्षिण अफ्रीका के हेनरी रेल्सबर्न को विजेता घोषित किया गया था, परंतु जब स्वीडिश हैरी स्टेन क्विस्ट ने प्रोटेस्ट किया कि रास्ते में रेलवे क्रासिंग पर रुकने के कारण उसे 4 मिनट की देरी हो गई तो स्वर्ण पदक उसे ही दे दिया गया। 1000 मीटर स्प्रिंट में हालैंड का 38 वर्षीय चालक मारिस पीटर्स विजयी हुआ, जोकि आज भी ओलंपिक साईकिलिंग के सबसे बुजुर्ग चैंपियन हैं। 4000 मीटर टीम परसूट के विजयी इतालवी दल में 17 वर्ष 304 दिन की आयु का फ्रेंको जियौगेट्टी भी शामिल था, आज भी वह ओलंपिक साईकिलिंग इवेंट का सबसे युवा विजेता है।

मुक्केबाजी की प्रतियोगिता भी काफी रोमांचक रही और काफी दर्शक आए। अमरीका को 3 एवं ग्रेट ब्रिटेन को 2 खिताब मिले। लाइट हैवीवेट वर्ग में स्वर्ण पदक जीतनेवाले एडवर्ड ईगन ने 12 वर्ष बाद लेक प्लेसिड शीतकालीन ओलंपिक में फोरमैन बाब स्लेड में भी स्वर्ण पदक जीतकर स्वर्ण पदक जीतने का कीर्तिमान बनाया। यह गौरव पानेवाला अब तक का वह एकमात्र खिलाड़ी है।

कुश्ती में फ्री स्टाइल एवं ग्रीको-रोमन दोनों तरह के मुकाबले हुए, जिसमें फिन्निश पहलवानों ने फ्री स्टाइल में दो एवं ग्रीको-रोमन में तीन स्वर्ण पदक जीते। घुड़सवारी में स्वीडिश घुड़सवारों की धाक बनी जबकि तलवारबाजी के मुकाबलों में इटली के नादी बंधु छाए रहे। बड़े भाई नीदो ने ईपी (व्यक्तिगत) को छोड़ शेष सभी पाँचों मुकाबलों में स्वर्ण पदक जीतकर नया कीर्तिमान स्थापित किया। अनुज एलडो ने भी टीम स्पर्धाओं में तीन स्वर्ण और सेब्रे में अपने अग्रज के बाद रजत पदक जीता। जिमनास्टिक के दोनों स्वर्ण इटली जियोगिरो जिम्यारी की मदद से जीतने में सफल रहा। लॉन टेनिस मुकाबलों में एंटवर्प के दर्शकों को टेनिस की महानतम खिलाड़ी सुजेन लैंग्लेन का खेल देखने को मिला। लैंग्लेन महिला एकल एवं सहयुगल (मैक डेकगिस के साथ) का खिताब जीतने में सफल रही।

एथलेटिक्स के बाद सबसे रोमांचक खेल फुटबाल साबित हुआ। फाइनल में एक समय मेजबान बेल्जियम, चेकोस्लोवाकिया के खिलाफ 2-0 से आगे था, तभी चेकोस्लोवाकिया के खिलाड़ियों ने रैफरी के एक निर्णय के विरोध में वाक आउट कर दिया। इस स्थिति में चेकोस्लोवाकिया को अयोग्य घोषित कर स्वर्ण पदक बेल्जियम को दे दिया गया। दूसरे स्थान के मैच के लिए फ्रांस ने खेलने से इनकार कर दिया, क्योंकि

उनके खिलाड़ी वापस स्वदेश लौट चुके थे। तब स्पेन ने स्वीडन, इटली तथा अंत में हालैंड को 3-1 से हराकर दूसरा स्थान पाया।

फील्ड हाकी में चार देशों ने भाग लिया, जिसमें ग्रेट ब्रिटेन अपने तीनों मैंच जीतकर स्वर्ण पदक का हकदार हुआ। रग्बी में सिर्फ अमरीका एवं फ्रांस ने हिस्सा लिया, जबकि ग्रेट ब्रिटेन ने जोकि उस समय की सबसे मजबूत टीमवाला देश माना जाता था, अपनी व्यस्त घरेलू प्रतियोगिता के कारण टीम भेजने से इनकार कर दिया। अमरीका ने फ्रांस को 8-0 से हराकर स्वर्ण पदक हासिल किया। माडर्न पेंटाथलन में पिछली बार की ही तरह स्वीडन ने पुनः पहले चारों स्थान जीत लिए।

आईस हाकी में कनाडा ने अन्य तीन देशों को हराकर स्वर्ण पदक जीता, जबकि फिगर स्केटिंग के पेयर्स में फिन्निश पति-पत्नी वाल्टर एवं लुजडाविका जेकसन ने सफलता पाई।

इस प्रकार ओलंपिक का यह आयोजन पहले विश्वयुद्ध की भीषण मार को भुलाने में काफी हद तक सफल रहा। इस बात को कुबरटिन ने अपने समापन भाषण में भी स्वीकारा। फिर भी तकनीकी दृष्टि से खेलों का स्तर उतना अच्छा नहीं हो पाया, जितनी अपेक्षा की गई थी। बावजूद इसके सभी ने बेल्जियम द्वारा की गई मेजबानी की दिल खोलकर सराहना की। यद्यपि शुरुआत में स्टेडियम दर्शकों के लिए तरसते रहे, परंतु ज्यों ही दरवाजे निःशुल्क खोल दिए गए, दर्शक काफी संख्या में उमड़ पड़े और आयोजन की सफलता एक कदम और आगे बढ़ गई।

पदक-तालिका—1920

देश	स्वर्ण	रजत	कांस्य
अमरीका	41	27	28
स्वीडन	19	20	26
ग्रेट ब्रिटेन	15	15	13
फिनलैंड	15	10	9
बेल्जियम	14	11	10
नार्वे	13	9	9
इटली	13	5	5
फ्रांस	9	19	13
नीदरलैंड	4	2	5

डेनमार्क	3	9	1
दक्षिण अफ्रीका	3	4	3
कनाडा	3	3	3
स्विट्जरलैंड	2	2	1
इस्टोनिया	1	2	—
ब्राजील	1	1	1
जापान	—	2	—
स्पेन	—	2	—
ग्रीस	—	1	—
लक्समबर्ग	—	1	—
चेकोस्लोवाकिया	—	—	2
न्यूजीलैंड	—	—	1

आठवाँ ओलंपिक : 1924—पेरिस

आठवें ओलंपिक आयोजन का भार पहले हालैंड की राजधानी एमस्टरडम को सौंपा जाना था, परंतु कुबरटिन के प्रभाव से, जो 1925 में अंतर्राष्ट्रीय ओलंपिक समिति से निवृत्त होनेवाला था, पेरिस को दूसरी बार इन खेलों की मेजबानी सौंपी गई, ताकि वह 1900 के आयोजन की अपनी सारी खामियों को दूर कर अपनी पहचान स्थापित कर सके।

इस बार भी प्रारंभ में कुबरटिन को वित्तीय संकट का जबरदस्त सामना करना पड़ा और एक स्थिति में तो ऐसा लगने लगा कि कहीं आयोजन का भार लासएंजिल्स को न सौंपना पड़े। लेकिन जब किसी तरह यह संकट दूर हुआ तो एक और नई समस्या खड़ी हो गई। 1923 में सीन नदी में आई भयंकर बाढ़ ने पेरिस नगर को अस्त-व्यस्त कर दिया, बावजूद इन मुश्किलों के कुबरटिन ने इस खेल का श्रेष्ठ आयोजन कर ओलंपिक खेलों में एक नई मिसाल पेश की।

पिछले आयोजन के मुख्य स्टेडियम कोलंबस का नवीनीकरण किया गया। इस बार उसे भूमिगत बनाया गया तथा उसकी क्षमता बढ़ाकर 60 हजार कर दी गई। मुख्य स्टेडियम के आसपास ही खिलाड़ियों के ठहरने के लिए छोटे-छोटे काटेज बनाए गए। ओलंपिक खेलों के आदर्श सीटिअस, आल्टिअस, फोर्टिअस (और तेज, और ऊँचा, और

बलशाली) इसी आयोजन की शोभा बने।

4 मई से 27 जुलाई तक चलनेवाले इस आयोजन में 44 देशों के 3092 खिलाड़ियों (136 महिलाएँ) ने भाग लिया जोकि उस समय तक के आयोजनों की तुलना में सबसे अधिक संख्या थी। इसके बाद के दो ओलंपिक खेलों में भी यह संख्या पार नहीं हो सकी। यहाँ भी पहले विश्वयुद्ध के पराजित देशों को आमंत्रित नहीं किया गया, जबकि आयरलैंड, पोलैंड, इक्वेडोर, लेटविया, लिथुनिया, मैक्सिको, रूमानिया, उराग्वे तथा फिलीपाईन्स ने पहली बार इन खेलों में कदम रखा। फ्रांसिसी राष्ट्रपति गेस्टन डीयूर्गू ने इन खेलों का विधिवत उद्घाटन किया, जबकि इसके पहले फ्रांस के धावक जार्जेस एंड्रे ने खिलाड़ियों की ओर से सच्ची खेल-भावना की शपथ ली।

पावो नूरमी का बेमिसाल प्रदर्शन

एथलेटिक्स मुकाबलों में ग्रेटब्रिटेन के धावकों ने जहाँ स्प्रिंट में बाजी मारी वहीं लंबी एवं मध्यम दूरी की दौड़ों में फिनिश धावकों का कोई जवाब नहीं रहा। 1920 ओलंपिक खेलों का हीरो पावो नूरमी (फिनलैंड) यहाँ अपने प्रदर्शन के चरमोत्कर्ष पर था। उसने यहाँ केवल एक सप्ताह के भीतर 5 स्वर्ण पदक (3 व्यक्तिगत, 2 टीम) जीतकर तहलका मचाया, जिसमें 1500 मी. तथा 5000 मी. की दौड़ तो वह एक ही दिन में केवल 100 मिनट के अंतराल से दौड़कर जीता।

पावो नूरमी का कड़ा प्रतिद्वंद्वी उसका ही देशवासी विलेरिटोला था, जिसने 4 स्वर्ण (2 व्यक्तिगत, 2 टीम) जीते। वह भी एक विश्वविख्यात धावक था, लेकिन पावो के कारण उसके प्रदर्शन की चर्चा दबकर रह गई, फिनलैंड के लिए अन्य पदक जीतनेवाले खिलाड़ियों में एक था 35 वर्षीय एलिबन स्टेनरूस जो पेशे से बढ़ई था और जिसने मैराथन दौड़ में 2:41:22.6 का समय देकर स्वर्ण पदक पाया, जबकि पेंटाथलन में ईरो लेहटेनान एवं भलाफेंक में 32 वर्षीय जोन्नी मिर्थ ने अपना पिछला खिताब बरकरार रखते हुए स्वर्ण पदक पर कब्जा जमाया।

ब्रिटिश हेराल्ड अब्राहम ने सबसे तेज धावक होने का श्रेय प्राप्त किया। उसने 100 मी. की दूरी मात्र 10.6 सेकेंड में पूरी की और नया ओलंपिक-कीर्तिमान रचा। 6 फुट कद एवं 175 पौंड भारवाले अब्राहम की जीत की यह कहानी बाद में बड़े ही शानदार ढंग से 'चेरियट्स ऑफ फायर' नाम फिल्म में फिल्माई गई। इस दौड़ में तीसरा स्थान पाकर कांस्य पदक जीतनेवाला न्यूजीलैंड का आर्थर पैरिह बाद में न्यूजीलैंड का गवर्नर जनरल भी बना।

400 मी. की दौड़ स्कॉटलैंड के एरिक लिडेल ने 60 खिलाड़ियों के बीच 47.6 सेकेंड का समय निकालकर नए ओलंपिक कीर्तिमान के साथ जीती। 16 जनवरी, 1902 को

चीन में जन्मे लिडेल पर अपने पिता का गहरा प्रभाव पड़ा। इसी वजह से उसने 100 मीटर की दौड़ में हिस्सा नहीं लिया, जो कि इतवार को हुई थी। उसने अपना सारा ध्यान 200 एवं 400 मीटर की दौड़ पर केंद्रित किया। 200 मीटर में वह तीसरे स्थान पर रहा। 'फ्लाइंग स्काट' के नाम से मशहूर लिडेल की इस विजय-गाथा को भी 'चेरियट्स ऑफ फायर' में चित्रित किया गया। बाद में वह भी मिशनरी कार्यों से चीन चला गया और 1945 में जापानिश कांसट्रेशन कैंप में उसकी मृत्यु हो गई। 800 मीटर की दौड़ एक अन्य धावक बिट्रोन डगलस लोव ने अपने 22वें जन्मदिन के अवसर पर जीती। उसने एक गज के फासले से अपने प्रतिद्वंद्वी पाल मार्टिन (स्विट्जरलैंड) को पीछे छोड़ा, अगले ओलंपिक एमस्टरडम में भी वह इस स्पर्धा का स्वर्ण पदक विजेता रहा।

दौड़ में अमरीकी खिलाड़ियों की सफलता सिर्फ 200 मि., दोनों हर्डल्स (110 मी. एवं 400 मी.) तथा दोनों रिले (4 ×100 मी. एवं 4 ×400 मी.) दौड़ तक ही सीमित रही। 100 मी. तथा 200 मी. स्प्रिंट के विश्व-कीर्तिमानधारी पैडाक 200 मीटर में जीतने की स्थिति में था, लेकिन टेप से कुछ ही मीटर दूर उसके पैर में मोच आ गई। फिर भी गिरते-पड़ते वह टेप छूने मे सफल रहा, परंतु उससे पहले उसके ही साथी जैकसन शोल्ट्ज ने टेप छू लिया। जैकसन दो दिन पहले 100 मीटर में दूसरे स्थान पर रहा था। जैकसन शोल्ट्ज बाद में एक खेल उपन्यासकार के रूप में काफी विख्यात हुआ। उसने 31 उपन्यास लिखे जो सभी सराहे गए।

400 मीटर हर्डल्स में अमरीकी मोर्गन टेलर ने विश्व-रिकार्ड समय 52.6 सेकेंड के साथ दौड़ पूरी की। परंतु इस दौड़ के दरम्यान उससे एक हर्डल गिर गया, जिसकी वजह से उसका विश्व-कीर्तिमान स्वीकृत नहीं किया गया। दूसरे स्थान पर आनेवाले चार्ल्स ब्रूकिस को भी अयोग्य घोषित कर दिया गया, क्योंकि उसने दूसरी लेन पर दौड़ लगाई थी। इसलिए 53.8 सेकेंड का ओलंपिक-कीर्तिमान तीसरे स्थान पर (ब्रूकिंग की अयोग्यता के बाद दूसरे स्थान) आनेवाले फिन्निश एरिक विलेन के नाम लिखा गया। स्वर्ण पदक टेलर को मिला।

फील्ड इवेंट्स में अमरीकी खिलाड़ियों ने सारी कसर पूरी कर ली। पोलवाल्ट की स्पर्धा विश्व-कीर्तिमानधारी नार्वे के चार्ल्स हाफ की अनुपस्थिति में हालीवुड हाईस्कूल, लास एंजिल्स के 17 वर्षीय छात्र ली बार्नेस ने जीती। विलियम डी हार्ट ह्यूबार्ड लंबी कूद जीतकर व्यक्तिगत स्वर्ण पदक पानेवाला पहला अश्वेत खिलाड़ी बना, परंतु उसे इससे ज्यादा खुशी नहीं हुई। कारण, दो दिन पहले ही पेंटाथलन की प्रतियोगिता के अंतर्गत शामिल लंबी कूद में अमरीका के ही राबर्ट लीग्रेंडे ने, जिसे लंबी कूद स्पर्धा के लिए टीम में शामिल नहीं किया गया था, अपना गुस्सा निकालते हुए 25 फुट 5¼ इंच की छलाँग लगाकर विश्व-कीर्तिमान स्थापित किया था। 25 वर्षीय हेराल्ड ओसबर्न ने भी अनूठा

प्रदर्शन कर दोहरा खिताब जीता। 7 जुलाई को ऊँची कूद में 1.98 मीटर (6 फुट, 6 इंच) की ऊँचाई नापकर और फिर 5 दिन बाद डेकाथलन की अंतिम स्पर्धा में अपने ही देशवासी एमर्सन नोर्टन को पछाड़कर विश्व-कीर्तिमान स्थापित करते हुए सोने का तमगा जीता। चक्का फेंक में 23 वर्षीय अमरीकी क्लेरेंस हाऊसर ने गोल घूमकर फेंकने की तकनीक की ईजाद करते हुए स्वर्ण पदक प्राप्त किया और चार वर्ष बाद अगले ओलंपिक में चक्का एवं गोला फेंक की दोनों स्पर्धाएँ जीतकर यह श्रेय अर्जित करनेवाला पहला खिलाड़ी हुआ। इस वर्ग में अमरीकियों को चुनौती सिर्फ त्रिकूद में मिली, जहाँ आस्ट्रेलियाई निक विटर ने विश्व-कीर्तिमान (50 फुट 11¼ इंच) बनाते हुए पहला स्थान पाया। कुल मिलाकर एथलेटिक्स में 6 विश्व-कीतिमान तथा 15 ओलंपिक-कीर्तिमान स्थापित हुए।

ओलंपिक चैंपियन, जो टार्जन बना

एथलेटिक्स के बाद सर्वाधिक धूम टूरेलेस तरणताल में रही, जहाँ अमरीकी तैराकों की जबरदस्त सफलता ने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। पहली बार ओलंपिक खेलों में लेन विभक्त करने के लिए रस्सियों का इस्तेमाल किया। इस स्पर्धा में सबसे ज्यादा नाम कमाया जानी वेसमूलर ने, जिसने 100 मीटर, 400 मी. फ्री स्टाइल एवं 4×200 मी. रिले में स्वर्ण पदक तथा वाटरपोलो की अमरीकी टीम के साथ कांस्य पदक पाया। वेसमूलर ने अपनी सफलता का सिलसिला अगले (एमस्टरडम) ओलंपिक में भी बरकरार रखा, जहाँ उसने 100 मीटर फ्री स्टाइल एवं 4×200 रिले का स्वर्ण पदक जीता।

बचपन में काफी कमजोर वेसमूलर बाल्यकाल से ही जबरदस्त तैराक था। 10 वर्ष के तैराकी जीवन में वह एक भी रेस नहीं हारा। 100 मीटर फ्री स्टाइल को एक मिनट से भी कम समय में पूरा करनेवाला वह पहला तैराक था। 1932 के ओलंपिक खेलों के लिए जब वह प्रशिक्षण ले रहा था, तभी उसे स्वीमिंग सूट के विज्ञापन का अवसर मिला। बाद में उसने 'टार्जन द एपमेन' नामक फिल्म में 'टार्जन' की भूमिका निभाई तथा इसी नाम से विख्यात हुआ।

30 वर्षीय अमरीकी एल्बर्ट व्हाइट ने स्प्रिंग बोर्ड तथा प्लेटफार्म डाइविंग दोनों में स्वर्ण पदक जीता। तैराकी में अमरीकियों को चुनौती 16 वर्षीय आस्ट्रेलियाई एंड्रयू 'बांय' चार्ल्सटन ने दी, जिसने विश्व-कीर्तिमान स्थापित करते हुए 1500 मीटर फ्री स्टाइल का स्वर्ण पदक हासिल किया।

महिलाओं के वर्ग में 100 मीटर फ्री स्टाइल में शिकागो की 17 वर्षीया एथेल लैकी ने अंतिम 25 मीटर में अदम्य साहस जुटाकर विश्व-कीर्तिमानधारी गरट्रड एडर्ले को पछाड़ दिया और स्वर्ण की हकदार हुई। एक कसाई बाप की बेटी एडर्ले दो वर्ष बाद,

अगस्त 1926 में 14 घंटे तथा 39 मिनट में इंग्लिश चैनल पार कर यह गौरव पानेवाली पहली महिला तैराक हुई। लेकिन इस कार्य के दौरान लहरों के थपेड़ों ने उसे बहरा बना दिया।

मुक्केबाजी में 29 देशों ने हिस्सा लिया और सभी फाइनल 20 जुलाई को डी. हाइवर वेलोड्रम में संपन्न हुए जो पूरी तरह से विवादास्पद रहे। योरोपीय देशों की प्रथानुसार रेफरी को रिंग के बाहर बैठकर मैच नियंत्रित करना पड़ा, जिसके कारण अमरीकी एवं ब्रिटिश मुक्केबाजों को खासी परेशानी हुई। बेंटमवेट के प्रारंभिक मुकाबलों में अमरीकी जो लाजरस को इस वजह से अयोग्य घोषित कर दिया गया, क्योंकि उसने रेफरी द्वारा 'स्टाप' कहने के बाद भी अपने प्रतिद्वंद्वी स्वीडिश आस्कर एंड्रेन पर पंच लगा दिया था, जबकि लाजरस के अनुसार वह रेफरी की आवाज नहीं सुन सका था।

फलाईवेट वर्ग में 18 वर्षीय अमरीकी स्कूली छात्र फिडेल ला बारबा ने स्वर्ण पदक जीता। आगे चलकर उसने पेशेवर मुक्केबाज के रूप में जबरदस्त ख्याति पाई। 1927 में उसने विश्व फ्लाईवेट का भी खिताब जीता। बाद में वह हालीवुड फिल्मों के लिए संवाद लिखने का भी काम करने लगा। फीदरवेट वर्ग में 16 साल 162 दिन के अमरीकी मुक्केबाज जैकी फील्ड्स ने न केवल स्वर्ण पदक हासिल किया, वरन वह इस ओलंपिक का सबसे कमउम्र स्वर्ण पदक विजेता भी बना। फाइनल में वह अपने जिगरी दोस्त जो सालास को हराने के बाद इतना अधिक भावुक हो गया कि ड्रेसिंग रूम में जाकर दहाड़ें मारकर रोने लगा। बाद में 1929 में उसने वेल्टर वेट का विश्व खिताब भी जीता। दूसरी ओर इस ओलंपिक के वेल्टर वेट फाइनल के दौरान बेल्जियम एवं अर्जेंटाइनी दर्शकों के बीच जबरदस्त हाथापाई भी हुई।

मुक्केबाजी के इन मुकाबलों की अपेक्षा सर्वाधिक चर्चित रहा, मिडिल वेट वर्ग का क्वार्टर फाइनल, जोकि ब्रिटेन के हैरी मलिन एवं फ्रांस के रोजर ब्राउन के बीच हुआ। पहले तो ब्राउन को विजेता घोषित किया गया, परंतु स्वीडिश अधिकारियों ने ब्राउन के लड़ने के तरीके पर प्रोटेस्ट दर्ज किया। ब्राउन को मुक्केबाजी के दौरान मुँह चबाने की आदत थी, जिसकी वजह से उसने मलिन की छाती के कुछ हिस्सों को चबा डाला था। अतः उसे अयोग्य घोषित कर दिया गया। उसके समर्थकों ने इस पर हॉल के भीतर हुड़दंग मचाया, जो पुलिस-हस्तक्षेप के बाद ही थमा। फिर अगले दिन फाइनल के दरम्यान हॉल फ्रांसिसी एवं अर्जेंटाइनी दर्शकों के जबरदस्त शोर से गूँजता रहा। मलिन फाइनल में अपने ही देश के जान इलियट को हराकर अपने खिताब की रक्षा करनेवाला पहला मुक्केबाज बना।

कुश्ती की लोकप्रियता भी इस समय तक काफी बढ़ चुकी थी। यही वजह रही कि जहाँ फ्री स्टाइल वर्ग में 12 देशों के 187 पहलवानों ने हिस्सा लिया, वहीं ग्रीको-रोमन वर्ग

में 19 देशों के 250 पहलवानों ने स्वर्ण पदक पर अपनी दावेदारी पेश की। फ्री स्टाइल में अमरीका ने 4 तथा ग्रीको-रोमन में फिनलैंड के पहलवानों ने 3 स्वर्ण अपने देश के लिए जुटाए। ग्रीको-रोमन वर्ग में 36 वर्षीय फिनलैंड के काले एंटिला ने फीदरवेट का स्वर्ण पाया। इससे पहले एंटवर्प ओलंपिक में उसने फ्री स्टाइल लाइट वेट वर्ग का स्वण जीता था। भारोत्तोलन की 5 स्पर्धाओं में 3 इटली एवं 2 मेजबान फ्रांस के हिस्से में आईं।

साईकिल चालन एवं तलवारबाजी में फ्रांसिसी छाए रहे। साईकिलिंग में 22 देशों ने 6 स्वर्ण पदकों के लिए हिस्सा लिया जिसमें मेजबान फ्रांस ने 4 स्वर्ण पदक हथिया लिए। 1000 मी. स्प्रिंट जीतनेवाले फ्रांसिसी लुसिन मिचार्ड ने बाद में विश्व पेशेवर का भी खिताब जीता। रोड रेस में अर्मा ब्लेन शोनेट ने अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी से 10 मिनट के फासले से स्वर्ण जीता। तलवारबाजी में, जोकि डी. हाईवर वेलोड्रम में संपन्न हुई, रोजर ड्यूक्रेट (फ्रांस) 3 स्वर्ण तथा 2 रजत जीतने में सफल रहा। इस दौरान फ्रांसिसी एवं इतालवी अधिकारियों के बीच कई बार तीखी झड़पें भी हुईं।

महिलाओं के लिए पहली बार तलवारबाजी की फॉयल स्पर्धा आयोजित हुई, जिसमें डेनमार्क की 33 वर्षीय एलेन ओट्टिला ओसियर स्वर्ण जीतने में सफल रही। ओसियर 1912 के स्टाकहोम ओलंपिक में इपी (व्यक्तिगत) मुकाबले में रजत जीतनेवाले इवान ओसियर की पत्नी थी।

लॉन टेनिस में अमरीकियों ने पाँच मुकाबलों में फ्रांसीसियों को परास्त किया। पुरुष एकल एवं युगल के मैच 5 सेट तक चले। महिलाओं में सुजेन लैग्लेन की अनुपस्थिति में 18 वर्षीय हेलेन विल्स आसानी से चैंपियन हुई। यहीं टेनिस के अंतिम मैच खेले गए। इसके बाद से इस खेल को ओलंपिक प्रतियोगिता से हटा दिया गया, लेकिन 64 वर्ष बाद सियोल ओलंपिक-1988 में इसे पुनः आरंभ किया गया।

रोइंग के मुकाबले सीन नदी में हुए, जिसमें 10 देशों ने भाग लिया। ब्रिटेन, अमरीका तथा स्विट्जरलैंड 2-2 मुकाबले जीतने में सफल रहे। काक्सड एट्स में विजयी अमरीकी दल में बेंजामिन स्पांक भी शामिल था, जिसने बाद में शिशु रोग विशेषज्ञ के रूप में ख्याति पाई। उसने बच्चों के पालन-पोषण पर भी एक पुस्तक लिखी, जिसकी 45 लाख से भी ज्यादा प्रतियाँ बिकी थीं। 1972 में वह पीपुल्स पार्टी की ओर से राष्ट्रपति पद के लिए उम्मीदवार भी बना। यार्टिंग के 8 मी. मुकाबले में नार्वे की विजेता टीम में आगस्ट रिंगवोल्ट की पिता-पुत्र की जोड़ी मौजूद थी, जबकि उपविजेता ग्रेट ब्रिटेन टीम में रिग्स भाइयों—थामस एवं वाल्टर की जोड़ी थी।

निशानेबाजी में इस बार सभी मिलिट्री स्पर्धाएँ हटा दी गईं, फिर भी 11 स्पर्धाएँ हुईं, जिसमें 6 में अमरीकी निशानेबाजों ने स्वर्ण पदक जीता। रेपिड फायर पिस्टल में अमरीकी नौसेना में सार्जेंट 31 वर्षीय हेनरी वेली ने सातवें शूट आफ में स्वीडिश विहेल्म

कार्लबर्ग को हराकर स्वर्ण पदक जीता। 32 वर्षीय अमरीकी मोरिस फिशर ने 3 स्वर्ण पदक जीतकर अपने स्वर्ण पदकों की संख्या 5 तक पहुँचा दी। ग्रेट ब्रिटेन को एकमात्र स्वर्ण डबल शूटिंग टीम में मिला। इस टीम का एक सदस्य एलेन व्हिटी 58 वर्ष, 82 दिन की आयु का था, जो इस ओलंपिक का सबसे बुजुर्ग स्वर्ण विजेता खिलाड़ी हुआ।

टीम मुकाबलों में फुटबाल का स्वर्ण उराग्वे ने जीता, जिसने 60,000 दर्शकों के बीच स्विट्जरलैंड टीम को 3-0 से परास्त किया। फ्रांस में हाकी ज्यादा प्रचलित नहीं होने के कारण उसकी स्पर्धा नहीं हुई। रग्बी भी ओलंपिक खेलों में अंतिम बार यहीं देखा गया, जिसमें 30 हजार दर्शकों के भारी समर्थन के बावजूद फ्रांस 0-17 से अमरीका से हार गया। इससे पहले उसने रूमानिया को 61-3 के भारी अंतर से रौंदा था। पोलो में अर्जेंटाइना जुआन बेल्सन के अंतिम क्षणों में किए गए गोल की बदौलत अमरीका को 6-5 से पीटकर स्वर्ण जीतने में सफल रहा।

इस प्रकार पेरिस का यह दूसरा आयोजन खेलों की दृष्टि से जरूर सफल रहा, परंतु वहाँ इस दौरान वह माहौल नहीं बन सका जिसकी उम्मीद कुबरटिन ने की थी। पेरिस-वासियों का खेल-भावना से रिक्त रवैया लगभग सभी देशों के लिए परेशानी का सबब साबित हुआ। खासकर अमरीका इसका जबरदस्त शिकार हुआ। फिर भी पहली बार की तुलना में इस बार आयोजन काफी सफल रहा, जिसे देखने के लिए काफी तादाद में राजसी परिवार से भी लोग आए थे, जिनमें प्रमुख रहे—प्रिंस ऑफ वेल्स, रूमानिया एवं स्वीडेन के राजकुमार, फ्रांस के राष्ट्रपति गेस्टन डीयूर्गू तथा अबीसीनिया के रीजेंट।

पदक-तालिका—1924

देश	स्वर्ण	रजत	कांस्य
अमरीका	45	27	27
फिनलैंड	14	13	10
फ्रांस	13	15	10
ग्रेट ब्रिटेन	9	13	12
इटली	8	3	5
स्विट्जरलैंड	7	8	10
नार्वे	5	2	3
स्वीडन	4	13	12

नीदरलैंड	4	1	1
बेल्जियम	3	7	3
आस्ट्रेलिया	3	1	2
डेनमार्क	2	5	2
हंगरी	2	3	4
यूगोस्लाविया	2	—	—
चेकोस्लोवाकिया	1	4	5
अर्जेंटाइना	1	3	2
इस्तोनिया	1	1	4
दक्षिण अफ्रीका	1	1	1
लक्समबर्ग	1	1	—
ग्रीस	1	—	—
उरुग्वे	1	—	—
आस्ट्रिया	—	3	1
कनाडा	—	3	1
आयरलैंड	—	1	1
पोलैंड	—	1	1
हैती	—	—	1
जापान	—	—	1
न्यूजीलैंड	—	—	1
पुर्तगाल	—	—	1
रूमानिया	—	—	1

नौवाँ ओलंपिक : 1928–एमस्टरडम

ओलंपिक खेलों के हिमायती देशों में आरंभ से ही हालैंड का नाम खासतौर पर लिया जाता रहा है। अंतर्राष्ट्रीय ओलंपिक समिति के संस्थापक सदस्य के रूप में भी उसकी भागीदारी थी। इसी वजह से वहाँ के खेलप्रेमी अधिकारी 1916 से ही अपने देश में ओलंपिक का आयोजन कराने का यत्न कर रहे थे, परंतु उन्हें सफलता 1923 में मिली,

जब अंतर्राष्ट्रीय ओलंपिक समिति ने 9वें आयोजन का दायित्व एमस्टरडम को सौंपा।

इस निर्णय ने डचवासियों को काफी आह्लादित कर दिया तथा वे इस आयोजन को यादगार बनाने में जुट गए। दक्षिण एमस्टरडम में 40 एकड़ विस्तृत भूमि पर 4500 स्तंभ गाड़कर एक भव्य स्टेडियम का निर्माण किया गया। 40,000 दर्शकों की क्षमतावाले इस स्टेड़ियम में 500 मीटर की साईकिलिंग ट्रेक तथा 400 मी. की एथलेटिक्स ट्रेक के अलावा सबसे अंदर फुटबाल का मैदान भी बनाया गया था।

इस बार 46 देशों के 3014 प्रतियोगियों (290 महिलाएँ) ने 17 विभिन्न खेलों के 110 मुकाबलों में हिस्सा लिया। दो ओलंपिक के अंतराल के पश्चात् प्रथम विश्वयुद्ध के पराजित देशों जर्मनी, आस्ट्रिया, हंगरी एवं बुल्गारिया की वापसी हुई, जिसमें जर्मनी ने तो 300 सदस्यों का दल भेजा। नवागंतुक देश माल्टा, पनामा एवं रोडेशिया (अब जिंबाबवे) रहे। 28 जुलाई को महारानी विल्हेलुनिन की अनुपस्थिति में डच राजकुमार हेंडस्कि ने खेलों का अधिकृत उद्घाटन किया और शांति के प्रतीक कबूतर पहली बार हवा में उड़ाए गए। फुटबाल खिलाड़ी हेनरी डेनिस ने ओलंपिक शपथ ली। फिर मार्चपास्ट हुआ, जिसमें फ्रांस ने भाग नहीं लिया, क्योंकि उसकी टीम को सरकारी मंजूरी नहीं मिली थी।

एथलेटिक्स के फील्ड मुकाबलों में अमरीकियों ने 9 में से 5 स्वर्ण जीतकर जरूर दबदबा बनाया, परंतु ट्रेक में उनके धावक बुरी तरह मात खा गए। फिन्निश धावकों ने भी पिछले दो ओलंपिक की सफलताओं का सिलसिला बरकरार रखा और मध्यम तथा लंबी दूरी की दौड़ का स्वर्ण पदक आसानी से जीता। पावो नूरमी ने 10,000 मीटर की दौड़ यहाँ भी अपने चिरपरिचित प्रतिद्वंद्वी विले रिटोला को हराकर जीती, परंतु 5000 मी. का परिणाम ठीक इसके विपरीत रहा। फिर अगले दिन (4 अगस्त को) उसने ओलंपिक के अपने अंतिम मुकाबले 3000 मी. स्टीपल चेस में भाग लिया, जहाँ वह अपने हमवतन टायवो लाउकोला के बाद दूसरे स्थान पर रहा। यह वही लाउकोला था जिसे पाँच वर्ष पहले टी.बी. होने के कारण मिलिट्री सेवा में नहीं चुना गया था।

पूर्ण एथलीट विलियम्स

लेकिन इससे बढ़कर यहाँ की चर्चित घटना थी, वेनकूवर (कनाडा) के 19 वर्षीय अनजान स्कूली छात्र पर्सी विलियम्स द्वारा 100 एवं 200 मी. की सपाट दौड़ जीतना। डच डाक्टरों ने सभी प्रतियोगियों के डाक्टरी परीक्षण के बाद यह निष्कर्ष निकाला कि सिर्फ विलियम्स ही शारीरिक रूप से पूर्ण एथलीट था। कनाडा वापस आने पर उसे घड़ी, चाँदी का कप एवं तश्तरी, काँसे की प्रतिमा, नीली ग्राहम पेग स्पोर्ट्स कार और पढ़ाई पूरी करने के लिए 14000 डालर की छात्रवृत्ति दी गई। 100 मी. में रजत पदक जीतनेवाला

प्रतियोगी मेडिकल छात्र अश्वेत धावक ब्रिटेन का जैक लंदन था, जिसने पहली बार स्टार्टिंग ब्लाक्स का प्रयोग किया था। गुयाना में जन्मे इस भीमकाय शरीरवाले 'मिस्टर लंदन ऑफ लंदन' के बारे में समीक्षकों का विचार था कि वह यदि भाग लेता तो आसानी से 200 मी. की दौड़ जीत लेता।

बाधा दौड़ के 110 मी. मुकाबले में दक्षिण अफ्रीकी सिडनी एटकिंसन ने, जो कि चार वर्ष पूर्व सिर्फ इंच के फासले से ही स्वर्ण पदक से वंचित हो गया था, पहला स्थान पाया, जबकि 400 मी. में ब्रिटेन के डेविड बर्गले ने ओलंपिक रिकार्ड 53.4 सेकेंड से बाजी मारी। लार्ड बर्गले ने, जो कि बाद में मारक्यूस ऑफ एक्सटर का उत्तराधिकारी बना, प्रसिद्ध फिल्म चॅरियट ऑफ फायर में हेराल्ड अब्राहम की भूमिका भी निभाई। 1931 में वह ब्रिटिश संसद में चुना गया, और बाद में बरमुडा का गवर्नर भी बनाया गया। 1948 लंदन ओलंपिक में आयोजन समिति का अध्यक्ष भी बना, जबकि अगले 30 सालों तक अंतर्राष्ट्रीय शौकिया एथलेटिक्स फेडरेशन का भी अध्यक्ष चुना गया।

पिछले ओलंपिक में सफलताओं की पराकाष्ठा को छूनेवाले अमरीकी खिलाड़ियों को दौड़ में पहली सफलता पाँच दिन बाद हासिल हुई। 400 मी. स्प्रिंट में कनाडा के जेम्स बाल की गलती से रेमंड बरबूरी ने स्वर्ण पदक जीता। जेम्स बाल अपनी आदत के अनुसार पूरे समय अपनी ही लेन में दौड़ता रहा। बाद में 4×100 एवं 4×400 रिले रेस में भी अमरीकी खिलाड़ी सफल रहे। परंपरानुसार मैराथन एथलेटिक्स की अंतिम प्रतियोगिता थी, जिसे अल्जीरिया में जन्मे परंतु पेरिस में रहनेवाले मोटर मैकेनिक 29 वर्षीय बाडघेरा अल आउफी ने जीता। जीत का फासला 150 मीटर था।

ओडा स्वर्ण विजेता पहला एशियाई

कूद की स्पर्धाओं में जापान के मिकायो ओडा ने ट्रिपल जंप में 15.21 मी. छलाँग लगाकर स्वर्ण पदक जीतनेवाले पहले एशियाई खिलाड़ी होने का गौरव प्राप्त किया। बाद में ओडा 1964 टोकियो ओलंपिक आयोजन समिति का सदस्य भी बना। लंबी कूद में दूसरा स्थान पानेवाला सिल्विया केटोर, जोकि बाद में 26 फुट से ज्यादा कूदनेवाला पहला खिलाड़ी बना, हैती टीम का एकमात्र प्रतिनिधि था।

फेंकने की स्पर्धा के अंतर्गत शाटपुट में अमरीकी जान कक ने विश्व-रिकार्डधारी जर्मन एमिल हर्शफेल्ड को पीछे छोड़कर स्वर्ण पदक जीता। कक ने 15.87 मी. के थ्रो के साथ विश्व-कीर्तिमान बनाया। रजत पदक अमरीकी हर्मन ब्रिस को मिला, जो बाद में अभिनेता बन गया और छद्म नाम ब्रुस ब्रेंटे के रूप में उसने कई फिल्मों में टार्जन का रोल निभाया।

हैमर थ्रो में आयरलैंड के मेडिकल छात्र पेट्रिक ओ कैलेघन 51.39 मीटर थ्रो के साथ

अमरीकी आधिपत्य को तोड़कर स्वर्ण का हकदार बना। ओ कैलेघन को भूतपूर्व चैंपियन जान फ्लेगनन ने जोकि आयरलैंड में बस गया था, प्रशिक्षित किया था। कैलेघन ने अगले ओलंपिक में अपना खिताब बरकरार रखा। डेकाथलन में विश्व-रिकार्डधारी फिन्निश पावो थोर्यिआ ने नया कीर्तिमान बनाकर स्वर्ण जीता।

एथलेटिक्स में महिलाओं का प्रवेश

ओलंपिक खेल शुरू होने के कोई 28-30 वर्ष बाद एथलेटिक्स मुकाबलों में भी महिलाओं के प्रवेश की माँग उठने लगी। आखिरकार अंतर्राष्ट्रीय ओलंपिक समिति की बैठक में काफी लंबी बहस के बाद 12-5 मत से एथलेटिक्स मुकाबलों में महिलाओं को भी शामिल किए जाने का प्रस्ताव पारित हुआ, जिसके तहत इस ओलंपिक में 13 देशों की लगभग 100 धाविकाओं ने हिस्सा लिया। 100 मी. की सपाट दौड़ महिलाओं की पहली स्पर्द्धा थी, जिसे इली नाइस (अमरीका) की 16 वर्षीया स्कूली छात्रा एलिजाबेथ रोबिंसन ने अपने विश्व-रिकार्ड समय 12.2 सेकेंड की बराबरी से जीता। तीन वर्ष बाद वह एक हवाई दुर्घटना में बुरी तरह जख्मी हो गई। उसके एक पैर की हड्डी टूट गई तथा एक हाथ भी बुरी तरह कुचला गया। माथे एवं पलकों पर भी गहरी चोटें आईं। सात हफ्ते तक वह अस्पताल में अचेत अवस्था में रही तथा दो वर्ष तक चलने-फिरने की स्थिति में नहीं थी। लेकिन इसके बाद अच्छे उपचार से वह चलने-फिरने लगी और 1936 के ओलंपिक खेलों में भी हिस्सा लेने पहुँच गई—जहाँ वह 4×100 की रिले स्वर्ण पदक विजेता अमरीकी टीम की सदस्या थी।

800 मी. की दौड़ जर्मन की विश्व-रिकार्डधारी लीना रेडके ने अपने विश्व-कीर्तिमान को खंडित करते हुए 2:16:8 के समय के साथ जीता। इस दौड़ की समाप्ति के बाद कई धाविकाएँ इस बुरी तरह थक चुकी थीं कि उन्हें डाक्टरी उपचार देना पड़ा। इस पर तत्कालीन आई. ओ. सी. के अध्यक्ष काउंट हेनरी द बैलेट लातूर ने पुरानी ग्रीस परंपरा के अनुसार महिलाओं को ओलंपिक में प्रतिबंधित करने का सुझाव रखा। अंतर्राष्ट्रीय एमेच्योर एथलेटिक्स फेडरेशन ने स्थिति की नाजुकता को समझते हुए महिलाओं की 200 मी. से ज्यादा लंबी दौड़ पर प्रतिबंध लगा दिया जोकि अगले 32 वर्षों तक लागू रहा।

ऊँची कूद का स्वर्ण पदक कनाडा की 18 वर्षीया तरुणी एथेल केथरवुड ने जीता। वह इस आयोजन में अपने आकर्षक रूप-रंग के कारण भी खासी चर्चित रही। 'द सस्कटून लिलि' के नाम से मशहूर केथरवुड का कनाडा लौटने पर भव्य स्वागत किया गया तथा 3000 डालर की छात्रवृत्ति दी गई, ताकि वह पियानो संगीत का अध्ययन जारी रख सके। बाद में वह पेरिस खेलों के डेकाथलन एवं ऊँची कूद के स्वर्ण पदक विजेता

अमरीकी हेराल्ड ओस्थोर्न के साथ सात फेरों में बँध गई।

तैराकी में अमरीकी तैराकों ने अपना दबदबा बनाए रखा और 16 में से 10 स्वर्ण पदक जीत लिए। जानी वेस्समुलर ने अपना 100 मी. फ्री स्टाइल का खिताब सफलतापूर्वक बचाया। 1500 मी. फ्री स्टाइल में 'द स्वीडिश स्टरजन' अर्ने बोर्ग ने चार वर्ष पूर्व ब्वाय चार्ल्सटन के हाथों हुई हार का बदला ले, स्वर्ण पदक जीता। तैराकी में जापान को पहला स्वर्ण पदक 25 वर्षीय योशीयुकी त्सुरुता ने दिलाया। 200 मी. ब्रीस्ट स्ट्रोक में उसने जर्मन विश्व-रिकार्डधारी एरिच रेडमेशर को पीछे छोड़ा। इसी मुकाबले में एक और एशियाई तैराक फिलीपींस के टियोफिलो थिडोफोंजो ने कांस्य पाया। 4×100 मी. रिले में अमरीकी टीम ने विश्व-कीर्तिमान बनाकर स्वर्ण पदक जीता। डाइविंग की दोनों स्पर्धाएँ—प्लेटफार्म एवं स्प्रिंग बोर्ड—फ्लोरिडावासी (अमरीका) 5 फुट 3 इंच कद के 21 वर्षीय पीटर डेसजारकिस ने जीतीं। इस प्रकार वह यह सम्मान प्राप्त करनेवाला पहला गोताखोर बना। वैसे प्लेटफार्म डाइविंग में पहले मिस्र के फरीद सीमैका को विजेता घोषित कर, मिस्र की राष्ट्रीय धुन भी बजा दी गई, पर तभी जजों ने अपनी गलती महसूस की और डेसजारकिस को विजयी घोषित किया। वाटरपोलो में स्वर्ण पदक का फैसला अतिरिक्त समय में हुआ, जिसमें जर्मनी ने हंगरी को परास्त किया।

महिला वर्ग में 400 मी. फ्री स्टाइल स्पर्धा अमरीकी तैराक 19 वर्षीया मार्था लारेलियस ने विश्व-रिकार्ड (5:42.8) समय बनाते हुए जीती। चार साल पहले भी वह इसी स्पर्धा में स्वर्ण जीती थी। उसके पिता को भी ओलंपिक खेलों में शिरकत करने का गौरव प्राप्त था। 1906 के अंतरिम खेलों में उसने स्वीडन का प्रतिनिधित्व किया था, पर बाद में वह अमरीका में बस गया। कुछ अर्से बाद मार्था ने रोइंग के डबल स्कल्स में रजत पानेवाले कनाडियन जोसेफ राइट से विवाह रचाया। सबसे तेज महिला तैराक होने का गौरव अमरीका की 14 वर्षीया एल्बिना ओसीपोपिच को मिला। इस स्पर्धा में कांस्य प्राप्त करनेवाली ब्रिटिश तैराक मारग्रेट जायस कूपर थी, जिसने बाद में 400 मी. में कांस्य और 4×100 मी. रिले में रजत पदक प्राप्त किया। कूपर ने बाद में अपने ही देश के जान बेडकॉक से विवाह रचाया। बेडकॉक ने यहाँ एमस्टरडम में रजत तथा 1932 में काक्सलेस फोर्स में स्वर्ण पदक हासिल किया था।

मुक्केबाजी में पुनः रेफरी को रिंग से बाहर रहकर मैच नियंत्रित करना पड़ा, जिसके कारण मुकाबले विवाद से अछूते नहीं रहे। इसी वजह से एक समय अमरीकी दल मुकाबले से अपने मुक्केबाजों को हटाने का फैसला भी कर चुका था, लेकिन किसी तरह स्थिति टाली गई। इटली ने अनधिकृत रूप में टीम खिताब जीता, जबकि अमरीकी मुक्केबाजों का पूरी तरह से सफाया हो गया। फेदरवेट का मुकाबला समाप्त होने के बाद

सभी को यह आशा थी कि अर्जेंटाइनी विक्टर पेराल्टा विजयी घोषित किया जाएगा, परंतु जब डच लैंबर्टसवान क्लेवेरेन को जजों ने विजेता घोषित किया, तो एरिना में अर्जेंटाइनी समर्थकों एवं डच पुलिसकर्मियों में लड़ाई हो गई, जिसके कारण आगे के मुकाबलों में काफी व्यवधान उत्पन्न हुआ। मिडिलवेट में भी जजों की मेहरबानी से चेक यान हर्मानिक को रजत से संतुष्ट होना पड़ा।

जिमनास्टिक का दीवाना मिज़

जिमनास्टिक में भी पहली बार महिलाओं को प्रवेश मिला, जिसके कारण इतने दर्शक आए कि स्टेडियम की गैलरी ही टूट गई। मेजबान देश ने टीम खिताब जीता। पुरुषों में 23 वर्षीय स्विस जार्जेस मिज़ ने तीन स्वर्ण व एक रजत जीतकर अपने देश को अनधिकृत चैंपियन बनाने में अहम भूमिका निभाई। वह पूरी तरह से जिमनास्टिक का दीवाना था। उसने इस खेल में प्रचारक की भूमिका भी निभाई। इसमें उपयोग में आनेवाले वस्त्रों एवं उपकरणों के डिजाइनर का भी काम किया और इसके विषय में कई लेख तक लिखे। 1931 में विश्व-चैंपियनशिप में वह फ्री एक्सरसाइज चैंपियन बना, जिसका 1934 में भी बखूबी बचाव किया। इसके अतिरिक्त इसी वर्ष वह होरिजंटल बार का भी चैंपियन हुआ। वैसे 1924 से 1936 के अपने ओलंपिक कैरियर के दौरान भी वह काफी सफल रहा और 4 स्वर्ण, 3 रजत तथा 1 कांस्य पदक जीता। तलवारबाजी में व्यक्तिगत मुकाबलों का खिताब अपेक्षाकृत अधिक उम्रवाले प्रतियोगियों ने जीतने में सफलता पाई। फ्रांस के 42 वर्षीय लुसियन गॉडिन ने फॉयल एवं इपी में स्वर्ण पदक जीता, जबकि सैब्रे का मुकाबला हंगरी के लेफ्टिनेंट कर्नल ओडोन तर्जीतियांस्की के हिस्से आया। 40 वर्षीय तर्जीतियांस्की कोई दस माह बाद एक कार दुर्घटना में मारा गया। इटली ने फायल एवं इपी के टीम मुकाबले जीतकर चार वर्ष पहले फ्रांस के हाथों हुई हार को भुनाया। महिलाओं की एकमात्र स्पर्धा फॉयल का स्वर्ण जर्मनी की 17 वर्षीया यहूदी तरुणी हेलेन मेयर के हाथ लगा।

घुड़सवारी में इस बार स्वीडन का सफाया हो गया, जबकि मेजबान हालैंड एक नए चैंपियन के रूप में उभरा। थ्री डे इवेंट में लेफ्टिनेंट चार्ल्स पाहुड द मोर्टेंजेस ने व्यक्तिगत एवं टीम-स्पर्धा का स्वर्ण अपने देश हालैंड को दिलवाया। मोर्टेंजेस ने 1932 में भी इस स्पर्धा का स्वर्ण जीता। कुल मिलाकर 1924-32 के दौरान वह 4 स्वर्ण एवं 2 रजत जीतने में सफल रहा। ठीक यही प्रयास ड्रेसाज में जर्मनी के कार्लवान लेम्लेन का रहा।

साईकिल चालन में 18 देशों के बीच मेजबान देश को एक स्वर्ण एवं तीन रजत के जरिए टीम-चैंपियनशिप मिली। किंतु डेनमार्क सर्वाधिक 3 स्वर्ण जीतने में सफल रहा। डेनिस हेनरी हानसेन ने 168 कि.मी. रोडरेस का व्यक्तिगत एवं टीम-स्पर्धा में स्वर्ण

पाया। 4000 मी. टीम परसूट के क्वार्टर फाइनल में तीन विल्ड बंधुओ (फ्रेंक, लियोनार्ड एवं पर्सी) से सज्जित ग्रेट ब्रिटेन टीम ने ओलंपिक-रिकार्ड बनाया, परंतु फाइनल में उन्हें कांस्य से ही संतोष करना पड़ा।

स्लोटन केनल में संपन्न रोइंग के सिंगल स्कल्स में 23 वर्षीय आस्ट्रेलियाई हेनरी राबर्ट पियर्स ने आसानी से स्वर्ण पदक जीता। इस जीत के बावजूद उसे हेनली की प्रसिद्ध डायमंड स्कल्स प्रतियोगिता में भाग नहीं लेने दिया गया, क्योंकि वह पेशे से बढ़ई था। लेकिन व्हिस्की बनानेवाली कनाडा की एक कंपनी ने उसे अपने यहाँ सेल्समेन का काम दिया, जिसके फलस्वरूप वह हेनली स्पर्धा में भाग लेने की योग्यता पा गया और 1931 में विजयी रहा। इस दौरान यद्यपि वह कनाडा में बस गया था, लेकिन 1932 के ओलंपिक खेलों में उसने पुनः आस्ट्रेलिया का प्रतिनिधित्व किया और अपना दूसरा स्वर्ण पदक जीता। 1933 में वह पेशेवर बन गया और इसी वर्ष विश्व पेशेवर स्कलिंग खिताब भी जीता। कैक्सिड पेयर्स के स्वर्ण विजेता स्विस दल में शोकलिन बंधु हेंस एवं कार्ल थे, जबकि रजत पानेवाले फ्रांसिसी दल में भी भाइयों की जोड़ी—मर्शेल अर्मा एवं एडोवर्ड—थी। काक्स ड एट्स का स्वर्ण कैलीफोर्निया विश्वविद्यालय के मल्हारे के पक्ष में गया, जोकि पिछले तीन सालों से लगातार अभ्यास कर रहा था। इसमें रजत जीतनेवाली ब्रिटिश टीम में गे निकोलस (जूनियर) भी था, जिसके पिता ने 20 वर्ष पहले इसी स्पर्धा में स्वर्ण जीता था। यार्टिंग की छः मीटर प्रतियोगिता नार्वे ने जीती, जिसकी कप्तानी नार्वे के राजकुमार ओलाव कर रहे थे। इस प्रकार उन्होंने राज परिवार के लिए एक मिसाल पेश की। इसी टीम में जोहन तथा एरिक एंकर भाइयों की भी जोड़ी थी।

भारोत्तोलन के लाइट हैवीवेट वर्ग में मिस्र के सैद नसीर ने विश्व-रिकार्ड (355 कि.ग्रा.) बनाते हुए स्वर्ण पदक जीता। ओलंपिक खेलों में यह मिस्र का ही नहीं, वरन अफ्रीका महाद्वीप का भी पहला स्वर्ण पदक था। कुश्ती के ग्रीको-रोमन मुकाबले में जर्मनी को टीम टाइटिल तथा फ्री स्टाइल में फिनलैंड को खिताब मिला। माडर्न पेंटाथलन में स्वीडिश वर्चस्व बना रहा और स्वेन थोफेल्ट ने पिछले चैंपियन लिंडमेन को पीछे छोड़ते हुए स्वर्णपदक जीता।

ओलंपिक हाकी में भारतीय स्वर्णयुग की शुरुआत

हाकी में 9 देशों ने हिस्सा लिया, जिसमें 29 मई को हुए फाइनल में पहली बार ओलंपिक खेलों में शिरकत करनेवाली भारतीय टीम ने 50,000 दर्शकों के सम्मुख मेजबान हालैंड को 3-0 से परास्त कर अपने स्वर्णिम युग की शुरुआत की। पूरी प्रतियोगिता में अजेय रहकर भारत ने 5 मैचों में 29 गोल किए थे। गोलकीपर रिचर्ड एलेन की शानदार चुस्ती के आगे कोई भी टीम भारत पर गोल नहीं कर सकी। सेंटर फारवर्ड कैप्टन ध्यानचंद के

कलात्मक खेल ने भी देखनेवालों के होश उड़ा दिए।

फुटबाल में 18 देशों ने भाग लेने की घोषणा की थी, लेकिन अंतिम समय में ब्रिटेन ने एमेचर के नाम पर खेलने से इनकार कर दिया। फाइनल उरुग्वे एवं अर्जेंटाइना के बीच खेला गया, जो पहले 1-1 की बराबरी पर छूटा। यह पुनः खेला गया, जिसमें अर्जेंटाइना को 1 के विरुद्ध 2 गोलों से हराकर उरुग्वे चैंपियन बना। इसी जीत की बदौलत 'फीफा' ने उसे 1930 विश्वकप फुटबाल की मेजबानी सौंपी। फुटबाल के प्रत्येक मैच के दौरान स्टेडियम दर्शकों से खचाखच भरा रहा। खिलाड़ियों के शौकिया स्तर की वजह से निशानेबाजी एवं लॉन टेनिस की प्रतियोगिताएँ इस बार नहीं हुईं।

इस प्रकार यह नौवां आयोजन पूरी ओलंपिक भावना के अनुरूप संपन्न हुआ। पूरी प्रतियोगिता के दौरान पहली बार ओलंपिक ज्योति जलती रही। इसके अलावा स्टेडियम के बाहर बड़े-बड़े बोर्ड भी लगवाए गए थे, जिसमें प्रतियोगिता की गतिविधियों से हर पल दर्शकों को अवगत कराया जाता था। डचवासियों ने भी अपनी शानदार मेहमाननवाजी एवं व्यवस्था से सारे खिलाड़ियों को खुश रखा, फिर भी पूरी प्रतियोगिता के दौरान एक कमी हर पल खलती रही और वह थी—कुबरटिन की। अपने खराब स्वास्थ्य की वजह से वह यहाँ उपस्थित नहीं हो सका था।

पदक-तालिका—1928

देश	स्वर्ण	रजत	कांस्य
अमरीका	22	18	16
जर्मनी	10	7	14
फिनलैंड	8	8	9
स्वीडन	7	6	12
इटली	7	5	7
स्विट्जरलैंड	7	4	4
फ्रांस	6	10	5
नीदरलैंड	6	9	4
हंगरी	4	5	—
कनाडा	4	4	7
ग्रेट ब्रिटेन	3	10	7
अर्जेंटाइना	3	3	1

डेनमार्क	3	1	2
चेकोस्लोवाकिया	2	5	2
जापान	2	2	1
इस्तोविया	2	1	2
मिस्र	2	1	1
आस्ट्रिया	2	—	1
आस्ट्रेलिया	1	2	1
नार्वे	1	2	1
पोलैंड	1	1	3
यूगोस्लाविया	1	1	3
दक्षिण अफ्रीका	1	—	2
भारत	1	—	—
आयरलैंड	1	—	—
न्यूजीलैंड	1	—	—
स्पेन	1	—	—
उरुग्वे	1	—	—
बेल्जियम	—	1	2
चिली	—	1	—
हैती	—	1	—
पुर्तगाल	—	—	1
फिलीपींस	—	—	1

दसवाँ ओलंपिक : 1932—लासएंजिल्स

प्रथम विश्वयुद्ध के बाद ओलंपिक खेल और उससे जुड़ी भावनाओं, परंपराओं की महत्ता से लगभग सभी देश अच्छी तरह वाकिफ हो चुके थे, अतः इस खेलकुंभ की मेजबानी के लिए काफी समय पहले से ही दावा पेश किया जाने लगा। इन्हीं दावेदारों में अमरीका के पश्चिमी प्रांत कैलीफोर्निया का शहर लासएंजिल्स भी प्रयासरत था। वास्तव में यह खेलप्रेमी विलियम मेरी गारलैंड की पुरजोर कोशिश थी जिसे आखिरकार 1923 में आई.

ओ.सी. ने सार्थकता प्रदान करते हुए दसवें आयोजन का भार लासएंजिल्स को सौंपा।

स्वीकृति पाते ही गारलैंड और उसके सहयोगी ओलंपिक आयोजन को नए सिरे से आयोजित करने में लग गए। एक नए स्टेडियम का निर्माण किया गया, जिसकी क्षमता करीब 1,05,000 थी। इसे लासएंजिल्स मेमोरियल कोलेसियम कहा गया और इसका ट्रैक पीसे हुए पीट से बना था। 1904 सेंट लुई में हुए ओलंपिक में ज्यादातर यूरोपीय देशों के न आने का कारण गारलैंड अच्छी तरह से समझते थे, इसलिए इस बार उन्होंने कुछ साहसिक कदम भी उठाए। उन्होंने प्रत्येक योरोपीय प्रतियोगी के लिए कम दरों में जहाज एवं रेलसेवा उपलब्ध कराने का वायदा किया, जिस पर होनेवाला खर्च अनुमानित व्यय का मात्र एक तिहाई ही था। इतना ही नहीं, उसने प्रत्येक प्रतियोगी के रहने, खाने-पीने एवं आने-जाने की जिम्मेदारी उठाने की भी घोषणा की। इसके लिए उसने लासएंजिल्स से 12 मील दूर बाल्डविन की मनोरम पहाड़ियों में पुरुष खिलाड़ियों के लिए एक खेल गाँव का निर्माण करवाया। 320 एकड़ में फैले इस खेल गाँव में मैक्सिकन पद्धति से दो कमरोंवाले 550 काटेज, 40 रसोईघर, अस्पताल, पुस्तकालय, डाकघर, मनोरंजन केंद्र थे। महिलाओं को विल्शायर वाउलेवर्ड स्थित आलीशान चैपमेन पार्क होटल में ठहराया गया।

30 जुलाई को गारलैंड और उसके सहयोगियों की मेहनत साकार हुई, जब खुले आकाश के नीचे एक लाख से भी ज्यादा दर्शकों के सामने अमरीकी उपराष्ट्रपति चार्ल्स कर्टिस ने इन खेलों का विधिवत शुभारंभ किया। अमरीकी राष्ट्रपति हरबर्ट हूवर के चुनाव में व्यस्त होने के कारण चार्ल्स कर्टिस को यह सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस रंगारंग उद्घाटन के अवसर पर लगभग 200 कबूतर छोड़े गए। इस बार 37 देशों के 127 महिला प्रतियोगियों सहित कुल 1408 खिलाड़ियों ने अपने फन का प्रदर्शन किया, जिसमें चीन का एकमात्र प्रतिनिधि चेन चुन लीयू भी शामिल था। कोलंबिया भी पहली बार इन खेलों में उतरा।

एथलेटिक्स के मुकाबले में समीक्षकों को भय था कि लासएंजिल्स का शुष्क मौसम कहीं एथलीटों को शीघ्र थका न दे, परंतु इसके विपरीत एथलीटों का प्रदर्शन इतना स्तरीय रहा कि इस दौरान आठ विश्व-रिकार्ड एवं तेरह ओलंपिक-रिकार्ड बने। इनमें सबसे खास बात रही, अमरीकी एथलीटों द्वारा घरेलू दर्शकों के सम्मुख जानदार प्रदर्शन और फिन्निश धावकों का निराशाजनक प्रदर्शन। पिछले तीन ओलंपिक खेलों में मध्यम एवं लंबी दूरी की दौड़ों पर एकछत्र राज्य करनेवाले फिन्निश धावक इस बार सिर्फ 5000 मी. एवं स्टीपल चेज ही जीत पाए।

इन प्रतियोगिताओं में सबसे पहला उलटफेर 31 जुलाई को हुआ, जब 10,000 मी. दौड़ में पोलिश धावक जानूज़ कुसोचिंस्की ने अंतिम चक्र में दम लगाकर फिन्निश

धावक वोल्मारी आइसो-होलो एवं लारी विश्तानेन को दूसरे एवं तीसरे स्थान पर धकेल दिया। दौड़ प्रतियोगिता में फिनलैंड को पहला स्वर्ण 5 जुलाई को 5000 मी. दौड़ में नसीब हुआ। किंतु यह काफी कटु माहौल में संपन्न हुआ। विश्व-रिकार्ड होल्डर लारी लेहतीनेत ने ओलंपिक रिकार्ड (14 मि. 30 से.) बनाते हुए यह दौड़ जरूर जीती, परंतु दौड़ के अंतिम क्षणों में उसने अमरीकी धावक राल्फ हिल के सामने जानबूझकर बाधा दी और उसे आगे नहीं बढ़ने दिया। उसके इस व्यवहार से काफी समय तक कोलेसियम में फिन्निश खिलाड़ियों की हूटिंग होती रही। अगले दिन क्रास कंटी रेस में 25 वर्षीय आइसो-होलो ने फिनलैंड के लिए एक और स्वर्ण जीता, किंतु इस दौड़ में लेप चेकर की गलती से धावकों को एक चक्र ज्यादा दौड़ना पड़ा। इस अतिरिक्त चक्र की वजह से रजत एवं कांस्य पदक विजेता का फैसला करना मुश्किल हो गया, क्योंकि 3000 मी. की समाप्ति पर अमरीकी जोसेफ मैकूस्के दूसरे स्थान पर था जबकि दौड़ की समाप्ति पर ब्रिटिश थामस ईव्रनसान। लेकिन मैकूस्के ने खेल-भावना का परिचय देते हुए सहर्ष कांस्य पदक स्वीकार कर लिया।

'मिडनाइट एक्सप्रेस' टोलन का शानदार डबल

सबसे तेज धावक के लिए हुए मुकाबले में अमरीकी मिशीगन विश्वविद्यालय के छात्र एडी टोलन एवं सिल वा की विश्वविद्यालय के छात्र राल्फ मैटकैफे के बीच जबदर्स्त संघर्ष हुआ, जिसमें जजों ने घंटों दौड़ की फिल्म देखने के बाद चश्माधारी टोलन के पक्ष में निर्णय दिया। दौड़ते समय चुइंगगम चबानेवाले 'मिडनाइट एक्सप्रेस' टोलन ने दो दिन बाद 200 मी. की दौड़ भी आसानी से जीतकर अपना डबल पूरा किया। 5 फुट 7 इंच कद के टोलन के बाद में सर्कस में विदूषक का भी काम किया।

400 मी. की दौड़ का मुकाबला भी दो अमरीकी धावकों पेन सिल्वेनिया विश्वविद्यालय के विलियम कार एवं स्टेनफोर्ड विश्वविद्यालय के विश्व-रिकार्डधारी बेंजामिन ईस्टमैन के बीच काँटे का रहा, जिसमें अंतिम 100 मि. में नाटे कद के 'वी विले' (कार) ने जोर लगाया और विश्व-रिकार्ड स्थापित करते हुए 46.2 सेकेंड का समय बनाया। लेकिन दुर्भाग्यशाली कार का एथलीट जीवन केवल एक साल में ही समाप्त हो गया, जबकि एक कार-दुर्घटना में उसका पैर टूट गया। क्योंकि 800 मीटर के विश्व-रिकार्डधारी ईस्टमैन ने 400 मी. में ही कार का सामना करने का इरादा किया था, अत: अब उसकी अनुपस्थिति में 24 वर्षीय ब्रिटिश धावक टामी हैंपसन ने विश्व कीर्तिमान (1 मिनट 49.7 सेकेंड) बनाया।

1500 मी. की दौड़ में भी प्रतियोगिता के ठीक पहले विश्व-रिकार्डधारी फ्रांस के जूल्स लाडूमेघ को पेशेवर दे दिया गया। इसका फायदा मिलान (इटली) के वास्तुकार

लुइगी बेकाली ने उठाया और ओलंपिक-रिकार्ड (3 मिनट 51.2 सेकेंड) बनाते हुए स्वर्ण पदक जीत लिया। पदक वितरण के समय इस नाटे कद के बेकाली ने फासिस्ट सैल्यूट दिया, जिससे वह रातोरात अपने देश का हीरो बन गया। मैराथन दौड़ पावो नूरमी को अयोग्य घोषित करने के बाद भी रोमांचक सिद्ध हुई और इसकी समाप्ति के समय स्टेडियम में पहले चार स्थान पानेवाले धावक पहुँच चुके थे। विजेता अर्जेंटाइना का 20 वर्षीय नाटे कदवाला धावक जुआन कार्लोस जबाला बना। 110 मी. बाधा दौड़ में अमरीकी जार्ज सेलिंग ने अपने ही देश के विश्व-कीर्तिमानधारी पर्सी बियर्ड को हराकर स्वर्ण जीता, किंतु शीघ्र ही उसका भी कैरियर एक मोटर-दुर्घटना से समाप्त हो गया। 400 मी. हर्डल्स में भी खासा उलट-फेर हुआ। अमरीकी ग्लेन हार्डीन एवं मोर्गेन टेलर तथा ब्रिटिश डेविड बर्गले-जैसे धावकों की उपस्थिति के बावजूद बाजी आयरिश बाब टिस्डॉल ने मारी। टिस्डॉल ने 51.7 सेकेंड का समय लिया, जोकि विश्व-रिकार्ड था, परंतु दौड़ के दौरान अंतिम हर्डल गिरा देने के कारण नियमों के हिसाब से यह सम्मान दूसरे स्थान पर आनेवाले हार्डीन को दिया गया। टिस्डॉल ने बाद में डेकाथलन में भी भाग लिया और पहले दिन पाँच स्पर्धाओं के बाद वह सबसे आगे था। किंतु अगले दिन वह अपना यह शानदार फार्म बरकरार नहीं रख सका और आठवें स्थान पर खिसक गया। 50 कि.मी. पैदल चालन की एक नई प्रतियोगिता हुई, जिसे ब्रिटेन के 38 वर्षीय रेलवे कर्मचारी थामस ग्रीन ने जीता।

फील्ड्स इवेंट के मुकाबले भी खासे रोमांचक रहे। पहले ही दिन जबर्दस्त नजारा देखने को मिला, जब ऊँची कूद में चार खिलाड़ी पहले स्थान पर आए। स्वर्ण का फैसला 'जंप आफ' के जरिए हुआ। इसमें कनाडियन डंकन मैकनाटन ने अपने जिगरी दोस्त राबर्ट वान ओस्डल (दोनों साउथ केलिफोर्निया यूनिवर्सिटी के छात्र) को हराया। पोल वाल्ट में जापानी एथलीट शूही निशिदा ने जबर्दस्त प्रदर्शन किया, परंतु अंतिम चक्र में अमरीकी विलियम मिलट ने मात्र आधा इंच ज्यादा उछाल नापकर स्वर्ण अपने नाम कर लिया। लेकिन दूसरे जापानी चूही नोम्बू को ट्रिपल जंप में कोई मात नहीं दे सका। वह 15.72 मी. की छलाँग लगाकर न केवल स्वर्ण पदक का हकदार बना वरन विश्व-रिकार्ड बनाने में भी सफल रहा। इसके दो दिन पहले वह लंबी कूद में पैर में चोट की वजह से केवल कांस्य पदक ही जीत सका, हालाँकि इस समय वह लंबी कूद का भी विश्व-कीर्तिमानधारी था।

मैटी ने लाज रख ली

भाला फेंक स्पर्धा में 'मिस्टर जेवलिन' नाम से मशहूर मैटी जारविनेन (फिनलैंड) ने ओलंपिक रिकार्ड (72.71 मी.) बनाते हुए स्वर्ण जीता। मैटी ओलंपिक खेलों में फिनलैंड

को पहला स्वर्ण पदक दिलानेवाले वर्नर जारविनेन का पुत्र था। उसके तीन पुत्रों ने ओलंपिक में हिस्सा लिया था। सबसे बडे एकीलस जोकि डेकाथलन का विश्व-रिकार्डधारी था, पिछली बार की तरह यहाँ भी केवल रजत पदक ही जुटा सका, जबकि उससे छोटा लारी 5000 मी. एवं 10,000 मी. में कांस्य पदक जीत पाया। लेकिन सबसे छोटे मैटी ने पिता की तरह स्वर्ण जीतकर न केवल अपने परिवार वरन देश की भी लाज रख ली। डेकाथलन में पहले दिन पाँचवें स्थान पर रहनेवाले अमरीकी जेम्स बाश्च ने नया विश्व-कीर्तिमान (8462 अंक) बनाया।

'बेब' डिड्रिक्सन का शानदार प्रदर्शन

महिलाओं की स्पर्धाओं में अमरीकी मिल्ड्रेड डिड्रिक्सन के नयनाभिराम प्रदर्शन ने सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। 26 जून, 1914 को पोर्ट आर्थर (टैक्सास) में जन्मी 'बेब' 4 जुलाई, 1932 को एकाएक चर्चित हो गई, जब ओलंपिक सलैक्शन मुकाबलों में मात्र अपने दम पर टीम टाइटिल जीतने में कामयाब रही। उसने डालास की एकमात्र प्रतियोगी के रूप में भाग लिया और तीन घंटे में दस में से आठ स्पर्धाओं में भाग लेकर छः की विजेता बन गई। ओलंपिक में वह सभी स्पर्धाओं में भाग लेना चाहती थी, किंतु ओलंपिक नियमों के कारण उसे सिर्फ तीन स्पर्धाओं में ही भाग लेने की अनुमति मिली। 31 जुलाई को वह पहली बार ओलंपिक खेलों में उतरी तथा पहली बार ही शामिल भाला फेंक स्पर्धा का स्वर्ण पदक ले उड़ी। फिर चार दिन बाद 80 मी. हर्डल्स विश्व-कीर्तिमान (11.7 सेकेंड) रखते हुए तथा तीन दिन बाद अपने देश की जीन शीले के साथ हाईजंप में भी विश्व-कीर्तिमान (1.66 मी.) के साथ पहले स्थान पर रही। 'जंप आफ' में भी वह शीले के बराबर ही ऊँचाई नापने में सफल रही, लेकिन निर्णायकों ने उसके कूदने की 'वेस्टर्न डाइव रोल स्टाइल' को फाउल करार देते हुए स्वर्ण शीले को दे दिया। दिसंबर 1932 में उसे पेशेवर करार देकर प्रतिबंध लगा दिया गया, क्योंकि उसने अपने नाम एवं फोटो को एक मोटरगाड़ी के विज्ञापन में इस्तेमाल करने की अनुमति दे दी थी। इसके बाद वह सरकस में विदूषक के रूप में भी दर्शकों के सम्मुख आई, परंतु इसके बाद अपने पहलवान पति जार्ज जहारियस के कहने पर वह गोल्फ की ओर आकर्षित हुई, जिसमें वह सफल भी रही। अपने लंबे गोल्फ कैरियर के दौरान वह लगभग सभी स्पर्धाएँ, मसलन विश्व-चैंपियनशिप अमरीकी ओपन, ब्रिटिश ओपन जीतने में सफल रही। इन्हीं सफलताओं की वजह से वह पहली अर्द्धशताब्दी की बेहतरीन महिला खिलाड़ी भी चुनी गई। 17 सितंबर, 1956 को कैंसर से उसकी मृत्यु हो गई।

सबसे तेज महिला धावक का खिताब पोलिस स्नेनिस्लवा वालशिविट्ज (स्टेनावाल्श) ने विश्व-रिकार्ड समय (11.9 सेकेंड) की बराबरी करते हुए जीता।

स्टेनावाल्श भी ओलंपिक की चर्चित खिलाड़ियों में गिनी जाती है। यद्यपि वह पोलैंड में पैदा हुई थी लेकिन उसका परिवार अमरीका में बस गया था। 'वाल स्ट्रीट पतन' की वजह से यदि उसकी नौकरी छुड़ा न दी जाती तो वह संभवतः 1932 के ओलंपिक में अमरीका को एक स्वर्ण पदक दिला सकती थी। नौकरी छूटते ही उसे क्लेवलैंड रिक्रियेशन स्टोर में नौकरी का प्रस्ताव मिला, परंतु ओलंपिक नियमों के अनुसार पेशेवर घोषित हो जाने के डर से वह उसे स्वीकार नहीं कर पाई। तब ओलंपिक आयोजन के 24 घंटे पूर्व उसने अपने जीवन का महत्त्वपूर्ण फैसला करते हुए पोलिश दूतावास में नौकरी स्वीकार कर पोलैंड के प्रतिनिधित्व का फैसला किया। उसके इस फैसले पर उससे द्वेष करनेवालों ने उसे 1947 तक नागरिकता प्राप्त करने से रोके रखा। अपने कैरियर में 11 विश्व-कीर्तिमान स्थापित करनेवाली वाल्श के जीवन का अंत 1980 में हुआ, जब एक डिपार्टमेंटल स्टोर में डकैती के दौरान उसे गोली मार दी गई। बाद में किए गए सेक्स-परीक्षण से यह भी ज्ञात हुआ कि उसमें कुछ पुरुष आर्गन्स थे।

जापानी शक्ति का उदय

तैराकी प्रतियोगिताएँ कोलेसियम से लगे तरणताल में संपन्न हुईं, जिसकी 10,000 की क्षमता भी दर्शकों की अपार भीड़ से छोटी पड़ गई। लेकिन यहाँ सनसनीखेज बात यह रही कि पुरुष स्पर्धा में जापानियों द्वारा अमरीकी तैराकों को पीछे छोड़ दिया गया। यदि डाइविंग के मुकाबलों को अलग कर दें (इसमें सभी छः स्वर्ण अमरीकी गोताखोरों ने जीते थे) तो शेष छः मुकाबलों में 5 स्वर्ण, 4 रजत तथा 3 कांस्य पदक जीतकर जापानी तैराकों ने वाहवाही लूटी। मेजबान को मात्र एक स्वर्ण, एक रजत तथा दो कांस्य पदक से ही संतोष करना पड़ा। बाद में अमरीकी तैराकों ने जापानी तैराकों पर आक्सीजन लेकर अपनी तरण-क्षमता बढ़ाने का आरोप लगाया।

तैराकी के इन मुकाबलों में सबसे तेज तैराक का गौरव 15 वर्षीय यशूजी मियाज़ाकी ने पाया। यहाँ अपने साथ पढ़ने के लिए वह अपनी कोर्स की किताबें भी लेकर आया था। उसे डर था कि वह पढ़ाई में एकदम पीछे न रह जाए। 1500 मी. फ्री स्टाइल में 'उड़न मछली' नाम से प्रसिद्ध कुसुओ कितामुरा ने अंतिम 300 मी. में अपनी क्षमता दर्शाते हुए अपने ही साथी 17 वर्षीय शोजो मकिनो को पीछे छोड़कर स्वर्ण पदक जीता। उस समय उसकी आयु केवल 14 वर्ष 309 दिन थी। वह न केवल उस ओलंपिक का, वरन आज भी तैराकी का सबसे युवा विजेता माना जाता है। बाद में उसने इंटरनेशनल लेबर आर्गेनाइजेशन में जापान का प्रतिनिधित्व किया। 100 मी. बैकस्ट्रोक में तीनों स्थान जापान ने पाए। इसका विजेता मासाजी कियोकावा था, जो 1968 में अंतर्राष्ट्रीय ओलंपिक समिति का सदस्य बना। 200 मी. ब्रीस्ट स्ट्रोक में योशीयुकी त्सुरुता ने अपना

खिताब बचाए रखा, जबकि 4×200 मी. फ्री स्टाइल में जापानी टीम विश्व-रिकार्ड (8 मिनट 58.4 सेकेंड) बनाकर स्वर्ण की हकदार रही। 400 मी. फ्री स्टाइल में फ्लेरेंस क्रेब ने विश्व-रिकार्डधारी फ्रांस के जीन टरीस को सेकेंड के दसवें भाग से परास्त कर अमरीका के लिए मात्र एक स्वर्ण जुटाया। इसी विजय ने क्रेब की किस्मत भी बदल दी, जबकि उसे हालीवुड फिल्मों में टार्जन के लिए चुना गया। 24 वर्षीय क्रेब ने बाद में बक रोजर्स एवं प्लेश गार्डन के चरित्रों को भी जिया।

गोताखोरी के स्प्रिंगबोर्ड में माइकल गेलिटजन ने जिसने मिकी रिली के नाम से भाग लिया था, स्वर्ण तथा हेराल्ड स्मिथ ने रजत जीता, जबकि हाईबोर्ड में परिणाम इसके ठीक विपरीत रहा। मिकी रिली ने इन खेलों के एक माह बाद जार्जिया कोलमेन से विवाह रचाया। कोलमेन ने भी इस ओलंपिक गोताखोरी में ठीक रिली-जैसा प्रदर्शन किया था।

महिला वर्ग में मेजबान टीम ने छः में से पाँच स्वर्ण जीतकर अपना नाम बचाया। इसमें जानदार प्रदर्शन कर 19 वर्षीया हेलेन मेडीसन ने तीन स्वर्ण जीते। 5 फुट 10½ इंच कदवाली मेडीसन इस ओलंपिक के पहले 100 गज से 1 मील तक के सभी रिकार्ड ध्वस्त कर चुकी थी। यहाँ वह 100 मी. आसानी से जीती, परंतु 400 मी. में उसे अपने हमवतन लिनोर काइट ने कड़ी टक्कर दी। फिर भी वह 5 मिनट 28.5 सेकेंड का विश्व-रिकार्ड बनाकर स्वर्ण जीतने में सफल रही। तीसरा स्वर्ण उसे 4 × 100 मी. फ्री स्टाइल रिले में मिला और इसमें भी अमरीकी टीम ने नया विश्व-रिकार्ड बनाया। बाद में मेडीसन ने एक फिल्म 'द वॉरियरस हसबेंड' में एक छोटी भूमिका निभाई। फिर उसने नाईट क्लब डांसर, स्वीमिंग प्रशिक्षक, स्टोर क्लर्क एवं नर्स के रूप में जीविका चलाने का प्रयास किया, किंतु मानसिक तनाव के कारण वह कभी भी स्थिर नहीं रह पाई। तीन बार विवाह एवं तलाक के बाद 1970 में उसकी कैंसर से मृत्यु हो गई।

वाटरपोलो मुकाबले में कुश्ती एवं मुक्केबाजी के नजारे देखने को मिले। ब्राजीलियन टीम के सदस्यों ने जर्मनी से हार के बाद हंगेरियन रेफरी की ठुकाई कर दी। इस हरकत पर ब्राजील को पूरी प्रतियोगिता में प्रतिबंधित कर दिया गया। स्वर्ण हंगरी ने अपने तीनों मैच जीतकर प्राप्त किया। विजयी हंगेरियन दल में फेरेंक तथा अल्लोस केसरु बंधु शामिल थे।

स्वर्ण विजेता जेल में

मुक्केबाजी में अमरीका, अर्जेंटाइना एवं दक्षिण अफ्रीका ने दो-दो स्वर्ण पदक जीते, परंतु अंकों के हिसाब से टीम-टाइटिल मेजबान देश को मिला। वेल्टरवेट वर्ग में सोने का तमगा एडवर्ड फिलन ने जीता, जिसकी गिनती अमरीका के प्रसिद्ध एम्मेचर बाक्सरों में होती है। बाद में फिलन दाँतों के डाक्टर के रूप में भी विख्यात हुआ। सुपर हैवीवेट में

स्वर्ण विजेता अर्जेंटाइनी सेंटियागो लोवेल को देश पहुँचते ही जहाज में विद्रोह का आरोप लगाकर जेल में डाल दिया गया।

कुश्ती के अखाड़े में जहाँ फ्री स्टाइल में अमरीकी पहलवानों ने बाजी मारी, वहीं ग्रीको-रोमन में स्वीडिश पहलवान छाए रहे। फ्री स्टाइल के लाइटवेट वर्ग में फ्रांसिसी छात्र चार्ल्स पैकामे ने, जोकि चार वर्ष पूर्व इसी वर्ग के फाइनल में विवादास्पद निर्णय से हार गया था, स्वर्ण जीता, जबकि हैवीवेट वर्ग में 34 वर्षीय स्वीडिश जोहन रिचहाफ ने एमस्टरडम में जीते खिताब को बरकरार रखा। परंतु सर्वाधिक उल्लेखनीय प्रदर्शन 29 वर्ष के स्वीडिश अखाड़ेबाज पुलिस सिपाही इवार जोहनसन का रहा, जिसने पहले मिडिलवेट का खिताब जीता और फिर चार दिन बाद अपना वजन 11 पौंड कम करके ग्रीको-रोमन के वेल्टरवेट वर्ग में हिस्सा लिया और दूसरा स्वर्ण पदक भी जीत लिया। चार वर्ष बाद उसने इसी स्टाइल के मिडिलवेट वर्ग में पुनः स्वर्ण पदक जीता। सुपर हैवीवेट में स्वर्ण पानेवाले माल्मो (स्वीडन) के बस ड्राइवर कार्ल वेस्टरग्रेन ने ओलंपिक खेलों में अपना तीसरा स्वर्ण पदक जीता। इससे पहले वह 1920 में मिडिलवेट तथा 1924 में लाइट हैवीवेट का खिताब जीत चुका था।

भारोत्तोलन में छः देशों के बीच फ्रांसिसी भारोत्तोलकों ने बाजी मारी। पाँच में से तीन स्वर्ण उनके खाते में गए। लाइट हैवीवेट वर्ग का विजेता फ्रांसिसी लुइस हेस्टीन तो अपनी जीत के प्रति इतना आश्वस्त था कि भार उठाते समय निरीक्षकों को चुटकुले सुनाया करता था।

दर्शकों की भीड़ जिमनास्टिक प्रतियोगिता में भी काफी रही। छः देशों के बीच हुए मुकाबलों को देखने के लिए प्रतिदिन करीब 27,000 दर्शक आए। इस मुकाबले में मेजबानों ने पाँच स्वर्ण पदक जरूर जीते, परंतु दाद इतलावी खिलाड़ियों को मिली। इटली की टीम ने चार स्वर्ण पदक जीते। सबसे अच्छा प्रदर्शन रेमियो मेरी का रहा, जिसने व्यक्तिगत खिताब एवं पैरेलल बार की स्पर्धा तथा टीम-मुकाबले में इटली को स्वर्ण दिलाने में अहम भूमिका निभाई।

साईकिल चालन-प्रतियोगिता में भी इतालवी सवारों ने छः में से तीन स्वर्ण जीतकर टीम खिताब जीता। घुड़सवारी के पाँचों स्वर्ण पाँचों प्रतियोगी देशों फ्रांस, अमरीका, जापान, हालैंड एवं स्वीडन ने आपस में बाँट लिए, जबकि तलवारबाजी में फॉयल एवं इपी का व्यक्तिगत खिताब इतालवी फेंसर क्रमशः गुस्तावो मार्जी एवं गियाकार्लो कोर्निजिया ने जीता। सेब्रे में हंगरी का आधिपत्य बरकरार रहा। महिलाओं की फॉयल का ताज आस्ट्रिया की ऐलन प्रीस ने पहना। इसमें कांस्य पदक जीतनेवाली हंगरी की इरना बोगथी बोगेन अपनी पारिवारिक प्रसिद्धि से ओलंपिक में चर्चित हुई। उसके पिता एल्बर्ट बोगेन ने जहाँ 1912 में आस्ट्रिया की ओर से सैब्रे की टीम-स्पर्धा में रजत पदक

जीता था, वहीं उसका पति एल्डाज़ार गेरेविज हंगरी का मशहूर सेब्रे फेंसर था। उसने इस स्पर्धा में सात स्वर्ण पदक भी जीते थे। बाद में उसका पुत्र पाल भी 1972 व 1980 में सेब्रे टीम-स्पर्धा का कांस्य जीतनेवाले हंगरी दल में शामिल था।

लंबी दूरी के कारण इस बार हाकी में सिर्फ तीन देश ही शिरकत कर पाए, जिसमें भारत ने अन्य दो देशों—जापान (11-1) एवं अमरीका (24-1) को रौंदकर अपना ताज बरकरार रखा। अमरीका के खिलाफ वह जीत आज भी अंतर्राष्ट्रीय स्पर्धा में सबसे बड़ी जीत मानी जाती है। इस मैच में ध्यानचंद ने 8 और उसके छोटे भाई रूपसिंह ने 10 गोल किए। भारत के इस जबर्दस्त प्रदर्शन पर एक टीकाकार ने लिखा—"यह पूर्व का तूफान था, जो अमरीका के सभी ग्यारह खिलाड़ियों को रौंदते हुए निकल गया।" टीमें कम होने के कारण इस बार फुटबाल देखने को नहीं मिला। जबकि माडर्न पेंटाथलन में जोहन ओक्सेनस्टिर्ना ने स्वीडन को लगातार पाँचवीं बार स्वर्ण पदक दिलवाया।

रोइंग में मेजबान देश ने 3 एवं ग्रेट ब्रिटेन ने 2 स्वर्ण जीते। डबल स्कल्स का स्वर्ण जीतनेवाले अमरीकी दल में दोनों सदस्यों केनेथ मेयर्स एवं विलियम गेरेट गिलमोर की आयु क्रमशः 36 एवं 37 वर्ष थी। काक्सड फोर्स की स्पर्धा काफी रोमांचक रही और अमरीका के कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय की टीम ने इटली के वीसा विश्वविद्यालय से मात्र 1 फुट पहले फिनिश लाइन पार की।

अंत में 14 अगस्त को ढलती साँझ में हजारों खिलाड़ियों एवं दर्शकों के द्वारा गाए प्रसिद्ध हवाईयन बिदाई गीत 'अलोहा' से इन खेलों का समापन हुआ। प्रत्येक दृष्टिकोण से यह एक महान आयोजन सिद्ध हुआ। खेलों के ठीक पहले वाशिंगटन के 'वाल स्ट्रीट पतन' से यहाँ भी आर्थिक संकट का खतरा पैदा हो गया था, परंतु खेलों के पश्चात यह पाया गया कि आयोजन समिति को एक लाख डालर का शुद्ध लाभ हुआ है। तकनीकी दृष्टि से भी इन खेलों में खासा परिवर्तन था। प्रत्येक स्पर्धा के समापन पर निर्णय की शुद्धता के लिए फोटो इलेक्ट्रिक टाइमिंग यंत्र प्रयोग में लाया गया, जोकि कई अवसरों पर निर्णायक सिद्ध हुआ। ओलंपिक की खबरों को दुनिया-भर में अतिशीघ्र पहुँचाने के लिए पत्रकारों को टेली-टाइप कम्यूनिकेशन सुविधा उपलब्ध थी, जबकि मुख्य स्टेडियम के प्रेस सेंटर में आटोमेटिक प्रिंटर उपलब्ध था, जिसमें प्रत्येक खेल के ताजा नतीजे बताए जाते थे। खिलाड़ियों को विजयी मंच (विक्ट्री स्टैंड) पर खड़ा कर पदक प्रदान करने की प्रथा भी यहीं से शुरू हुई, जिसके दरम्यान विजेता खिलाड़ी के देश की राष्ट्रीय धुन बजाना तथा तीनों प्रतियोगियों के देशों के झंडे फहराना भी शामिल था। 12 लाख से भी ज्यादा दर्शकों ने इस खेलकुंभ का मजा लिया। निश्चित रूप से ओलंपिक-सफलता की यह सबसे ठोस दिशा थी।

पदक-तालिका—1932

देश	स्वर्ण	रजत	कांस्य
अमरीका	41	32	30
इटली	12	12	12
फ्रांस	10	5	4
स्वीडन	9	5	9
जापान	7	7	4
हंगरी	6	4	5
फिनलैंड	5	8	12
जर्मनी	4	7	5
ग्रेट ब्रिटेन	4	7	5
आस्ट्रेलिया	3	1	1
अर्जेंटाइना	3	1	—
कनाडा	2	5	8
नीदरलैंड	2	5	—
पोलैंड	2	1	4
दक्षिण अफ्रीका	2		3
आयरलैंड	2		—
चेकोस्लोवाकिया	1	2	1
आस्ट्रिया	1	1	3
भारत	1	—	
डेनमार्क		3	3
मैक्सिको		2	
लेटविया		1	
न्यूजीलैंड		1	
स्विट्जरलैंड		1	
फिलीपींस	—		3
स्पेन			1
उरुग्वे	—		1
वेनेजुएला	—	-	1

ग्यारहवाँ ओलंपिक : 1936—बर्लिन

जर्मनी उन गिने-चुने देशों में से है, जो एथेंस के प्रथम आयोजन से ओलंपिक सफर में भागीदार रहा है। लिहाजा इस आंदोलन से ओतप्रोत होकर उसने भी अपने यहाँ ओलंपिक के पड़ाव का प्रयास किया और 1916 में छटवें आयोजन की मेजबानी भी उसे मिली। परंतु उसकी राजनीतिक महत्वाकांक्षा ऐन वक्त पर ओलंपिक भावना के आड़े आ गई, फलस्वरूप उक्त आयोजन प्रथम विश्वयुद्ध की भेंट चढ़ गया। बाद में उसे अपनी इस जिद की कीमत भी चुकानी पड़ी जब 1920 एवं 1924 के आयोजन में उसे आमंत्रित नहीं किया गया। बहरहाल 1928 में पुनः प्रवेश के पश्चात उसने फिर से मेजबानी की दिशा में प्रयास किया और ग्यारहवें खेलकुंभ के लिए बर्सिलोना, रोम एवं बुडापेस्ट के साथ ही उसने भी बर्लिन की दावेदारी पेश की। फिर जब रोम एवं बुडापेस्ट बर्लिन का पक्ष लेकर इस दौड़ से हट गए, तब मई 1931 में आई.ओ.सी. ने डाक मत के जरिए आयोजन-स्थल का चुनाव किया, जिसमें 16 के मुकाबले 43 मतों से बर्लिन के पक्ष में फैसला हुआ और जर्मन ओलंपिक समिति ने ओलंपिक भावनाओं के अनुरूप खेल आयोजित करने का वायदा किया।

परंतु जनवरी, 1933 में नाजी तानाशाह एडोल्फ हिटलर के सत्ता में आते ही ओलंपिक-समीकरण बिगड़ने लगा। हिटलर, जो अपने आर्य वंश को विश्व का श्रेष्ठतम वंश मानता था, अपनी श्रेष्ठता साबित करने पर तुल गया। उसने अपने सभी सरकारी विभागों को निर्देश दिया कि वे ओलंपिक खेलों में भाग लेनेवाले प्रतियोगियों को पूरी सुविधा प्रदान करें। इतना ही नहीं, उसने जर्मन प्रतियोगियों को खेल आरंभ होने के महीनों पहले प्रशिक्षण दिए जाने का भी निर्देश दिया।

हिटलर को यहूदियों से सख्त चिढ़ थी, इसलिए जर्मन टीम में मात्र एक यहूदी खिलाड़ी शामिल था। इतना ही नहीं, सत्ता में आते ही उसने बर्लिन एवं गारमिख पार्टेकिचेन (शीतकालीन ओलंपिक का आयोजन-स्थल) की आयोजन समिति के अध्यक्ष क्रमशः डॉक्टर थियोडोर लेवाल्ड एवं डॉक्टर कार्ल रिटन वान हाल्ट को, जो कि यहूदी थे, पद से हटा दिया। गारमिख पार्टेकिचेन में बने प्रसाधन गृह पर तो एक तख्ती पर यह लटका दिया था कि 'कुत्तों एवं यहूदियों का प्रवेश वर्जित है।' बाद में तत्कालीन आई.ओ.सी. अध्यक्ष हेनरी डी बेलेंट लातूर के विरोध प्रकट करने पर उसे हटाया गया।

यहूदियों ने अपने साथ हुए दुर्व्यवहार को मद्देनज़र रखकर अनेक देशों से इस खेल के बहिष्कार के लिए कहा। इसे लेकर अमरीका में तो काफी वाद-विवाद भी हुआ, जिसमें भाग लेने का विरोध करनेवाले आई.ओ.सी. में अमरीकी सदस्य अर्नेस्ट ली जेहंक

को आई.ओ.सी. से भी निष्कासित कर दिया गया। कुछ राष्ट्रों ने इन खेलों के समानांतर बर्सिलोना में खेल आयोजित करने का भी प्रयास किया, परंतु उसी समय स्पेन में छिड़े गृहयुद्ध के कारण यह प्रयास असफल हो गया।

यहूदियों एवं कुछ अन्य देशों के विरोध के बावजूद ओलंपिक खेलों की परंपरा के हिसाब से इस बार प्रबंध अच्छा था। एक हजार सोलह सौ खेलों के लिए पाषाण निर्मित स्टेडियम को और बढ़ाकर उसकी क्षमता करीब एक लाख कर दी गई। 18,000 दर्शकों की क्षमतावाले एक नए तरणताल सहित अन्य खेलों के लिए भी अच्छा इंतजाम किया गया। पुरुष खिलाड़ियों के ठहरने के लिए जो काटेज बनाए गए, वे 1932 के खेल गाँव में बने काटेजों से बड़े थे। महिलाओं को स्टेडियम के पास बने स्पोर्ट्स कांप्लेक्स में ठहराया गया। इस ओलंपिक कुंभ में 49 देशों की 328 महिला खिलाड़ियों सहित कुल 4066 प्रतियोगियों ने अपने फन का प्रदर्शन किया। अफगानिस्तान, कोस्टारिका, पेरू, बारमुडा, बोलोविया एवं लीचेंस्टीन पहली बार इन खेलों में शरीक हुए।

मशाल-दौड़ का जन्म

ओलंपिक ज्योति की परंपरा जहाँ 1928 ओलंपिक से शुरू हुई, वहीं इस आयोजन से ओलंपिक मशाल-दौड़ की एक नई परंपरा ने जन्म लिया, जिसके तहत यूनान के पवित्र हेरा मंदिर से ओलंपिक ज्योति जलाकर उसे आयोजन-स्थल पर लाया गया। यह एक जर्मन कार्ल डीस की कल्पना थी। 20 जुलाई को यूनान की प्रसिद्ध अभिनेत्री ए. कैसेलिस ने सूर्य की किरणों से इस पावन ज्योति को प्रज्वलित किया और ओलंपिया से बर्लिन तक की 1837 मील की दूरी को सात योरोपीय देशों—यूनान, हंगरी, आस्ट्रिया, यूगोस्लाविया, चेकोस्लोवाकिया, बुल्गारिया एवं जर्मनी के 3300 धावकों ने तय किया। 1 अगस्त को जब यह ज्योति बर्लिन पहुँची तो पूरे सैन्य-सम्मान के साथ इसे पहरेदारों के बीच 'प्रशियन गार्ड हाउस' में प्रतिष्ठित किया गया। फिर इसे उद्घाटन के अवसर पर मुख्य स्टेडियम ले जाया गया।

उद्घाटन के दौरान पूरा बर्लिन शहर दुलहन की तरह सजा-सँवरा था। शहर की हर सड़क एवं गली तोरणों एवं स्वस्तिक चिह्नवाले पोस्टरों से सुशोभित थी। उस अवसर पर एक उत्सव-जैसा दृश्य दिखाई दे रहा था। शाम को दर्शकों से खचाखच भरे मुख्य स्टेडियम में जैसे ही हिटलर ने प्रवेश किया, सभी दर्शकों एवं सैनिकों ने दाहिना हाथ उठाकर 'नाजी' सलामी ठोंकी। लेकिन जब मार्चपास्ट आरंभ हुआ, तो जर्मनी एवं उसके सहयोगी फासिस्ट देशों के अलावा किसी अन्य देश ने सलामी नहीं दी। मार्चपास्ट के बाद हिटलर द्वारा खेलों के उद्घाटन की घोषणा करते ही 'हिडनबर्ग' नामक एक वायुयान स्टेडियम के ऊपर चक्कर लगाने लगा। 14000 किलोग्राम वजनी घंटा बजाया

गया तथा 22 हजार कबूतर छोड़े गए, जो शीघ्र ही पूरे बर्लिन शहर के आकाश में छा गए। तत्पश्चात रिचर्ड स्ट्रास द्वारा रचित नया ओलंपिक स्तुति गीत गाया गया। इसके ठीक बाद सफेद वेशभूषा में सजा हुआ जर्मन धावक फ्रिट्ज शिलंजेन ओलंपिक मशाल लिए स्टेडियम में दाखिल हुआ। स्टेडियम में करीब 200 मीटर चक्कर लगाने के बाद उसने उस पवित्र ज्योति को मैराथन गेट स्थित अग्निकुंड को समर्पित कर दिया। सारा स्टेडियम 'डाईशलैंड ऊबा आलेस', अर्थात जर्मन अमर है, के नारों से गूँज उठा। इस अवसर पर 1896 के मैराथन विजेता स्पिरीडान लुईन ने ओलंपिया से लाई जैतून की शाखें हिटलर को भेंट कीं। एडोल्फ इस्मायर ने खिलाड़ियों तथा अधिकारियों की ओर से ओलंपिक शपथ ग्रहण की।

इस उद्घाटन के अवसर पर कुबरटिन अपनी अस्वस्थता की वजह से उपस्थित नहीं थे, फिर भी उनका संदेश टेप द्वारा लाउडस्पीकर के जरिए स्टेडियम में प्रसारित किया गया। फिर स्टेडियम में लगे विशाल स्कोरबोर्ड में कुबरटिन का प्रसिद्ध कथन 'ओलंपिक खेलों में जीतने से भी अहम बात है इसमें हिस्सा लेना। ठीक उसी तरह जैसे जिंदगी में संघर्ष करना अहमियत रखता है न कि खुशियाँ मनाना। सबसे आवश्यक बात है मुकाबला करना न कि विजेता होना' छा गया और ओलंपिक खेल आरंभ हो गए।

हिटलर का दर्प चूर करनेवाला महान जेसी ओवंस

एथलेटिक्स में हिटलर को अपने आर्य खून पर काफी भरोसा था, परंतु अश्वेत खिलाड़ियों से सुसज्जित अमरीकी दल ने उसकी आशाओं पर तुषारापात करते हुए उसके दर्प को ध्वस्त कर दिया। 66 सदस्यीय इस अमरीकी एथलेटिक्स दल में 10 नीग्रो (अश्वेत) खिलाड़ी थे, जिनके हिस्से 7 स्वर्ण, 3 रजत, 3 कांस्य पदक आए, जो किसी भी देश की सफलता के लिए कम नहीं था। इनमें सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन क्लेवलैंड (ओहियो) के नीग्रो एथलीट जेक्स क्लीवलैंड 'जेसी' ओवंस ने किया।

12 सितंबर, 1913 को डानविले (अलबामा) में एक गुलाम के पोते तथा कपास बीननेवाले के घर पैदा हुआ जेसी बचपन से ही एथलीट था। मात्र 22 वर्ष की उम्र में 25 मई, 1935 को मिशीगन में हुए 'बिग टेन चैंपियनशिप' में वह मात्र 45 मिनट के अंतराल में ही 5 विश्व-रिकार्ड तोड़कर तथा छठवें में विश्व-रिकार्ड की बराबरी कर एकाएक चर्चित हो गया था। इस दौरान उसके द्वारा 26 फुट 8¼ इंच दूरी की लंबी कूद अगले 25 वर्षों तक विश्व-कीर्तिमान के रूप में कायम रही। बर्लिन ओलंपिक के पहले हुए 'ट्रायल' मुकाबलों में 100 मी., 200 मी. तथा लंबी कूद की स्पर्धाएँ जीतकर वह पहले से ही भावी धमाके का संकेत दे चुका था।

फिर ओलंपिक खेलों में 3 अगस्त को 100 मी. स्प्रिंट में अपने चिरप्रतिद्वंद्वी राल्फ

मैटकेफै को एक गज से पछाड़कर (10.2 सेकेंड) उसने अपनी स्वर्णिम शुरुआत की। अगले दिन लंबी कूद के प्रारंभिक दौर में उसे दो बार फाउल जंप के कारण काफी परेशानी हुई। तब जर्मन प्रतियोगी लुंज लांग ने जोकि नाजी होने के बावजूद आर्य-रक्त की श्रेष्ठता पर विश्वास नहीं करता था, उसे थोड़ा पीछे से कूदने की सलाह दी, जिस पर अमल करके जेसी अंतिम चक्र के लिए क्वालीफाई कर गया। दोपहर में उसने अपनी पाँचवीं जंप में 26 फुट 5½ इंच की छलाँग लगाकर अपना स्वर्ण निश्चित कर लिया। उसे सबसे पहले बधाई देनेवाला लांग ही था, जिसने हिटलर की उपस्थिति में यह कार्य किया, हालाँकि बाद में लांग को अपने इस कृत्य का फल भी भोगना पड़ा। लेकिन तब तक वह जेसी ओवंस के दिल में ऐसा स्थान बना चुका था, जिसे व्यक्त करने के लिए ओवंस के पास शब्द नहीं थे। अगले दिन जेसी ने 200 मी. दौड़ में भी अपनी श्रेष्ठता साबित करते हुए अपने सहयोगी मैथ्यू राबिसन को दो गज के फासले से पीछे छोड़ ओलंपिक-कीर्तिमान (20.7 सेकेंड) रचते हुए स्वर्ण जीता। फिर चार दिन बाद उसने 4×100 मी. रिले में अपना चौथा स्वर्ण जीता। ओवंस की इस सफलता पर हिटलर कतई खुश नहीं था। विजयी खिलाड़ी के रूप में अश्वेत जेसी ओवंस का सम्मान करने के डर से वह जेसी के जीतते ही स्टेडियम से चला गया।

इस शानदार सफलता के बाद यूँ तो जेसी ओवंस का अपने देश में भव्य स्वागत हुआ, लेकिन तत्कालीन अमरीकी राष्ट्रपति ने भी उसे बधाई प्रेषित नहीं की। फिर एम्चेयर एथलेटिक्स यूनियन ने स्वीडिश मीट्स में उसके भाग लेने पर प्रतिबंध लगा दिया, यहाँ तक कि वर्ष 1936 के सर्वश्रेष्ठ अमरीकी खिलाड़ी के सम्मान में दिए जानेवाले 'सुलीवान सम्मान' से भी उसे वंचित कर दिया गया। अगले वर्ष उसने राष्ट्रपति चुनाव के एक उम्मीदवार अल्फलेंडन का चुनाव प्रचार किया। पैसों की खातिर उसे घोड़ों, कुत्तों एवं मोटर साईकल के साथ भी दौड़ लगानी पड़ी। इनसे ऊबकर वह खेल-निरीक्षक बना और धन जुटाकर एक क्लीनिंग स्टोर्स लगाया, लेकिन दुर्भाग्य यह रहा कि उसका शीघ्र ही दिवाला निकल गया, जिससे उसे 1,14,000 अमरीकी डालर का नुकसान हुआ। फिर कहीं 1950 में एक जनसंपर्क फर्म खोलने के बाद ही उसकी माली हालत ठीक हुई। 1968 में उसने 'काली शक्तियों' के समर्थन में एक पुस्तक 'ब्लैक थिंक' लिखी जो काफी चर्चित और विवादास्पद रही। अंततः 1972 में उसे एक और पुस्तक 'आई हैव चेंज्ड' इसके खंडन में लिखनी पड़ी। 'द अबोरनी एंटीलोप' उप-नाम से मशहूर इस महान खिलाड़ी का 31 मई, 1980 को फेफड़े के कैंसर से निधन हो गया। 1984 में बर्लिन में एक सड़क का नाम उसके नाम पर रखा गया है।

ओवंस की ही तरह प्रतिभाशाली खिलाड़ी उसका हमवतन अश्वेत राल्फ मैटकेफै भी था। उसने 100 मी. में रजत, 200 मी. में कांस्य तथा 4×100 मी. रिले में स्वर्ण

जीता, लेकिन व्यक्तिगत स्वर्ण के लिए वह तरस गया। 34 वर्ष बाद मैटकेफै को अमरीकी कांग्रेस में चुना गया। 400 मी. स्प्रिंट में विश्व-रिकार्डधारी कैलिफोर्निया के अश्वेत धावक आर्ची विलियम्स, अश्वेत जेम्स लुवाले, ब्रिटिश आर्थर गाडफ्री-ब्राउन एवं विलियम राबर्ट्स के बीच जबरदस्त मुकाबला हुआ। स्वर्ण का फैसला फोटो फिनिश द्वारा आर्ची विलियम्स के पक्ष में हुआ। ब्राउन को दूसरा तथा लुवाले को तीसरा स्थान मिला। अगले दिन गाडफ्री ब्राउन की बहन आंड्रे 4×100 मी. रिले में ब्रिटिश दल के साथ रजत जीतने में सफल रही। 800 मी. में एक और अश्वेत अमरीकी धावक 21 वर्षीय जान वुडरफ ने बड़े ही अजीबो-गरीब अंदाज से स्वर्ण जीता। पिट्सबर्ग विश्वविद्यालय का वह छात्र वुडरफ आम धावकों के विपरीत दूसरा चक्र पहले से ज्यादा तेज दौड़ा था।

लेकिन इन सबसे कहीं ज्यादा रोमांचक 1500 मी. की दौड़ रही, जिसमें 27 देशों के 44 धावकों ने भाग लिया। इसमें लासएंजिल्स ओलंपिक में पहले सात स्थान पर आनेवाले धावकों में से छः शामिल थे। 6 अगस्त को ठीक 4 बजकर 18 मिनट पर यह दौड़ आरंभ हुई, जिसमें अगले 4 मिनट काफी तनावपूर्ण सिद्ध हुए। पहले 400 मी. तक एक मील का विश्व-रिकार्ड होल्डर ग्लेन कानिंघम (अमरीका,) जिसका बचपन में एक पैर आग में बुरी तरह झुलस गया था, आगे रहा। ठीक उसी समय स्वीडिश एरिक नाई ने बढ़त बनाई, मगर एकाएक 'टेप' से 300 गज पहले न्यूजीलैंड का दुबला-पतला धावक जान लवलॉक पहले कनिंघम और फिर नाई को पार करता हुआ सबसे आगे निकल गया। कनिंघम ने उसे पीछे छोड़ने की नाकाम कोशिश की, परंतु तब तक लवलॉक विश्व-रिकार्ड (3 मिनट 47.8 सेकेंड) बनाते हुए यह दौड़ जीत गया। दूसरा स्थान कनिंघम तथा तीसरा स्थान 1932 के चैंपियन बेकाली को मिला। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि पहले पाँच स्थान पानेवाले सभी धावकों ने बेकाली के ओलंपिक-कीर्तिमान को ध्वस्त किया। विजेता लवलॉक उस समय चिकित्सा-विज्ञान का छात्र था और उसने अपने ऊपर अनेक परीक्षण करके सबसे अच्छे प्रदर्शन के लिए गुप्त तरीका अपनाया था।

लंबी दूरी की दौड़ों में फिन्निश धावक छाए रहे। 10,000 मी. में आर्मी सार्जेंट 33 वर्षीय इमारी सालमिनेन ने मात्र कुछ इंचों के फासले से अपने देशवासी आर्वो अस्वोला को हराया, किंतु 5000 मी. में वह अपना स्टेमिना बरकरार नहीं रख पाया और दो चक्र पहले गिर पड़ा। उस दौड़ में स्वर्ण गुनार होकर्ट विश्व चैंपियन लारी लेहतिनेन को 20 गज के फासले से परास्त कर पाया। 3000 मी. स्टीपल चेज़ में वोल्मारी आइसो होलो ने अपना खिताब बरकरार रखा। बाधा दौड़ में अमरीकी विश्व चैंपियन फारेस्ट टाउंस (110 मी.) तथा ग्लेन हर्डिल (400 मी.) ने अपनी कामयाबी दर्ज कराई। 50 कि.मी.

पैदल चालन-प्रतियोगिता ब्रिटेन का 32 वर्षीय आटो मैकेनिक हेराल्ड व्हिटलाक लगातार उल्टी करते रहने के बावजूद 4:30:41.1 का समय देकर स्वर्ण जीतने में सफल रहा।

मैराथन दौड़ में कोरियाई मूल के धावकों ने, जिन्हें मजबूरन जापान का प्रतिनिधित्व करना पड़ा, पहला और तीसरा स्थान प्राप्त किया। विश्व-रिकार्डधारी की चुंग सोन ने, जिसे जापानी किती सोन के नाम से प्रवेश मिला था, 2 घंटे 9 मिनट 19.2 सेकेंड का समय लेकर नया ओलंपिक कीर्तिमान बनाकर स्वर्ण जीता। 4×100 मी. का स्प्रिंट रिले अमरीका जीत तो गया, मगर खिलाड़ियों के चुनाव को लेकर काफी हंगामा हुआ। अमरीकी कोच लासन रोबर्ट्सन ने अंतिम समय में दो यहूदी खिलाड़ियों—सैम स्टोलर एवं मार्री ग्लिकमेन के स्थान पर ओवंस एवं मैटकेफै को उतार दिया, जबकि 4 × 400 मी. में राबर्ट्सन अपने पुराने धावकों पर आश्रित रहा, जिसके कारण उसे ब्रिटिश टीम ने आसानी से पराजित कर दिया।

फील्ड्स इवेंट में पहले दिन गोला फेंक में मेजबान देश के 25 वर्षीय पुलिस सिपाही हैंस वोल्के ने ओलंपिक रिकार्ड (16.20 मी.) बनाते हुए स्वर्ण जीता। हिटलर ने स्वयं जाकर वोल्के को बधाई दी, परंतु उसी शाम जब अश्वेत अमरीकी कोनेलियस जान्सन ने ऊँची कूद में ओलंपिक-कीर्तिमान (2.03 मी.) बनाते हुए पहला स्थान अर्जित किया तो पुरस्कार वितरण समारोह के पूर्व ही हिटलर ने स्टेडियम छोड़ दिया। हैमर थ्रो में जर्मन एथलीटों ने अमरीकियों को पछाड़ते हुए पहले दोनों स्थान जीत लिए। विजेता 28 वर्षीय हैंबर्ज का बढ़ई कार्ल हीन था, जिसने अपने अंतिम थ्रो में 56.49 मी. दूर तार गोला फेंककर नया ओलंपिक-रिकार्ड बनाया। पोल वाल्ट की स्पर्धा में अमरीकियों और जापानियों के बीच 10 घंटे मुकाबला हुआ और फ्लड लाइट में इसका निर्णय हुआ। पहला स्थान अमरीकी अर्ल मीडोज़ ने पाया, जबकि दूसरे व तीसरे स्थान के लिए जापानी जंपरों ने लाटरी का सहारा लिया, जिसमें शुही नीशिदा ने दूसरा तथा शुओ ने तीसरा स्थान पाया। जापान आने पर दोनों ने अपने तमगे आधे-आधे कटवाकर अर्द्ध रजत-कांस्य पदक बनवा लिया। त्रिकूद में नाओतो ताजिमा ने जापानी परंपरा बनाए रखते हुए विश्व-कीर्तिमान (16.00 मी.) रचकर स्वर्ण हासिल किया। ताजिमा ने दो दिन पहले ही लंबी कूद में कांस्य पदक जीता था। भाला फेंक प्रतियोगिता के दौरान जर्मन गेरहार्ड स्टाक के अंतिम थ्रो के समय हिटलर स्टेडियम में आया। उसकी उपस्थिति से उत्साहित होकर स्टाक ने 71.84 मी. दूर भाला फेंका और फिन्निश ऐथलीटों को दूसरे-तीसरे स्थान पर धकेल दिया। डेकाथलन 24 वर्षीय आटो मोबाईल सेल्समेन ग्लेन मारिस (अमरीका) ने विश्व-कीर्तिमान बनाते हुए जीता। बाद में मारिस को 1936 के 'सुलीवान एवार्ड' से सम्मानित किया गया।

महिलाओं में सबसे तेज धाविका का खिताब (11.5 सेकेंड से) मिसौरी की 18

वर्षीया तरुणी हेलेन स्टीफंस को मिला। 6 फुट कदवाली आकर्षक स्टीफंस को जीतने के बाद हिटलर ने अपने प्राइवेट केबिन में बुलवाया और 'नाजी सेल्यूट' देने के बाद उसे एक सप्ताह अपने साथ गुजारने का आमंत्रण दिया, जिसे स्टीफंस ने ठुकरा दिया। 4×100 मी. रिले में जर्मनी की अंतिम धाविका इल्स डार्फ्रेल्ट से बैटन गिर गया। फलस्वरूप जर्मनी निश्चित रूप से प्राप्त होनेवाले स्वर्ण से महरूम हो गया। चक्का फेंक में जर्मनी की विश्व चैंपियन गिसेला माउरमेयर ने ओलंपिक-रिकार्ड (47.63 मी.) बनाते हुए स्वर्ण पदक जीता। 6 फुट ऊँची और जरा भारी शरीरवाली 22 वर्षीया माउरमेयर पदक वितरण समारोह के समय 'नाजी' सेल्यूट देकर दर्शकों का दिल खुश कर गई। बाद में वह नाजी पार्टी में शामिल होकर शिक्षिका का कार्य करने लगी, किंतु 1945 में नौकरी छूट जाने के कारण उसने पुनः आगे की पढ़ाई की और चींटियों के व्यवहार पर शोध कार्य कर लाइब्रेरियन के रूप में स्थापित हुई।

जलपरी मास्टेन ब्रोक

तैराकी के पुरुष वर्ग में जापानी एवं अमरीकी तथा महिला वर्ग में डच खिलाड़ी छाए रहे। सबसे तेज पुरुष तैराक हंगरी का 22 वर्षीय मेडिकल छात्र फेरेंक रहा, जिसने 100 मी. फ्री स्टाइल 57.6 सेकेंड में पूरी की। आठवीं लेन में तैरते हुए वह जापानी एवं अमरीकी तैराकों को अप्रत्याशित रूप से पीछे छोड़ गया। 400 मी. फ्री स्टाइल में भी 'क्लोज फिनिश' रहा, जिसमें विश्व चैंपियन अमरीकी जैक मिडोका ने बाजी मारी। तीन दिन बाद उसने 1500 मी. फ्री स्टाइल में रजत पदक जीता। इस प्रतियोगिता का स्वर्ण जापानी नोबरु तेरड़ा ने जीता। स्प्रिंगबोर्ड में 'परफेक्ट मास्टर' रिचर्ड डेजेनर (अमरीका) ने स्वर्ण पदक जीता। इसमें रजत पानेवाले उनके हमवतन मार्शल वेन ने तीन दिन बाद प्लेटफार्म डाइविंग में पहला स्थान पाया।

महिलाओं में हालैंड की 17 वर्षीया री मास्टेन ब्रोक ने छः दिनों में तीन स्वर्ण एवं एक रजत पदक जीतकर तहलका मचाया। उसने 100 मी. फ्री स्टाइल, 400 मी. फ्री स्टाइल तथा4×100 मी. रिले में स्वर्ण तथा 100 मी. बैक स्ट्रोक में रजत प्राप्त किया किंतु इस सफल तैराक की वैवाहिक जिंदगी संतापपूर्ण थी। पति से अलग होने के बाद अपने बच्चों के पालन-पोषण के लिए उसे नौकरानी के रूप में 14 घंटे रोज काम करना पड़ा। 100 मी. बैक स्ट्रोक में 16 वर्षीया डच गर्ल नीदा सैन्फ ने स्वर्ण जीता। 200 मी. ब्रीस्ट स्ट्रोक में हाथों को पानी में रखने के बजाय ऊपर रखकर तैरनेवाली 22 वर्षीया जापानी हिडैको माइहेटा ने 3 मिनट 3.6 सेकेंड के समय से स्वर्ण जीता, जबकि रजत एवं कांस्य पदक पानेवाली खिलाड़ी मार्था गेनेजर (जर्मनी) एवं इंगे सोरेंसन (डेनमार्क) की उम्र क्रमशः 14 एवं 12 वर्ष थी। स्प्रिंगबोर्ड डाइविंग में अमरीकी बालिका मार्जोरी गेस्ट्रिंग ने जब

स्वर्ण जीता, तो उसकी उम्र सिर्फ 13 वर्ष 269 दिन थी। वह न केवल इस ओलंपिक की सबसे किशोर स्वर्ण पदक विजेता थी, बल्कि ओलंपिक की सबसे युवा महिला एवं युवा व्यक्तिगत स्वर्ण विजेता भी बनी। कैथरिन राउलस (1932) की भाँति इस बार भी रजत पदक ही जीत सकी। इसके अतिरिक्त वह इस बार 4×100 मी. रिले में कांस्य जीतनेवाली अमरीकी दल की भी सदस्या थी। वाटरपोलो में हंगरी, जर्मनी के मुकाबले बेहतर गोल औसत के आधार पर स्वर्ण का हकदार बना। हंगरी की इस टीम में पिछले दो ओलंपिकों का खिलाड़ी ओलीवार हेलेस्सी भी शामिल था। हेलेस्सी का एक पैर घुटने के नीचे बचपन से ही शून्य हो गया था।

कुश्ती में फ्री स्टाइल एवं ग्रीको-रोमन के 7-7 मुकाबलों में क्रमशः 17 एवं 19 देशों ने भाग लिया। उल्लेखनीय प्रदर्शन इस्तोनिया के 27 वर्षीय क्रिस्टमन पालूसालू का रहा, जिसने दोनों वर्गों का हैवीवेट खिताब जीतकर एक अनूठा गौरव प्राप्त किया। फिनलैंड के पिहलाजमाकी बंधुओं में अग्रज कुस्ता ने फीदरवेट वर्ग में स्वर्ण जीता, जबकि चार वर्ष पहले उसके अनुज हरमानी ने यही खिताब जीता था। हरमानी को इस बार लाइटवेट वर्ग में सिर्फ कांस्य पदक से संतोष करना पड़ा।

मुक्केबाजी में 38 देशों के करीब 250 मुक्केबाज आए थे, परंतु इंटरनेशनल एम्मेचर बाक्सिग फेडरेशन द्वारा स्पर्धा आरंभ होने के पहले लिए गए भार के बाद 26 देशों के 191 मुक्केबाज ही शेष रहे। इस बार एरीना में दो रिंग बनाए गए, जिससे परेशानी ही बढ़ी। जर्मनी एवं फ्रांस के मुक्केबाजों ने दो-दो स्वर्ण जीते। यहीं से फेडरेशन द्वारा सर्वश्रेष्ठ स्टाईलिश मुक्केबाज को 'वाल बार्कर कप' से सम्मानित करने की प्रथा का आगाज़ हुआ। सबसे पहली बार यह सम्मान फ्लाईवेट वर्ग में कांस्य पानेवाले अमरीकी मुक्केबाज लुईस लारी को मिला।

डीट्रीच एरवार्ट स्टेडियम में संपन्न जिमनास्टिक में मेजबान जिमनास्टिकों का बोलबाला रहा। उनके हिस्से में 9 में से 6 स्वर्ण आए जिसमें पुरुषों एवं महिलाओं का टीम टाइटिल भी शामिल है। इस बार सबसे यादगार प्रदर्शन अल्फ्रेड श्वार्ज़मेन एवं कोनराड फ्रे का रहा। श्वार्ज़मेन ने तीन स्वर्ण एवं दो कांस्य पदक जीते, जबकि फ्रे के हिस्से में तीन स्वर्ण, एक रजत तथा दो कांस्य पदक आए।

तलवारबाजी में इटली ने इपी एवं फॉयल तथा हंगरी ने अपनी परंपरानुसार सैब्रे की प्रतियोगिता जीती। फॉयल का विजेता 6 फुट 6 इंच ऊँचा गुयिलियो गाडिनी था, जिसने अपने तीन ओलंपिक कैरियर में कुल तीन स्वर्ण, चार रजत एवं दो कांस्य पदक एकत्र किए। महिलाओं की फॉयल स्पर्धा में जर्मनी ने 1928 की विजेता हेलेन मैयर की सेवाएँ पुनः लीं जोकि अमरीका में बस चुकी थी। मेयर ही पूरे जर्मन दल में एकमात्र यहूदी खिलाड़ी थी। किंतु फाइनल मुकाबले में उसे हंगरी की यहूदी खिलाड़ी इलोना शाचेरेक

इलेक के हाथों पराजय देखनी पड़ी।

नौका चालन में तीन विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताएँ हुईं। रोइंग में मेजबान मल्लाहों ने सात में से पाँच स्वर्ण पदक जीतकर अपना दबदबा बनाए रखा। ब्रिटेन के अनुभवी स्कालर जैक बेरिस्फोर्ड ने लगातार पाँचवें ओलंपिक में शिरकत करके पाँचवा पदक (तीसरा स्वर्ण) जीता। जैक के पिता जुलियस ने भी 1912 के कास्कड फोर्स में रजत पदक जीता था। इस बार उक्त स्पर्धा में कांस्य पदक जीतनेवाले फ्रांसिसी दल में 12 वर्षीय नियोल वेंडरनोट भी था, जिसके पिता फर्नांड एवं चाचा मासैल भी इस दल के सदस्य थे। यार्टिंग के 8 मी. वर्ग में विजेता इतालवी दल में लुइगी एवं एनरिको पोग्गो बंधु शामिल थे। एक नई प्रतियोगिता केनोइंग (चप्पूदार नौकायन) को पहली बार ओलंपिक में शामिल किया गया, जिसके 9 मुकाबलों में टीम टाइटिल आस्ट्रिया ने जीता। स्वयं के खर्च से इन खेलों में भाग लेनेवाले 31 वर्षीय कनाडावासी फ्रांसिस अमोट ने 1000 मी. कनाडियन सिंगल्स जीतकर अपने प्रवेश को सार्थक बनाया।

हाकी का जादूगर ध्यानचंद

टीम-स्पर्धाओं की हाकी में भारत ने लगातार तीसरा स्वर्णपदक हासिल किया। फाइनल में उसने मेजबान को 8-1 से रौंदा, जिसमें 6 गोल अकेले कप्तान ध्यानचंद ने नंगे पैर खेलते हुए किए। ध्यानचंद के चमत्कारिक खेल को देखकर 40 हजार दर्शकों में से एक—हिटलर भी काफी प्रभावित हुआ। उसने किसी से पूछा कि यह खिलाड़ी भारतीय सेना में किस पद पर है ? जब उसे बताया गया कि वह मात्र लांस नायक है, तो सहसा हिटलर के मुँह से निकला—"अरे, इससे कहो जर्मन आ जाए, मैं इसे फील्ड मार्शल बना दूँगा !" लेकिन ध्यानचंद ने अपना वतन नहीं छोड़ा। दनादन किए जा रहे गोलों से लोगों में उनकी स्टिक के प्रति भी भ्रम हो गया था। इससे उनकी स्टिक भी बदली गई लेकिन वे उसी रफ्तार से गोल करते रहे। उनकी इसी विशेषता के कारण लोगों ने उन्हें 'हाकी का जादूगर' करार दिया। बाद में उनकी सेवाओं की कद्र करते हुए भारत सरकार ने उन्हें पद्मभूषण से सम्मानित किया। भारतीय हाकी के इस महान सितारे का निधन 3 दिसंबर, 1979 को हुआ।

फुटबाल में मारपीट एवं हुल्लड़बाजी का माहौल रहा। फाइनल में इटली ने आस्ट्रिया को 2-1 से पीटा। दो नए टीम खेलों—बास्केटबाल तथा हैंडबाल का भी इसी ओलंपिक में पदार्पण हुआ। बास्केटबाल में अमरीका ने अपनी सफलताओं का सूत्रपात किया जबकि हैंडबाल में आस्ट्रिया से कड़ी टक्कर के बाद जर्मनी विजयी रहा।

भारोत्तोलन में मिस्र ने टीम टाइटिल जीतकर सबको अचंभित कर दिया। मिडिल वेट वर्ग (75 कि.ग्रा.) में जीतनेवाले भारोत्तोलक खाद्र अल तौनी ने लाइट हैवीवेट वर्ग

(82.5 कि.ग्रा.) के विजेता फ्रांसिसी लुईस हेस्टीन से 15 किलोग्राम अधिक भार उठाया था। मॉडर्न पेंटाथलन में मेजबान देश के गोथार्ड हैंड्रिक ने स्वीडिश आधिपत्य समाप्त कर पहला स्थान प्राप्त किया। साईकिलिंग में फ्रांसीसी राबर्ट कारपेंटर ने तीन स्वर्ण पदक जीते।

घुड़सवारी की प्रतियोगिता ओलंपिक ज्योति बुझने के बाद भी चलती रही। इसमें मेजबान देश के घुड़सवारों ने सभी छः स्वर्ण जीतकर अन्य देशों का सफाया कर दिया। थ्री-डे इवेंट में जर्मनी को स्वर्ण दिलाने में लेफ्टिनेंट कोनराड फ्रीहर वान वेंजनहीम का योगदान उल्लेखनीय रहा, जिसने स्पर्धा के दौरान कंधे की हड्डी टूटने के बावजूद आगे भाग लिया और अपने देश को अयोग्य करार दिए जाने से बचाया। ड्रेसाज़ के विजेता दल में फ्रेडरिक गेर्हार्ड भी शामिल था, जो कि उस समय 52 वर्ष 20 दिन का था। वही इस आयोजन का सबसे बुजुर्ग विजेता था। पोलो का मुकाबला अंतिम बार यहीं देखने को मिला, जिसमें 45000 दर्शकों के सम्मुख अर्जेंटाइना ने मेजबान को 11-0 से परास्त किया।

आयोजन की दृष्टि से अत्यंत सफल ओलंपिक का यह ग्यारहवाँ सफर खिलाड़ियों एवं आयोजकों में एक नए उत्साह के साथ संपन्न हुआ। परंतु इसके सहारे हिटलर द्वारा राजनीतिक प्रचार पाने की लालसा ने इस कामयाबी को ढक लिया, यहाँ तक कि नाजी पार्टी के प्रचारमंत्री गोयबल्स ने तो विदेशी पत्रकारों को खेल के अलावा जर्मनी की प्रगति पर भी लेख लिखने को कहा। आर्य नस्ल को श्रेष्ठ माननेवाले नाजी पत्रकारों ने अमरीकी अश्वेत सदस्यों को 'काले सहयोगी' की संज्ञा दी और उनके प्रदर्शन को अमरीका की पदक-तालिका से भी अलग कर दिया। नाजियों की इस कारस्तानी को अमरीकी ओलंपिक समिति का अध्यक्ष एवरी ब्रुंडेज, जो बाद में अंतर्राष्ट्रीय ओलंपिक समिति का भी अध्यक्ष बना, एक मूक दर्शक की भाँति देखता, सुनता रहा।

तकनीकी दृष्टि से भी यह आयोजन एक नया अध्याय सिद्ध हुआ। ओलंपिक खेलों में पहली बार टेलीविजन का उपयोग यहीं हुआ। प्रत्येक दिन के खेलों पर 'न्यूज बुलेटिन' भी तैयार किया गया, जिसे 14 विभिन्न भाषाओं में बाहर भेजा जाता था। तीन हजार से भी ज्यादा पत्रकारों एवं डेढ़ लाख से भी ज्यादा विदेशी दर्शकों ने इन खेलों का आनंद उठाया। प्रत्येक खेल के हिट्स मुकाबलों तक का हिसाब-किताब रखा गया। मुख्य स्टेडियम की दीवारों पर हर खेल के विजेता का नाम अंकित करने की प्रथा भी, जिसका सुझाव पहली बार 1924 में आया था, यहीं से शुरू हुई। लेनी रीफेंस्टाल ने दो भागों में एक फिल्म 'ओलंपिक स्पीले' का भी निर्माण किया जोकि तकनीकी दृष्टि से अच्छी होने के बावजूद हिटलर एवं नाजियों की प्रशंसा से भरी हुई थी।

पदक-तालिका—1936

देश	स्वर्ण	रजत	कांस्य
जर्मनी	33	26	30
अमरीका	24	20	12
हंगरी	10	1	5
इटली	8	9	5
फिनलैंड	7	6	6
फ्रांस	7	6	6
स्वीडन	6	5	9
जापान	6	4	7
नीदरलैंड	6	4	8
ग्रेट ब्रिटेन	4	7	3
आस्ट्रिया	4	6	3
चेकोस्लोवाकिया	3	5	—
अर्जेंटाइना	2	2	3
इस्तोनिया	2	2	3
मिस्र	2	1	2
स्विट्जरलैंड	1	9	5
कनाडा	1	3	5
नार्वे	1	3	2
तुर्की	1	—	1
भारत	1	—	—
न्यूजीलैंड	1	—	—
पोलैंड	—	3	3
डेनमार्क	—	2	3
लेवविया	—	1	1
रूमानिया	—	1	—
दक्षिण अफ्रीका	—	1	—
यूगोस्लाविया	—	1	—
मैक्सिको	—	—	3

बेल्जियम	—	—	2
आस्ट्रेलिया	—	—	1
फिलीपींस	—	—	1
पुर्तगाल	—	—	1

बारहवाँ ओलंपिक : 1940–टोकियो/हेलसिंकी

अंतर्राष्ट्रीय ओलंपिक समिति ने 1936 की अपनी बैठक में सर्वसम्मति से यह तय किया कि ओलंपिक आयोजन की बारहवीं कड़ी पहली बार एशिया से जुड़ेगी, जिसके लिए उन्होंने जापान की राजधानी टोकियो का चुनाव किया। जापान इस वक्त तक ओलंपिक-परिशिष्ट में अपनी अच्छी छवि भी बना चुका था। पहली बार उसने स्टाकहोम (1912) ओलंपिक में कदम रखा, परंतु कुछ विशेष नहीं कर पाया था। लेकिन लास एंजिल्स (1932) में 7 स्वर्ण, 7 रजत एवं 4 कांस्य और बर्लिन (1936) में 6 स्वर्ण, 4 रजत एवं 8 कांस्य पदक जीतकर वह अपने आपको मजबूत शक्ति के रूप में जरूर स्थापित कर चुका था।

अतः 12वें ओलंपिक के लिए जापानियों को मेजबानी की हरी झंडी मिलते ही जोश-खरोश से तैयारियाँ शुरू हो गईं। इस आयोजन को चिरस्मरणीय बनाने के लिए वहाँ बर्लिन ओलंपिक को सँवारनेवाली हस्तियों को बुलाया गया। आयोजन 24 अगस्त से 4 सितंबर 1940 तक होना तय हुआ था कि 1938 में जापान एवं चीन के बीच युद्ध छिड़ गया। खतरे की स्थिति को भाँपते हुए आई.ओ.सी. ने तुरंत पहल की और जापानी ओलंपिक कमेटी से निर्विघ्न रूप से खेल संपन्न कराने का आश्वासन माँगा, लेकिन जे.ओ.सी. ने ऐसा आश्वासन देने से इनकार कर दिया। फिर भी जापानियों ने तैयारियाँ जारी रखीं और जब 18 निर्धारित खेल स्थलों में से मात्र दो बनने शेष थे, तभी जापानी सरकार ने हस्तक्षेप करके तैयारियाँ रुकवा दीं।

इस स्थिति में आई.ओ.सी. ने फिनलैंड की राजधानी हेलसिंकी से खेल आयोजित करने का आग्रह किया, फिनलैंड द्वारा जिसे तुरंत मान लिया गया, मगर इस बीच दूसरे विश्वयुद्ध की चिंगारियाँ पूर्व से पश्चिम यूरोप तक पहुँच चुकी थीं और 1 सितंबर, 1939 को जर्मनी एवं पोलैंड के बीच युद्ध छिड़ गया। इसके दो दिन बाद ही ब्रिटेन एवं फ्रांस ने

भी जर्मनी के खिलाफ मोर्चा सँभाल लिया। उधर दिसंबर 1939 में फिनलैंड में रूसी तोपें प्रवेश कर गईं, जिससे ओलंपिक तैयारियों का काम ठप्प पड़ गया। अप्रैल 1940 में आई.ओ.सी. ने हेलसिंकी में भी आयोजन की उम्मीद छोड़ दी। आखिर एक माह बाद तत्कालीन आई.ओ.सी. अध्यक्ष वैलेट लातूर ने 12वें ओलंपिक को रद्द करने की घोषणा कर दी।

तेरहवाँ ओलंपिक : 1944–लंदन

ओलंपिक सफर की 13वीं मेजबानी के लिए लंदन, एथेंस, रोम, डेट्रायट, हेलसिंकी, बुडापेस्ट और लुशाने ने अपनी दावेदारी पेश की थी, जिस पर जून 1939 में आई.ओ.सी. ने अन्य स्थानों के मुकाबले लंदन को प्राथमिकता देकर आयोजन का भार सौंप दिया। इस प्रकार पेरिस के बाद लंदन दूसरा ऐसा शहर था, जहाँ दूसरी बार इन खेलों का आयोजन होता। मगर 1944 तक भी द्वितीय विश्वयुद्ध की चिंगारियाँ बुझी नहीं थीं, लिहाजा यह खेल भी रद्द करना पड़ा।

चौदहवाँ ओलंपिक : 1948–लंदन

दूसरे विश्वयुद्ध द्वारा दो-दो ओलंपिक आयोजनों को निगल जाने के बाद आई.ओ.सी. के सामने ओलंपिक आंदोलन को पुनः गतिशील करने की चुनौती थी। हेनरी डी बैलेट लातूर के 1942 में असामयिक निधन के पश्चात् 1946 में स्वीडन का सिगफ्रीड एडस्ठाम नया अध्यक्ष बना और उसने एवेरी ब्रूडेज के साथ मिलकर ओलंपिक आंदोलन को पुनर्स्थापित करने में अहम भूमिका निभाई। आई.ओ.सी. ने शीघ्र ही 14वें आयोजन के लिए स्थान की तलाश प्रारंभ कर दी और 1946 में ही पोस्टल वोटिंग के जरिए लंदन को यह भार सौंपा गया।

लगभग ढाई वर्ष के समय में भी इस आयोजन की तैयारी कर पाना लंदन को काफी मुश्किल लगा। कारण कि खाने की वस्तुएँ, कपड़े एवं अन्य जरूरी वस्तुओं की कमी सारे ब्रिटेन में दिखाई दे रही थी। फिर भी ब्रिटिश अधिकारियों ने इस चुनौती को स्वीकारा

और सफल आयोजन के लिए पूरी ताकत लगा दी। 1924 में हुई ब्रिटिश साम्राज्य-प्रदर्शनी के लिए बनाए गए वेंबले स्टेडियम को मुख्य स्टेडियम बनाया गया, जबकि समयाभाव के कारण खेलग्राम का निर्माण नहीं किया जा सका। ऐसे में प्रतियोगियों को आक्सब्रिज एवं रिचमंड पर्क के स्कूल एवं सैनिक छावनी में ठहराया गया।

बर्लिन ओलंपिक की भाँति ओलंपिक ज्योति की ओलंपिया से जुड़ी उद्गम-परंपरा को यहाँ भी निभाया गया, परंतु इसके लिए काफी खून-खराबा हुआ। उस समय यूनान ब्रिटेन के कब्जे में था, किंतु यूनानवासियों ने ओलंपिया के प्रसिद्ध मंदिरों को घेर लिया था, ताकि ब्रिटिश यहाँ से ज्योति प्रज्वलित न कर सकें। अंततः सैनिकों के हस्तक्षेप से ज्योति प्रज्वलित की गई जिसका श्रेय जार्ज मार्क को मिला।

29 जुलाई को ब्रिटिश सम्राट जार्ज षष्टम ने वेंबले स्टेडियम में 33,000 दर्शकों के सम्मुख इन खेलों का उद्घाटन किया। इस दौरान इतने ज्यादा कबूतर छोड़े गए कि उनकी परछाईं स्टेडियम में आसानी से देखी जा सकती थी। एथलीट डोनाल्ड फिनी ने ओलंपिक हलफ उठाया। इस बार पिछले आयोजन की तुलना में दस नए देश जमेका, ईरान, ईराक, गुयाना, बर्मा, कोरिया, लेबनान, पाकिस्तान, प्यूतारिको, सिंगापुर श्रीलंका, सीरिया, त्रिनिदाद, टोबगो तथा वेनेजुएला आए। विश्वयुद्ध में पराजित होनेवाले देश जर्मनी तथा जापान को इस बार भी आमंत्रित नहीं किया गया। सोवियत संघ ने आई.ओ.सी. सदस्य बनने के बावजूद आयोजन में मात्र प्रेक्षक ही भेजा। आयरलैंड के दो तैराकों को प्रतियोगिता में भाग लेने से रोक दिया गया। इस सबके बावजूद इन खेलों में 59 देशों के 4099 प्रतियोगी (385 महिलाएँ) इस बार शरीक हुए।

विलक्षण माँ फैन्नी ब्लेंकर्स कोयन

एथलेटिक्स में प्रत्येक आयोजन की तरह इस बार भी एक यादगार विजेता देखने को मिला परंतु वह पुरुष नहीं, डच महिला एथलीट फैन्नी ब्लेंकर्स कोयन थी, जिसने चार स्वर्ण पदक जीतकर उन आलोचकों को करारा जवाब दिया, जो महिलाओं को खेलकूद में अक्षम कहते थे।

26 अप्रैल, 1918 को एमस्टरडम में पैदा हुई कोयन, जिसका वास्तविक नाम फ्रांसिया था, बहुआयामी प्रतिभाशाली एथलीट थी। यह बात इससे और अधिक स्पष्ट हो जाती है कि 1938 से 1951 के बीच उसने 7 विभिन्न स्पर्धाओं (100 गज, 100 मीटर, 220 मीटर, 80 मीटर हर्डल्स, ऊँची, लंबी एवं पेंटाथलन) में विश्व-रिकार्ड बनाया। 1936 में वह पहली बार ओलंपिक खेलों में उतरी थी, लेकिन हाई जंप स्पर्धा में छटवें तथा 4 × 100 मी. रिले में पाँचवें स्थान पर रही थी। तब वह उस ओलंपिक के

महान जेसी ओवंस का हस्ताक्षर पाकर ही खुश थी।

लंदन ओलंपिक के समय वह 30 वर्ष की हो चुकी थी और अपने कोच जान ब्लेंकर्स से विवाह रचाकर दो बच्चों की माँ भी बन चुकी थी। इसके बावजूद उसे डच टीम में चुना गया। 2 अगस्त को उसने कीचड़ युक्त ट्रेक में 100 मी. की फर्राटा दौड़ (11.9 सेकेंड) आसानी से जीती, किंतु दो दिन बाद 80 मी. बाधा दौड़ में उसे ब्रिटिश गर्ल माशील गार्डनर ने कड़ी टक्कर दी और दोनों ने 11.2 सेकेंड के समय में एक साथ टेप छुआ। बाद में फोटो फिनिश टाइमिंग के आधार पर वह विजेता घोषित हुई। अगले दिन 200 मी. स्प्रिंट के, जोकि ओलंपिक में पहली बार शामिल किया गया था, सेमीफाइनल के पहले वह जबरदस्त मानसिक तनाव में थी। तब उसके पति कोच जान ने उसे बच्चों एवं देश का हवाला देकर उसका हौसला बढ़ाया, जिससे अगले दिन वह अपना तीसरा स्वर्ण जीतने सफल रही। अंतिम स्वर्ण उसने 4 × 100 मी. रिले में डच टीम को विजेता बनाकर हासिल किया। वह लंबी कूद में भी आसानी से जीत जाती, परंतु एक प्रतियोगी के सिर्फ चार स्पर्धाओं में भाग लेनवाले नियम के कारण वह उससे वंचित रह गई। 'मार्वलस मम्मा' कहलानेवाली फैन्नी चार वर्ष बाद हेलसिंकी में पुनः नजर आई, परंतु चोटिल होने के कारण अपना यह प्रदर्शन दुहरा नहीं पाई।

फ्रांस की पियोनिस्ट मिशिलीन ओस्टरमेयर ने पहली बार फील्ड मुकाबलों में शामिल गोलाफेंक व चक्काफेंक की स्पर्धा बड़ी आसानी से जीती और ऊँची कूद में तीसरा स्थान पाकर उसने कांस्य पदक भी पाया। इसमें स्वर्ण का फैसला जंप ऑफ के जरिए हुआ, जिसमें ब्रिटेन की 28 वर्षीया डोरोथी टाइलर (पहले ओडम) को बर्लिन की भाँति यहाँ भी रजत से ही संतुष्ट होना पड़ा। स्वर्ण जीतनेवाली एलिस कोचमेन (अमरीका) पहली अश्वेत स्वर्ण विजेता खिलाड़ी हुई। हर्मा बाउमा ने जेवलिन थ्रो जीतकर ट्रेक एवं फील्ड में आस्ट्रिया को पहला स्वर्ण दिलाया।

पुरुष वर्ग में अमरीका ने 24 में से 11 स्वर्ण जीतकर दबदबा बनाए रखा, जबकि स्वीडन ने 5 स्वर्ण हासिल कर दूसरा स्थान पाया।

तीव्रतम धावक के खिताब के लिए सबसे अधिक कशमकश देखी गई। फाइनल में पहुँचनेवाले 6 में से 4 खिलाड़ी तो विश्व-रिकार्डधारी थे, लेकिन आश्चर्य उस समय हुआ जब 120 गज बाधा दौड़ के विश्व-रिकार्डधारी 5 फुट 10 इंच ऊँचे अश्वेत अमरीकी हैरियन डिलार्ड ने इसे जीत लिया। उल्लेखनीय है कि डिलार्ड बाधा दौड़ की अमरीकी टीम में स्थान नहीं बना सका था, लेकिन बाधा दौड़ में स्वर्ण जीतने की अपनी ख्वाहिश को उसने चार वर्ष बाद हेलसिंकी में पूरा कर लिया। बाद में उसने अमरीका को एक और स्वर्ण 4 × 100 मी. रिले में दिलाया। पहले इसका स्वर्ण ब्रिटेन को दिया गया था, क्योंकि अमरीकी धावकों लारवुड वेल एवं लारज़े राइट को बैटन निर्धारित 20 मी. क्षेत्र के बाहर

जाने के कारण अयोग्य घोषित कर दिया गया था। मगर दो दिन बाद ज्यूरी ने इसकी फिल्में देखीं, तो सबकुछ सही पाया गया। 100 एवं 200 मी. में स्वर्ण, मेल्विल पेट्रोन, (अमरीका) कांस्य पदक जीतनेवाला लायड ला बीच पनामा का आज भी एकमात्र ओलंपिक पदकधारी है।

400 मी. में जमैका के 28 वर्षीय आर्थरविंट ने, जो उस समय लंदन विश्वविद्यालय में चिकित्सा विज्ञान का छात्र था, अपने देशवासी विश्व-रिकार्डधारी हरबर्ट मैकेनली को पीछे छोड़ते हुए (46.2 सेकेंड) पहला स्थान पाया। दो दिन पहले छह फुट साढ़े चार इंच कदवाले विंट को 800 मी. में 23 वर्षीय अमरीकी मेलविल व्हीटफील्ड के बाद दूसरे स्थान से संतोष करना पड़ा था। लंबी दूरी की दौड़ों में फिन्निश धावकों की असफलता भी चर्चा का विषय रही। 10,000 मी. में चेकोस्लोवाकिया के 26 वर्षीय आर्मी लेफ्टिनेंट एमिल जातापेक ने विश्व-रिकार्डधारी फिनलैंड के विज्जो हीनो को 300 मीटर पीछे छोड़ते हुए स्वर्ण पदक पाया। तीन दिन बाद 5000 मी. में भी वह अपना दूसरा स्वर्ण जीतने की स्थिति में था, परंतु अंतिम 100 मी. में बेल्जियन गेस्टन रीफ ने पूरा जोर लगाकर उससे पहले टेप छू लिया। बेल्जियम का एथलेटिक्स में यह पहला स्वर्ण पदक था। 3000 मी. स्टीपल चेज में प्रथम तीन स्थान स्वीडिश धावकों ने हथियाए। 100 मी. एवं 400 मी, बाधा दौड़ में क्रमशः दो अमरीकी धावकों विलियम पोर्टर ने 13.9 सेकेंड से तथा राय काकरेन ने 51.1 सेकेंड से स्वर्ण जीता। लंबी बाधा दौड़ (400 मी.) में ही श्रीलंका का डंकन व्हाइट रजत पदक जीतकर पहला श्रीलंकाई पदकधारी हुआ। पैदल चालन में स्वीडिश खिलाड़ियों को सफलता मिली। 50 कि.मी. में कांस्य पदक जीतनेवाला ब्रिटिश टेब्बस लायड-जानसन 48 वर्ष 115 दिन का था। वह आज भी ओलंपिक खेलों के ट्रेक एंड फील्ड का सबसे बूढ़ा पदक विजेता है।

मैराथन दौड़ में 40 वर्ष पहले हुई 'डोरेंडो पियंत्री घटना' की पुनरावृत्ति होते-होते रह गई। स्टेडियम में सबसे पहले बेल्जियम के 21 वर्षीय एटीने गैली ने प्रवेश किया, परंतु तब तक वह बुरी तरह थक चुका था। फिर भी वह किसी तरह लड़खड़ाते हुए फिनिशिग लाइन तक पहुँचा, परंतु उसके पहले ही अर्जेंटाइना का 29 वर्षीय अग्निशामक कर्मचारी डेल्फो काब्रेरा तथा 38 वर्षीय ब्रिटिश टाम रिचर्ड्स उसे पार कर चुके थे। पदक वितरण के समय दर्शकों ने जबर्दस्त तालियाँ बजाकर गैली के साहस को सराहा।

फील्ड्स एवेंट में 1.98 मी. ऊँची कूद का स्वर्ण पदक पर्थ (आस्ट्रेलिया) के 23 वर्षीय बैंक क्लर्क जान विंटर ने जीता, जबकि उसे चोट लगी हुई थी। पोलवाल्ट में फिनलैंड का हरक्की कताजा अपने स्वर्ण के प्रति बिलकुल आश्वस्त था, परंतु अंतिम कूद में अमरीकी ओ. गुइन स्मिथ ने 0.10 मी. ज्यादा छलाँग लगाकर (कुल 4.30 मी.) स्वर्ण अपने नाम

कर लिया। त्रिकूद में स्वीडिश अर्नेअहमेन ने जापानियों की अनुपस्थिति का लाभ उठाते हुए कम कूद के बावजूद सोने का तमगा पा लिया। हैमर थ्रो में हंगरी के इम्रे नेमेथ ने पहला स्थान पाया, जो कि 1900 के बाद एथलेटिक्स में हंगरी का पहला स्वर्ण पदक था। 28 वर्ष बाद उसके पुत्र मिकलोम ने भी मांट्रियल ओलंपिक में भाला फेंक में नया विश्व-रिकार्ड बनाते हुए स्वर्ण जीता। यहाँ भाला फेंक का स्वर्ण फिनलैंड के कार्ड तापियो रॉतवारा ने जीता, जोकि बाद में एक सफल तीरंदाज, लोकगीत गायक एवं अभिनेता हुआ।

परंतु इन सबसे बढ़कर 17 वर्ष 263 दिन के तरुण ब्रूस राबर्ट मैथियास का प्रदर्शन रहा, जिसने एथलेटिक्स की सबसे कठिन स्पर्धा डेकाथलन में अनुभवी दिग्गजों को पछाड़कर तहलका मचा दिया। 17 नवंबर 1930 को तुलाके (केलिफोर्निया) में पैदा हुआ बॉब बचपन में काफी दुबला-पतला तथा एनीमिया से ग्रस्त था, परंतु लगातार दवाई खाने से वह काफी बलशाली हो गया था। ओलंपिक में आने के पूर्व भी उसने सिर्फ दो बार डेकाथलन में भाग लिया था। यहाँ वह पहले दिन पाँच स्पर्धाओं की समाप्ति पर अर्जेंटाइना के एनरिके किस्टेनमेकर एवं फ्रांस के इग्नेस हेनरिक से क्रमशः 49 एवं 32 अंक पीछे था। दूसरे दिन हुई बारिश तथा पहले दिन की थकान से सभी एथलीट परेशान थे। यह परेशानी बॉब को भी थी, परंतु वह अपने मन में जीत का संकल्प पैदा कर चुका था और 9वीं स्पर्धा की समाप्ति पर सबसे आगे हो गया। फिर अंतिम स्पर्धा—1500 मी. की दौड़ में उसकी शक्ति जवाब दे गई और वह सातवें स्थान पर खिसक गया। बावजूद इसके वह चैंपियन हुआ और इस ओलंपिक का सबसे युवा विजेता बना। जब उससे पूछा गया कि इस जीत का जश्न वह कैसे मनाएगा, तो उसने जवाब दिया—"अब मैं दाढ़ी बनाना आरंभ कर दूँगा।" फिर थकान से पस्त बॉब अपने पिता की ओर मुखातिब होकर बोला—"अब मैं इस स्पर्धा में कभी हिस्सा नहीं लूँगा।" परंतु वह अपने इस निर्णय को कायम नहीं रख सका तथा चार वर्ष बाद पुनः हेलसिंकी में वह इसी स्पर्धा में उतरा तथा विश्व-कीर्तिमान बनाते हुए अपनी इस उपलब्धि को दोहराया। 1948 से 1956 तक वह डेकाथलन में अजेय रहा। फिर संन्यास लेकर वह फिल्मों से जुड़ गया और अपने ऊपर भी एक फिल्म का निर्माण किया। 1966 में वह अमरीकी कांग्रेस में चुना गया, लेकिन 1974 में वह चुनाव हार गया।

तैराकी के मुकाबले वेंबले स्टेडियम के पास स्थित एंपायर हाउस इंडोर तरणताल में संपन्न हुए, जिसमें 8 ओलंपिक एवं 1 विश्व-कीर्तिमान पहली बार स्थापित हुए। जापानी तैराकों की अनुपस्थिति का भरपूर लाभ उठाकर अमरीकी तैराकों ने भारी अंतर से टीम टाइटिल जीता। पुरुष वर्ग में उनके 18 तैराकों में से सिर्फ तीन ही फाइनल में आने से बचे थे। सभी ने छः स्पर्धाएँ जीतकर अपना दबदबा बनाया। 400 मी. फ्री

स्टाइल में स्वर्ण जीतनेवाला बिल स्मिथ बचपन में टाइफाइड के कारण काफी कमजोर हो गया था और हाथ-पैरों में मजबूती लाने के उद्देश्य से ही उसने तैराकी आरंभ की थी। प्लेटफार्म डाइविंग में कोरियाई मूल के अमरीकी डॉक्टर सेमी ली ने पहला स्थान पाया, जिसे उसने चार वर्ष बाद हेलसिंकी में ठीक अपने 32 वें जन्मदिन पर पुनः दोहराया। पाँच फुट एक इंच का ली दो ही दिन पहले स्प्रिंग बोर्ड में अपने हमवतन ब्रूस हार्टेन एवं मिलर एंडरसन के बाद तीसरे स्थान पर रहा था। 1953 में उसे अमरीका के सर्वश्रेष्ठ खेल-सम्मान 'सुलीवान एवार्ड' से सम्मानित किया गया।

महिलाओं में सबसे तेज तैराक का खिताब डेनिश गर्ल ग्रेटा एंडरसन को मिला। बाद में उसने छः बार इंग्लिश चैनल तैरने का भी कीर्तिमान बनाया। अमरीकी दल में 4×100 मी. रिले की विजेता थेल्मा कलामा भी शामिल थी, जिसकी उम्र 17 वर्ष 135 दिन थी। वह इस ओलंपिक की सबसे युवा विजेता थी। गोताखोरी में फिलीपीनी पिता एवं अंग्रेज माँ की संतान विक्की ड्रेक्स दोनों मुकाबले जीतनेवाली पहली महिला डाइवर बनी। वाटरपोलो में इटली ने लगातार तीसरी बार हंगरी को विजेता बनने से रोका।

मुक्केबाजी में जोकि एंपायर हॉल स्थित बाक्सिंग एरीना में संपन्न हुई, रेफरी को इस बार भी रिंग के बाहर रहकर रेफरीशिप करनी पड़ी। इस बार 8 स्पर्धाओं के लिए 39 देशों के 206 मुक्केबाज अपने जौहर दिखलाने रिंग में उतरे। इस मुकाबले में किसी एक देश का दबदबा नहीं रहा, फिर भी अर्जेंटाइना, हंगरी एवं दक्षिण अफ्रीका के हिस्से में 2-2 तथा इटली, चेकोस्लोवाकिया के हिस्से एक-एक खिताब आया। परंतु निम्नस्तरीय एवं पक्षपातपूर्ण एंपायरिंग से काफी हो-हल्ला मचा। 51 कि.ग्रा. फ्लाईवेट वर्ग जीतनेवाले अर्जेंटाइना के पास्कल पेरेज को मुकाबले के पूर्व ही ओवरवेट के कारण अयोग्य घोषित कर दिया गया था, किंतु बाद में पता चला कि वह अयोग्य मुक्केबाज उसका हमवतन और लगभग हमनाम एर्नाल्डो पेरेज था। ब्यूनर्स आयर्स की एक फर्म में क्लर्क पास्कल पेरेज ने बाद में पेशेवर मुक्केबाज बनकर नाम कमाया। वेल्टरवेट वर्ग (67 कि. ग्रा.) के दूसरे राउंड में 26 वर्षीय चेक जुलियस तोर्मी अपने बाएँ हाथ की हड्डी तुड़वा बैठा, इसके बावजूद वह अगले तीन मुकाबले जीतकर विजेता बना। 75 कि.ग्रा. वर्ग (मिडिलवेट) में जीतनेवाला मुक्केबाज हंगरी का 22 वर्षीय वामहस्त लाजलो पाप था, जिसने अगले दो आयोजनों के लाइट मिडिलवेट वर्ग का खिताब पाया। 31 वर्ष की उम्र में उसने कम्युनिस्ट देश से प्रथम योरोपियन मिडिलवेट खिताब जीता, परंतु विश्व चैंपियनशिप के लिए उसके देश की सरकार ने उसे इजाजत नहीं दी। अपने कैरियर में अपराजित रहकर 1965 में उसने संन्यास ले लिया, और हंगरी का कोच बना। बाद में उसने अपनी जीवनगाथा पर एक फिल्म 'हैवी ग्लोब्स' बनाई, जिसमें उसने स्वयं मुख्य भूमिका निभाई थी। हंगरीवासी उसकी तुलना प्राचीन ओलंपिक के प्रसिद्ध ग्रीक

मुक्केबाज बाक्सोस के थिसामेन से करते हैं, जो 540 से 528 ई.पू. में लगातार चार बार मुक्केबाजी में पवित्र जैतून की माला जीता था। दक्षिण अफ्रीका के 21 वर्षीय बायकर मेकर जार्ज़ हर्टर को, जिसने लाइट हैवीवेट (81 कि.ग्रा.) का खिताब जीता था, उसके उत्कृष्ट कला-कौशल के लिए 'बाल बार्फर कप' दिया गया।

कुश्ती की फ्री स्टाइल स्पर्धाओं में तुर्की के पहलवानों ने 4 स्वर्ण, 2 रजत जीतकर टीम खिताब जीता, जबकि ग्रीको-रोमन में ठीक यही स्थिति स्वीडिश पहलवानों की थी। फ्री स्टाइल के फीदरवेट वर्ग में जीतनेवाले तुर्क पहलवान गाजाफेर बिल्ज को वहाँ की सरकार ने शानदार प्रदर्शन पर एक घर एवं बीस हजार लीरा से पुरस्कृत किया, जिसकी वजह से उसे पेशेवर करार दे दिया गया और इसी कारण 1952 में उसे भाग लेने से रोक दिया गया।

भारोत्तोलन में अब तक पिछड़नेवाला अमरीका 6 में से 4 स्पर्धाएँ जीतकर चोटी पर रहा। शेष दो स्वर्ण मिस्र के भारोत्तोलकों के हिस्से में आए। इस बार करीब 30 देशों के 120 से भी अधिक भारोत्तोलकों ने अपनी किस्मत आजमाई। इस दौरान 4 विश्व एवं 18 ओलंपिक रिकार्ड टूटे। पहली बार शामिल बैंटमवर्ग (56 कि.ग्रा.) का खिताब मात्र 4 फुट 8 इंच कदवाले अमरीकी जोसेफ डिपियेटो ने जीता। लाइटवेट वर्ग (67.5 कि.ग्रा.) में मिस्र के ही दो भारोत्तोलकों—इब्राहीम शैक्स व एटिला हमौडा ने बराबर भार (360 कि.ग्रा.) उठाया, मगर एटिला के मुकाबले कम वजनी होने के कारण शैक्स को स्वर्ण दिया गया। फीदरवेट वर्ग (60 कि.ग्रा.) में मेहमूद फयात ने तीन विश्व-कीर्तिमान बनाते हुए स्वर्ण पदक जीता। लाइटहैवीवेट वर्ग (82.5 कि. ग्रा.) में अमरीकी स्टेनली स्नेजिक ने 37 कि.ग्रा. के अंतर से अपने देशवासी हेराल्ड सकाता को पीछे छोड़ा। सकाता ने बाद में जेम्सबांड की फिल्म गोल्ड फिंगर में चर्चित ऑडजॉब के चरित्र को जिया। सुपरहैवीवेट वर्ग में अमरीकी जो डेविस ने सफलता पाई, जिसे उसने चार वर्ष बाद हेलसिंकी में पुनः दोहराया।

पदकों का असमान वितरण

जिमनास्टिक में फिनलैंड ने टीम टाइटिल जीता। इसके मुकाबले अंतिम समय में खराब मौसम के कारण वेंबले स्टेडियम की बजाय एंप्रेस हॉल में संपन्न हुए। इस बार कई वर्गों में इतनी कड़ी प्रतियोगिताएँ देखने को मिलीं कि असमान रूप से पदक बाँटने पड़े। मसलन पामेल हार्स में 38.7 अंक के साथ तीन फिन्निश करतबकार पावो आल्तोनेन, विक्को दुहतानेन एवं हिक्की सावोलैनेन ने पहला स्थान बनाया। लिहाजा तीनों को स्वर्ण दिया गया। इसके बावजूद इटली के लुइगी जनेटी (38.3 अंक) को रजत एवं गुड्डो फिगोने (38.2 अंक) को कांस्य पदक दिया गया, जोकि ओलंपिक खेलों की अपने आप में

एक विस्मयकारी घटना है। इसके अलावा हार्स वाल्ट में तीन कांस्य और पेरेलल बार में दो कांस्य दिए गए। महिलाओं में टीम खिताब चेकोस्लोवाकिया ने जीता। इस टीम की एक सदस्या एलिस्का मिसाकोवा की लंदन पहुँचते ही मृत्यु हो गई, परंतु उसकी बड़ी बहन मिलोस्लावा ने शानदार प्रदर्शन कर न सिर्फ अपने देश को विजय दिलाई, बल्कि अपनी मरहूम बहन को भी सही श्रद्धांजलि दी।

तलवारबाजी में फ्रांसिसी तलवारबाजों ने तीन स्पर्धाओं में स्वर्ण पदक जीता। स्वर्ण हंगरी के लोकप्रिय तलवारबाज एलाडार गेरेविज के पास में रहा। उसने 1932 से लगातार छः ओलंपिकों में भाग लिया, जिसके दौरान उसने कुल सात स्वर्ण (एक व्यक्तिगत), एक रजत एवं दो कांस्य जीते। 1960 ओलंपिक के समय उसकी आयु 50 वर्ष थी। महिलाओं की एकमात्र स्पर्धा फायल में 42 वर्ष की उम्र के बावजूद पिछले चैंपियन इलोना इलेक (हंगरी) ने अपने खिताब की रक्षा की। वह यह सम्मान पानेवाली अब तक की एकमात्र महिला तलवारबाज है। इसी मुकाबले में उसकी छोटी बहन मारगेट छठवें स्थान पर रही।

साईकिलिग में भी जोकि हर्न हिल पर बने ट्रेक में हुई, फ्रांसिसी धावक छः में से तीन स्पर्धाएँ जीतने में सफल रहे। 195 कि. मी. रोड रेस जूता बनानेवाले 32 वर्षीय फ्रांसिसी जोस बेयर्ट ने जीती।

केनोइंग में इस बार पुरुषों की आठ स्पर्धाओं के साथ महिलाओं की भी एक स्पर्धा रखी गई थी। महिलाओं की 500 मीटर कयाक सिंगल्स डेनमार्क की करेन हाफ ने 2 मिनट 31.6 सेकेंड से जीती। ओलंपिक इतिहास में महिलाओं की केनोइंग प्रतियोगिता में डेनमार्क की यही अब तक एकमात्र सफलता है। पुरुषों के वर्ग में चार स्पर्धाएँ जीतकर स्वीडन श्रेष्ठ साबित हुआ, जबकि चेकोस्लोवाकिया के हिस्से में तीन एवं अमरीका के हिस्से में एक स्वर्ण पदक आया। स्वीडिश सफलता के पीछे गर्ट फ्रेडरिकसन का जबरदस्त हाथ रहा, जिसने कयाक सिंगल्स की 1000 मी. एवं 10,000 मी. की दौड़ बड़ी आसानी से जीती। उसकी गिनती आज भी ओलंपिक में केनोइंग के सबसे सफल खिलाड़ियों में होती है। उसने 1948 से 1960 के दौरान 6 स्वर्ण, 1 रजत एवं 1 कांस्य पदक जीता। अंतिम स्वर्ण उसने 40 वर्ष 297 दिन की आयु में 1960 ओलंपिक में 1000 मीटर कयाक डबल्स में जीता था।

रोइंग के मुकाबले लंदन से बाहर हेनली तट पर हुए, जिसमें 16 देशों ने भाग लिया। अमरीका ने लगातार छठवीं बार (कुल आठवीं) एट्स का मुकाबला जीता। काक्सड्लेस पेयर्स में ब्रिटेन के मशहूर स्कॉलर जान विलयम एवं विलियम लारी ने स्विस काल्ट बंधुओं हेंस एवं जोसेफ से कड़ी टक्कर के बाद पहला स्थान पाया। डबल्स स्कल्स में स्वर्ण विजेता ब्रिटिश दल का एक सदस्य रिचर्ड्स बूनेल भी था, जिसका पिता चार्ल्स भी

1908 ओलंपिक में एट्स मुकाबले में स्वर्ण जीतने में सफल रहा था। रोइंग में पिता-पुत्र द्वारा स्वर्ण जीतने का यह एकमात्र उदाहरण है।

टोरबो तट पर आयोजित यार्टिंग में यद्यपि डेनमार्क केवल एक ही स्पर्धा में जीत सका था, परंतु इस विजयी दल के एक सदस्य पाल एल्वास्ट्राम ने आगे चलकर एक इतिहास बनाया। 25 सितंबर, 1928 को कोपेनहेगन में जन्मा एल्वास्ट्राम 1948 से 1984 तक सात मर्तबा इस स्पर्धा में उतरा और फिन क्लास में लगातार चार बार स्वर्ण पदक जीतकर यह सम्मान पानेवाला पहला खिलाड़ी बना। फिर एक ओलंपिक के बाद वह (1968) स्टार क्लास में उतरा मगर चौथे स्थान पर आया। 1972 में उसने पुनः वर्ग बदलकर सोलिंग में हिस्सा लिया परंतु इस बार वह सातवें स्थान पर लुढ़क गया, जबकि 1984 के लास एंजिल्स में वह अपनी पुत्री ट्रिन के साथ पुनः नजर आया और टोरनाडो में चौथा स्थान पाया। खेल से हटकर एल्वास्ट्राम ने एक लेखक के रूप में भी ख्याति पाई है। 6 मीटर वर्ग में अमरीकी पिता-पुत्र की जोड़ी पाल एवं हिलेरी ने कामयाबी पाई। 56 वर्ष 212 दिन की आयु का कानूनविद पाल स्मार्ट इस आयोजन का सबसे बुजुर्ग चैंपियन था।

जाँबाज़ कारोली

निशानेबाजी की प्रतियोगिता में हंगरी के वामहस्त निशानेबाज कारोली टाकाक्स ने पूरे आयोजन में सबसे सराहनीय प्रदर्शन किया। उसने रैपिड फायर पिस्टल स्पर्धा में अर्जेंटाइनी विश्वचैंपियन कार्लोज़ डायज़ साइज़ वालिटे को 9 अंकों से पीछे छोड़कर 580 अंकों के साथ स्वर्ण पदक जीता। 21 जनवरी, 1910 को बुडापेस्ट में जन्मा कारोली अपने आरंभिक वर्षों में दाएँ हाथ का निशानेबाज था, परंतु 1938 में एक हथगोला फटने के दौरान उसका दायाँ कंधा उखड़ गया। इस स्थिति के बावजूद उसने बगैर हिम्मत खोए बाएँ हाथ से अभ्यास करना प्रारंभ किया और इस मुकाम पर पहुँचा। अभ्यास के कुछ ही दिनों बाद उसने हंगरी को विश्व टीम चैंपियनशिप जिताने में अहम भूमिका निभाई। सार्जेंट कारोली ने अगले ओलंपिक में भी विश्व-रिकार्ड बनाते हुए यह स्पर्धा जीती।

घुड़सवारी में शो जंपिंग की व्यक्तिगत एवं टीम-स्पर्धाओं में मैक्सिको ने यूरोपीय एकाधिकार को तोड़ते हुए स्वर्ण जीता। इसमें व्यक्तिगत स्पर्धा का स्वर्ण जीतनेवाला 35 वर्षीय जनरल हंबर्टो मार्लीस कोर्टेस था, जिसे 1968 के मैक्सिको ओलंपिक में घुड़सवारी प्रतियोगिता का इंचार्ज बनाया गया था, परंतु इसके पहले 1967 में एक हत्या के आरोप में उसे जेल में डाल दिया गया और उसकी नौकरी वापस ले ली गई। फिर भी आयोजन के समय उसे प्रतियोगियों से मिलने एवं टी.वी. देखने की छूट दी गई। बाद में

राष्ट्रपति द्वारा दी गई माफी के कारण उसे छोड़ दिया गया, किंतु 1972 में नशीले पदार्थों की तस्करी के आरोप में वह पुनः पकड़ा गया, जहाँ मुकदमे के पहले ही जेल में उसकी मृत्यु हो गई। एक अन्य स्पर्धा ड्रेसाज में स्वीडिश टीम ने टीम खिताब जीता परंतु एक वर्ष बाद आई.ओ.सी. ने उससे यह खिताब छीनकर फ्रांस को स्वर्ण पदक दे दिया, क्योंकि स्वीडिश दल का एक सदस्य गेहनाल पार्सम प्रतियोगिता के नियमानुसार कमीशंड अफसर नहीं था। माडर्न पेंटाथलन में स्वीडिश कप्तान विलियम ग्रुट ने शानदार प्रदर्शन कर सोने का तमगा जीता। 33 वर्षीय ग्रुट ने इस पंच खेल की तीन स्पर्धाओं (घुड़सवारी, तलवारबाजी एवं तैराकी) में पहला स्थान और इस खेल का सबसे न्यूनतम अंक हासिल किया। वह स्टाकहोम ओलंपिक हेतु बनाए गए मुख्य स्टेडियम के डिजाइनर का बेटा था।

टीम मुकाबलों में बास्केटबाल के, जोकि हेरिग्वे एरीना में खेला गया, अधिकांश मुकाबलों में विजय का अंतर बहुत कम था। चार मैचों में मात्र एक अंक से हार-जीत का फैसला हुआ। अमरीका अपने सभी आठों मैचों में अपराजित रहकर लगातार तीसरी बार स्वर्ण का हकदार बना। पश्चिमी यूरोप एवं दक्षिण अमरीकी देशों के मुख्य खिलाड़ियों द्वारा पेशेवर हो जाने से फुटबाल में आकर्षण कम हो गया और यहाँ अंतिम बार एक गैर कम्युनिस्ट देश ने स्वर्ण पदक जीता। फाइनल में स्वीडन ने यूगोस्लाविया को 3-1 से पीटा। विजयी स्वीडिश दल में तीन नोरडल बंधु—फुंट, बर्टिल एवं गुन्नार शामिल थे। हाकी में भारत ने किशनलाल की कप्तानी में लगातार चौथा स्वर्ण जीता। फाइनल में मेजबान को 4-0 से पीटकर उसकी सारी ऐंठ निकाल दी। पाकिस्तान पहली बार इस स्पर्धा में उतरा तथा हालैंड से 1-4 गोलों से परास्त होकर चौथे स्थान पर रहा।

इस प्रकार लंदन ओलंपिक का यह सफरनामा तय हुआ। द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात् इतने बड़े खेल-आयोजन का यह पहला मौका था, लिहाजा इसका आयोजन ही काफी अहमियत रखता था। ब्रिटिश अधिकारियों की इसमें संतोषप्रद भूमिका रही, खासकर आयोजन समिति के अध्यक्ष लार्ड बर्गले का योगदान बेहद सराहनीय था। समीक्षकों का मत था कि यदि इंद्रदेव ने पूरे आयोजन में अपनी कुदृष्टि नहीं दिखाई होती तो आयोजन का स्तर एवं प्रदर्शन और भी अच्छा होता। फिर भी दूसरे विश्वयुद्ध के बाद खेल संगठनों में सक्रियता लाने में यह आयोजन सफल रहा।

पदक-तालिका–1948

देश	स्वर्ण	रजत	कांस्य
अमरीका	38	27	19
स्वीडन	16	11	17
फ्रांस	10	6	13
हंगरी	10	5	12
इटली	8	12	9
फिनलैंड	8	7	5
तुर्की	6	4	2
चेकोस्लोवाकिया	6	2	3
स्विट्जरलैंड	5	10	5
डेनमार्क	5	7	8
ग्रेट ब्रिटेन (नीदरलैंड)	3	14	6
अर्जेंटाइना	3	3	1
आस्ट्रेलिया	2	6	5
बेल्जियम	2	2	3
मिस्र	2	2	1
मैक्सिको	2	1	2
दक्षिण अफ्रीका	2	1	1
नार्वे	1	3	3
जमैका	1	2	—
आस्ट्रिया	1	1	3
भारत	1	—	—
पेरू	1	—	—
यूगोस्लाविया	—	2	—
कनाडा	—	1	2
पुर्तगाल	—	1	1
उरुग्वे	—	1	1
श्रीलंका	—	1	—
क्यूबा	—	1	—

स्पेन	—	1	—
त्रिनीदाद एवं टोबैगो	—	1	—
कोरिया	—	—	2
पनामा	—	—	2
ब्राजील	—	—	1
ईरान	—	—	1
प्यूर्तोरिको	—	—	1
पोलैंड	—	—	1

पंद्रहवाँ ओलंपिक : 1952–हेलसिंकी

विश्व प्रसिद्ध खिलाड़ी पावो नूरमी, हेंस कोलह मैनेल, विले रिटोला-जैसे अद्वितीय धावकों का देश फिनलैंड भी शुरू से ही ओलंपिक खेलों को आंदोलित करने में अग्रणी रहा है। 1906 में वह पहली बार ओलंपिक खेलों के अखाड़े में उतरा था तभी से लगातार उसके खिलाड़ियों ने अपनी सफलताएँ दिखानी आरंभ कीं। इसी लोकप्रियता का परिणाम रहा कि आई. ओ. सी. ने 1938 में टोकियो के स्थान पर हेलसिंकी को 12वें (1940)ओलंपिक की मेजबानी सौंपी थी, लेकिन तमाम तैयारियों के बावजूद यह ओलंपिक द्वितीय विश्वयुद्ध की भेंट चढ़ गया था। लेकिन आई. ओ. सी. ने उसके प्रयासों को भुलाया नहीं और जून 1947 में निर्णय लेते हुए 15वें आयोजन के लिए हेलसिंकी का चुनाव किया।

फिनलैंड ने इस आयोजन को यादगार बनाने के लिए भरपूर कोशिशें कीं। पुरुष खिलाड़ियों के ठहरने के लिए मुख्य स्टेडियम से 2.5 कि. मी. दूर कोपिला में खेलगाँव का निर्माण किया, जबकि महिलाओं को नर्स ट्रेनिंग कालेज में ठहराया गया। परंतु इतनी अच्छी व्यवस्था के बावजूद रूस ने, जोकि जार के शासन से मुक्ति पाने के बाद पहली बार ओलंपिक खेलों में शिरकत कर रहा था, अपने सहयोगी कम्युनिस्ट देश रूमानिया, बुल्गारिया, चेकोस्लोवाकिया, हंगरी एवं पोलैंड के सुरक्षा-कारणों का बहाना बनाकर अपने खिलाड़ियों को दूसरे खेलगाँव में ठहराया। इतना ही नहीं, रूस ने अपनी भूमि से टॉर्च रिले भी नहीं जाने दिया।

इस सबके बावजूद रिमझिम फुहारों के बीच 19 जुलाई को एक भव्य समारोह में

आई. ओ. सी. के नए अध्यक्ष एवेरी ब्रुडेंज के अनुरोध पर फिन्निश राष्ट्रपति जूहो पासीकिवी ने इन खेलों का उद्घाटन किया। जोश, उमंग एवं खेल-प्रतिद्वंद्विता का यह आयोजन 3 अगस्त तक चलता रहा। मेजबान देश का सबसे बुजुर्ग जिमनास्ट 45 वर्षीय हिक्की सावोलैनेन ने जोकि लगातार पाँचवीं बार ओलंपिक खेलों में भाग ले रहा था, सभी प्रतियोगियों एवं अधिकारियों की ओर से ओलंपिक शपथ ग्रहण की। उसके पश्चात् हेलसिंकी स्टेडियम में बैठे सभी 70,500 दर्शकों की निगाहें मुख्य दरवाजे पर जा टिकीं, जहाँ से एक परिचित चेहरा—पावो नूरमी ओलंपिक मशाल लेकर स्टेडियम में उपस्थित हुआ। नूरमी ने स्टेडियम की एक परिक्रमा पूरी की और नीचे बने ज्योति पात्र में मशाल झुका दी। उसके पश्चात् उसने मशाल एक अन्य इतिहास पुरुष हेंस कोलेहमैनेल को सौंपी, जिसे उसने 72.71 मीटर ऊँची मीनार के कुंड में समाहित कर दिया। मीनार की यह ऊँचाई 1932 में जेवलिन थ्रो विजेता मैट्टी जारविनेन की विजयी फेंक-दूरी के बराबर रखी गई थी।

इस बार 69 देशों के 4925 प्रतियोगियों ने, जिसमें 518 महिलाएँ भी थीं, इस आयोजन की शोभा बढ़ाई। नए देशों के रूप में नीदरलैंड, एंटीलेस, बहामा, घाना, हांगकांग, इंडोनेशिया, इज़राइल, नाइजीरिया, सार, थाईलैंड, दक्षिण वियतनाम एवं रूस ने इस ओलंपिक की दहलीज पर कदम रखा। पूर्वी जर्मनी को आई. ओ. सी. द्वारा मान्यता नहीं दी गई, जबकि ताईवान को मान्यता देने के कारण चीन (नेशनलिस्ट) ने भाग नहीं लिया।

ह्यूमन लोकोमेटिव एमिल जातापेक

एथलेटिक्स में सफलताओं की नई शुरुआत हुई। इस बार 24 पुरुष-प्रतियोगिताओं के लिए 57 देशों के 995 तथा महिलाओं की 8 स्पर्धाओं में 267 प्रविष्टियाँ प्राप्त हुईं। कुल मिलाकर 8 विश्व-रिकार्ड एवं 25 ओलंपिक-रिकार्ड बने। इस बार इन खेलों का चहेता चेकोस्लोवाकिया का एमिल जातापेक था, जिसने पाँच दिनों में लंबी दूरी की तीन दौड़ें जीतकर फिनलैंडवासियों को पुनः पावो नूरमी की याद से सराबोर कर दिया। 19 सितंबर, 1922 को कोप्रिव्नाईस (उत्तरी मोरोविया) में एक बढ़ई के घर में जन्मे एमिल में विलक्षण खेल-प्रतिभा थी और अपनी इस प्रतिभा को उसने पिछले ओलंपिक से ही दिखाना आरंभ कर दिया था। पिछले ओलंपिक में जहाँ उसने 10, 000 मीटर में स्वर्ण एवं 5000 मी. में रजत पदक जीता था, वहीं चार वर्ष बाद यहाँ वह अपनी खेल-प्रतिभा के चर्मोत्कर्ष पर था। यहाँ उसने सबसे पहले 10,000 मी. की दौड़ 29 मिनट, 17 सेकेंड में आसानी से ओलंपिक-कीर्तिमान बनाते हुए जीती। चार दिन बाद 5000 मी. में पुनः नया ओलंपिक-रिकार्ड स्थापित करते हुए 14:06.6 सेकेंड से पहला स्थान पाया। उसी

दिन उसकी पत्नी डाना ने भाला फेंक में 50 .47 मीटर दूर भाला फेंककर नए ओलंपिक रिकार्ड के साथ स्वर्ण जीता। दिलचस्प है कि डाना की जन्मतिथि भी 19 सितंबर 1922 ही थी। फिर जब पत्रकारों ने एमिल से मैराथन दौड़ में भाग लेने के विषय में पूछा तो उसने जवाब दिया—"चूँकि अब स्कोर 2-1 (2 एमिल, 1 डाना) हो चुका है, अतः इसे बढ़ाना जरूरी है।" 27 जुलाई को उसने अपने जीवन की सबसे पहली मैराथन दौड़ में हिस्सा लिया और 2 घंटे 23 मिनट 3.2 सेकेंड के समय के साथ नया ओलंपिक-कीर्तिमान बनाते हुए स्वर्ण जीत लिया। उसकी जीत से पूरा स्टेडियम 'जा-ता-पेक, जा-ता पेक' की आवाज से गूँज उठा। इतना ही नहीं, जमैकन रिले टीम ने तो उसे कंधों पर ही उठा लिया। बाद में उसने इसे अपनी जिंदगी की सबसे जानदार जीत माना। इस दौड़ के बाद वह इतना थक चुका था कि पूरे एक सप्ताह तक आराम ही करता रहा। चार वर्ष बाद उसने मेलबोर्न ओलंपिक की मैराथन दौड़ में भाग लिया, जिसमें हर्निया से पीड़ित होने के बावजूद उसने छटवाँ स्थान पाया।

द मशीन, अति भयानक एमिल, प्राग का दानव, मानवी इंजन… और न जाने कितने ही नामों से विभूषित जातापेक ने अपने जीवनकाल में 5000 मी. से लेकर 30,000 मी. तक की दौड़ में विश्व-रिकार्ड बनाया। 10,000 मी. में तो वह 1948 से 1954 तक लगातार 34 बार जीतने में सफल रहा और इसे 29 मिनट से भी कम समय में पूरा करनेवाला पहला एथलीट बना। खेलों की अपनी कामयाबी के जरिए वह सेना में लेफ्टिनेंट कर्नल के पद तक पहुँचा। 1968 में उसने रूसी प्रभाग के खिलाफ अपने देश की स्वतंत्रता की आवाज उठाई, जिसके कारण उसकी नौकरी छीन ली गई और उसे कचरा फेंकने तक का काम सौंपा गया। बाद में सरकार के समर्थन में बोलने पर उसे स्पोर्ट्स इनफॉर्मेशन ब्यूरो में क्लर्क का काम सौंपा गया।

सबसे तेज धावक के लिए इस बार भी काफी कशमकश देखने को मिली। चार धावकों—लिंडी रेमीजिनो एवं डीन स्मिथ (अमरीका), हर्ब मैकनले (जमैका) तथा एमैनुअल मैकडोनाल्ड बैली (ब्रिटेन) ने 10.4 सेकेंड के समय से टेप छुआ, जिस पर फैसला फोटो फिनिश आधार पर हुआ। रेमीजिनो का दायाँ कंधा बैली की छाती की अपेक्षा मात्र एक इंच के अतंर से टेप से छू गया था, इसी कारण उसे विजयी माना गया। मगर कुछ प्रेक्षकों का ख्याल था कि यह दौड़ मैकनले ने जीती है। बाद में जब उसके समर्थकों ने उससे फोटो फिनिश के आधार पर दावा करने को कहा तो उसने जवाब दिया—"मैं फोटो की बजाय अपने पैरों की शक्ति पर ज्यादा विश्वास रखता हूँ।" 30 वर्षीय मैकनले ने बाद में 400 मी. में रजत जीता। इसका स्वर्ण भी उसके ही देशवासी जार्ज रोडन ने जीता। 4 × 100 मी. रिले में भी उसने जमैका के लिए स्वर्ण प्राप्त किया। 800 मी. में अमरीकी मेल व्हाइट फील्ड ने ठीक चार वर्ष पहलेवाला समय (1 : 49.2

सेकेंड) देकर अपने पुराने प्रतिद्वंद्वी आर्थर विंट को तीन गज के फासले से पछाड़ा।

मगर इन सबसे हैरतअंगेज परिणाम 1500 मी. दौड़ में आया, जिसमें धावकों की संख्या (52) इतनी अधिक हो चुकी थी कि आरंभिक हीट्स के बाद सेमीफाइनल भी कराना पड़ा। इस प्रक्रिया से संभावित विजेताओं—ब्रिटिश मेडिकल छात्र रोजर बैनिस्टर, जिसने दो वर्ष बाद एक मील की दौड़ चार मिनट से भी कम समय में पूरी की एवं जर्मन वर्नर लुएग—का हिसाब गड़बड़ा गया। सेमीफाइनल में बैनिस्टर अप्रत्याशित रूप से लक्समबर्ग के एक अनजान धावक जोसी बार्थेल से हार गया। फाइनल में भी बार्थेल ने अंतिम समय में गजब की फुर्ती दिखाकर नया ओलंपिक रिकार्ड (3 : 45.1) बनाते हुए स्वर्ण जीत लिया। पदक-वितरण समारोह के समय जब लक्समबर्ग की राष्ट्रीय धुन बजाई गई तो बार्थेल की आँखों में आँसू आ गए। इस दौड़ में पहले आठ स्थानों पर आनेवाले धावकों ने ओलंपिक-रिकार्ड तोड़ा था। 3000 मी. स्टीपल चेस अमरीका के एफ. बी. आई. एजेंट होरेंस एशेनफेल्टर ने रूस के विश्व-रिकार्डधारी ब्लेदीमिर खज़ास्तेव को पीछे छोड़ते हुए विश्व-रिकार्ड समय 8:45.4 सेकेंड से स्वर्ण पदक पाया। 10 कि. मी. पैदल चालन में स्वीडिश जान मिकाइलसन ने 1948 की अपनी सफलता को दोहराया। इसमें रजत फ्रिट श्वार्ब को मिला, जिसके पिता आर्थर ने बर्लिन में 50,000 मी. पैदल चालन में रजत जीता था।

फील्ड मुकाबलों में 7 फुट 8 इंच कदवाले वाल्टर डेविस ने 2.04 मी. छलाँग लगाकर ओलंपिक रिकार्ड बनाते हुए ऊँची कूद का स्वर्ण पदक जीता। चार अंकों (1016) की जर्सी पहले पहनने का गौरव पानेवाले डेविस का वजन 206 पौंड था, जबकि बचपन में वह पोलियो से भी ग्रस्त रहा था। पोल्टवाल्ट का स्वर्ण कैलीफोर्निया विश्वविद्यालय के अध्यात्मवाद के प्रोफेसर राबर्ट्स रिचर्ड्स ने (4.55 मी. से) जीता, चार साल बाद जिसे मेलबोर्न (4.56 मी.) में उसने पुनः उसने दोहराया।

ठीक ऐसा ही संयोग गोलाफेंक एवं त्रिकूद में भी देखने को मिला। गोलाफेंक का स्वर्ण कैलीफोर्निया के 20 वर्षीय विलियम पैरी ओ ब्रायन ने 'स्टेप बैक' तकनीक की ईजाद करते हुए 17.41 मी. से जीता। बाद में मेलबोर्न में भी उसने स्वर्ण (18.57 मी.) जीता। इसके बाद उसने रोम में दूसरा एवं टोकियो में चौथा स्थान पाया। त्रिकूद में ब्राजील के एडेमार फेरेरा डी सिल्वा ने स्पर्धा के दौरान चार बार अपने विश्व-रिकार्ड को तोड़ा और 16.22 मी. छलाँग के साथ स्वर्ण जीता। चार वर्ष बाद वह इसमें 0.13 मी. की वृद्धि कर पुनः स्वर्ण का हकदार बना। बाद में उसने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सराही गई फिल्म 'ब्लैक आरेफस' में भी काम किया।

महिलाओं के मुकाबले में आस्ट्रेलिया की मारजोरी जैकसन ने स्प्रिंट के दोनों मुकाबले जीतकर शानदार डबल पूरा किया। 100 मी. में उसने जहाँ विश्व-रिकार्ड

(11.5 सेकेंड) की बराबरी की, वहीं 200 मी. सेमीफाइनल में 23.4 सेकेंड का समय देकर नया विश्व-कीर्तिमान बनाया। 4 × 400 मी. रिले में भी आस्ट्रेलिया की जीत लगभग तय थी, परंतु फाइनल में तीसरे दौर के बाद विनमस क्रिप्स एवं उसके (जैकसन) बीच बैटन-बदली में देर हो गई और उसे अमेरिका 45.9 सेकेंड, नया विश्व-कीर्तिमान) जर्मनी, ब्रिटेन एवं रूस के बाद पाँचवें स्थान से संतोष करना पड़ा। विजयी अमरीकी दल में 15 वर्ष 123 दिन की अश्वेत बारबरा जोंस भी थी, जोकि आज भी ट्रेक एंड फील्ड में सबसे युवा विजेता मानी जाती है।

आस्ट्रेलिया की ही 27 वर्षीया विज्ञान शिक्षिका शिर्ले स्ट्रिकलैंड (डी ला हंटी) ने 80 मी. बाधा दौड़ में नया विश्व-रिकार्ड (10.9 सेकेंड) कायम कर स्वर्ण जीता। अगले ओलंपिक में भी उसने अपनी यह सफलता बरकरार रखी। कुल मिलाकर तीन ओलंपिकों में हिस्सा लेकर उसने 3 स्वर्ण, 1 रजत एवं 3 कांस्य पदक जीते। लंबी कूद में 23 वर्षीया येवेट विलियम्स (न्यूजीलैंड) भी नए ओलंपिक-कीर्तिमान (6.24 मी.) के साथ स्वर्ण जीती। चक्का फेंक में लीना रोमाश्कोवा 51.42 मीटर चक्का फेंककर पहले स्थान पर आई और ट्रेक एवं फील्ड में रूस को पहला स्वर्ण पदक दिलानेवाली खिलाड़ी बनी। रोमाश्कोवा (बाद में पोनोमारयेवा) ने मेलबोर्न में कांस्य और रोम में पुनः स्वर्ण पदक जीता। इसमें रजत जीतनेवाली रूसी एथलीट येलीसवेता बाग्रेंतसेवा की पुत्री ईरीना 28 वर्ष बाद मास्को में 4 × 400 मी. रिले की स्वर्ण विजेता रूसी टीम की सदस्या थी। गोला फेंक में भी रूस की गैलिना जार्ईविना सबसे ताकतवर महिला एथलीट सिद्ध हुई। अपने ही विश्व-रिकार्ड को खंडित करते हुए वह 15.28 मी. थ्रो के साथ स्वर्ण जीती। जब गैलिना दस वर्ष की थी, तो द्वितीय विश्वयुद्ध के समय उसकी माँ और भाई ठंड एवं भूख से काल के गाल में समा गए थे और वह स्वयं भी दुबली एवं कमजोर हो गई थी, लेकिन बाद में परिस्थितियों से जूझते हुए वह इस मुकाम पर पहुँची। परंतु इस प्रतियोगिता में सबसे उल्लेखनीय प्रदर्शन रूस की ही अलैक्सेंड्रा चुडीना का रहा, जिसने लंबी कूद एवं भालाफेंक में रजत तथा ऊँची कूद में कांस्य पदक हासिल किया।

तैराकी के मुकाबले में रिकार्ड संख्या—44 देशों ने भाग लिया और 1,10,000 से भी ज्यादा दर्शकों ने इसका लुत्फ उठाया। पुरुषों में अमरीका ने 9 में से 6 स्वर्ण पदक जीतकर टीम खिताब जीता तो महिलाओं में यह सम्मान (7 में से 4 स्वर्ण) हंगरी को प्राप्त हुआ। महिलाओं में सबसे चर्चित प्रदर्शन कैलीफोर्निया की 22 वर्षीया पैट्रीशिया मैकोर्मिक (केलर) का रहा, जिसने गोताखोरी में दोनों स्पर्धाएँ बड़ी आसानी से जीतीं। चार वर्ष बाद जबकि वह पाँच माह के बच्चे की माँ थी, तब भी अपने कारनामे को दोहराने में सफल रही। फिर 1984 के लासएंजिल्स में उसकी पुत्री कैली ने स्प्रिंग बोर्ड में रजत पदक जीता। यहाँ प्लेटफार्म डाइविंग में कांस्य पानेवाली अमरीकी जूना इर्विन (स्टोवर) भी साढ़े तीन माह का गर्भ धारण किए हुए थी।

100 मी. फ्री स्टाइल में काफी कड़ा मुकाबला देखने को मिला, जिसे हंगरी की 16 वर्षीया कटलीन जोक ने जीता। कटलीन ने बाद में 1952 एवं 1956 में वाटर पोलो का स्वर्ण जीतनेवाले हंगारी टीम के सदस्य कालमेन मार्कोविट्स से विवाह रचाया। ठीक इसी तरह 200 मी. ब्रीस्ट स्ट्रोक में स्वर्ण जीतनेवाली उसकी हमवतन ईवा ज़ेकली ने भी अपने देश के वाटरपोलो खिलाड़ी डेसज़ो ग्यार्मेती से विवाह किया। डेसज़ो 1948 से 1964 तक हंगारी टीम का सदस्य था और इस दरम्यान 3 स्वर्ण, 1 रजत एवं 1 कांस्य जीता। फिर उसकी पुत्री एंड्रिया भी 1972 में एक रजत एवं कांस्य जीतने में सफल हुई। इतना ही नहीं, उसका दामाद मिहली हेज़ भी कैनोइंग में 1964 में रजत एवं 1968 में स्वर्ण पदक जीत चुका था। 4 × 400 मी. फ्री स्टाइल रिले में नया विश्व-कीर्तिमान (4 : 24.4 सेकेंड) बनाकर स्वर्ण पानेवाली हंगेरियन टीम में केर्टलीन एवं जुडी टेमस के अलावा ईलाना एवं ईवा नोवाक नामक बहिनें भी थीं। 100 मी. बैक स्ट्रोक में जब दिग्गजों की उपस्थिति में दक्षिण अफ्रीकी तैराक जोन हैरीसन जीती तो खुशी के मारे उसका कोच गश खाकर गिर पड़ा।

पुरुषों में जापानियों द्वारा एक भी स्वर्ण न जीत पाना एक उल्लेखनीय घटना रही। 400 मी. फ्री स्टाइल में जब फ्रांस के एक अनजान तैराक जीन बालटैक्स ने पहला स्थान पाया तो खुशी के मारे उसके पिता ने पूल में ही कूदकर उसे गले लगा लिया। वाटरपोलो के फाइनल में हंगरी एवं यूगोस्लाविया 2-2 से बराबरी पर थे, परंतु बेहतर गोल औसत के आधार पर स्वर्ण पदक हंगरी को दिया गया।

जायज रजत के लिए 30 वर्षों की प्रतीक्षा

मुक्केबाजी में 30 देशों के बीच अमरीकी बाक्सरों ने भारी वर्ग में सफलता हासिल कर टीम टाइटिल जीतने में कामयाबी हासिल की। उसके हिस्से में 10 में से 5 स्वर्ण आए। सबसे उल्लेखनीय प्रदर्शन ब्रुकलीन (अमरीका) के 17 वर्ष 211 दिन आयु के अश्वेत मुक्केबाज फ्लायड पैटरसन का रहा. जिसने मिडिलवेट वर्ग (75 कि. ग्रा.) के फाइनल में रूमानियाई प्रतिद्वंद्वी वसिले टीटा को 1 मिनट 14 सेकेंड में ही नाक आउट कर दिया और ओलंपिक मुक्केबाजी का सबसे युवा चैंपियन बना। इतना ही नहीं, चार वर्ष बाद आर्चीमूर को पाँचवें दौर में परास्त कर वह सबसे युवा पेशेवर हैवीवेट चैंपियन भी बना। लेकिन सुपर हैवीवेट वर्ग में अजीब घटना हुई। स्वीडिश इंगेमार जोहनसन को हैवीवेट, हारने के बावजूद रजत पदक नहीं दिया गया, क्योंकि जजों की राय में उसने अमरीकी एडवर्ड सैंडर्स के खिलाफ एक भी मुक्का न चलाकर श्रेष्ठ प्रदर्शन नहीं किया। बाद में, 1959 में उसने फ्लायड पैटरसन को हराकर विश्व-चैंपियनशिप में हैवीवेट का खिताब जीता। जोहनसन को 30 वर्ष पश्चात् उसके जायज रजत पदक से सम्मानित किया गया। सर्वश्रेष्ठ मुक्केबाज का प्रतीक 'बालबार्कर कप' लाईट हैवीवेट वर्ग के विजेता

अमरीकी नार्वेल ली को दिया गया, जोकि हैवीवेट वर्ग में रिजर्व बाक्सर की हैसियत से हेलसिंकी आया था और जिसे अंतिम समय में 11 पौंड वजन कम करवाकर लाइट हैवीवेट वर्ग में उतार दिया गया था। इसी वर्ष से इस प्रतियोगिता में सेमीफाइनल में हारनेवाले दोनों मुक्केबाजों को कांस्य पदक दिया जाने लगा।

कुश्ती में रूस ने अनधिकृत रूप से दोनों वर्गों का टीम टाइटिल जीता। फ्री स्टाइल के बैंटमवेट वर्ग में स्वर्ण जीतनेवाला जापानी शोनाची ईशी वास्तव में जूडो का खिलाड़ी था, किंतु द्वितीय विश्वयुद्ध में अमरीका द्वारा जापान पर कब्जे के कारण जब इस खेल पर प्रतिबंध लगा दिया तो वह कुश्ती की ओर मुखातिब हुआ। इसी वर्ग में कांस्य जीतनेवाला भारतीय खासबा जादव भी था, जोकि व्यक्तिगत रूप से ओलंपिक खेलों में भारत की अब तक की एकमात्र सफलता है। ग्रीको-रोमन में वेल्टरवेट वर्ग में हंगरी के मिकलोज ज़िलवासी की जीत उल्लेखनीय रही। पुलिस सिपाही ज़िलवासी ने 1946 में धोखे से अपने ही बाएँ पैर पर गोली चला दी थी, जिससे उसका पैर लगभग निष्क्रिय हो गया था; किंतु लगातार मालिश करके उसने इस पैर को पुनः सक्रिय किया और 1948 के ओलंपिक खेलों में भाग लिया, जहाँ इसी वर्ग के फाइनल में वह स्वीडिश गोस्ता एंडरसन से हार गया। परंतु यहाँ हेलसिंकी में उसने अपना बदला चुका लिया।

भारोत्तोलन में अमरीकी और रूसी भारोत्तोलकों के बीच शीतयुद्ध हुआ और दोनों देशों ने सातों स्वर्ण (4 अमरीका, 3 रूस) बाँट लिए। लाइटवेट वर्ग में जापानी मूल के अमरीकी टामियो कोनो ने स्वर्ण पदक जीता और चार वर्ष बाद भी उसने इसे बरकरार रखा। बचपन में वह दमा से इतना पीड़ित था कि उसके माता-पिता ने जापानी तौर-तरीके से उसका इलाज कराया। मसलन, रीछ की किडनी, भुँजे हुए पक्षी एवं साँप के पाउडर को दवा के रूप में इस्तेमाल किया लेकिन वह स्वस्थ नहीं हो सका। तभी दूसरे विश्वयुद्ध के दौरान उसके परिवार को कैलिफोर्निया से हटाकर तुलेलेक डिटेंशन कैंप भेज दिया गया, जहाँ टामियो कोनो पहली बार भारोत्तोलन से परिचित हुआ। अपने वजन को तुरंत बदल लेने में माहिर कोनो ने 1955 एवं 1957 में 'शरीर सौष्ठव के श्रीमान विश्व' का भी खिताब जीता।

घुड़सवारी में स्वीडिश घुड़सवारों ने ड्रेसाज एवं थ्री-डे इवेंट में व्यक्तिगत तथा टीम खिताब जीता। थ्री-डे इवेंट की व्यक्तिगत स्पर्धा में जुबाल घोड़े पर बैठकर स्वर्ण जीतनेवाले हेंस वान ब्लैक्सिन फिनेक (जूनियर) के पिता ब्लैक्सिन फिनेक (सीनियर) ने भी 1912 में टीम ड्रेसाज में स्वर्ण पदक जीता था। इस बार घुड़सवारी के नियमों में काफी फेरबदल किया गया, जिसके आधार पर नॉन कमीशंड एवं महिला प्रतियोगी को इसमें भाग लेने की पात्रता हासिल हुई। ड्रेसाज में स्वीडन की उसी टीम ने जिसे 1948 में अयोग्य घोषित कर दिया गया था, स्वर्ण जीता और चार वर्ष बाद पुनः इस सफलता को

दोहराया। इसी मुकाबले में डेनमार्क की 31 वर्षीया महिला घुड़सवार लिस हार्टेल 'जुबली' नामक घोड़े के साथ भाग लेकर स्वीडिश हेनरी सेंट सीर (561 पाइंट) के बाद दूसरे स्थान पर (541.5 पाइंट) रही। चार वर्ष बाद वह (स्टाकहोम में) रजत जीतने में भी सफल रही। लिस हार्टेल के सबंध में उल्लेखनीय बात यह है कि आठ वर्ष पूर्व गर्भावस्था के दौरान वह पोलियो से पीड़ित हो गई थी। फिर भी उसने साहस नहीं छोड़ा और घुटनों के नीचे पूरी तरह निष्क्रिय होने के बावजूद प्रतियोगिता में भाग लिया। फिर जब पदक वितरण समारोह के दौरान स्वर्ण पदक विजेता सेंट सीर ने उसे विक्ट्री स्टैंड में खड़ा किया तो स्टेडियम में उपस्थित हजारों दर्शकों की आँखों में आँसू छलक आए। शो जंपिंग का मुकाबला 'अलीबाबा' नामक घोड़े के सवार फ्रांसीसी पियरे जांक्बेर डी ओयराला ने बिना किसी गलती के जीता, जो कि ओलंपिक में दूसरी बार हुआ था। 12 वर्ष बाद उसने पुनः इसी स्पर्धा में स्वर्ण पदक जीता।

रूसी दबदबे की महक

जिमनास्टिक में रूसी जिमनास्टों ने अपने दबदबे की शुरुआत की। पुरुष वर्ग में 29 देशों के बीच रूस आठ में से पाँच स्वर्ण जीतने में सफल रहा, जबकि महिलाओं में 18 देशों के बीच 7 में से 4। पुरुषों में विक्टर चुकारिन ने नयनाभिराम प्रदर्शन करके दर्शकों का मन मोह लिया। उसने 115.70 अंकों से न केवल व्यक्तिगत खिताब जीता, बल्कि टीम मुकाबले में भी अपने देश को पहला स्थान दिलवाया। इसके अलावा उसने पामेल हार्स (19.5 अंक), हार्स वाल्ट (19.2 अंक) में स्वर्ण जीता, जबकि रोमन रिंग्स एवं पैरेलल बार में रजत पदक पाया। चार वर्ष बाद 35 वर्ष की उम्र में मेलबोर्न में भी उसने अपनी सफलता का सिलसिला बरकरार रखा और व्यक्तिगत, टीम एवं पैरेलल बार में स्वर्ण, फ्लोर एक्सरसाइज में रजत तथा पामेल हार्स में कांस्य जीता। 9 नवंबर 1921 को मारिऊपोल (यूक्रेन) में जन्मे चुकारिन ने द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान चार वर्ष यातना-शिविर में बिताए थे। समीक्षकों का मत था कि यदि उनके जीवन के आरंभिक वर्ष यूँ ही न चले जाते तो उसका रिकार्ड इससे बेहतर होता। महिलाओं में पाँच उपकरणों की व्यक्तिगत स्पर्धाएँ पहली बार हुईं, जिसमें रूस की मारिया गोरोखोवस्कया ने सभी मुकाबलों में रजत पदक जीता, जबकि टीम एवं आलराउंड (व्यक्तिगत) में वह स्वर्ण पदक जीती।

तलवारबाजी के पुरुष फॉयल मुकाबले में एक अजीब संयोग देखने को मिला। प्रथम तीन स्थान पर आनेवाले तीनो प्रतियोगी वामहस्त थे। यहाँ स्वर्ण जीतनेवाले 23 वर्षीय कानून के छात्र फ्रांसीसी क्रिस्टियन डी ओरियाला ने मेलबोर्न में भी व्यक्तिगत स्वर्ण जीतकर नीडो नादी की सफलता को दोहराया। इसके अलावा डी ओरियाला ने

अपने तीन ओलंपिक-सफर में दो स्वर्ण (टीम मुकाबले) एवं 2 रजत भी जीते। इपी में इटली के मागियारोट्टी बंधु–एडुआर्डो एवं डारियो–पहले व दूसरे स्थान पर रहे। उनमें से छोटे 32 वर्षीय एडुआर्डो को उसके तलवारबाज पिता गुईसेप ने जानबूझकर वामहस्त बनाया था। एडुआर्डो ने पाँच ओलंपिक (1936-1960) में भाग लेकर कुल 13 पदक (6 स्वर्ण, 5 रजत एवं 2 कांस्य) जीते। तलवारबाजी में ये सबसे ज्यादा व्यक्तिगत पदक संख्या है। उसके अग्रज डोरिया ने भी एक स्वर्ण एवं दो रजत जीते। सेब्रे में हंगरी के 40 वर्षीय मोटर मैकेनिक पाल कोवक्स ने स्वर्ण जीता।

साईकलिंग में आस्ट्रेलियाई 22 वर्षीय खिलाड़ी रुसेल माकरिज ने पहले 1000 मी. टीम ट्रायल में स्वर्ण जीता। फिर उसने उसी दिन लियोनेल काक्स के साथ जोड़ी बनाकर 2000 मी. टेंडम में भी पहला स्थान पाया। निशानेबाजी में कनाडा का 17 वर्ष, 147 दिन आयुवाला जार्ज जेनेरुक्स ओलंपिक ट्रेपशूटिंग में स्वर्ण जीतकर इस खेल का सबसे युवा विजेता बना।

कैनोइंग में मेजबान देश ने 9 में से चार स्वर्ण जीतकर अपना दबदबा बनाया। महिलाओं की 500 मी. के– 1 मेजबान देश की सिल्वी सैमी ने जीती। उस समय उसकी उम्र 37 वर्ष, 259 दिन थी और वही इस खेल में महिलाओं की सबसे बुजुर्ग विजेता है। रोइंग की 'एट्स' प्रतियोगिता में पुनः अमरीकी नौसेना अकादमी की टीम विजेता रही। काक्सड पेयर्स में विजयी फ्रांसीसी दल का मार्गदर्शक बरनार्ड मेलीवायरे 14 वर्ष 94 दिन का था, जब वह इस आयोजन का सबसे युवा विजेता बना।

पति, पत्नी और साले की टीम

यार्टिंग के 5-5 मी. वर्ग में अमरीकी दल ने सफलता पाई, जिसमें सुमेर एवं ईगर व्हाइट नामक जुड़वाँ भाई भी शामिल थे। दूसरे स्थान पर आनेवाले नार्वे की टीम में पेडर लुंडे (सीनियर), उसकी पत्नी विवेक तथा उसका साला बोरे फाकम हेंसन भी था। पेडर के पिता इगेन ने 1924 में (6 मी. वर्ग) तथा पुत्र पेडर (जूनियर) ने 1960 में फ्लाइंग डचमैन वर्ग में स्वर्ण जीता। तीसरे स्थान पर आई स्वीडिश टीम में वासेन बंधु–फोल्क एवं मैग्नस शामिल थे। 6 मी. वर्ग में विजयी अमरीकी दल के एक सदस्य एवरार्ड एंड्ट की आयु 59 वर्ष 112 दिन थी, जोकि इस आयोजन का सबसे वरिष्ठ विजेता था।

टीम मुकाबले की हाकी में इस बार 12 टीमों ने हिस्सा लिया, लेकिन भारतीय प्रदर्शन पर इससे कोई आँच नहीं आई और उसने फाइनल में हालैंड को 6-1 से रौंदकर लगातार पाँचवीं बार स्वर्ण पदक जीता। भारतीय खिलाड़ियों ने पूरी प्रतियोगिता में 3 मैचों में 13 गोल दागे, जिसमें 9 गोल पंजाब पुलिस के इंस्पेक्टर बलबीर सिंह ने अकेले ही किए। फुटबाल में हंगरी ने यूगोस्लाविया को 2-0 से पीटकर पहली बार स्वर्ण पदक

जीता। 3 लाख 70 हजार से भी ज्यादा दर्शकों ने फुटबाल मैचों का आनंद लिया। बास्केटबाल में अमरीका लगातार तीसरी बार विजेता रहा। माडर्न पेंटाथलन में स्वीडन का 25 वर्षीय बढ़ई लार्स हाल चैंपियन हुआ। पहली बार शामिल टीम-स्पर्धा हंगरी के हिस्से में आई।

इस तरह ओलंपिक खेलों का यह 15वाँ पड़ाव तय हुआ, जिसकी सफलता के कारण कई समीक्षकों ने हेलसिंकी को ही ओलंपिक का स्थायी आयोजन-स्थल बनाने का सुझाव दिया। हालाँकि इस बार रूसी खिलाड़ियों के प्रवेश से उनमें और अमरीकी खिलाड़ियों के बीच मूक युद्ध छिड़ा रहा, जिसका प्रभाव आनेवाले आयोजनों में भी देखा गया। फिर भी सफलताओं की अपनी एक अलग ही मिसाल यहाँ कायम हुई। रूसी खिलाड़ियों ने खेलगाँव के सामने एक विशाल स्कोरबोर्ड लगाया और अनधिकृत रूप से अंकों के सहारे टीम की स्थिति बताने लगे। परंतु अंततः अमरीकी मुक्केबाजों द्वारा पाँच स्वर्ण जीत जाने से पिछड़ गए, फलस्वरूप उन्होंने उक्त बोर्ड भी वहाँ से हटा दिया।

पदक-तालिका—1952

देश	स्वर्ण	रजत	कांस्य
अमरीका	40	19	17
रूस	22	30	19
हंगरी	16	10	16
स्वीडन	12	12	10
इटली	8	9	4
चेकोस्लोवाकिया	7	3	3
फ्रांस	6	6	6
फिनलैंड	6	3	13
आस्ट्रेलिया	6	2	3
नार्वे	3	2	—
स्विट्जरलैंड	2	6	6
दक्षिण अफ्रीका	2	4	4
जमैका	2	3	—
बेल्जियम	2	2	1
डेनमार्क	2	1	3

तुर्की	2		1
जापान	1	6	2
ग्रेट ब्रिटेन	1	2	8
अर्जेंटाइना	1	2	2
पोलैंड	1	2	1
कनाडा	1	2	—
यूगोस्लाविया	1	2	—
रूमानिया	1	1	2
ब्राजील	1	—	2
न्यूजीलैंड	1	—	2
भारत	1	—	—
लक्समबर्ग	1	—	—
जर्मनी	—	7	17
नीदरलैंड	—	5	—
ईरान	—	3	4
चिली	—	2	—
आस्ट्रिया	—	1	1
लेबनान	—	1	1
आयरलैंड	—	1	—
मैक्सिको	—	1	—
स्पेन	—	1	—
कोरिया	—	—	2
ट्रिनीदाद एवं टोबैगो	—	—	2
उरुग्वे	—	—	2
मिस्र	—	—	1
पुर्तगाल	—	—	1
वेनेजुएला	—	—	1

सोलहवाँ ओलंपिक : 1956— मेलबोर्न

अब तक के पंद्रह ओलंपिक आयोजनों में उत्तरी गोलार्धवाले देशों की मेजबानी रही थी, जिनमें अमरीका एवं पश्चिमी योरोपीय देश प्रमुख हैं। लेकिन 16वें ओलंपिक का भार आई.ओ.सी. ने भूमध्यरेखा के नीचे स्थित आस्ट्रेलिया महाद्वीप के किसी शहर को सौंपने का फैसला किया। यह ओलंपिक-पितामह कुबरटिन की उन भावनाओं का भी आदर था, जिनके अनुसार इस खेलकुंभ का आयोजन वह विश्व के हर भाग में करवाना चाहता था, ताकि विश्वबंधुत्व एवं आपसी भाईचारे की भावना को बल मिले। परंतु इस प्रस्ताव का विरोध करनेवाले भी कम नहीं थे। उनका तर्क था कि आस्ट्रेलिया की दूरी और उत्तरी गोलार्ध के विपरीत पड़नेवाली जलवायु प्रतियोगियों के स्तर को प्रभावित कर सकती है। काफी वाद-विवाद के बाद 1949 में आई.ओ.सी. ने मात्र एक मत की अधिकता से मेलबोर्न को इस आयोजन की बागडोर सौंपी। इस फैसले से आस्ट्रेलिया काफी खुश हुआ। वैसे भी उसे ऐसे आयोजन का पूर्व अनुभव था। 1938 में हुए तीसरे राष्ट्रमंडलीय खेलों की मेजबानी उसने बखूबी निभाई थी। लेकिन मेलबोर्न को मेजबानी सौंपने के निर्णय के काफी दिनों बाद आई.ओ.सी. को उस वक्त जबरदस्त झटका लगा, जब आस्ट्रेलियाई आयोजन समिति ने अपने देश के कड़े संक्रमण रोग-कानून की वजह से घुड़सवारी की स्पर्धाएँ आयोजित करने में असमर्थता जाहिर की। तब आई.ओ.सी. को मजबूरन ओलंपिक-आदर्शों का उल्लंघन करते हुए घुड़सवारी की प्रतियोगिता स्टॉकहोम में आयोजित करानी पड़ी।

बहिष्कार की काली छाया

जैसे-जैसे समय नजदीक आता गया, यह आयोजन राजनीतिक उथल-पुथल का शिकार होता गया। स्थिति यहाँ तक पहुँच गई कि इस खेल-आयोजन पर बहिष्कार के काले बादल मँडराने लगे। मिस्र के नवनियुक्त राष्ट्रपति अली नासेर ने स्वेज नहर का राष्ट्रीयकरण कर दिया, फलस्वरूप ब्रिटेन की मदद से इज़राइल ने स्वेज नहर पर कब्जा कर लिया। ब्रिटेन की इस कार्यवाही पर मिस्र, ईराक एवं लेबनान उसे दंडित करने की माँग करते हुए खेल से अलग हो गए। उधर हंगरी में कम्युनिस्ट सरकार के खिलाफ विद्रोह हो जाने से रूस ने हंगरी में अपनी फौज भेज दी, जिसकी निंदा करते हुए नीदरलैंड, स्पेन एवं स्वीट्जरलैंड ने आई.ओ.सी. से कहा कि वह रूस के विरुद्ध कार्यवाही करे। परंतु आई.ओ.सी. के तत्कालीन अध्यक्ष ब्रुडैंज ने ओलंपिक-उद्देश्यों को स्पष्ट करते हुए कहा—"ओलंपिक व्यक्तियों की प्रतियोगिता है, राष्ट्रों की नहीं।" इस पर नीदरलैंड

एवं स्पेन भी इन खेलों से हट गए, जबकि स्विट्जरलैंड को अपनी जनता के जबरदस्त दबाव के कारण अंतिम समय में भाग लेना पड़ा। इसके तीन दिन बाद ही (9 नवंबर)कम्युनिस्ट चीन ने राष्ट्रवादी चीन (ताईवान) को ओलंपिक खेलों में प्रवेश देने के कारण खेलों का बहिष्कार कर दिया।

इन परिस्थितियों से निपटने के बाद भी आई.ओ.सी. की 'आकाश से गिरा, खजूर में अटका' जैसी स्थिति थी, क्योंकि निर्धारित समय तक हिडेलबर्ग में खेल गाँव का निर्माण पूरा नहीं हुआ था। इसकी वजह से एवेरी ब्रुडेंज को काफी दौड़ लगानी पड़ी फिर भी उदघाटन के पहले खेलगाँव अधूरा ही बन सका, जिससे ब्रुडेंज काफी खफा हुए, लेकिन आस्ट्रेलियाई जनता की जानदार मेहमाननवाजी ने उनका सारा गुस्सा काफूर कर दिया। और तो और, हंगरी के डरे एवं सहमे-सहमे प्रतियोगियों का भी मेलबोर्न के एसांडा एयरपोर्ट पहुँचने पर फूलों के गुलदस्ते से स्वागत किया गया और लोगों ने उनके साथ पूरी हमदर्दी जताई। हंगरी के असहाय खिलाड़ियों के लिए डच ओलंपिक एसोसियेशन ने 1 लाख गिल्डर (डच मुद्रा) तथा ब्रिटिश ओलंपिक समिति ने खाने-पीने एवं पहनने-ओढ़ने का इंतजाम किया। इस स्थिति में हंगरी के खिलाड़ी भावुक हो उठे और उन्होंने कम्युनिस्ट झंडा फाड़कर आजाद हंगरी का झंडा लहराया।

अंततः 22 नवंबर 1956 को कड़ी धूप में एक लाख से भी ज्यादा दर्शकों के बीच मेलबोर्न के विशाल क्रिकेट मैदान में ड्यूक ऑफ एडिनबरा ने इन खेलों का उद्घाटन किया। ज्योति-प्रज्वलन का कार्य युवा रान क्लार्क को सौंपा गया, जोकि एक मील दौड़ का जूनियर विश्व-चैंपियन था। किंतु प्रज्वलन के समय तेज हवा से भड़की लपटों में उसकी बाँहें जल गईं, जिससे वह खेल में भाग नहीं ले पाया। शपथ उठाने की जिम्मेदारी एक और युवा धावक जान लैंडी ने निभाई। इस बार 67 देशों के 384 महिला एवं 2958 पुरुष प्रतियोगी इन खेलों की शोभा बने। 1932 के बाद इन खेलों में पहली बार इतनी कम उपस्थिति देखी गई। इथोपिया, फिजी, कीनिया, साइबेरिया, मलेशिया, ताईवान एवं यूगांडा ने ओलंपिक खेलों में शिरकत करने का सिलसिला यहीं से आरंभ किया।

ट्रैक एंड फील्ड में अमरीकी धावकों को एक लंबे अंतराल के बाद आशातीत सफलता मिली और पुरुषों के 24 स्वर्ण में से 15 स्वर्ण उनके हाथ आए। इनमें सबसे उल्लेखनीय प्रदर्शन 21 वर्षीय बॉबी मारो का रहा, जिसने स्प्रिंट की दोनों स्पर्धाओं तथा 400 मी. रिले में स्वर्ण पदक जीता। 6 फुट 1½ इंच लंबा बॉबी जेसी ओवंस के बाद सपाट दौड़ में डबल बनानेवाला पहला धावक था। 800 मी. दौड़ में भी न्यूजर्सी के थामस कोर्टनी ने ओलंपिक रिकार्ड (1:47.7) बनाते हुए स्वर्ण जीता, परंतु कोर्टनी इस दौड़ के बाद इतना थक चुका था कि उसे डाक्टरी मदद देनी पड़ी। बाधा दौड़ों में अमरीकियों के जीतने की परंपरा बनी रही। 110 मी. में ली कैल्हन ने फिनिश लाइन पर अपना कंधा

आगे निकलकर विश्व-रिकार्डधारी जैक डेविस को पीछे छोड़ा। उसका समय रहा 13.5 सेकेंड, जो कि ओलंपिक रिकार्ड था। मजे की बात यहाँ यह रही कि कैल्हन को यह तरकीब दौड़ के पहले डेविस ने ही बताई थी। कैल्हन रोम ओलंपिक में भी इसी तरकीब के सहारे अपना स्वर्ण बचाने में सफल रहा था। बाधा दौड़ में वह लगातार दो स्वर्ण जीतनेवाला पहला खिलाड़ी बना। बाद में यही सम्मान उसी ओलंपिक में ग्लेन डेविस ने भी पाया।

इस बार कुछ अप्रत्याशित परिणाम एवं विजेता भी सामने आए। सबसे पहला उलट-फेर ट्रेक में 29 नवंबर को तब हुआ, जब 3000 मी. स्टीपल चेस में ब्रिटिश क्रिस्टोफर ब्रेशर ने नया ओलंपिक-रिकार्ड (8:41.2 सेकेंड) बनाते हुए यह दौड़ जीती। परंतु तेल कंपनी के एक अधिकारी 28 वर्षीय ब्रेशर को ज्यूरी ने नार्वे के धावक अर्नेस्ट लार्सेन को अड़चन पहुँचाने के आरोप में अयोग्य घोषित कर दिया। लार्सेन तीसरे स्थान पर था। इस पर ब्रेशर ने प्रोटेस्ट किया। दूसरे स्थान पर आनेवाले हंगेरियन सांदोर रोज़नियोल एवं लार्सेन ने भी ब्रेशर का समर्थन किया। तब कहीं तीन घंटे बाद ज्यूरी ने फैसला बदलते हुए उसे स्वर्ण दिया। इसी प्रतियोगिता के अंतिम दिन (1 दिसंबर) भी दो धमाके हुए। 1500 मीटर की दौड़ में अनेक दिग्गजों की उपस्थिति में कम विख्यात आयरिश धावक 21 वर्षीय रान डेलानी ने नया ओलंपिक-कीर्तिमान (8:41.2 सेकेंड) बनाते हुए जीता, जबकि मैराथन दौड़ का स्वर्ण अल्जीरिया में जन्मे, परंतु फ्रांस का प्रतिनिधित्व करनेवाले एलैन मिमून ओ राचा के हाथ आया। 35 वर्षीय मिमून की जिंदगी में वह पहली मैराथन दौड़ थी। 13 नंबर की जर्सी पहनकर दौड़नेवाले मिमून को दौड़ शुरू होने से पहले पिता बनने का सुखद समाचार मिला, जिसने उसके जोश को दुगना कर दिया। इसके पहले मिमून 1948 तथा 1952 के ओलंपिक में 5,000 मी. तथा 10,000 मी. की दौड़ में भी हिस्सा ले चुका था, लेकिन वह हर बार चेक एमिल जातोपेक के पीछे ही रहा, परंतु यहाँ एमिल पिछड़कर छठवें स्थान पर पहुँच गया।

ब्लादिमिर का जानवार डबल

परंतु इन खिलाड़ियों के प्रदर्शन की चर्चा नाटे कद के रूसी नौसैनिक अधिकारी ब्लादिमिर कुट्स के सामने उस समय फीकी पड़ गई, जब उसने लंबी दूरी की दौड़ में डबल बनाया। 7 फरवरी, 1927 को सुम्सकाया (यूक्रेन) प्रांत में जन्मे ब्लादिमिर ने रूसी नौसेना में भर्ती होने के बाद ही दौड़ को गंभीरता से लेना आरम्भ किया था। मेलबोर्न ओलंपिक के ठीक दो माह पहले उसने 10,000 मीटर में नया विश्व-कीर्तिमान बनाया था। यहाँ भी वह इस दौड़ में 'फेवरेट' समझा जा रहा था, परंतु ब्रिटिश गार्डन पिरी ने जोकि लंदन के एक बैंक में क्लर्क था, उसे कड़ी टक्कर दी। लेकिन गति बढ़ाने के प्रयास

में पिरी दौड़ के अंत में काफी थक गया और अंततः कुट्स ने ही ओलंपिक रिकार्ड खंडित करते हुए 28:45.6 सेकेंड से स्वर्ण जीता। पाँच दिन बाद 5000 मी. में कुट्स के मुकाबले पिरी पुनः उतरा, परंतु इस बार पिरी ने उसके पीछे दौड़कर रजत से ही संतोष कर लिया। इस प्रकार दौड़ में रूस को पहला स्वर्ण दिलानेवाला कुट्स लंबी दूरी में डबल हासिल कर काफी चर्चित हो गया। इसके बाद वह रूसी टीम का प्रशिक्षक बना, परंतु दिल का मरीज होने कारण ज्यादा सक्रिय नहीं हो पाया। 17 अगस्त, 1975 को चौथे हार्ट-अटैक से उसकी मृत्यु हो गई।

ट्रेक के साथ ही फील्ड इवेंट्स में भी अमरीकियों ने कामयाबियाँ हासिल कीं। ऊँची कूद में 19 वर्षीय अमरीकी चार्ल्स ड्यूमॉस ने 'लोकल फेवरेट' चार्ल्स पोर्टर से मात्र 0.5 इंच ज्यादा कूदकर स्वर्ण जीता। ड्यूमॉस को, जिसने कि इसके पहले अमरीकी ओलंपिक ट्रायल्स में 7 फुट ऊँचा नया विश्व-कीर्तिमान बनाया था, स्पर्धा के लिए अभ्यास करना कतई पसंद नहीं था। भाला फेंक में नार्वे के एजिल डेनियलसन ने जब नए विश्वरिकार्ड (85.71 मीटर) के साथ स्वर्ण जीता, तो वह सहसा विश्वास नहीं कर पाया। चक्का फेंक में वेस्ट बेबीलोन (न्यूयार्क) के 23 वर्षीय एल्फ्रेड ओर्टर ने पहले ही चक्र में 56.36 मी. दूर चक्का फेंककर पहला स्थान निश्चित कर लिया। बाद में स्वर्ण जीतना ओर्टर की आदत ही बन गई। इस ओलंपिक के बाद उसने अगले तीन ओलंपिक खेलों में भी यह स्पर्धा नए ओलंपिक रिकार्ड के साथ जीती। वह एथलेटिक्स के लगातार चार अधिकृत आयोजनों की एक ही स्पर्धा में स्वर्ण जीतनेवाला पहला एकमात्र खिलाड़ी है। डेकाथलन में भी 22 वर्षीय अमरीकी खिलाड़ी मिल्टन कैंपबैल सफल रहा।

खेलगाँव में प्रणय-लीला

हैमर थ्रो में ओलंपिक रिकार्ड (63.19 मी.) बनाकर स्वर्ण पदक जीतनेवाला अमरीकी हेराल्ड कोनोली इस आयोजन का सबसे चर्चित व्यक्तित्व रहा। चर्चा का प्रमुख कारण था, चक्का फेंक में स्वर्ण पदक जीतनेवाली चेकोस्लोवाकिया की एथलीट ओल्गा फिकातोवा पर फिदा हो जाना। उसकी यह प्रणय-लीला सिर्फ खेलगाँव में ही नहीं, शीघ्र ही पूरे शहर में आग की तरह फैल गई लेकिन कोनोली एवं ओल्गा इसकी परवाह किए बगैर आगे भी मिलते रहे और अपने प्रेम-संबंध को प्रगाढ़ करने में लगे रहे। अंततः अमरीकी एवं चेकोस्लोवाकिया के राष्ट्रपतियों के हस्तक्षेप से उनका यह प्रेम-बंधन 27 मार्च, 1957 को विवाह में तब्दील हो गया। इस अवसर पर जातोपेक दंपति ने सहायक की भूमिका निभाई। हेराल्ड ने बाद में तीन तथा ओल्गा ने चार ओलंपिक खेलों में हिस्सा लिया, परंतु इस बार जैसी सफलता वे नहीं दुहरा सके। 1975 में इनका तलाक भी हो गया और हेराल्ड ने अपने ओलंपिक साथी पैट डेनियल्स से विवाह रचाया।

महिला वर्ग में सिडनी की 18 वर्षीया धाविका बैटी कथबर्ट मात्र पाँच दिन में तीन स्वर्ण पदक जीतकर दर्शकों की नजरों में चढ़ गई। यही कथबर्ट जो ओलंपिक खेल देखने के लिए टिकट तक खरीद चुकी थी, मुश्किल से ही टीम में स्थान पाने में सफल रही थी। उसने 100 मी. (11.5 सेकेंड), 200 मी. (23.4 सेकेंड) तथा 400 मी. रिले में स्वर्ण जीता। आठ वर्ष पश्चात वह पुनः ओलंपिक (1964) में उतरी और 400 मी. में स्वर्ण पदक जीती। ऊँची कूद में अमरीकी मिल्ड्रेड मैकडेनियल ने 1.76 मी. ऊँचाई लाँघकर विश्वरिकार्ड बनाते हुए स्वर्ण जीता। लंबी कूद में पोलैंड की विश्व-रिकार्डधारी चिकित्सा विज्ञान की छात्रा एल्ज़बीता क्रेजेसिन्स्का ने अपने ही विश्व-रिकार्ड (6.35 मी.) की बराबरी करके सोने का तमगा जीता। गोला फेंक में 108 कि.ग्रा. शरीरवाली रूसी एथलीट तमारा तिशकोविच ने पिछले चैंपियन जाइबिना को पीछे छोड़कर 16.59 मी. से स्वर्ण जीता।

समुद्री घास का शौकीन रोज़

एथलेटिक्स में मिली असफलताओं को मेजबानों ने तरणताल में धो दिया। वैसे भी मेजबानों को इस स्पर्धा में अपने खिलाड़ियों से श्रेष्ठतम प्रदर्शन की आशा थी, जिसका प्रमाण साढ़े पाँच हजार की क्षमतावाला वह मिनी स्टेडियम रहा, जो कि स्पर्धा शुरू होने के 2 माह पहले ही पूरी तरह 'बुक' हो गया था। आस्ट्रेलियाई तैराकों ने अपने दर्शकों को निराश नहीं किया और पुरुष वर्ग में पाँच तथा महिला वर्ग में तीन स्वर्ण जीतकर वाहवाही लूटी। जान हेंड्रिक्स ने 55.4 सेकेंड (ओलंपिक रिकार्ड) से सबसे तेज तैराक का खिताब पाया। इस स्पर्धा में हैंड्रिक्स की यह तीन वर्षों में लगातार 56 वीं विजय थी। परंतु सबसे ज्यादा चर्चित 17 वर्षीय मरे रोज़ रहा, जिसने पाँच दिनों में 400 मी. फ्री स्टाइल (4:27.3 सेकेंड) एवं 1500 मी. फ्री स्टाइल (17:58.4 सेकेंड) का व्यक्तिगत स्वर्ण और 4×100 मी. रिले में विश्व कीर्तिमान (8:23.6 सेकेंड) बनाकर अपने देश को जिताने में अहम भूमिका निभाई। स्काटलैंड में जन्मे रोज़ का प्रिय आहार शाकाहारी भोजन एवं समुद्री घास से बनी जेली था। इसलिए 'द सीवीड स्ट्रीक' के नाम से मशहूर रोज़ की सफलता ने कई आस्ट्रेलियाई लोगों को अपने भोजन के बारे में दोबारा सोचने पर मजबूर कर दिया। चार साल बाद रोम में भी उसने 400 मी. की फ्री स्टाइल का खिताब जीता।

उधर महिलाओं में सिडनी की 19 वर्षीया 'जलपरी' डान फ्रेज़र ने तहलका मचाया। वह पहले 400 मी. फ्री स्टाइल में अपनी हमवतन 17 वर्षीया लारैन क्रेप के बाद दूसरे स्थान पर रही। परंतु सबसे तेज तैराक के लिए हुए मुकाबले में वह न केवल क्रेप को पीछे छोड़ गई, वरन विश्व कीर्तिमान (1:02.0) रचते हुए स्वर्ण पदक की भी हकदार हुई और

यह जीत अगले 15 सालों तक भी उसी के नाम रही। फिर पाँच दिन बाद 4×100 मी. की रिले में भी उसने अपने देश को स्वर्ण पदक दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 1960 एवं 1964 के ओलंपिक में भी वह 100 मी. की चैंपियन रही और तैराकी में एक ही स्पर्धा लगातार तीन बार जीतनेवाली पहली तैराक हुई। इन सफलताओं में 1964 की उसकी जीत काफी अर्थपूर्ण है, क्योंकि खेलों के आठ माह पूर्व ही वह एक कार-दुर्घटना में बुरी तरह घायल हो गई थी। कुल मिलाकर तीन ओलंपिक में चार स्वर्ण एवं चार रजत पदक जीतनेवाली फ्रेज़र बाद में अपने विचित्र व्यवहार के कारण भी खासी चर्चित रही। अन्य स्पर्धाओं में 100 मी. बटरफ्लाई में डच विश्व-रिकार्डधारी की अनुपस्थिति में नए ओलंपिक कीर्तिमान (1:11.0 सेकेंड) के साथ अमरीकी शैलीमेन ने स्वर्ण जीता। शैली बचपन में पोलियो की शिकार हो गई थी, तभी उसने अपने को तंदुरुस्त बनाने के उद्देश्य से तैराकी शुरू की थी।

गोताखोरी जजों के पक्षपातपूर्ण रवैये के कारण विवादास्पद रही। स्प्रिंग बोर्ड डाइविंग में अमरीकी राबर्ट क्लाबर्दी एवं डोनाल्ड हार्पर के बाद तीसरे स्थान पर आनेवाले मैक्सिन ज़ोकिन सेपिला पेरेज़ ने प्लेटफार्म डाइविंग में स्वर्ण पदक जीता। इस प्रकार सैपिला पेरेज़ जिसने कि इसी वर्ग में 1948 में कांस्य एवं 1952 में रजत जीता था, अमरीकी वर्चस्व को तोड़ने में सफल रहा। महिलाओं में अमरीकी पैट मेकोर्मिक के सामने अन्य गोताखोर फीके पड़े गए।

वाटरपोलो के पहले सेमीफाइनल में हाथापाई तक की नौबत आ गई जो कि हंगरी एवं रूस के बीच खेला गया था। रूसी सैनिकों के हंगरी में प्रवेश के कारण हंगेरियन दर्शक रूसी खिलाड़ियों की हूटिंग करने में तुल गए। अंततः पुलिस-हस्तक्षेप से ही मामला गंभीर होने से बच सका। हंगरी ने उक्त मुकाबला 4-0 से जीता और फिर फाइनल में उसने यूगोस्लाविया को परास्त कर स्वर्ण पर कब्ज़ा कर लिया।

जिमनास्टिक में रूसी करतबकारों ने पुरुषों एवं महिलाओं के व्यक्तिगत और टीम खिताब जीतकर हेलसिंकी की पुनरावृत्ति की। विक्टर चुकारिन ने यहाँ पुनः आलरांउड (व्यक्तिगत) का ताज जीता और इटली के अल्बर्टो बेगिला के कीर्तिमान की बराबरी की। महिलाओं में 35 वर्ष, 171 दिन की हंगारी खिलाड़ी एग्नेस कलेती अपने मनोहारी प्रदर्शन से दर्शकों में छा गई। वह बैलेंस बीम, फ्लोर एक्सरसाइज एवं अनईवन बार में स्वर्ण जीतने में सफल रही, परंतु हार्स वाल्ट में पैर फिसल जाने के कारण उसे व्यक्तिगत टाइटिल में रजत से ही संतोष करना पड़ा। वह अपने तीन ओलंपिक कैरियर (1948-1956) के दौरान कुल पाँच स्वर्ण, चार रजत एवं एक कांस्य पदक जीतने में सफल रही। ओलंपिक खेलों के बाद वह वापस हंगरी न जाकर कुछ समय आस्ट्रेलिया में रही और फिर इजराइल में बस गई। आज भी वह महिलाओं में जिमनास्टिक की सबसे बुजुर्ग

चैंपियन है। कलेती को कड़ी चुनौती देनेवाली सोवियत संघ की 21 वर्षीया लारीसा लतिनीना थी, जो अगले दो और ओलंपिक में पदक जीतकर एक नया कीर्तिमान बनाने में सफल रही। खेरसन (यूक्रेन प्रांत) में जन्मी लतिनीना ने यहाँ व्यक्तिगत, हार्सवाल्ट एवं फ्लोर एक्सरसाइज में स्वर्ण जीता। चार वर्ष पश्चात रोम ओलंपिक में वह पुनः व्यक्तिगत एवं फ्लोर एक्सरसाइज में स्वर्ण जीत सकी। 1964 में भी वह लगातार तीसरी बार फ्लोर एक्सरसाइज में स्वर्ण जीतने में सफल रही। अपने तीन ओलंपिक कैरियर में उसने कुल 18 पदक (9 स्वर्ण, 5 रजत एवं 4 कांस्य) जीते, जोकि एक प्रतियोगी द्वारा ओलंपिक खेलों में सबसे ज्यादा पदक जीतने का कीर्तिमान है।

ओउलेट्ट का दुर्भाग्य

निशानेबाजी में भी रूसियों ने 28 देशों के बीच सात में से तीन मुकाबले जीतकर अपनी मौजूदगी का आभास कराया। किंतु सबसे अधिक उल्लेखनीय घटना कनाडा के गेराल्ड ओउलेट्ट के साथ घटी। स्मालबोर प्रोन राइफल में उसने सभी निशाने सही लगाकर पूरे 600 अंक अर्जित करके चमत्कारी विश्व-रिकार्ड बनाया, परंतु उसे विश्व-रिकार्ड के सम्मान से महरूम कर दिया गया, क्योंकि आस्ट्रेलियाई अधिकारियों ने गलती से टारगेट दूरी ठीक 50 मीटर की बजाय 48.5 मीटर रख दी थी। साईकिलिंग में सफलता इतालवी (तीन स्वर्ण) एवं फ्रांसिसी (दो स्वर्ण) साईकिलिस्टों ने बाँटी लेकिन तलवारबाजी में इतालवी तलवारबाजों ने फ्रांसिसियों को पीछे छोड़ दिया और सात में से तीन स्वर्ण जीते। सैब्रे में हंगरी के तलवारबाजों का वर्चस्व बना रहा, जबकि महिलाओं की फॉयल स्पर्धा लंदन की 28 वर्षीया डेंटल सर्जन गिलियन शीन ने जीती।

मुक्केबाजी के मुकाबले, जोकि वेस्ट मेलबार्न स्टेडियम में संपन्न हुए थे, ज्यादा रोमांचक एवं संघर्षपूर्ण नहीं हुए। रूसी मुक्केबाजों ने तीन मुकाबले जीतकर अपनी उभरती शक्ति का एहसास कराया। स्टाइलिश बाक्सर की 'वाल बार्कर ट्राफी' लाइटवेट वर्ग के विजेता ब्रिटिश डिक मैकटिग्गार्ट ने पाई। हंगरी के वामहस्त मुक्केबाज लाज़लो पाप द्वारा लगातार तीसरा स्वर्ण जीतना भी उल्लेखनीय रहा।

प्रवेश का अनोखा तरीका

भारोत्तोलन में पिछले ओलंपिक की भाँति अमरीकी एवं रूसी भारोत्तोलकों के मध्य ही संघर्ष नजर आया। अमरीका ने चार एवं सोवियत संघ ने शेष तीन वर्गों में अपनी कामयाबी दर्ज कराई। बैंटमवेट वर्ग (57 कि. ग्रा.) के विजेता अमरीकी चार्ल्स विंसी को मुकाबले के पहले काफी पापड़ बेलने पड़े। प्रतियोगिता के पूर्व उसका भार 36 पौंड ज्यादा था। एक घंटे की लंबी भाग-दौड़ एवं पसीना बहाने के बावजूद उसका भार

निर्धारित वजन से सात औंस फिर भी ज्यादा रहा तब उसने नई तरकीब लड़ाई और अपने सारे बाल कटाकर प्रतियोगिता में प्रवेश पा लिया। 4 फुट, 10 इंच कद का विसी अगले ओलंपिक में भी इसी वर्ग में पुनः जीता। सबसे बलशाली पुरुष का ताज अमरीकी पाल एंडरसन को तकदीर से ही मिला। उसने एवं पिछले ओलंपिक में कांस्य जीतनेवाले अर्जेंटाइनी ने 500 कि. ग्रा. का बराबर भार उठाया, परंतु शारीरिक वजन में कम होने की वजह से पाल को स्वर्ण का हकदार माना गया।

कुश्ती में ग्रीको-रोमन शैली में रूसी अखाड़ेबाजों ने पाँच स्वर्ण जीतकर अपना दबदबा बनाया। फीदरवेट वर्ग (61 कि.ग्रा.) में जीतनेवाला था फिनलैंड का रॉउनो माकीनेन, जिसका पिता कार्लो भी ठीक 28 वर्ष पूर्व फ्री स्टाइल की बैंटमवेट वर्ग में जीता था। फ्री स्टाइल शैली में तुर्की को अनधिकृत टीम चैंपियनशिप मिली। मिडिलवेट वर्ग (79 कि.ग्रा.) का स्वर्ण जीतनेवाला निकोला स्टानचेव ओलंपिक खेलों में बुल्गारिया का पहला स्वर्ण पदक विजेता खिलाड़ी हुआ।

टीम-स्पर्धा में भारत ने बलबीरसिंह के नेतृत्व में लगातार छठवीं बार हाकी का स्वर्ण पदक जीता। फाइनल में उसने फुलबैक रंधीर सिंह जैंटल के द्वारा दागे गए एकमात्र गोल से पाकिस्तान को परास्त किया। फुटबाल में भी भारत का प्रदर्शन सराहनीय रहा। बुल्गारिया से 3-0 से परास्त होकर वह चौथे स्थान पर रहा। यहाँ सोवियत संघ ने अनातोली ईल्युन के एकमात्र गोल के सहारे यूगोस्लाविया को हराकर स्वर्ण जीता। बास्केटबाल में अमरीका ने लगातार चौथी बार स्वर्ण पदक जीता। माडर्न पेंटाथलन में पिछला चैंपियन स्वीडिश लार्स हाल अपना खिताब बचाने में सफल रहा, जबकि इसकी टीम-स्पर्धा सोवियत संघ के हिस्से में आई।

रोइंग एवं केनोइंग के मुकाबले मेलबोर्न से 70 कि. मी. दूर वेंडोंरी झील में संपन्न हुए। रोइंग में अमरीकियों के हिस्से तीन तथा रूसियों के हिस्से दो स्वर्ण पदक आए। स्कल्स सिंगल्स 18 वर्षीय रूसी खिलाड़ी वियाचेस्लाव इवानोव ने जीता। इवानोव अपनी जीत पर इतना रोमांचित था कि जब उसे स्वर्ण पदक दिया गया तो मारे खुशी के उसने वह पदक हवा में उछाल दिया, जो कि झील में जा गिरा। खेल समाप्ति के बाद आई.ओ.सी. ने उसे उस पदक का अनुकृति पदक भेंट किया। इवानोव अगले दो ओलंपिक में भी इस स्पर्धा का चैंपियन बना। एट्स में अमरीकियों ने लगातार आठवीं बार स्वर्ण पदक जीता। केनोइंग में सोवियत संघ ने तीन स्वर्ण पदक जीतकर टीम चैंपियनशिप जीती, परंतु सराहनीय प्रदर्शन स्वीडिश गर्ड फ्रेडरिक्सन एवं रूमानियाई लियोन रोतमेन का रहा। रोतमेन कनाडियन शैली की 1,000 मी. एवं 10.000 मी. की एकल दौड़ जीतने में सफल रहा।

घुड़सवारी की प्रतियोगिता 10 जून से 17 जून के बीच स्वीडन की राजधानी

स्टाकहोम में संपन्न हुई जिसमें मेजबान टीम ने छः में से तीन मुकाबले जीते। ड्रेसाज़ में अपने हेलसिंकी खिताब का बखूबी बचाव करनेवाले हेनरी सेंटमीर की उम्र उस समय 54 वर्ष, 93 दिन थी और वही इस आयोजन का सबसे वरिष्ठ विजेता था।

इस तरह रूसी एवं अमरीकी खिलाड़ियों के बीच खेल प्रतिद्वंद्विता के माहौल में सोलहवाँ ओलंपिक आयोजन अपने समापन की सीढ़ी पर पहुँचा। लेकिन आयोजन की सबसे बड़ी उपलब्धि प्रतियोगिताओं के दौरान नहीं, वरन समापन के समय नजर आई, जब कि एक 17 वर्षीय ताईवानी खिलाड़ी के अनुरोध पर मार्चपास्ट करनेवाले सभी खिलाड़ी अपने-अपने देश का क्रम तोड़ते हुए एक-दूसरे देश के खिलाड़ियों के साथ मिलकर मस्ती के साथ सलामी-मंच से गुजरे। यह दृश्य ओलंपिक-भावना 'मैत्री एवं बंधुता' को दर्शा रहा था। निःसंदेह ओलंपिक खेलों के पितामह कुबरटिन ने ओलंपिक आयोजन के वक्त ऐसी ही स्थिति की कल्पना की थी। लेकिन अफसोस, इन शानदार पलों को देखने के लिए कुबरटिन मौजूद नहीं था। आयोजन की एक और उपलब्धि आई.ओ.सी. द्वारा पूर्वी एवं पश्चिमी जर्मनी की अलग-अलग टीमों को संयुक्त रूप से मान्यता प्रदान करना भी रहा। अगले दो आयोजनों में भी जर्मनी की संयुक्त टीम ही नजर आई। इस आयोजन में अमरीका के 593 अंकों की तुलना में सोवियत संघ 135 अंक आगे था, परंतु अंकों की इस गणना से खिलाड़ियों के बीच पनपती प्रतिद्वंद्विता के कारण आई.ओ.सी. ने इस पर प्रतिबंध लगा दिया।

पदक-तालिका—1956

देश	स्वर्ण	रजत	कांस्य
अमरीका	37	29	32
रूस	32	25	17
आस्ट्रेलिया	13	8	14
हंगरी	9	10	7
इटली	8	8	9
स्वीडन	8	5	6
जर्मनी	6	13	7
ग्रेट ब्रिटेन	6	7	11
रूमानिया	5	3	5

जापान	4	10	5
फ्रांस	4	4	6
तुर्की	3	2	2
फिनलैंड	3	1	11
ईरान	2	2	1
कनाडा	2	1	3
न्यूजीलैंड	2	—	—
पोलैंड	1	4	4
चेकोस्लोवाकिया	1	4	1
बुल्गारिया	1	3	1
डेनमार्क	1	2	1
आयरलैंड	1	1	3
नार्वे	1	—	2
मैक्सिको	1	—	1
ब्राजील	1	—	—
भारत	1	—	—
यूगोस्लाविया	—	3	—
चिली	—	2	2
बेल्जियम	—	2	—
अर्जेंटाइना	—	1	1
कोरिया	—	1	1
आइसलैंड	—	1	—
पाकिस्तान	—	1	—
दक्षिण अफ्रीका	—	—	4
आस्ट्रिया	—	—	2
स्विट्ज़रलैंड	—	—	1
उरुग्वे	—	—	1
बहामा	—	—	1
ग्रीस	—	—	1

सत्रहवाँ ओलंपिक : 1960–रोम

ओलंपिक खेलों से रोम का सरोकार कोई दो हजार साल पुराना है। प्राचीन ओलंपिक खेलों के जमाने से ही रोम इन खेलों को प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से बराबर अपना विशिष्ट सहयोग देता आ रहा है। इतना ही नहीं, प्राचीन ओलंपिक की कई कड़ियाँ रोमन शासकों ने जोड़ी थीं। हालाँकि उन्हीं शासकों में एक थियोडोसिस प्रथम भी था, जिसने 193 ए.डी. में ओलंपिक की बरसों से चली आ रही परंपरा को समाप्त करवा दिया था। लिहाजा शायद रोमवासी आधुनिक ओलंपिक का आयोजन कर थियोडोसिस के पाप को धोना चाहते थे। यों उन्हें 1908 के पाँचवें आयोजन की जिम्मेदारी मिली थी, परंतु वित्तीय संकट के कारण उन्हें हाथ खींच लेना पड़ा था। 1956 में आई.ओ.सी. ने सत्रहवें आयोजन की बागडोर पुनः रोम को सौंपी और इस बार रोमवासियों ने अपनी जिम्मेदारी से मुँह नहीं मोड़ा।

इस आयोजन को भव्य एवं यादगार बनाने के लिए रोमवासियों ने कोई कसर नहीं छोड़ी। इतालवी ओलंपिक समिति के वास्तुकार पियरे लुईजी नेखी ने इस 'शाश्वत नगरी' (इटर्नल सिटी) के प्राचीन वैभव एवं स्मृति-स्थलों का आधुनिक खेल-क्रीड़ांगनों के साथ ऐसा समन्वय किया कि अनेक दर्शक एवं खिलाड़ी प्रतियोगिता की बजाय इस शहर की सुंदरता में ही खो गए। शहर को सजाया ही नहीं गया, बल्कि कई स्टेडियमों का नवनिर्माण तथा पुनर्निर्माण भी किया गया। एक लाख दर्शकों की क्षमतावाला मुख्य स्टेडियम बनाया गया। कुश्ती के लिए प्राचीन माक्ज़े तिअस के बासिलिका को चुना गया, जबकि जिमनास्टिक के लिए टर्मी डी कैराचल्वा के प्राचीन स्नानागारों के मनमोहक खंडहरों को। मुख्य स्टेडियम के पास ही तरुणताल, बास्केटबाल एवं मुक्केबाजी के लिए 'बिग स्पोर्ट्स पैलेस', साईकिलिंग के लिए लकड़ी का 'वेलोड्रोम' तथा तलवारबाजी के लिए 'कांग्रेसेज' का निर्माण किया गया। हाकी के लिए 'मारबल स्टेडियम', फुटबाल के लिए 'फेमिनो स्टेडियम' तथा भारोत्तोलन के लिए 'लिटिल स्पोर्ट्स पैलेस' भी बनाया गया। टाइबर नदी के तट पर बना 'फोरो इटैलिको', जोकि इटली के तानाशाह मुसोलिनी की देन थी, ओलंपिक के विख्यात विजेताओं की विशाल प्रतिमाओं का संग्रहालय था।

इसी भव्य पृष्ठभूमि में 25 अगस्त, 1960 को इतालवी राष्ट्रपति, गियोवानीग्रांचो ने इन खेलों का उद्घाटन किया। 19 वर्षीय इतालवी धावक गियानकार्लो पेरील ने ओलंपिया से टार्च रिले द्वारा लाई गई पावन ज्योति को स्टेडियम के विशाल कुंड में समाहित किया। इसी क्षण रोम के लगभग सारे गिरजाघरों के घंटे बजने लगे। इसके

बाद ओलंपिक झंडे का ध्वजारोहण हुआ और अनुभवसंपन्न इतालवी खिलाड़ी अडोल्फो कांसोलिनी ने, जिसने 1948 में चक्का फेंक में स्वर्ण जीता था, सभी खिलाड़ियों की ओर से ओलंपिक शपथ ग्रहण की। इस बार रिकार्ड 83 देशों के रिकार्ड 5348 प्रतियोगियों ने इसमें हिस्सेदारी की, जिसमें रिकार्ड 610 महिला खिलाड़ी भी थीं। नए प्रतियोगी देश के रूप में मोरक्को, सानमारियो, सूडान एवं ट्यूनीशिया ने कदम रखा।

एथलेटिक्स फीका-फीका

इस बार एथलेटिक्स का पुरुष वर्ग काफी फीका रहा। एक भी ऐसा प्रतियोगी नहीं मिला जिसने डबल किया हो। फिर भी गर्म मौसम में मुकाबले काफी रोचक एवं संघर्षपूर्ण रहे, जिसका प्रमाण 110 मी. बाधा दौड़, 5000 मी. दौड़, 20 कि.मी. पैदल चालन एवं जेवलिन थ्रो को छोड़कर शेष सभी प्रतियोगिताओं में नए ओलंपिक रिकार्ड्स का बनना है। महिलाओं की सभी 10 स्पर्धाओं में नए ओलंपिक रिकार्ड्स बने। स्प्रिंट में अमरीकी धावकों की मात इस बार विशेष चर्चा का विषय बनी। सबसे तेज धावक का खिताब (1928 के बाद) पहली बार गैर अमरीकी धावक फ्रेंकफोर्ट (जर्मनी) के आर्मीन हैरी ने पाया। उसने 100 मी. दौड़ मात्र 10 सेकेंड में तय की। ओलंपिक दौड़ में जर्मनी के लिए पहला स्वर्ण जुटानेवाले हैरी का कैरियर इस ओलंपिक के थोड़े समय बाद ही खत्म हो गया, जब एक कार-दुर्घटना में उसका घुटना बुरी तरह टूट गया। 200 मी. में 'लोकल हीरो' लिवियो बेरुट्टी ने सेमीफाइनल एवं फाइनल में विश्व-कीर्तिमान (20.5 सेकेंड) की बराबरी करते हुए स्वर्ण जीता। हमेशा काला चश्मा पहननेवाले बेरुट्टी की जीत पर लगभग पाँच मिनट तक स्टेडियम में उपस्थित 80,000 दर्शक बे-रु-ट्टी, बे-रु-ट्टी का शोर मचाते रहे। बेरुट्टी उन दिनों पाडुआ विश्वविद्यालय में रसायनशास्त्र का विद्यार्थी था।

किंतु इन दो प्रतियोगिताओं के बीच (2 सितंबर को) दो अप्रत्याशित नतीजे भी आए। 800 मी. की दौड़ में फेवरेट रोजर मोएंस (बेल्जियम) एवं जार्ज केर (जमैका) को न्यूजीलैंड के 21 वर्षीय धावक के सामने मात खानी पड़ी। इतना ही नहीं, उस युवक ने यह दौड़ नया ओलंपिक-रिकार्ड समय (1:46.3 सेकेंड) बनाकर जीती। सबसे बाहरी लेन में दौड़नेवाला वह धावक पीटर स्नैल था, जिसने चार वर्ष पश्चात टोकियो में 800 मी. एवं 1500 मी. की दौड़ जीतकर तहलका मचाया। अलबत्ता यहाँ स्नैल की विजय ने उसके साथी धावक 27 वर्षीय मुरे हेल्बर्ग के लिए टानिक का काम किया। पेशे से शिक्षक हेल्बर्ग मात्र आधे घंटे बाद ही 5000 मी. की दौड़ जीत गया। हेल्बर्ग जब 17 वर्ष का था, तो एक रग्बी मैच में बुरी तरह जख्मी हो गया था। उसका बायाँ कंधा खिसक गया था और बाएँ हाथ की नसें एवं पसली बुरी तरह कुचल गई थीं। दो बड़े आपरेशनों

के बाद उसने धीरे-धीरे अपनी दिनचर्या नियमित बनाई। 1956 के मेलबोर्न ओलंपिक में उसने 1500 मी. में भाग लिया, परंतु 11वें स्थान पर रहा। 1961 में उसने एक मील, दो मील और चार मील की दौड़ों में नया विश्व-रिकार्ड बनाया।

1500 मी. दौड़ में 22 वर्षीय आस्ट्रेलियाई हरबर्ट उलियट ने अपने विश्व-रिकार्ड (3:35.6 सेकेंड) को खंडित करते हुए लगभग 20 गज के फासले से स्वर्ण जीता। इसी दिन (6 सितंबर) 400 मी. दौड़ में एक अनजान खिलाड़ी 28 वर्षीय अश्वेत अमरीकी ओटिस डेविस ने 44.9 सेकेंड के साथ नया विश्व-रिकार्ड बनाते हुए गोल्ड मैडल जीता। हालाँकि दूसरे स्थान पर आनेवाले जर्मन कार्ल काफमेन का समय भी 44.9 सेकेंड था, परंतु फोटो फिनिश के आधार पर डेविस को विजेता घोषित किया गया। भारत के मिल्खा सिंह दक्षिण अफ्रीकी मेलस्पेंसर (45.5 सेकेंड) से मात्र 0.1 सेकेंड से पिछड़कर चौथे स्थान पर खिसक गए।

अभ्यास का अजीब तरीका

मैराथन दौड़ इस बार अपने आप में बेमिसाल साबित हुई। पहली बार दौड़ दोपहर की बजाय शाम को आयोजित की गई और पहली ही बार दौड़ का आरंभ एवं समापन मुख्य स्टेडियम में नहीं हुआ। ठीक शाम साढ़े पाँच बजे कैंपीडोग्लियों चौराहे से आरंभ हुई यह दौड़ रोम की सुंदरता को समेटे कास्टेंटाइन के ऐतिहासिक द्वार पर समाप्त हुई। ठिगने कद का 28 वर्षीय इथोपियाई महल रक्षक अबेबे बिकिला विजेता बना, जिसने 42.195 कि.मी. की यह दूरी नंगे पैर दौड़कर तय की थी। बिकिला ने चार वर्ष बाद टोकियो में पुनः यह दौड़ जीतकर एक नया ओलंपिक-रिकार्ड बनाया। 1968 में उसने पुनः इसमें भाग लिया, परंतु पैर की हड्डी टूट जाने के कारण इस बार उसे 17 कि.मी. के बाद अलग होना पड़ा। फिर अगले वर्ष वह एक कार-दुर्घटना में बुरी तरह घायल हो गया; जिससे कमर के नीचे का भाग निष्क्रिय हो गया और फिर 25 अक्टूबर, 1973 को मस्तिष्कघात से उसकी मृत्यु हो गई। एथलेटिक्स की सबसे लंबी दौड़-कूद स्पर्धा (50 कि.मी. पैदल चालन) ब्रिटेन के आग बीमा कंपनी-क्लर्क डोनाल्ड थांपसन ने जीती और उसमें ओलंपिक-रिकार्ड (4:25:30.0) बनाया। लगभग साढ़े पाँच फुट ऊँचा थांपसन स्वयं को रोम की गर्मी सहने योग्य बनाने के लिए अभ्यास के समय बाथरूम में बंद हो जाता था और हीटर तथा गर्म पानी से अपने शरीर का तापक्रम बढ़ा लेता था। इसमें दूसरा स्थान पानेवाला स्वीडिश खिलाड़ी दो दिन बाद 41 वर्ष का होनेवाला था। इस खिलाड़ी ने 1948 में भी इसी स्पर्धा में स्वर्ण जीता था।

फील्ड इवेंट में कई सनसनीखेज परिणाम आए। ऊँची कूद में विश्व-रिकार्डधारी 6 फुट, 5 इंच ऊँचा जान थामस मात्र कांस्य पदक ही जुटा पाया, जबकि पहले तीनों स्थानों

के प्रति अमरीकी खिलाड़ी पूरी तरह आश्वस्त थे। एथलीट राबर्ट शावलाकेउज़े एवं वलेरी ब्रुमेल को क्रमशः पहला और दूसरा स्थान मिला। हैमर थ्रो में अमरीकी विश्व-रिकार्डधारी हेराल्ड कोनोली का प्रदर्शन चोट की वजह से निराशाजनक रहा। इसमें 67.10 मी. दूर हैमर फेंककर रूसी वेसिली रूडेनकोव ने स्वर्ण पाया। इसके अलावा कुछ स्पर्धाओं में विश्व-रिकार्डधारी खिलाड़ी अपना खिताब बचाने में सफल रहे। जेसी ओवंस के 25 साल पुराने रिकार्ड को तोड़कर अपना नाम लिखनेवाला राल्फ बोस्टन लंबी कूद में अव्वल रहा। इसी तरह पोलवाल्ट में डोनाल्ड ब्रेग ने, जो 'टार्जन' के नाम से भी प्रसिद्ध था, 4.70 मी. की ऊँचाई नापकर अपनी श्रेष्ठता बनाए रखी। गोला फेंक में विलियम नीडर को अंतिम समय में घायल डेव डेविस की जगह टीम में शामिल किया गया और उसने इस चयन को सही साबित करते हुए अपने देश के लिए स्वर्ण जुटाया। त्रिकूद में पोलिश जोज़फ शिमडूट ने पहली बार 17 मी. की दूरी नापी। डेकाथलन की कठिन प्रतियोगिता पिछले ओलंपिक के रजत पदक विजेता रेफर जानसन ने ताईवान के अपने अजीज दोस्त चुआन-क्वांग येंग को हराकर जीती। जानसन बाद में अभिनेता एवं टेलीविजन में खेल-उद्घोषक भी रहा।

विल्मा की हैट्रिक

महिला वर्ग में रूस ने 10 में से 6 स्पर्धाएँ जीतकर अपनी कामयाबी लिखी। रूस की कामयाबी में यहूदी प्रेस बहनों ने न केवल जानदार योगदान दिया, बल्कि अपने प्रदर्शन से वाह-वाही भी लूटी। छोटी बहन ईरीना ने जहाँ 80 मी. हर्डल्स के सेमीफाइनल में ही 10.6 सेकेंड का समय देकर ओलंपिक-कीर्तिमान बनाया तथा बाद में स्वर्ण पदक भी जीता, वहीं बड़ी बहन तमारा ने दो दिन बाद 2 सितंबर को चक्काफेंक में 17.32 मी. दूर चक्का फेंककर स्वर्ण पदक अर्जित किया। इसके अलावा वह गोलाफेंक में भी रजत पदक जीतने में कामयाब रही। चार वर्ष बाद तमारा ने अपनी दोनों प्रतियोगिताओं में तथा ईरीना ने नए खेल पेंटाथलन में स्वर्ण पाया। लेकिन ये दोनों प्रेस बहनें अंतर्राष्ट्रीय खेल-क्षितिज से उस समय गायब हो गईं जब 'सेक्स परीक्षण' प्रारंभ किया गया। इन दोनों बहनों पर 'मैंस आर्गंस' का संदेह था, परंतु यह सिद्ध नहीं हो सका। अलबत्ता प्रतियोगिता के पूर्व वे अपने शरीर में 'मेल सेक्स हारमोंस' अवश्य प्रचुर मात्रा में ग्रहण करती थीं। 1928 के बाद 800 मी. की दौड़ पुनः आयोजित की गई जिसमें रूसी लुडमिया शेवत्सोवा ने अपने विश्व-रिकार्ड-समय 2:04.3 सेकेंड की बराबरी करते जीती।

लेकिन इन रूसी खिलाड़ियों से भी कहीं बढ़कर प्रदर्शन एक दुबली-पतली पाँच फुट ग्यारह इंच लंबी अश्वेत विल्मा रूडोल्फ ने किया। इस अमरीकी खिलाड़ी को उसकी

ख्याति ने कई उपनाम भी दिए, जैसे इतावली दर्शक उसे 'ब्लैक पर्ल' (काला मोती) कहते थे, तो फ्रांसिसियों के लिए वह 'ला गाजेब' (चपल हिरणी) थी। 23 जून, 1940 को टेनीज़ में जन्मी विल्मा अपने माता-पिता की 22 संतानों में से 20वीं थी। बचपन में पीलिया, डबल निमोनिया एवं लाल बुखार-जैसी घातक बीमारियों की शिकार विल्मा का स्वास्थ्य धीरे-धीरे सुधरता गया। 16 वर्ष की उम्र तक वह एक धाविका के रूप में विख्यात हो चुकी थी और 1956 के ओलंपिक खेलों में भी उसने हिस्सा लिया। 200 मी. के हीट्स में यद्यपि वह पहले ही दौर में आउट हो गई, लेकिन रिले (4×100 मी.) में अपने देश को कांस्य पदक दिलाने में वह जरूर सफल रही। लेकिन यहाँ, रोम में तो उसका जलवा ही कुछ और था। 100 मी. की 'डेश' मात्र 11 सेकेंड में तय करके वह अव्वल रही, लेकिन हवा की गति (2 मीटर प्रति सेकेंड) से भी अधिक तेज़ होने के कारण उसके इस विश्व-कीर्तिमान को तरजीह नहीं दी गई। तीन दिन बाद 200 मी. में भी वह अव्वल रही, जबकि अगले तीन दिन बाद उसने पुनः स्वर्ण पदक जीता। यह स्वर्ण पदक उसने 4×100 मी. रिले में अंतिम 'एंकरलेग' में रहकर अपने देश के लिए जुटाया। किंतु उसी देश में उसका जीना उस समय दूभर हो गया, जब उसने काले लोगों के प्रदर्शन में भाग लिया। इसी से उसके पति पर कार-चोरी का इल्जाम लगाया गया। अपने पति को बरी कराने के लिए उसे अपने तीनों स्वर्ण पदक एवं अन्य कप गिरवी रखने पड़े। इतना ही नहीं, उसे शहर छोड़कर जाने का आदेश भी दिया गया। इसी दौरान एक कार-दुर्घटना में वह बुरी तरह कुचल गई और उसकी मृत्यु हो गई।

ऊँची कूद में रूमानिया की आईलैंडा बालास ने 1.85 मी. की ऊँचाई नापकर बड़ी आसानी से स्वर्ण पदक पाया। बालास अपने साढ़े दस साल के खेल-जीवन में 140 बार इस मुकाबले में अव्वल रही, जिसमें टोकियो ओलंपिक का स्वर्ण भी शामिल है।

अमरीकी तैराकों ने पिछले ओलंपिक की असफलता को मानो तरणताल में धो डाला। इस बार उसके पुरुषों ने चार एवं महिलाओं ने पाँच स्वर्णिम सफलताएँ हासिल कीं। पिछली बार पुरुष वर्ग में धमाका करनेवाला आस्ट्रेलिया इस बार चार स्वर्ण ही जुटा पाया। उसके 18 वर्षीय तैराक जान कानराड ने अनुभवी मुरे रोज़ को 1500 मी. फ्री स्टाइल में पीछे छोडकर 17:19.6 सेकेंड से स्वर्ण पदक जीता। कानराड बचपन में पीलिया का शिकार रहा था। बाद में उसकी बहन एल्सा ने 4×100 मी. रिले में स्वर्ण जीता। 100 मी. बैक स्ट्रोक में 'कंगारू' डेविडथीले ने जिसने मेलबोर्न में यह स्पर्धा जीतने के बाद अपनी मेडिकल पढ़ाई के लिए तैराकी छोड़ दी थी, पुनः ओलंपिक रिकार्ड समय 1:01.9 सेकेंड से कामयाबी अर्जित की परंतु आस्ट्रेलियाई जान डेविट को सबसे तेज धावक का खिताब दिए जाने पर काफी हंगामा हुआ। डेविट एवं अमरीकी लांस लार्सेन ने बराबर समय (52.2 सेकेंड, ओलंपिक रिकार्ड) में यह दूरी तय की थी, और

फोटो फिनिश में भी पाया गया कि लार्सेन ने यह दूरी 52.1 सेकेंड में तय की है, फिर भी अधिकारीगण अपने निर्णय पर अड़े रहे। तब लार्सेन मानवीय गलती को अपनी नियति समझकर रजत से ही संतुष्ट हो गया। अमरीकियों ने 4×200 मी. फ्री स्टाइल रिले के साथ-साथ पहली बार शामिल 4 × 100 मी. मिडले रिले में भी विश्व-रिकार्ड बनाते हुए पहला स्थान पाया, जिसमें चार भिन्न विधाओं—बैकस्ट्रोक, ब्रीस्ट.स्ट्रोक, बटरफ्लाई एवं फ्री स्टाइल से दूरी तय की जाती है।

कमसिन बालाओं की कामयाबी

डान फ्रेजर को छोड़कर सभी महिला स्पर्धाओं में कमसिन लड़कियों का दबदबा रहा। 16 वर्षीया अमरीकी क्रिस बान सालत्ज़ा ने 400 मी. फ्री स्टाइल में, 17 वर्षीया लिन बुर्क ने 100 मी. ब्रैक स्ट्रोक में, 17 वर्षीया मैरोलीन शुलर ने 100 मी. बटरफ्लाई में और 19 वर्षीया ब्रिटिश अनिता लांसब्रो ने 200 मी. ब्रीस्ट स्ट्रोक में स्वर्ण पदक जीते। बान सालत्ज़ा बाद में 400 मी. फ्री स्टाइल रिले एवं 400 मी. मिडले रिले में भी स्वर्ण जीतने में सफल रही, जबकि बुर्क 400 मी. मिडले रिले में। 4×100 मी. फ्री स्टाइल रिले की विजयी टीम की एक सदस्या केरोलीन वुड़ (मात्र 14 वर्ष, 260 दिन आयु की) इस ओलंपिक की सबसे युवा विजेता थी।

गोताखोरी में ड्रेस्डेन (जर्मनी) की 17 वर्षीया तरुणी इनग्रिड क्रेमर ने दोनों स्पर्धाएँ जीत लीं। चार वर्ष बाद टोकियो में वह पुनः ये दोनों स्पर्धाएँ जीतनेवाली प्रबल उम्मीदवार थी, परंतु हार्डबोर्ड डाइविंग में 17 वर्षीया अमरीकी लेसली बुश से पिछड़ गई। फलस्वरूप उसे रजत से ही संतुष्ट होना पड़ा, जिससे वह पैट मैकोर्मिक के कीर्तिमान को नहीं छू पाई। यहाँ दोनों ही स्पर्धाओं में अमरीकी पाउला जीन पो क्रेमर के पीछे रही। 25 वर्षीया पाउला उस समय दो बच्चों की माँ थी। पुरुष वर्ग में स्प्रिंग बोर्ड में अमरीकी खिलाड़ी गैरी तोबीयन ने स्वर्ण तथा हार्डबोर्ड में रजत जीता। हार्डबोर्ड में स्वर्ण जीतनेवाले राबर्ट वेबस्टर ने चार साल बाद टोकियो में यह स्पर्धा पुनः जीती। वाटरपोलो में मेजबान इटली ने हंगरी को स्वर्ण के 'हैट्रिक' से महरूम किया।

मुक्केबाजी के दस स्वर्ण पदकों के लिए 34 देशों के मुक्केबाज आए। 5 सितंबर (फाइनल मुकाबले का दिन) को पूरा स्पोर्ट्स कांपलेक्स इतालवी दर्शकों से भरा हुआ था, क्योंकि दस में से छः वर्गों में उसके मुक्केबाज थे। अपने दर्शकों से भरपूर समर्थन के बावजूद तीन इतावली मुक्केबाज हार गए, परंतु दर्शकों को इस बात का संतोष रहा कि तीन स्वर्ण, तीन रजत एवं एक कांस्य जीतकर अनधिकृत टीम टाइटिल उनके देश को ही मिला। वेल्टरवेट वर्ग (67 कि.ग्रा.) का विजेता गियोवन्नी बेनवेनूती आगे चलकर पेशेवर बन गया और 1967 में उसने विश्व मिडिलवेट चैंपियनशिप जीती। सुपर

हैवीवेट में स्वर्ण जीतनेवाला लंबा-चौड़ा, तगड़ा वामहस्त खिलाड़ी फ्रैंको डी पिकोली रहा। अमरीका ने भी तीन स्वर्ण जीतकर अपनी उपस्थिति का अहसास कराया। इन्हीं में से एक लाइट हैवीवेट वर्ग (81 कि.ग्रा.) का विजेता अश्वेत कैसियस क्ले था, जो बाद में पेशेवर बन गया और 21 फरवरी, 1964 के दिन सानी लिस्टन को एक मिनट से भी कम समय में चित कर सबसे कम उम्र का विश्वविजेता बन बैठा। अपने इस विश्व हैवीवेट खिताब को उसने अगले सात सालों तक बरकरार रखा लेकिन 8 मार्च, 1971 को जो फेजियर के साथ हुए शताब्दी के सबसे रोमांचक मुकाबले में वह अंकों के आधार पर परास्त हुआ। ओलंपिक खेलों के बाद उसने अपना नाम बदलकर मोहम्मद अली रख लिया था। वह कविता-प्रेमी था तथा स्वयं भी कविताएँ लिखता था। उसने तीन बार शादी रचाई और कई फिल्मों में अभिनय किया। उसका शुमार अपने समय के सबसे महँगे खिलाड़ी के रूप में होता था।

कुश्ती के अखाड़े में तुर्की के पहलवानों की धाक रही। तुर्क पहलवानों ने फ्री स्टाइल में चार तथा ग्रीको-रोमन के दो वर्गों में सफलताएँ जुटाईं। बावजूद इसके सर्वाधिक उल्लेखनीय प्रदर्शन जर्मनी के पहलवान विल्फ्रीड डिट्रिच का रहा, जिसने पहले ग्रीको-रोमन के सुपर हैवीवेट वर्ग में पिछले ओलंपिक की भाँति रजत पदक जीता। पाँच दिन बाद फ्री स्टाइल के सुपर हैवीवेट वर्ग के अखाड़े में वह फिर नजर आया और पिछली बार के चैंपियन तुर्क हैमित कापलन को पछाड़ते हुए स्वर्ण जीत लिया। भारोत्तोलन में सोवियत संघ के भारोत्तोलकों ने लाजवाब प्रदर्शन करके सात में से पाँच स्पर्धाओं का स्वर्ण जीत लिया।

साईकिलिंग में मेजबान देश के साईकिलिस्टों ने 6 में से पाँच स्वर्ण पदक जीते। इसमें साढ़े पाँच फुट कद के सांते गैयराडोनी ने 1000 मी. स्प्रिंट और 1000 मी. टीम ट्रायल में जीतकर अकेले ही दो स्वर्ण जुटाए। परंतु यह प्रतियोगिता दुर्घटनापूर्ण रही। 175 कि.मी. रोडरेस के दौरान एक डेनिश साइकिल चालक वुड जेंसन गिर पड़ा जिससे उसकी मृत्यु हो गई। बाद में यह पता चला कि जेंसन ने दौड़ से पूर्व एक उत्तेजक दवा का सेवन किया था, बाकी कसर 93 डिग्री तक पहुँची असहय गर्मी ने पूरी कर दी। यह दौड़ रूसी चालक विक्टर कापितनोव ने इतालवी लिवियो ट्रेप से इंच मात्र के फासले से जीती।

जापानी शक्ति का उदय

जिमनास्टिक में जापान ने पुरुषों का खिताब जीतकर आनेवाले वर्षों के लिए सोवियत संघ को आगाह कर दिया। व्यक्तिगत खिताब के लिए भी जापानी तकाशी ओनो ने विजेता रूसी बोरिस शाखलीन को कड़ी टक्कर दी। वह मात्र 0.5 अंक से यह खिताब खो बैठा। ओनो को जिसे ओलंपिक में जापान का पहला जिमनास्टिक स्वर्ण

जीतने का श्रेय है, अपने चार ओलंपिक कैरियर (1952-1964) में पाँच स्वर्ण, चार रजत एवं चार कांस्य पदक जीतने का श्रेय प्राप्त है। उसी के साथी मसाओ ताकेमोतो ने जब टीम खिताब के साथ स्वर्ण जीता तो वह अपने 41वें जन्मदिन से 21 दिन दूर था। उसे अब जिमनास्टिक के सबसे वरिष्ठ स्वर्ण विजेता के रूप में जाना जाता है। यूक्रेन प्रांत के ईशीन गाँव के निवासी शाखलिन ने न केवल व्यक्तिगत खिताब जीता, वरन पैरेलल बार, साईड हार्स एवं हार्स वाल्ट में भी पहला स्थान बनाया। अपने तीन ओलंपिक सफर (1956-1964) में शाखलिन ने कुल 13 पदक (सात स्वर्ण, तीन रजत एवं तीन कांस्य) जमा किए। महिलाओं का टीम खिताब रूस ने पाया।

फैंसिंग में रूसी तलवारबाजों ने फायल एवं व्यक्तिगत खिताब जीतकर सनसनी फैलाई। 1908 के बाद से यह पहला मौका था, जब इस स्पर्धा को फ्रांस या इटली नहीं जीत पाए। व्यक्तिगत मुकाबले का ताज पहननेवाला लेनिनग्राद का 22 वर्षीय विक्टर झडनोविच था, जिसे पत्रकारों ने 'विक्टर द विक्टर' कहा। सैब्रे के दोनों खिताब पुनः हंगरी के पक्ष में गए। विजयी दल के एलाडार गेरेविच की उम्र, जिसका यह लगातार छठा टीम गोल्ड मैडल था, 50 वर्ष 178 दिन थी और वह इस आयोजन का सबसे बुजुर्ग चैंपियन था। महिलाओं में फायल का खिताब जर्मनी की 21 वर्षीया संगीत शिक्षिका वामहस्त हीडी श्मिड ने जीता, जबकि पहली बार शामिल टीम खिताब पर रूसियों ने कब्जा जमाया।

घुड़सवारी में भी सोवियत संघ ने स्वर्ण पदक का खाता खोला। ड्रेसाज़ की स्पर्धा में उसके सर्गेई फिलातोव ने 'एब्सेंट' नामक घोड़े पर बैठकर पहला स्थान पाया। शो जंपिंग के व्यक्तिगत मुकाबले में इतालवी डी इनजियो बंधु रेमंडो एवं पियरे ने पहला-दूसरा स्थान बनाया। छोटे भाई रेमंडों ने तो 1948 से लेकर 1976 तक लगातार आठ ओलंपिक खेलों में शिरकत की और कुल छः पदक (1 स्वर्ण, 2 रजत एवं 3 कांस्य) जीते, जबकि अग्रज पियरो ने अपने पाँच ओलंपिक (1956 से 1972 तक) कैरियर में 2 रजत एवं 4 कांस्य पदक अपने नाम लिखे। थ्री डे इवेंट में आस्ट्रेलियाई घुड़सवारों ने बाजी मारी। माडर्न पेंटाथलन में व्यक्तिगत एवं टीम दोनों ही खिताब हंगरी ने जीते। निशानेबाजी के छः स्वर्ण पाँच देशों के बीच बटे।

रोइंग एवं केनोइंग के मुकाबले खूबसूरत अल्बनो झील में संपन्न हुए। जर्मनी ने तीन मुकाबलों में सफलता पाई, जिसमें 'एट्स' की कामयाबी भी शामिल है। 'एट्स' में उसके मल्लाहों ने नई तकनीक ईजाद कर अमरीकियों की लगातार आठ विजयों के सिलसिले को तोड़ा। चप्पू नौकायन में रूस की एंटोनिना सेरेडिना ने कयाक-500 के सिंगल एवं पेयर्स दोनों में स्वर्ण जीता। नेप्लस की खाड़ी में संपन्न पाल नौकायन की पाँचों स्पर्धाएँ अलग-अलग देशों ने जीतीं। ड्रेगन क्लास में यूनानी दल ने स्वर्ण जीता,

जिसका नेतृत्व 20 वर्षीय राजकुमार कोस्टांटाइन कर रहे थे। इस जीत के बाद उनकी माता सम्राज्ञी फ्रेडरिका ने उसे गले लगाया और फिर यांटिंग की परंपरानुसार उसे पानी में ढकेल दिया।

फुटबाल के टीम मुकाबलों में इस बार पिछले तीन ओलंपिक के उपविजेता यूगोस्लाविया ने स्वर्ण जीतने में सफलता पाई। फाइनल में उसने अपने कप्तान मिलान गेलिक के आधे से भी ज्यादा समय मैच से बाहर रहने के बावजूद डेनमार्क को 3-1 से हराया। बास्केटबाल में अमरीकी टीम के सामने अन्य देश बेबस नजर आए। परंतु हाकी में 32 वर्षों की भारतीय बादशाहत खत्म हो गई। ओलंपिक खेलों में हाकी से ही अपनी पहचान कायम करनेवाले भारत को उसके पड़ोसी देश पाकिस्तान ने 1-0 से शिकस्त देकर स्वर्ण पदक झटक लिया।

अंत में अत्यंत भव्य एवं आकर्षक समापन के साथ सत्रहवाँ ओलंपियाड संपन्न हुआ। लेकिन यूनानी एवं लेटिन गीतों से गुंजरित ओलंपिक स्टेडियम उस समय एकाएक शांत हो गया, जब स्टेडियम की रोशनी चली गई। तब स्टेडियम में उपस्थित एक लाख से भी ज्यादा दर्शकों ने अखबारों को मशाल की तरह जलाकर स्टेडियम को पुनः प्रकाशमान कर दिया और फिर सारे दर्शकों की निगाहें उस विशाल स्कोर बोर्ड पर जा टिकीं, जिसमें इतालवी भाषा में लिखा था—'आरिवेदेरची, टोकियो 1964' अर्थात 'अब सभी को टोकियो ओलंपिक का इंतजार है।'

पदक-तालिका—1960

देश	स्वर्ण	रजत	कांस्य
अमरीका	43	29	31
रूस	34	21	16
इटली	13	10	13
जर्मनी	12	19	11
आस्ट्रेलिया	8	8	6
तुर्की	7	2	—
हंगरी	6	8	7
जापान	4	7	7
पोलैंड	4	6	11

चेकोस्लोवाकिया	3	2	3
रूमानिया	3	1	6
ग्रेट ब्रिटेन	2	6	12
डेनमार्क	2	3	1
न्यूजीलैंड	2	—	1
बुल्गारिया	1	3	3
स्वीडन	1	2	3
फिनलैंड	1	1	3
आस्ट्रिया	1	1	—
यूगोस्लाविया	1	1	—
पाकिस्तान	1	—	1
इथोपिया	1	—	—
ग्रीस	1	—	—
नार्वे	1	—	—
स्विट्जरलैंड	—	3	3
फ्रांस	—	2	3
बेल्जियम	—	2	2
ईरान	—	1	3
हालैंड	—	1	2
दक्षिण अफ्रीका	—	1	2
अर्जेंटीना	—	1	1
मिस्र	—	1	1
कनाडा	—	1	—
घाना	—	1	—
भारत	—	1	—
मोरक्को	—	1	—
पुर्तगाल	—	1	—
सिंगापुर	—	1	—
ताईवान	—	1	—
ब्राजील	—	—	2
जमैका	—	—	2
ईराक	—	—	1

मैक्सिको	—	—	1
स्पेन	—	—	1
वेनेजुएला	—	—	1

अठारहवाँ ओलंपिक : 1964—टोकियो

एशिया में ओलंपिक पड़ाव का श्रेय जापानियों को जाता है। हालाँकि यह सम्मान उन्हें 1940 में ही प्राप्त हो जाता, यदि बारहवाँ आयोजन दूसरे विश्वयुद्ध के गाल में न समाया होता। मगर दूसरी बार आयोजन के लिए उन्हें रोम की तरह ज्यादा लंबा इंतजार नहीं करना पड़ा। 1959 में आई.ओ.सी. ने अठारहवें ओलंपियाड के लिए डेट्रायट, विखेना एवं ब्रूसेल्स के मुकाबले टोकियो को प्राथमिकता दी। पर उस समय लोगों के मन में यह शक भी था कि क्या परमाणु बम की विभीषिका सहनेवाला यह छोटा-सा देश ओलंपिक-जैसे बड़े आयोजन का संचालन कर सकेगा ?

परंतु लोगों की ये तमाम धारणाएँ उस समय निर्मूल सिद्ध हो गईं जब जापानियों ने इस खेलकुंभ का इतना सहज एव शानदार आयोजन किया कि देखनेवाले देखते ही रह गए! आयोजकों, अधिकारियों, खिलाड़ियों एवं दर्शकों के आपसी तालमेल का इतना बढ़िया नजारा इससे पहले और किसी भी ओलंपियाड में देखने को नहीं मिला था। इस खेल की सफलता से उद्वेलित होकर एक समीक्षक ने इसे 'हैप्पी गेम्स' तक की संज्ञा दे डाली।

मगर खेल आरंभ होने के पूर्व आई.ओ.सी. में इंडोनेशिया एवं उत्तरी कोरिया को लेकर जो उलझन पैदा हुई थी, वह यहाँ भी प्रतिबिंबित हो रही थी। आई.ओ.सी. ने इंडोनेशिया को चौथे एशियाई खेलों में जोकि 1962 में राजधानी जकार्ता में संपन्न हुए थे, ताईवान एवं इजरायल को न बुलाने के कारण निलंबित कर दिया। इस पर इंडोनेशिया ने 1963 में 'गेम्स आफ न्यू इमरजिंग फोर्स' आयोजित किया, जिसमें उसने कम्युनिस्ट चीन को भी आमंत्रित किया जो कि आई.ओ.सी. का सदस्य नहीं था आई.ओ.सी. ने तत्काल यह घोषणा की कि इसमें भाग लेनेवाले एथलीटों को टोकियो ओलंपिक में प्रतिबंधित कर दिया जाएगा। इसके बावजूद इंडोनेशिया एवं उत्तरी कोरिया इस ओलंपिक में भाग लेने टोकियो पहुँच गए, लेकिन आई.ओ.सी. भी अपने निर्णय पर अड़ा रहा, फलस्वरूप इंडोनेशिया एवं उत्तरी कोरिया को वापस लौटना

पड़ा। इसके अलावा इसी ओलंपिक से दक्षिण अफ्रीका के लिए ओलंपिक के द्वार बंद हो गए, जिसे 1963 में आई.ओ.सी. ने उसकी रंगभेद नीति के कारण अंतर्राष्ट्रीय खेलों से अलग कर दिया था।

इस क्षणिक विवादपूर्ण स्थिति के बावजूद इस बार भाग लेनेवाले देशों का उत्साह देखते ही बनता था। कुल 93 राष्ट्रों के 4457 पुरुष एवं 683 महिला प्रतियोगी इसकी शोभा बने। 14 नए मुल्क अल्जीरिया, कांगो, चाड, केमरून, मेडागास्कर, नाइजीरिया, सेनेगल, तंजानिया, जाँबिया (उत्तरी रोडेशिया), नेपाल, मंगोलिया, माली, आइवरी कोस्टा तथा डोमिनियन रिपब्लिक ने ओलंपिक में पहली बार कदम रखा। इस बार मुकाबलों की भी संख्या बढ़कर 163 हो गई। जापान का राष्ट्रीय खेल जूडो एवं वालीबाल पहली बार ओलंपिक में शामिल किए गए। 10 अक्टूबर को जापानी नरेश हिरोहितो ने इन खेलों का उद्घाटन किया। इसके बाद एक दुबले-पतले युवक योशीनारो सकई ने 23,000 कि.मी. दूर ओलंपिया से प्रज्वलित ज्योति को एक ऊँचे ज्योति कुंड में समाहित किया। सकई का जन्म उसी दिन हुआ था जिस दिन अमरीका ने हिरोशिमा पर एटम बम गिराया था। इसके बाद जिमनास्ट ताकाशी ओनो ने सभी खिलाड़ियों की ओर से ओलंपिक खेलों की मर्यादा बनाए रखने की शपथ ग्रहण की। इस अवसर पर छोड़े गए करीब 10,000 श्वेत कपोतों से स्टेडियम के ऊपर का आकाश ढँक गया।

आशानुरूप परिणाम

एथलेटिक्स में अमरीकी पुरुषों ने 24 में से आधे स्वर्ण पदक जीतकर रोम में मिली अपनी असफलता को धोया। इस दरम्यान उनके एथलीटों ने कुछ अप्रत्याशित जीत भी दर्ज की। इन्हीं में से एक साउथ डेकोटा का सियूक्स इंडियन धावक बिली मिल्स भी था, जिसे उसकी टीम के भी कई सदस्य नहीं जानते थे। 14 अक्टूबर को वह 29 धावकों के साथ 10,000 मी. दौड़ में भागा। उस समय नेशनल स्टेडियम के 80 हजार से भी ज्यादा दर्शकों की नजरें आस्ट्रेलियाई रान क्लार्क पर टिकी हुई थीं, जोकि इस दौड़ एवं 6 मील दौड़ का विश्वरिकार्डधारी था। अंतिम चक्र तक क्लार्क ने बराबर अपनी बढ़त बनाए रखी, मगर उसके बाद मिल्स, क्लार्क के साथ हो गया। तभी ट्यूनीशिया के महमूद गम्मूदी ने एकाएक अपनी गति बढ़ा दी और उन दोनों से आगे हो गया। यह देखकर क्लार्क ने भी जोर लगाया और गम्मूदी की बराबरी पर आ गया। अब जबकि 'टेप' मात्र तीस गज दूर था, तो मिल्स ने अपनी पूरी शक्ति बटोरकर अपनी रफ्तार तेज की और गम्मूदी से मात्र 0.4 सेकेंड पहले टेप छूने में सफल हो गया। उसने ओलंपिक रिकार्ड (28:24.4) बनाते हुए स्वर्ण पदक जीता। इस जीत ने उसे गुमनामी से निकालकर

एकाएक दुनिया का चहेता बना दिया। यह स्वाभाविक ही था, क्योंकि 68 साल लंबे ओलंपिक इतिहास में उसने 10,000 मी. दौड़ में पहली बार अपने देश को जिताया था। चार दिन बाद उसकी ही जीत से प्रेरणा पाकर उसके देशवासी राबर्ट शुल ने वर्षा से भीगे दौड़ पथ पर फेवरेट रान क्लार्क एवं माइकल जेजी (फ्रांस) को पीछे छोड़ते हुए 13:48.8 सेकेंड से स्वर्ण पदक जीत लिया।

स्प्रिंग मुकाबलों में अपेक्षित परिणाम ही सामने आए। 22 वर्षीय अश्वेत बान हेयंस ने विश्व-रिकार्ड (10.0 सेकेंड) की बराबरी करते हुए सबसे तेज धावक का खिताब जीता। हेयंस ने पहले सेमीफाइनल में यह फासला मात्र 9.9 सेकेंड में नापा था, परंतु हवा की गति ज्यादा अनुकूल होने के कारण इसे विश्व-रिकार्ड नहीं माना गया। पाँच दिन बाद 400 मी. रिले में उसने अपने देश को एक और स्वर्ण दिलाया। बाद में वह पेशेवर फुटबालर हो गया। 200 मीटर में विश्व-रिकार्डधारी हेनरी कार ने ओलंपिक-रिकार्ड भंग करते हुए 20.3 सेकेंड से स्वर्ण जीता। 400 मी. में भी पूर्वानुमान सही साबित हुआ और लासएंजिल्स के एक गणित शिक्षक 30 वर्षीय माइकल लाराबी ने 045.1 सेकेंड से यह दौड़ जीती। हर्डल्स में भी हेयंस जोंस (110 मी., समय 13.6 सेकेंड) तथा रेक्स काउली (400 मी., 49.6 सेकेंड) की कामयाबी आशानुरूप रही।

कीवी पीटरस्नेल द्वारा मध्यम दूरी की दौड़ों में डबल बनाना एवं इथोपियाई अबेबे बिकिला द्वारा पुनः मैराथन दौड़ जीतना महत्त्वपूर्ण रहा। इसके अलावा बेल्जियन गास्टन रोलेंट्स का 3000 मी. स्टीपल चेस में स्वर्ण पाना भी चर्चा का विषय रहा। 20 कि.मी. पैदल चालन में ब्रिटेन के 30 वर्षीय इलेक्ट्रिशियन केन मैथ्यूस ने ओलंपिक रिकार्ड (1 : 29 : 34.0) स्थापित करते हुए पहला स्थान पाया। मैथ्यूस अपनी पत्नी को भी टोकियो लाया था। डेकाथलन में इस बार अमरीकियों का पतन हो गया। जर्मनी के 24 वर्षीय विली होलडोर्फ ने रूसी रीन आन को मात देकर स्वर्ण पर कब्जा जमाया।

प्रक्षेपण स्पर्धाओं में फिन्निश पाली नेवाला ने बरसते हुए मौसम के बावजूद 82.66 मीटर दूर भाला फेंककर पहला स्थान पाया। उल्लेखनीय है कि नेवाला के चयन पर काफी नुक्ताचीनी हुई थी। अगले दिन अमरीकी अर्ल ओर्टर ने जबरदस्त दर्द एवं तकलीफ के बावजूद चक्काफेंक के पाचवें चक्र में नया ओलंपिक रिकार्ड (61.00 मी.) बनाते हुए स्वर्ण पदक जीता। गोलाफेंक में दो अमरीकियों के बीच द्वंद्वपूर्ण नजारा देखने को मिला, जिसमें 6 फुट, 4 इंच ऊँचे एवं 260 पौंड के दंत चिकित्सक डालास लांग ने बाजी मारी। उसने 240 पौंड वजनी एवं 6 फुट 6½ इंच के 19 वर्षीय टैक्सन रैंडी मैटन के 20.20 मीटर के मुकाबले 0.13 मीटर (5 इंच) ज्यादा दूरी पर गोला फेंका था।

स्वर्ण विजेता की दुर्गति

रूसी विश्व-रिकार्डधारी 22 वर्षीय वलेरी निकोलायन्चि क्रमेल ऊँची कूद जीतने के जबरदस्त तनाव के बावजूद 2.18 मी. छलाँग लगाकर स्वर्ण जीतने में सफल रहा। परंतु एक वर्ष बाद एक मोटर साइकिल दुर्घटना में उसके दाएँ पैर की हड्डी टूट गई। इससे उसके प्रदर्शन पर भी असर पड़ा और उसके प्रशंसकों, मित्रों, यहाँ तक कि उसकी पत्नी ने भी उससे मुँह मोड़ लिया। तब उसने अपना सारा ध्यान पढ़ाई की ओर लगाकर खेल-मनोविज्ञान में दक्षता हासिल की और वैज्ञानिकों पर पुस्तकें छापने का काम करने लगा। पोलवाल्ट में फाइबर ग्लास की बल्ली का उपयोग करते हुए 9 प्रतियोगियों ने पिछला ओलंपिक-रिकार्ड तोड़ा। इनमें विजेता रहा अमरीकी फ्रेडरिक हानसेन, जिसने अंतिम कूद में 5.10 मीटर की ऊँचाई लाँघकर ओलंपिक-रिकार्ड बनाते हुए अमरीकियों की अपराजेयता का कीर्तिमान बरकरार रखा। त्रिकूद में पोलिश जोज़ेफ शिमड ने ओर्टर की तरह दर्द से कराहते हुए छलाँग लगाई और न केवल अपने पिछले ओलंपिक खिताब को बरकरार रखा बल्कि 16.85 मी. से नया ओलंपिक रिकार्ड भी बनाया। परंतु लंबी कूद में पिछला विजेता राल्फ बास्टन वेल्सवासी लिन डेविस से मात्र 0.04 मीटर से पिछड़ गया। 1908 के बाद से फील्ड इवेंट में ब्रिटेन का यह पहला स्वर्ण पदक था। इसके अलावा पुरुषों के मुकाबलों में अफ्रीकी खिलाड़ियों का प्रदर्शन उल्लेखनीय रहा, जिससे आनेवाले दिनों में लोगों को उनकी शक्ति का अहसास हो गया।

महिलाओं में जार्जिया प्रदेश (अमरीका) की 19 वर्षीया धाविका वियोमिया टायस ने सबसे तीव्र धाविका का सम्मान पाया। प्रारंभिक दौर में इस धाविका ने विल्म रुडोल्फ के 10.2 सेकेंड की बराबरी की थी। चार वर्ष बाद मैक्सिको में विश्व-रिकार्ड (11.00 सेकेंड) स्थापित करते हुए उसने पुनः यह खिताब जीता और यह गौरव दुहरानेवाली वह पहली एथलीट बनी। 800 मीटर में ब्रिटेन की ऐन पेकर ने, जोकि 400 मी. में आस्ट्रेलियाई बैटी कथबर्ट के बाद दूसरे स्थान पर थी, ओलंपिक कीर्तिमान (2 : 01.1 सेकेंड) बनाकर स्वर्ण पाया। पेकर ने बाद में 1600 मी. रिले में रजत पानेवाले एक सदस्य रोबी ब्राइटवैल से विवाह रचाया। 400 मी. रिले में पोलिश टीम की ईवा कलोबुकोवस्का ने अंतिम चरण में दौड़कर विश्व-रिकार्ड बनाते हुए अपने देश को 43.6 सेकेंड से स्वर्ण पदक दिलाया। परंतु तीन वर्ष बाद 'सैक्स परीक्षण' में वह असफल हो गई, जिसके कारण यूँ तो पदक रखने की इजाजत उसे दे दी गई, लेकिन रिकार्ड बुक से उसका नाम खारिज कर दिया गया।

फील्ड मुकाबलों में रूसी प्रेस बहनों की तुलना में ब्रिटेन की 24 वर्षीया मेरी रैंड ज्यादा चर्चित रही और समीक्षकों ने उसे 'गोल्डन गर्ल' की संज्ञा से विभूषित किया। रोम

ओलंपिक में उसने मेरी बिग्नल के नाम से हिस्सा लिया, परंतु लंबी कूद में नौवाँ और हर्डल्स में चौथा स्थान ही बना सकी। टोकियो ओलंपिक के पहले सिडनी रैंड से विवाह कर वह एक बेटी की माँ भी बन चुकी थी। 14 अक्टूबर को 6.76 मी. लंबा कूदकर उसने नए विश्वरिकार्ड के साथ ओलंपिक खेलों के महिला वर्ग में ब्रिटेन को पहला स्वर्ण पदक दिलाया। दो दिन बाद पेंटाथलन में वह ईरीना प्रेस के बाद दूसरे स्थान पर रही। 400 मी. रिले में कांस्य जीतनेवाले ब्रिटिश दल की भी वह सदस्या थी। बाद में उसने सिडनी से तलाक लेकर मैक्सिको ओलंपिक में डेकाथलन का स्वर्ण जीतनेवाले अमरीकी बिलटूमी से विवाह किया। भालाफेंक में बुखारेस्ट (रूमानिया) की 17 वर्षीया स्कूली छात्रा ने विश्व-रिकार्डधारी एवं पिछले चैंपियन एल्विरा ओजोलोना को हराकर स्वर्ण पदक जीता। ओजोलोना अपने पाँचवें स्थान से इतनी दुखी हुई कि खेलगाँव में लौटकर उसने अपने सारे बाल मुँडवा दिए। बाद में ओजोलोना ने मैक्सिको ओलंपिक में भालाफेंक के स्वर्ण पदक विजेता रूसी जोज़फ जुसिस से विवाह कर लिया।

कई विश्व-कीर्तिमान डूबे

तैराकी में मेजबान देश का निराशाजनक प्रदर्शन दर्शकों को मायूस कर गया, लेकिन अमरीकी तैराकों एवं गोताखोरों ने 69 पदकों में से 37 (16 स्वर्ण, 10 रजत एवं 11 कांस्य) जीतकर अन्य देशों को बौना साबित कर दिया। पुरुषों में सिर्फ 100 मी. एवं 1500 मी. फ्री स्टाइल स्पर्धाओं को छोड़कर शेष सभी के विश्व-कीर्तिमान डूबे। सबसे सम्मानित प्रदर्शन 18 वर्षीय कैलीफोर्नियन डान शेलेंडर का रहा, जिसने 100 मी. एवं 400 मी. फ्री स्टाइल तथा 4 ×100 एवं 4 × 200 मीटर रिले फ्री स्टाइल में स्वर्ण पदक जीता और यह गौरव पानेवाला पहला तैराक बना। स्वीडिश मूल का शेलेंडर अपना पाँचवाँ स्वर्ण भी जीत जाता, यदि उसे 4×100 मी. मिडले में चुना जाता। वह अपनी जीत के प्रति इतना सचेत था कि तैरने में कहीं कोई अवरोध न आ जाए, इस उद्देश्य से उसने अपने शरीर के सारे बाल ही कटवा लिए थे। 17 वर्षीय उसके ही प्रदेशवासी रिचर्ड रोथ ने पहली बार शामिल 400 मी. व्यक्तिगत मिडले में स्वर्ण पदक जीता जबकि वह आंत्रशोथ का शिकार हो गया था। पुरुषों को सिर्फ कंगारू तैराक ही चुनौती दे पाए। राबर्ट विंडी 1500 मी. फ्री स्टाइल में, 17 वर्षीय इयान ओ ब्रायन 200 मी. ब्रीस्ट स्ट्रोक में, एवं केविन बैरी 200 मी. बटरफ्लाई में स्वर्ण पदक जीतकर अमरीकी दबदबे पर भारी पड़े।

महिलाओं में 'मत्स्यांगना' डान फ्रेजर की विजय चर्चित रही। 200 मीटर ब्रीस्ट स्ट्रोक में 15 वर्षीया रूसी तैराक गेलिना प्रोज़ीमेंशचिकोवा ने स्वर्ण पदक जीतकर अपने देश के लिए स्वर्ण पदकों का खाता खोला। 4 × 100 मी. फ्री स्टाइल रिले टीम की

सदस्या लिलीयन वाटसन मात्र 14 वर्ष, 96 दिन की थी और वही इस आयोजन की सबसे कनिष्ठ चैंपियन सिद्ध हुई। बाकी छः प्रतियोगिताएँ अमरीकी तैराकों के हाथ रहीं। वाटरपोलो में हंगरी ने यूगोस्लाविया को हराकर स्वर्ण पर अधिकार जमाया।

पुरुष वर्ग में जापानी जिमनास्टिकों ने अपने शानदार प्रदर्शन से न केवल दर्शकों का मन मोह लिया, वरन टीम एवं व्यक्तिगत खिताब के अलावा तीन अन्य उपकरणों में भी स्वर्ण पदक हथिया लिया। यूकियो एंडो ने नयनाभिराम प्रदर्शन कर व्यक्तिगत आलअराउंड का ताज पहनने के अलावा पैरेलल बार में स्वर्ण एवं फ्लोर एक्सरसाइज में रजत पदक भी जीता। महिलाओं में चेक जिमनास्ट सुंदरी वेरा कास्लवस्का ने अपने प्रदर्शन से दर्शकों को दीवाना बना दिया। वह व्यक्तिगत खिताब के अलावा बैलेंस बीम एवं हार्स वाल्ट में भी स्वर्ण जीतने में सफल रही। चार वर्ष बाद मैक्सिको में भी अपना यही प्रदर्शन दोहराकर वह लाखों दर्शकों के दिलों में बस गई।

लंबी दूरी का रोमांचक अंत

साइकिलिंग की स्पर्धाएँ टोकियो से 45 कि.मी. दूर हाचिओजी नगर में बने विशेष 400 मी. के साइकिल ट्रेक में हुईं। इसमें सभी सातों मुकाबलों में पूरी तरह से यूरोपीय चालक छाए रहे और सभी 21 पदक यूरोपीय खिलाड़ियों के बीच में बँटे। इनमें से 3 स्वर्ण तथा 5 रजत तो अकेले इटली की झोली में आए। 1000 मी. टाइम ट्रायल खिताब जीतनेवाला बेल्जियम का पैट्रिक सेग्कू बाद में पेशेवर हो गया और 86 स्पर्धाएँ जीतने में सफल रहा। 195 कि.मी. लंबी रोडरेस का समापन अत्यंत 'क्लोज' रहा। इटली के मारियो जेनीत ने डेनमार्क के जेल एकरस्ट्राम रोडियन से मात्र 0.02 सेकेंड पहले 'टेप' छुआ। इसमें 12वें स्थान पर पिछड़नेवाले बेल्जियम के ऐड़ी मेरेक्स ने बाद में 5 बार (69 से 72 तथा 1974 में) विश्वप्रसिद्ध 'टूर द फ्रांस' साईकिल चालन प्रतियोगिता जीती।

घुड़सवारी में जर्मन घुड़सवारों ने सभी छः स्पर्धाओं में कम से कम एक पदक (कुल 2 स्वर्ण, 2 रजत, 2 कांस्य) जीता। शो जंपिंग में फ्रांस के 44 वर्षीय पियरे जोन क्यूरेस डि ओरियला ने लूट्टेयर (फइंटर) घोड़े पर सवार होकर 12 वर्ष बाद स्वर्ण जीतकर सबको आश्चर्यचकित कर दिया।

तलवारबाजी में पिछले विजेताओं फ्रांस एवं इटली का एकाधिकार टूटा। फायल में 29 वर्षीय तकनीकी अधिकारी इगोन फेंक ने पौलैंड के लिए फेंसिंग में पहला स्वर्ण पदक जुटाया। इपी के टीम मुकाबले में हंगरी ने स्वर्ण पदक जीता, परंतु सैब्रे के सेमीफाइनल में हंगरी की पराजय हुई। फायनल में इटली को परास्त कर रूसी टीम चैंपियन बनी। परंतु उनके इस गम को महिला फायल में जन्म से ही बहरी 27 वर्षीया ईडिको यूलाकी-रिजतो ने कुछ सहारा दिया। वह स्वर्ण विजेता रही। माडर्न पेंटाथलन में रूसी

इगोर नोवीकोव और अल्बर्ट मोकेयेन को घुड़सवारी में खराब प्रदर्शन के कारण फेरेंक तोरेक (हंगरी) के बाद दूसरे एवं तीसरे स्थान से संतोष करना पड़ा, पर टीम-मुकाबले का स्वर्ण उसी के पक्ष में रहा।

निशानेबाजी में अमरीकी एवं फिन्निश निशानेबाजों ने 2-2 स्पर्धाएँ जीतीं। चार वर्ष पहले रोम में फ्रीपिस्टल में स्वर्ण जीतनेवाले फिन्निश पिटो लिलोस्वूयो ने यहाँ रेपिड फायर पिस्टल का मुकाबला जीता और 1912 में अमरीकी एल्फ्रेड लेन के बाद यह सफलता पानेवाला वह पहला शूटर हुआ। हंगरी का 22 वर्षीय मेडिकल छात्र लाजलो हेमर्ल, जिसने स्मालबोर राइफल-तीन पोजीशन में कांस्य पदक जीता था, स्मालबोर राइफल-प्रोन में टाईब्रेकर के सहारे अमरीकी लोस विग्गर्स को हराकर स्वर्ण जीतने में कामयाब रहा। परंतु चार वर्ष बाद उसे मैक्सिको में इसी स्पर्धा में टाईब्रेकर के कारण ही रजत पदक से संतुष्ट होना पड़ा। फ्री राइफल-तीन पोजीशन में 25 वर्षीय अमरीकी गैरी एंडरसन ने विश्वरिकार्ड (1153 अंक) बनाते हुए स्वर्ण जीता। चार वर्ष बाद मैक्सिको में भी वह विजेता हुआ।

मुक्केबाजी के मुकाबलों में मुख्य रूप से योरोपीय मुक्केबाजों का बोलबाला रहा। इनमें पोलैंड व रूस के हिस्से में तीन-तीन व इटली के हिस्से में दो स्वर्ण पदक आए। अन्य दो में से एक स्वर्ण मेजबान देश के ताकाओ सेकुराई ने बैंटमवेट में (कोरियाई शिनचोचुंग को हराकर) जीता। इस खेल में जापान का यही एकमात्र पदक है। एक अन्य स्वर्ण अमरीका के अश्वेत मुक्केबाज जोसेफ फ्रेजियर ने हैवीवेट वर्ग में जर्मन हेंस ह्यूबर को हराकर जीता। जोसेफ को अंतिम समय में बस्टर मैथीस के स्थान पर चुना गया था। बाद में वह पेशेवर बन गया और 4 मार्च, 1968 को अमरीका के बस्टर मैथीस को 11वें दौर में हराकर विश्व बाक्सिंग कौंसिल का विश्व हैवीवेट चैंपियन भी बना। इस पद पर वह एक अन्य अमरीकी जार्ज फोरमेन से हारने के पहले 22 जनवरी '73 तक बना रहा। यूरोपीय मुक्केबाजों में पोलैंड के पुलिस सिपाही जेर्स्जी कुलेज (लाइट मिडिलवेट) विजेता रहे और चार वर्ष बाद मैक्सिको में फिर अपने खिताब की रक्षा की। रूस के वेलेटा पोपेंटर चेंको—जिसने मिडिलवेट वर्ग में जर्मनी के इमिल शुट्ज को हराकर स्वर्ण पदक जीता—को 'बाल बार्कर कप' प्रदान किया गया।

जूडो में मेजबानों की सफलता अपेक्षित थी, परंतु निप्पोन बुडोकान हाल में संपन्न इस खेल में जापानी दर्शकों को उस समय घोर निराशा हुई, जब ओपन वर्ग में हालैंड के 6 फुट 6 इंच ऊँचे कदवाले अंटोनियस ग्रीसिक ने 'फेवरेट' अकियो कामिनागाको को 9 मिनट की कशमकश के बाद पछाड़ दिया। इसके पहले जापानी लाइटवेट (ताकेहिडी नाकातानी), मिडिल वेट (इसाको ओकावा) एवं हैवीवेट (इसाको इनोकुया) का खिताब जीत चुके थे। इस खेल के सेमीफाइनल में हारनेवाली दोनों टीमों को कांस्य पदक दिया गया।

कुश्ती में मेजबान पहलवानों का दाँव अन्य देशों के पहलवानों के लिए भारी पड़ा। कुल 16 स्वर्ण पदकों में से 5 (3 फ्री स्टाइल एवं 2 ग्रीको-रोमन) मेजबान पहलवानों ने जीते। फीदरवेट वर्ग (62 कि.ग्रा.) में विजेता ओसामु वातनावे ने यहाँ अपने कैरियर की लगातार 186वीं जीत दर्ज की। फ्री स्टाइल के लाइट हैवीवेट (97 कि.ग्रा.) स्वर्ण जीतनेवाला रूसी अलेक्जेंडर मेडवेड बाद में ओलंपिक इतिहास का ऐसा पहलवान बना, जिसने लगातार तीन ओलंपिक में स्वर्ण जीता। टोकियो के बाद उसने मैक्सिको में हैवीवेट वर्ग में तथा म्यूनिख में सुपर हैवीवेट का स्वर्ण जीता। इसके अलावा अपने पूरे कैरियर में वह दस विश्व चैंपियनशिप जीतने में भी सफल रहा। हंगरी के इमरे पोलियक ने ग्रीको-रोमन के फीदरवेट वर्ग में अंततः रूस के रोमन रुस्वा को हराकर स्वर्ण जीता। इससे पहले वह इसके कई आयोजनों में रजत ही जीत पाया था।

स्ट्रांगमेन लियोनिद

भारोत्तोलन में रूस ने सात में से चार स्वर्ण पदक जीते। उनके लियोनिद जावोतिस्की ने सुपर हैवीवेट वर्ग में 579.5 कि.ग्रा. वजन (पिछले ओलंपिक से 35 कि.ग्रा. ज्यादा) उठाकर स्वर्ण पदक जीता। चार साल बाद मैक्सिको में भी उसने इतना ही भार उठाकर अपने खिताब का बचाव किया। जापानी याशिनोक मियाके ने फीदरवेट वर्ग में कुल 397.5 कि.ग्रा. भार उठाकर स्वर्ण जीता। मियाके के गरीब माता-पिता अपना पशुधन बेचकर उसका प्रदर्शन देखने टोकियो आए थे। अगले ओलंपिक में भी उसने इसी वर्ग में स्वर्ण पदक जीता, जबकि उसके छोटे भाई योशियुकी ने इसमें कांस्य जीता था। पोलिश वाल्देमिर बास्जानोवाकी ने भी यहीं लाइट हैवीवेट वर्ग का स्वर्ण जीतकर मैक्सिको में इसे दोहराया।

दलीय मुकाबलों में कोमाजावा पार्क में संपन्न हाकी का फाइनल दो एशियाई शक्तियों का द्वंद्व था, जिसमें भारत ने मोहिंदर लाल के एकमात्र गोल के सहारे पाकिस्तान को परास्त कर चार वर्ष पहले रोम की हार का बदला लिया। फुटबाल के फाइनल में चेकोस्लोवाकिया को 2-1 से हराने में हंगरी को पसीना आ गया। बास्केटबाल में इस बार भी अमरीका अव्वल रहा। इसमें चौथे स्थान पर आनेवाली पेरू की टीम में छः फुट ढाई इंच लंबे चार ड्यार्टे भाई—रिकार्डो, एनरिक, राउल एवं लुईस शामिल थे। वालीबाल में सोवियत संघ बेहतर अंक-औसत से चेकोस्लोवाकिया से बाजी मारने में सफल रहा। महिलाओं की इस प्रतियोगिता में मेजबान का कोई सानी नहीं था।

नौकाचालन में अमरीकी एवं रूसी मल्लाहों ने दो-दो स्वर्ण पर कब्जा जमाया। 'एट्स' में अमरीकियों ने पुनः प्रतिष्ठापूर्ण जीत हासिल की। इस टीम में हंगरी मूल का राबर्ट जिमोन्यी भी था, जिसने 1948 में हंगरी का काक्सड फोर्स में प्रतिनिधित्व किया

था और 1956 मेलबोर्न ओलंपिक के बाद उसने अमरीका में शरण ले ली थी। चप्पू नौकायन (केनोइंग) में सोवियत संघ ने तीन एवं स्वीडन ने दो दौड़ों में सफलता दर्ज की। रूसी लुडमिला श्ववेदोसियूक (पिनायेवा) ने 500 मी. कयाक एकल में स्वर्ण जीतकर अपनी स्वर्णिम सफलता की शुरुआत की। मैक्सिको में उसने पुनः इस दौड़ में स्वर्ण जीता और युगल मुकाबले में कांस्य पाया, जबकि म्यूनिख में युगल स्पर्धा में स्वर्ण जीता। यार्टिंग के स्टार वर्ग में बहामा के 46 वर्षीय डुरवर्ड नोवेल्स ने अपने चौथे प्रयास में स्वर्ण जीत ही लिया। नोवेल्स ने 16 वर्ष पहले लंदन में बिट्रेन का प्रतिनिधित्व किया था। 5.5 मीटर वर्ग में स्वर्ण जीतनेवाले आस्ट्रेलियाई दल में 59 वर्ष, 23 दिन आयु का विलियम नोर्थम भी था, जो इस आयोजन का वरिष्ठ चैंपियन था।

इस प्रकार ओलंपिक का यह अठारहवाँ आयोजन भी अपने मुकाम पर पहुँचा। व्यवस्था की दृष्टि से यह एक बेमिसाल आयोजन था। जापानियों की सहज एवं सरल मेहमाननवाजी ने सभी का दिल जीत लिया। इसी माहौल में लंबी कूद में छठे स्थान पर रही बुल्गारियन एथलीट डायना जारगोवा ने अपने देश के जिमनास्ट निकोलाई प्रादोनोव से खेलगाँव में ही शितो पद्धति से विवाह रचाया। तकनीकी दृष्टि से भी यह आयोजन पहले से बढ़कर था। दुनिया के कई लाख लोगों ने नए उपग्रह 'टेलस्टार' के जरिए इस आयोजन का लुत्फ उठाया। ओलंपिक इतिहास में पहली बार उद्घाटन एवं समापन समारोह में विद्युत संगीत बजाया गया। खेलों को छोटे-छोटे प्रतीक-चिन्हों के माध्यम से प्रदर्शित करने की परंपरा की शुरुआत भी यहीं से हुई। झंडा फहरानेवाले खंभे की लंबाई इस बार 1928 में जापान के लिए पहला स्वर्ण जीतनेवाले एथलीट मिकिओ ओडा की कूद (15.21 मी.) के बराबर रखी गई थी।

लेकिन इस आयोजन में जरूर भारी मात्रा में हुई धन की बर्बादी ने एवरी ब्रुडेंज को जरूर परेशान किया, परंतु उसे खेलों के पश्चिमीकरण का आभास भी मिल गया। और फिर 24 अक्टूबर की ढलती शाम में विशाल नेशनल स्टेडियम के स्कोर बोर्ड पर जगमगाते 'सायोनारा' (अलविदा) के साथ ही मैक्सिको में मिलने के वायदे के साथ सभी ने विदा ली।

पदक-तालिका – 1964

देश	स्वर्ण	रजत	कांस्य
अमरीका	36	26	28
रूस	30	31	35

जापान	16	5	8
जर्मनी	10	22	18
इटली	10	10	7
हंगरी	10	7	5
पोलैंड	7	6	10
आस्ट्रेलिया	6	2	10
चेकोस्लोवाकिया	5	6	3
ग्रेट ब्रिटेन	4	12	2
बुल्गारिया	3	5	2
फिनलैंड	3	—	2
न्यूजीलैंड	3	—	2
रूमानिया	2	4	6
नीदरलैंड	2	4	4
तुर्की	2	3	1
स्वीडन	2	2	4
डेनमार्क	2	1	3
यूगोस्लाविया	2	1	2
बेल्जियम	2	—	1
फ्रांस	1	8	6
कनाडा	1	2	1
स्वीट्जरलैंड	1	2	1
बहामा	1	—	—
इथोपिया	1	—	—
भारत	1	—	—
दक्षिण कोरिया	—	2	1
ट्रिनिडाड एवं टुबाको	—	1	2
अर्जेंटीना	—	1	—
क्यूबा	—	1	—
पाकिस्तान	—	1	—
फिलीपींस	–	1	—
ईरान	—	—	2
ब्राजील	—	—	1

घाना	—	—	1
आयरलैंड	—	—	1
कीनिया	—	—	1
मैक्सिको	—	—	1
नाइजीरिया	—	—	1
उरुग्वे	—	—	1

उन्नीसवाँ ओलंपिक : 1968 – मैक्सिको सिटी

1963 में बाडेन-बाडेन में आई. ओ. सी. ने अपनी बैठक में 19वें ओलंपिक आयोजन के स्थान के लिए एक अल्प चर्चित शहर मैक्सिको सिटी का चुनाव किया। चूँकि चयन मेलबोर्न की तरह परंपरा से हटकर हुआ, अतः मेलबोर्न की ही तरह यह भी तीखे वाद-विवाद से नहीं बच सका। मैक्सिको शहर समुद्रतल से 2134 मीटर (7350 फीट) की ऊँचाई पर बसा है, इसलिए अनेक सदस्यों ने यहाँ की हवा में ऑक्सीजन कम होने के कारण प्रतियोगिता पर पड़नेवाले विपरीत प्रभाव की संभावना व्यक्त की। उनका तर्क यह भी था कि यहाँ की जलवायु का लाभ उस जैसे स्थान पर बसे देशों के खिलाड़ियों को ही मिलेगा और समुद्रतल के समानांतर रहनेवाले खिलाड़ियों को यह फर्क महँगा मड़ेगा। आखिर इस स्थिति से निपटने के लिए आई. ओ. सी. ने यह निर्णय दिया कि खेल आरंभ होने के छः सप्ताह पहले से प्रतियोगी देश मैक्सिको शहर की आबोहवा में अपने खिलाड़ियों को प्रशिक्षित कर सकते हैं।

इस स्थिति से उबरकर आई. ओ. सी. अभी निश्चित ही हुआ था कि उसे दक्षिण अफ्रीका को प्रवेश देने के निर्णय पर काफी विरोध का सामना करना पड़ा और लगभग 40 देशों ने बहिष्कार की धमकी भी दे दी। अंततः एवरी ब्रुडेंज ने मजबूरन दक्षिण अफ्रीका से भाग न लेने का अनुरोध किया और स्थिति को विस्फोटक होने से बचाया।

आयोजन की सफलता के लिए मैक्सिको शहर ने कोई कसर नहीं छोड़ी और बेहतर व्यवस्था की। रोमवासियों की तरह ही मैक्सिकोवासी भी अपनी पुरानी सभ्यता पर गर्व करते हैं, इसीलिए उन्होंने भी अपने प्राचीन वैभव को निखारने में रुचि दिखलाई। परंतु मैक्सिको के एक वर्ग ने देश की गरीबी का जिक्र कर इस आयोजन को व्यर्थ एवं

फिजूलखर्ची करार देकर अपने आक्रोश का जबर्दस्त प्रदर्शन किया। खेल आरंभ होने से करीब दस दिन पूर्व जब एक लाख से भी ज्यादा लोगों ने मुख्य स्टेडियम के पास प्लाजा डी-लास ट्रेस कलटास चौराहे पर प्रदर्शन किया तो सरकार ने प्रदर्शनकारियों पर गोली चलाने का आदेश दे दिया। पाँच घंटे की गोलीबारी में लभगभग ढाई सौ लोग मारे गए और 1200 से ज्यादा आहत हुए। इसके बाद इस आयोजन में कोई व्यवधान नहीं आया, परंतु ऐसे में आई. ओ. सी. का मूक हो जाना चर्चा का विषय रहा।

इस ओलंपिक का उद्घाटन 12 अक्टूबर को रखा गया, क्योंकि ठीक 476 वर्ष पहले इसी दिन यूरोपीय नाविक क्रिस्टोफर कोलंबस ने इस नए महाद्वीप की खोज की थी। मुख्य ओलंपिक स्टेडियम में एक लाख से भी ज्यादा दर्शकों की उपस्थिति में मैक्सिको के राष्ट्रपति गुस्ताव डायज़ आर्डेज ने एवरी ब्रुडेंज के अनुरोध पर इस आयोजन का उद्घाटन किया। पहली बार ओलंपिक खेलों में ज्योति प्रज्वलित करने की परंपरा एक महिला एथलीट द्वारा निबाही गई। यह सम्मान 20 वर्षीया हर्डलर नोर्मा एंटीक्वीटी बसीलियो को मिला। एक अन्य एथलीट पाब्लो गेरिडो ने ओलंपिक शपथ उठाई। इस बार पिछले ओलंपिक की तुलना में 19 और नए राष्ट्र भाग लेने आए। इसमें 4750 पुरुष एवं 781 महिला प्रतियोगी थे। बारबाडोस, बेलिज़ (पूर्व में ब्रिटिश होंडूरस), सेंट्रल अफ्रीका रिपब्लिक, अल्साल्वोडोर, गिनी, होंडूरस, वर्जिन आइलैंड, कुवैत, लीबिया, निकारागुआ, पैराग्वे, सिरे लियोने, सुरिनाम एवं जैरे के लिए यह ओलंपिक की मुँह-दिखाई थीं, जबकि जर्मनी की दो अलग-अलग टीमें—पूर्वी जर्मनी एवं पश्चिमी जर्मनी के रूप में उतरीं।

कीर्तिमानों के लिए अनुकूल वातावरण

एथलेटिक्स के मुकाबलों में मैक्सिको शहर की जलवायु का पूरा रंग देखने को मिला। हवा के कम दबाव से पहली बार प्रयुक्त टर्टर ट्रेक में जहाँ कई विश्वस्तरीय प्रदर्शन देखने को मिले, वहीं आक्सीजन की कमी ने कई धावकों को दौड़ के बीच में ही पस्त कर दिया। मैक्सिको की इस स्थिति का सर्वाधिक लाभ अफ्रीकी देशों के धावकों ने उठाया, और मध्यम तथा लंबी दूरी की दौड़ों में बाजी मार ली। वातावरण के असंतुलन का नजारा पहले ही दिन देखने को मिला। 10.000 मीटर की दौड़ के अंतिम चक्र में विश्व-रिकार्डधारी आस्ट्रेलियाई रान क्लार्क को छठवें स्थान से संतोष करना पड़ा। इतना ही नहीं, दौड़ समाप्ति के बाद वह गिर पड़ा और दस मिनट तक बेहोश पड़ा रहा। पहला स्थान 23 वर्षीय किसी कबीले के नाटे कद के धावक नफाराली नेमू ने (29 : 27.4 सेकेंड से) पाया। यह ओलंपिक खेलों में केन्या का पहला स्वर्ण पदक था। तीन दिन बाद नेमू 5000 मी. में तीसरे स्थान पर रहा। 29 वर्षीय ट्यूनीशियाई सैनिक महमूद

गम्मौदी, जिसने 10,000 मी. में कांस्य पाया था, इस प्रतियोगिता में 14 : 05.0 सेकेंड से स्वर्ण का हकदार हुआ। इस सैनिक धावक का भोजन भी बड़ा लाजवाब था। दौड़ से पहले वह लगभग पाँच मोटी रोटियाँ, फलों की दस फाँकें, चार कप चाय, दो कप कॉफी, दो पेस्ट्री और काफी मात्रा में मांस, मछली, दूध एवं मक्खन खाने का आदी था, फिर भी उसका वजन मात्र 135 पौंड ही था। म्यूनिख ओलंपिक में वह इस दौड़ में दूसरे स्थान पर रहा।

3000 मीटर स्टीपल चेस में केन्या के 20 वर्षीय अनजान धावक एमोस बिवोट ने सफलता पाई, जोकि अपने अजीब तरीके से बाधा पार करने के कारण लोकप्रिय हुआ था। तीसरी बार ओलंपिक खेलों में शिरकत करनेवाला 36 वर्षीय मामो वाल्दो इस बार अंततः स्वर्ण पदक जीतने में कामयाब हो गया। मैराथन दौड़ उसने 2 घंटे 20 मिनट 26.4 सेकेंड में जीतकर इथोपिया की परंपरा को बनाए रखा। चार वर्ष बाद म्यूनिख में वह तीसरे स्थान पर रहा। अफ्रीकी धावकों में सबसे उत्कृष्ट प्रदर्शन केन्या के नांदी कबीले के 28 वर्षीय कीपयोगे कोयने का रहा। कोयने एक जीवट वाला धावक था, जिसने पेट में भयंकर मरोड़ की शिकायत के बावजूद इस ओलंपिक में हिस्सा लिया। यहाँ उसने तीन दौड़ों में भाग लिया। 10.000 मी. में वह अंतिम दो चक्र तक सबसे आगे था, इसके बाद उसकी पीड़ा असहनीय हो गई और वह गिर पड़ा। तीन दिन बाद वह पुनः मैदान में दिखाई दिया और इस बार 5000 मी. में रजत पदक प्राप्त कर लिया। दो दिन बाद वह 1500 मीटर दौड़ के फाइनल में दौड़ रहा था, जहाँ उसका मुकाबला अमरीकी जेम्स रुयान से था। रुयान 880 गज, 1500 मीटर एवं एक मील की दौड़ का विश्व कीर्तिमानधारी था और अंतिम चक्र में जबरदस्त दमखम दिखाने के कारण मशहूर भी था, परंतु कोयने ने उसकी तरकीब को छिन्न करते हुए आरंभ से ही अच्छी बढ़त बना ली और लगभग 20 मीटर के फासले से रुयान को पीछे छोड़ते हुए स्वर्ण जीत लिया। उसका समय रहा 3 : 34.9 सेकेंड, जोकि ओलंपिक रिकार्ड था। इसी दिन दूर केन्या में उसकी तीसरी पुत्री का जन्म हुआ, जिसका नामकरण उसकी जीत के कारण ओलंपिया रखा गया। 'ह्यूमन डायनमो' कहलानेवाले कोयने म्यूनिख में 3000 मी. स्टीपल चेस में स्वर्ण एवं 1500 मी. में रजत पदक जीतने में सफल रहा। अगले वर्ष वह अमरीका जाकर पेशेवर धावक बन गया।

काले धावकों की जीत एवं विद्रोह

उधर सपाट दौड़ों में अश्वेत धावकों का बोलबाला रहा। सबसे तेज धावक का खिताब जेम्स हाईंस ने 9.95 सेकेंड समय के साथ विश्व-रिकार्ड बनाते हुए जीता। 200 मीटर में भी विश्व-रिकार्ड टूटा। परंतु इसमें स्वर्ण एवं कांस्य पानेवाले अमरीकी टामी स्मिथ एवं

जान कार्लोस अमरीका में नीग्रो के शोषण के खिलाफ प्रदर्शन करने के कारण चर्चित हुए। यह दोनों धावक इस दौड़ के पदक-वितरण समारोह के समय विक्ट्री स्टैंड पर नंगे पाँव खड़े हुए और अमरीकी राष्ट्रीय धुन बजते समय उन्होंने अपना सिर झुकाकर काले ग्लब्सयुक्त दाहिना हाथ ऊपर किया। उनकी इस हरकत पर आई. ओ. सी. ने अमरीकन ओलंपिक एशोसियेशन को कड़ी कार्यवाही करने को कहा, जिसके फलस्वरूप उन दोनों को 48 घंटे के भीतर मैक्सिको छोड़कर चले जाने को कहा गया। इस बात से 400 मी. का विजेता (43.8 सेकेंड, विश्व-रिकार्ड) ली इवांस काफी भावुक हो गया और उसने पदक-वितरण समारोह के बाद हवा में घूँसा चलाकर उनके प्रति अपना समर्थन व्यक्त किया। 4 × 100 मी. में विजयी टीम के सभी काले सदस्यों ने भी यही किया। 110 मी. हर्डल में भी स्वर्ण जीतनेवाला विली डेवनपोंट (समय 13.3 सेकेंड, ओलंपिक रिकार्ड) भी अश्वेत अमरीकी था।

इन नीग्रो खिलाड़ियों की जीत के अतिरिक्त 800 मी. में आस्ट्रेलियाई राल्फ डाउवेल एवं 400 मी. बाधा दौड़ में ब्रिटिश डेविड हेमरी की जीत अप्रत्याशित रही। हेमरी ने जब 48.12 सेकेंड समय के साथ विश्व-रिकार्ड बनाते हुए यह दौड़ जीती तो वह सहसा विश्वास नहीं कर पाया। उसे लार्ड बर्गले ने पदक प्रदान किया, जिसने ठीक 40 वर्ष पहले इसी स्पर्धा में स्वर्ण जीता था। इसमें तीसरे स्थान पर आनेवाला ब्रिटिश जान शेरवुड था, जिसकी पत्नी शीला ने एक दिन पहले ही लंबी कूद में रजत पदक जीता था। 20,000 मीटर पैदल चालन में 32 वर्षीय रूसी ब्लेदीमिर गोलुबनीची ने मैक्सिकन जोस पेडरोज़ा ज़निगा को मात्र तीन गज (1 : 33 : 58.4 सेकेंड) के फासले से पीछे छोड़ा। गोलुबनीची 1960 में इसी स्पर्धा में स्वर्ण और 1964 में रजत जीत चुका था और अब उसने 1972 एवं 1976 में भी भाग लिया और क्रमश : दूसरे एवं सातवें स्थान पर रहा। 50 कि.मी. चालन में पूर्वी जर्मनी के क्रिस्टोफर होबे ने स्वर्ण जीता। यह ओलंपिक में पूर्वी जर्मनी का पहला स्वर्ण पदक था।

कूद-स्पर्धाओं में भी एथलीटों ने मैक्सिको शहर की विरल आक्सीजनवाली हवा का फायदा उठाया। त्रिकूट में जार्जिया (रूस) के 23 वर्षीय कूदाक विक्टर सेनेयेव ने अपने तीसरे दौर में 17.39 मीटर छलाँग लगाकर अन्य खिलाड़ियों का हौसला पस्त कर दिया और आठ वर्षों से चले आ रहे पोलिश जोज़फ श्मिड के विश्व-कीर्तिमान को भी तोड़ दिया। एक और उल्लेखनीय बात यहाँ यह रही कि इसमें पहले पाँच स्थानों पर आनेवाले प्रतियोगियों ने विश्व-रिकार्ड भंग किया। सेनेयेव ने अगले दो ओलंपिक में भी यह स्पर्धा जीती। ऊँची कूद में 20 वर्षीय अमरीकी डिक फासबरी ने नई तकनीक का ईजाद किया, जिसमें चित अवस्था में पहले सिर और फिर पैर ऊँचाई पार करते हैं। इसमें उसने 2.24 मी. ओलंपिक-कीर्तिमान बनाकर स्वर्ण पदक जीता। 'फासबरी फ्लाप' के नाम से

विख्यात यह तकनीक आज सभी जगहों पर प्रचलित हो गई है । पोलवाल्ट में स्वर्ण पदक के लिए तीन एथलीटों ने 5.40 मीटर (ओलंपिक-रिकार्ड) की ऊँचाई नापी, परंतु स्वर्ण कम से कम अवसर खोने के आधार पर विश्व-रिकार्डधारी अमरीकी राबर्ट सीग्रेन को दिया गया । लेकिन इन मुकाबलों से सर्वाधिक चौंकानेवाला एवं अविश्वसनीय प्रदर्शन 18 अक्टूबर को लंबी कूद में देखने को मिला, जब 32 वर्षीय अश्वेत बाब बीमन ने फाइनल के पहले राउंड में 8.90 मीटर छलाँग लगाकर सनसनी फैला दी । छ: फुट लंबा न्यूयार्कवासी बीमन अपनी इस माप को सुनकर इतना भावुक हो गया कि उसके कदम डगमगाने लगे । तब उसे तीसरे स्थान पर आनेवाले अमरीकी राल्फ बोस्टन एवं चार्ली मेस ने सहारा देकर सँभाला । 'ह्यूमन कंगारू' कहलानेवाले बीमन का यह कीर्तिमान आज भी अखंडित है ।

प्रक्षेपण स्पर्धाओं में अर्ल ओर्टर ने, जिसका लगभग सारा शरीर दर्द-निवारक इंजेक्शनों से बिंध चुका था, इस वातावरण में अपने जीवन का सबसे दूर चक्का फेंककर (67.78 मीटर) चौथी बार स्वर्ण पदक जीता । एक अन्य अमरीकी भीमकाय रैंडी मैटसन ने फाइनल के पहले ही दौर में 29.54 मीटर दूर गोला फेंककर अपना स्वर्ण निश्चित किया । हंगरी का विश्व-रिकार्डधारी ग्याला जिकोट्ज़की रूसी रोमुआल्ड क्लिम से मात्र 0.3 मीटर दूर तार-गोला फेंककर स्वर्ण जीतने में सफल रहा । भाला फेंक में रूसी जेनिस लुसिस ने आशानुरूप 90.10 मीटर भाला फेंकर पहला स्थान पाया । डेकाथलन में 29 वर्षीय कैलिफोर्नियावासी बिल टूमी ने स्वर्ण जीतकर 1932 से बनी अमरीकी परंपरा को आगे बढ़ाया ।

महिलाओं की स्पर्धा में भी विश्वस्तरीय प्रदर्शन देखने को मिला । 100 मीटर की पिछली चैंपियन वियोमिया टायस ने अपना खिताब विश्व-रिकार्ड बनाकर (11..0 सेकेंड बरकरार रखा । 200 मीटर में पोलैंड की 22 वर्षीय इरिना जेविसका (पहले कर्जेन्स्टीन) ने धीमे स्टार्ट के बावजूद विश्व-रिकार्ड बनाकर (22.5 सेकेंड) स्वर्ण पदक पाया । इससे पहले इरिना ने 100 मीटर में कांस्य पदक जीता था । लेनिनग्राद के शरणार्थी शिविर में 24 मई, 1946 को जन्मी इरिना ने 1964 से 1980 तक पाँच ओलंपिक में हिस्सा लेकर सात पदक जीते और आस्ट्रेलियाई शिली स्ट्रिकलैंड के महिला एथलेटिक्स में सर्वाधिक पदक का कीर्तिमान भंग किया । 800 मीटर में 20 वर्षीया अमरीकी मेडलीन मैनिन्न अप्रत्याशित रूप से स्वर्ण की हकदार रही । ऐसा ही परिणाम 80 मी. बाधादौड़ में भी देखने को मिला, जब 17 वर्षीया मारीन केयर्ड ने अपनी ही देशवासी फेवरेट आस्ट्रेलियाई पामेला किलबर्न को 0.1 सेकेंड से पीछे छोड़कर स्वर्ण पाया । इसमें तीसरे स्थान पर आनेवाली ताईवान की ची चेंग थी, जोकि ट्रेक एंड फील्ड में पदक पानेवाली एशिया की पहली महिला बनी । 400 मी. में भी 19 वर्षीया 'फेवरेट' (ब्रिटिश) लिलियन ब्राड को

22 वर्षीया फ्रांसिसी कोलेट मेलोन ने 52.1 सेकेंड का समय लेकर मात्र 0.1 सेकेंड से पीछे छोड़ दिया।

फील्ड इवेंट्स में भी दो विश्व-रिकार्ड बने। पहला रिकार्ड लंबी कूद में रूमानिया की 29 वर्षीया विसोर्सिया विस्कोपोलन ने 6.82 मी. छलाँग लगाकर बनाया तथा दूसरा गोला फेंक में पूर्वी जर्मनी की मार्रग्रेटा गुमेल ने (19.61 मी.) गोला फेंककर बनाया। ऊँची कूद में चेकोस्लोवाकिया की 18 वर्षीया तरुणी मिलोस्लोवा रेजकोवा 1.82 मी. की छलाँग लगाकर रूसी एथलीट को पीछे छोड़ पहले स्थान पर आई। परंतु उल्लेखनीय प्रदर्शन रहा रूमानिया की 36 वर्ष, 176 दिन आयुवाली लिया मानोलियू का जोकि 1952 से हर बार चक्का फेंक में भाग लेती आ रही थी। कंधे में तकलीफ के बावजूद उसने 58.28 मी. दूर चक्का फेंककर ओलंपिक-रिकार्ड के साथ स्वर्ण जीता और ट्रैक एंड फील्ड की सबसे वरिष्ठ महिला चैंपियन बनी। 1972 में वह पुनः इस स्पर्धा में उतरी, लेकिन इस बार वह केवल नौवाँ स्थान ही पा सकी। इसके बावजूद छः ओलंपिक में लगातार हिस्सा लेने का नया रिकार्ड तो उसने बना ही लिया। पेंटाथलन में इनग्रिड बेकर (फ्रांस) 5098 अंक लेकर अव्वल रही।

अमरीका का जबरदस्त दबदबा

तरणताल में टोकियो की अपेक्षा अमरीकी यहाँ ज्यादा सफल रहे। उनकी चमक से अन्य देशों के तैराकों की उपलब्धि फीकी पड़ गई। अमरीकी दबदबे का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि उसके तैराकों ने 23 स्वर्ण पदकों के अलावा 15 रजत तथा 20 कांस्य पदक भी जीते। इसमें सिर्फ वाटरपोलो ही एकमात्र ऐसा खेल था, जिसमें उसे कोई पदक नहीं मिला, जबकि 100 मी. पुरुष तथा 200 मी. फ्री स्टाइल एवं 200 मी. व्यक्तिगत मिडले के तीनों ही खिताब उसकी झोली में गिरे। इस बार इस मुकाबले की संख्या में जबरदस्त बढ़ोतरी हुई। टोकियो के 23 (13 पुरुष, 10 महिला) मुकाबलों की अपेक्षा इस बार 34 (18 पुरुष, 16 महिला) मुकाबले हुए।

इस बार अमरीकी डेबीमेयर की उपलब्धि सबसे जानदार रही, हालाँकि उसे 200 मी. फ्री स्टाइल में 100 मी. फ्री स्टाइल की चैंपियन जेन हैने से जबरदस्त संघर्ष करना पड़ा, फिर भी वह 0.1 सेकेंड से स्वर्ण जीतने में सफल रही। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि इस दौरान वह अपने कमर दर्द से भी भारी परेशान रही थी। इसके बावजूद वह 400 तथा 800 मी. फ्री स्टाइल में भी चैंपियन बनी और ओलंपिक तैराकी के इतिहास में तीन व्यक्तिगत स्वर्ण जीतनेवाली पहली महिला खिलाड़ी कहलाई। 14 अगस्त, 1952 को अन्नापोलिस में जन्मी डेबी अपने कैरियर के चार वर्षों (1967 से 70) में 16 विश्व-रिकार्ड बनाने में सफल रही। अन्य महिला तैराकों में कलाडिया कोल्ब ने मिडले

की 200 तथा 400 मी. में स्वर्ण जीतकर डबल रिकार्ड बनाया। 19 वर्षीया क्लाडिया कोल्ब बहुत छोटी उम्र से ही तैराकी के कीर्तिमान स्वीमिंग पूल में डुबाना प्रारंभ कर चुकी थी। 1964 में ही उसने मात्र 15 वर्ष की आयु में अपने देश को मिडले रिले में विश्व-कीर्तिमान बनाने में सहायता दी थी। महिलाओं की नई स्पर्धा 100 मी. ब्रीस्ट स्ट्रोक में यूगोस्लाविया की जुर्डीजिसा ब्येडोव 1:15:8 सेकेंड से स्वर्ण जीतने में सफल रही। यह उसके देश के लिए तैराकी का पहला स्वर्ण था।

महिलाओं की अपेक्षा पुरुष वर्ग में अमरीकी तैराकों ने बेहतर प्रदर्शन किया। माईक बर्टन तथा चार्ल्स हिकाक्स ने दोहरी सफलता हासिल की। डेस माईनेस इओवा में जन्मे 21 वर्षीय बर्टन ने 400 मी. फ्री स्टाइल तथा 1500 मी. फ्री स्टाइल में ओलंपिक रिकार्ड बनाते हुए स्वर्ण पाया। चार वर्ष बाद म्यूनिख में भी उसने 1500 मी. में स्वर्ण जीता और इस स्पर्धा को लगातार दो बार जीतनेवाला पहला और अब तक का एकमात्र खिलाड़ी कहलाया। उल्लेखनीय है कि 13 वर्ष की उम्र में बर्टन एक दुर्घटना में अपना दायाँ घुटना तुड़वा बैठा था। तब डाक्टरों ने यह घोषणा की थी कि वह कभी स्पोर्ट्स मे भाग नहीं ले सकेगा। परंतु पैर को मजबूत बनाने के लिए उसे तैरने की सलाह दी गई जोकि उसके देश के लिए लाभप्रद सिद्ध हुई। इंडियाना विश्वविद्यालय के 21 वर्षीय छात्र चार्ल्स हिकोल्स का प्रदर्शन थोड़ा और बेहतर रहा। 200 एवं 400 मी. व्यक्तिगत मिडले के अलावा 100 मी. बैक स्ट्रोक में वह रजत जीतने में सफल रहा। इसके अतिरिक्त 4 × 100 मी. मिडले रिले की स्वर्ण विजेता टीम का भी वह सदस्य था। फियोनिक्स एरिज़ में जन्मे छः फीट ऊँचे चार्ल्स ने अपनी शारीरिक संरचना एवं मजबूत कद-काठी की बदौलत मिडले में अपने आपको विश्व के सर्वश्रेष्ठ तैराकों में ला खड़ा किया था।

दूसरे देश के तैराकों में आस्ट्रेलियाई माइक पिसेंट वेंडन 100 मी. तथा 200 मी. फ्री स्टाइल को क्रमशः 52.2 तथा 1 : 55.2 सेकेंड से जीतकर अनोखा डबल पूरा करनेवाला पहला तैराक बना। बाद में उसने 4 × 200 मी. फ्री स्टाइल में रजत तथा 4 × 100 में कांस्य पदक भी पाया। 17 नवंबर, 1949 को लीवरपूल (न्यू साउथ वेल्स) में पैदा हुआ वेंडन 14 वर्ष की उम्र में फुटबाल खेलते-खेलते अपना दायाँ पैर तुड़वा बैठा था। ऐसे में शारीरिक चुस्ती की खातिर उसने तैराकी को अपनाया और फिर इसी में रम गया। उसमें उसे विक अर्नील (कोच) ने सहायता प्रदान की। पूर्वी जर्मनी के 18 वर्षीय रोलेंड मैथिस ने भी डबल पूरा किया। वह बैक स्ट्रोक की दोनों (100 तथा 200 मी.) ही स्पर्धाओं में अपने प्रतिद्वंद्वियों से बहुत आगे था। 'रायल राल्स' के नाम से मशहूर मैथिस ने चार वर्ष बाद भी यही कारनामा दुहराया और अप्रैल 67 से अगस्त 74 तक अजेय रहा। लेकिन इन सबसे उल्लेखनीय जीत 17 वर्षीय मैक्सिकन फेलिप मुनोज़ की रही, जिसने 200 मी. ब्रीस्ट स्ट्रोक में विश्व-रिकार्डधारी रूसी ब्लेदीमिर कोसांसरी को पीछे छोड़ते हुए अपने

देश के लिए पहला स्वर्ण पदक जुटाया। जीत के बाद तरणताल पर उपस्थित लगभग 8000 दर्शक उसे बधाई देने टूट पड़े, जिससे स्टेडियम में भगदड़-जैसी स्थिति पैदा हो गई। बाद में 'टिबियो' (ल्यूकवार्म) नाम से प्रसिद्ध मुनोज़ उस समय और भावुक हो उठा, जब पदक-वितरण समराह के समय उसके देश की राष्ट्रीय धुन बजाई जा रही थी।

डाइविंग के मुकाबलों में हाईबोर्ड डाइविंग में चेकोस्लोवाकिया की मिलोवा डचकोवा (महिला) तथा इतालवी क्लाज डिबीयासी (पुरुष) को सफलता मिली। 6 अक्टूबर, 1947 को आस्ट्रिया में जन्मा क्लाज टोकियो में भी उतरा, पर उसे रजत पदक से ही संतोष करना पड़ा। लेकिन यहाँ की विजय न केवल स्वयं उसके बल्कि उसके देशवासियों के लिए भी सम्मान की बात थी। वह यहाँ स्प्रिंग बोर्ड में रजत पदक जीतने में भी सफल रहा। तैराकी के प्रति पूरी तरह समर्पित क्लाज ने 1966 से 74 के दौरान योरोपियन चैंपियनशिप में तीन स्वर्ण पाए, जबकि ओलंपिक स्वर्ण पाने के अपने करतब की पुनरावृत्ति उसने अगले दो ओलंपिक में भी की और यह सम्मान पानेवाला पहला गोताखोर बना। 1973 तथा 1975 की विश्व-चैंपियनशिप में भी वह अव्वल रहा। 1976 के मांट्रियल ओलंपिक के बाद उसने संन्यास ले लिया।

जिमनास्टिक की महारानी वेरा कास्लावस्का

जिमनास्टिक की महिला स्पर्धाओं में, जोकि म्युनिसिपल आडीटोरियम में संपन्न हुई थीं, चेकोस्लोवाकिया की वेरा कास्लावस्का टोकियो की भाँति यहाँ भी अपने जानदार प्रदर्शन से सभी की चहेती बनी। यहाँ उसने दो प्रतिभासंपन्न रूसी जिमनास्टिकों—जिनाईदा बोरोलीना तथा नताल्या कुचिस्काया—की उपस्थिति में व्यक्तिगत, एसिमिट्रिकल बार्स, हार्स वाल्ट तथा फ्लोर एक्सरसाइज में स्वर्ण और टीम व बैलेंस बीम में रजत पदक जीते। इस तरह यहाँ आयोजित हर उस स्पर्धा में, जिसमें उसने भाग लिया, वह कोई न कोई पदक जीतने में सफल रही। 3 मई, 1942 को प्राग में जन्मी सुनहरे बालोंवाली गोरी-चिट्टी सवा पाँच फुट कद की वेरा को पहले आईस डांस का शौक था, लेकिन 15 वर्ष की उम्र में वह जिमनास्टिक की ओर झुकी और शीघ्र ही इसमें राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बना ली। 1958 के विश्वकप में रजत जीतनेवाली चेक टीम की वह सदस्या थी और इसके बाद ही और बेहतर प्रदर्शन की उसकी इच्छा जाग्रत हुई। रोम ओलंपिक में भी वह रजत विजेता दल की सदस्या थी, जबकि टोकियो में वह निर्विवाद रूप से श्रेष्ठ जिमनास्ट बनी। फिर जब मैक्सिको में वह चैंपियन बनी तो उसकी खुशी दुगुनी हो गई। लेकिन पदक-वितरण के समय अपने संन्यास की घोषणा कर उसने सभी को चौंका दिया और चौबीस घंटे बाद ही मैक्सिको के प्रसिद्ध रोमन कैथोलिक चर्च में 10 हजार लोगों के सामने अपने देश के जोसेफ ओब्लोज़िल से शादी रचाकर उसने एक और

धमाका किया। जोसेफ इस बार 1500 मी. दौड़ के फाइनल में आठवें स्थान पर रहा था और टोकियो ओलंपिक में 1500 मी. दौड़ का रजत विजेता था। परंतु शादी रचाकर जब वह अपने देश वापस लौटी तो रूस समर्थक चेक सरकार ने उसे कोयले की खदान में काम करने के लिए बाध्य किया। आजकल वह स्पार्ता (प्राग) में प्रशिक्षक की भूमिका निभा रही है।

पुरुष वर्ग में जापानी करतबकारों ने एक बार पुनः अपने फन का जौहर दिखाकर अपनी श्रेष्ठता दर्शाई। जापान के लिए सफलताओं का जखीरा खड़ा करने में इस बार सवातो कातो एवं एकीनोरी नाकायामे का अहम योगदान रहा। 1 मार्च, 1943 को आईची प्रिफेक्टर में जन्मा नाकायामे चढ़ती उम्र के बावजूद सफल रहा। 25 वर्ष की उम्र में उसने यहाँ टीम के अलावा पैरेलल बार्स, रिंग्स एवं हारीजेंटल बार्स में स्वर्ण के अलावा रजत एवं कांस्य पदक भी प्राप्त किया। चार साल बाद भी उसने अपने देश को चैंपियन बनाने में न केवल अहम भूमिका निभाई, वरन व्यक्तिगत रूप से रिंग्स एवं स्वर्ण फ्लोर एक्सरसाइज़ में रजत तथा एक कांस्य पदक भी जीता। 11 अक्टूबर, 1946 को निगाटा में जन्मा कातो ठिगने कद (पाँच फुट, चार इंच) एवं हल्के शरीर (48 किलो) का मालिक था। यहाँ व्यक्तिगत खिताब के लिए जब वह अंतिम स्पर्धा फ्लोर एक्सरसाइज़ में आया, तब वह रूसी खिलाड़ी मिखाईल वोरोनिन एवं अपने हमवतन नाकायामे से क्रमशः 8.85 एवं 8.65 अंक पीछे था। परंतु अपने शानदार प्रदर्शन से उसने न केवल 9.9 अंक बनाए, वरन आसानी से स्वर्ण जीतकर सभी को चकित कर दिया। बाद में उसने फ्लोर एक्सरसाइज़ का स्वर्ण भी जीता, परंतु म्यूनिख में वह इससे ज्यादा सफल रहा, जहाँ उसने कंबाइंड एक्सरसाइज़ (व्यक्तिगत एवं टीम) में स्वर्ण के अलावा पैरेलल बार्स में भी पहला स्थान बनाया, जबकि पामेल हार्स एव हारीजेंटल बार्स में रजत पदक जीता। मांट्रियल में भी दो स्वर्ण एवं एक रजत पदक जीतकर उसने अपने को श्रेष्ठ जिमनास्ट साबित किया।

मुक्केबाजी में मैक्सिको के मुक्केबाजों ने अपने दर्शकों के सामने जानदार प्रदर्शन किया और फ्लाईवेट (51 किलो) वर्ग में रिकार्डो डेलगोर्डो और फीदरवेट (57 किलो) वर्ग में एंटोनियो रोल्डेन ने विजेता होने का सम्मान पाया। सुपर हैवीवेट (81 किलो से ज्यादा) वर्ग के फाइनल में अमरीकी अश्वेत जार्ज फोरमेन ने रूसी ईनास चेपुलिस को पछाड़ा। बाद में फोरमेन पेशेवर हो गया और फ्रेजियर को हराकर विश्व हैवीवेट चैंपियन भी बना। केन्या के फिलिप वारुनो को, जिसने फीदरवेट में कांस्य पदक जीता था, उसके आकर्षक एवं साफ-सुथरे प्रदर्शन पर 'बाल बार्कर कप' दिया गया। 1936 के बाद यह दूसरा अवसर रहा जब यह कप, विजेता के बदले अन्य चैंपियन को मिला।

कुश्ती में टोकियो की तरह यहाँ भी जापानियों ने सबसे ज्यादा स्वर्ण (चार) जीते।

जापान का योजिरो ऊइटाके (बैंटमवेट, फ्री स्टाइल का), बुल्गारिया का बोयल राडेव (लाइट हैवीवेट) और हंगरी का इस्तवान कोजमा (सुपर हैवीवेट) दोनों ग्रीको-रोमन) टोकियो का अपना खिताब बचाने में सफल रहे। परंतु उल्लेखनीय सफलता फ्रांसिसी डेनियल रोबिन की रही, जिसने दोनों ही शैली के वेल्टरवेट वर्ग में रजत पदक जीता। भारोत्तोलन में प्रदर्शन स्तरीय नहीं था। रूसी वेट लिफ्टरों ने सात में से तीन वर्गों में विजेता रहकर अनधिकृत टीम-टाइटिल पाया। जूडो को इस बार शामिल नहीं किया गया।

निशानेबाजी के सातों मुकाबलों में कड़ी प्रतिस्पर्धा रही। पहली बार शामिल किए गए स्कीट शूटिंग में तो जमकर संघर्ष देखने को मिला, जिसमें पहले तीन स्थानों पर आनेवाले निशानेबाजों ने 198 सही निशाने लगाकर विश्व-रिकार्ड की बराबरी की। ऐसे में स्वर्ण का फैसला 'शूट आफ' के जरिए हुआ। रूसी येवगेनी पेट्रोव ने इतालवी रोमानो गरारनानी एवं पूर्वी जर्मनी के कोनराडवर्नहिर को हराया। ओलंपिक ट्रेप शूटिंग में ब्रिटेन के 43 वर्षीय पशुशल्य-चिकित्सक जान ब्रेथवेट ने विश्व-रिकार्ड की बराबरी करते हुए (198/200) स्वर्ण जीता।

घुड़सवारी, जोकि मैक्सिको शहर से लगभग 100 मील दूर एवाड्रो में संपन्न हुई थी, नौजवानों की अपेक्षा बुजुर्ग घुड़सवारों को ज्यादा रास आई। इनमें पश्चिमी जर्मनी का जोसेफ नेकरमेन (आयु 56 वर्ष, 141 दिन) ड्रेसाब टीम में स्वर्ण पदक पाकर इस आयोजन का वरिष्ठ विजेता हुआ। इसके पूर्व उसने व्यक्तिगत मुकाबले में रजत जीता था। शो जंपिंग के स्वर्ण पदक विजेता विलियम स्टिनक्रा उस (अमरीका) भी 44 वर्ष का था। ड्रेसाज के टीम मुकाबले में रूसी घोड़े एब्सेंट ने लगातार तीसरे ओलंपिक में हिस्सा लेकर अपना चौथा पदक (रजत, इवानकलिता) जीता। सर्गेई फिलातोव ने 1960 में स्वर्ण और 1964 में 2 कांस्य पदक इसी घोड़े पर बैठकर जीते थे। शो जंपिंग के व्यक्तिगत मुकाबले में पहली बार कोई महिला पदक (रजत) जीतने में सफल रही। यह ब्रिटेन की मरियन कोकंस थी।

साईकिलिंग के सात मुकाबलों में 1000 मी. टीम ट्रायल में विश्व-रिकार्ड (1:03.91) स्थापित हुआ, जिसे फ्रांसिसी पियरे जेनतिन ने नील्स फ्रेडबर्ग (डेनमार्क) को हराकर बनाया। वैसे भी इस पूरी स्पर्धा में फ्रांसिसी साईकिल चालक ही मुख्य रूप से सफल रहे। बाद में पियरे ने 1000 मी. स्प्रिंट चैंपियन 24 वर्षीया डेनियल मोरेलन के साथ मिलकर 2000 मी. टेंडम का स्वर्ण भी फ्रांस की झोली में डाला। पुलिस आफिसर मोरेलन अपने चार ओलंपिक्स कैरियर (1964-1976) में कुल तीन स्वर्ण, एक रजत एवं एक कांस्य पदक जीतने में सफल रहा। एक और स्वर्ण डेनियल रोबीलार्ड ने 4000 मी. व्यक्तिगत परसूट में जीता, जिसमें एक जबर्दस्त नजारा देखने को मिला। फाइनल में

पश्चिमी जर्मनी का मुकाबला डेनमार्क से रहा था। जर्मन चालकों ने 4:18.94 का समय लेकर इस दौड़ को पहले पूरा किया; लेकिन दौड़ पूरी होने के पहले दो चालकों द्वारा एक दूसरे को छूने पर डेनमार्क ने आपत्ति उठाई, फलस्वरूप पश्चिमी जर्मनी को अयोग्य करार देकर डेनमार्क को (4 : 22.44 सेकेंड के बावजूद) स्वर्ण दे दिया गया। 104 कि.मी. की टीम रोडरेस में हालैंड फिर चैंपियन बना। दूसरे स्थान पर आनेवाली स्वीडिश टीम के चारों सदस्य—एरिक, गास्ता, स्टूरे एवं थामस पेटरसन सगे भाई थे। इनमें गोस्ता ने 196.2 कि.मी. लंबी व्यक्तिगत रोड रेस में कांस्य पदक भी जीता था, जबकि थामस को छोड़कर शेष तीनों भाइयों ने टीम रोड रेस, टोकियो में कांस्य पाया था।

तलवारबाजी में रूसी महिलाओं ने दोनों ही खिताबों पर कब्जा किया। फॉयल व्यक्तिगत में 21 वर्षीया थेलेना नोवीकोवा ने मैक्सिकन मारिया डेल पिलर रोल्डन् को मात दी, जोकि अपना संन्यास तोड़कर घरेलू दर्शकों के सामने उतरी थी। नोवीकोवा (बाद में बेलोवा) ने अपने चार ओलंपिक्स कैरियर (1968-1980) में इस स्वर्ण के अतिरिक्त तीन स्वर्ण एवं एक रजत जीते। सेब्रे में 35 वर्षीय पोलिश जेर्जी पावलोवस्की ने 1928 से चले आ रहे हंगरी के वर्चस्व को तोड़ा। लेकिन बिडंबना देखिए कि पोलिश सेना में मेजर के पद पर काम करनेवाले पावलोवस्की को 1981 में जासूसी करने के लिए कहा गया और जब उसने इंकार कर दिया तो उसे जासूसी के ही आरोप में 25 वर्ष के लिए जेल में डाल दिया गया और उसका नाम तमाम रिकार्ड पुस्तकों से हटा दिया गया। माडर्न पेंटाथलन में स्वीडनवासी 24 वर्षीय अर्थशास्त्र का छात्र ब्योर्न फर्म हंगरी के एंड्रेज़ बाल्कज़ा से कड़ी प्रतिद्वंद्विता के बाद जीता लेकिन टीम-स्पर्धा में हंगरी ही पहले स्थान पर रहा।

जौकीगोल्के में संपन्न रोइंग प्रतियोगिता के दौरान मैक्सिको की विरल जलवायु नाविकों के लिए भी परेशानी का कारण बनी। इसके अलावा इस प्रतियोगिता में अमरीका द्वारा एक भी स्वर्ण न जीत पाना चर्चा का विषय रहा। सिर्फ पश्चिमी जर्मनी ही दो स्वर्ण जीत पाया। 'एट्स' में स्वर्ण जीतनेवाले पश्चिमी जर्मन दल में 14 वर्ष, 183 दिन का एक बालक गुंथर टीश्र्च भी था, जोकि इस आयोजन का सबसे कनिष्ठ स्वर्ण पदक विजेता था। रजत विजेता आस्ट्रेलियाई दल में एक उल्लेखनीय सदस्य गैरी पियर्स भी था, जिसके चाचा राबर्ट पियर्स ने 1928 एवं 1932 में सिंगल एकल्स में स्वर्णिम सफलता हासिल की थी। केनोइंग में भी योरोपीय देशों का वर्चस्व रहा। हंगरी एवं रूस ने दो-दो स्वर्ण पदक जीते। एकापल्को में आयोजित यार्टिंग के 5.5 मीटर वर्ग में सुंडेलिन भाइयों (उल्फ, योर्गन एवं पीटर) से सज्जित स्वीडिश दल ने स्वर्ण पदक पाया। रजत पानेवाले स्विस दल के एक सदस्य लुईस नोवेराज़ की आयु लगभग 66 वर्ष थी।

बास्केटबाल में अमरीका इस बार भी स्वर्ण पदक जीतने में सफल रहा, जबकि फुटबाल में बुल्गारिया को हराकर हंगरी ने अपना खिताब बचाया। रूस ने वालीबाल में पुरुष एवं महिला दोनों का स्वर्ण जीता, जबकि जापान दोनों में उपविजेता रहा। परंतु हाकी में पिछली सात बार का विजेता भारत पहली बार फाइनल में भी नहीं पहुँच पाया। उसे कांस्य पदक से ही संतोष करना पड़ा। पाकिस्तान ने इसका स्वर्णपदक मोहम्मद असद मलिक द्वारा किए गए एकमात्र गोल से आस्ट्रेलिया को हराकर जीता।

इस तरह यह ओलंपिक-कुंभ भी संपन्न हुआ। मेजबान देश के सामर्थ्य के अनुसार यह आयोजन संतोषप्रद था। कम वायुमंडलीय दबाव होने के बावजूद ऐसी कोई बड़ी दुर्घटना नहीं घटी, जिसका पहले काफी अंदेशा था। यों इस आयोजन के साथ भी अनेक विशिष्टताएँ जुड़ीं, पर उनमें से एक तो लगभग हर आयोजन की परंपरा-सी बन गई है। ओलंपिक में 'शुभंकर' की परंपरा का प्रादुर्भाव यहीं से हुआ। पाँच छल्लों के ऊपर अंकित एक कबूतर को जिसे 'पालोमा' नाम दिया गया, इस खेल के प्रतीक-चिह्न के रूप में अपनाया गया था।

पदक-तालिका– 1968

देश	स्वर्ण	रजत	कांस्य
अमरीका	45	28	34
सोवियत संघ	29	32	30
जापान	11	7	7
हंगरी	10	10	12
पूर्वी जर्मनी	9	9	7
फ्रांस	7	3	5
चेकोस्लोवाकिया	7	2	4
पश्चिम जर्मनी	5	11	10
आस्ट्रेलिया	5	7	5
ग्रेट ब्रिटेन	5	5	3
पोलैंड	5	2	11
रूमानिया	4	6	5
इटली	3	4	9
केन्या	3	4	2

मैक्सिको	3	3	3
यूगोस्लाविया	3	3	2
हालैंड	3	3	1
बुल्गारिया	2	4	3
ईरान	2	1	2
स्वीडन	2	1	1
तुर्की	2	—	—
डेनमार्क	1	4	3
कनाडा	1	3	1
फिनलैंड	1	2	1
इथोपिया	1	1	—
नार्वे	1	1	—
न्यूजीलैंड	1	—	2
ट्यूनीशिया	1	—	1
पाकिस्तान	1	—	—
वेनुजुएला	1	—	—
क्यूबा	—	4	—
आस्ट्रेलिया	—	2	2
स्विट्जरलैंड	—	1	4
मंगोलिया	—	1	3
ब्राजील	—	1	2
बेल्जियम	—	1	1
दक्षिण कोरिया	—	1	1
यूगांडा	—	1	1
केमरुन	—	1	—
जमैका	—	1	—
अर्जेंटाइना	—	—	2
ग्रीस	—	—	1
भारत	—	—	1
ताईवान	—	—	1

बीसवाँ ओलंपिक : 1972–म्यूनिख

1936 के बर्लिन ओलंपिक खेलों में हिटलर ने जर्मनी की जो छवि बनाई थी, उससे जर्मनवासियों की स्थिति काफी संशयपूर्ण हो गई थी। लिहाजा जब 6 मई, 1966 को आई. ओ. सी. ने पश्चिमी जर्मनी के दक्षिणी प्रांत बेवरिया की राजधानी म्यूनिख को बीसवें आयोजन का दायित्व सौंपा, तभी से जर्मनवासी इसे भव्य, आकर्षक एवं यादगार बनाने में जुट गए ताकि 36 वर्ष पूर्व बर्लिन में लगा दाग धुल जाए। अपने इस प्रयास के लिए उन्होंने विपुल मात्रा में धन खर्च किया और नवीनतम तकनीकों, मसलन कंप्यूटर आदि का सहारा लेकर उन्होंने खिलाड़ियों के खेल-स्थल एवं आवास-स्थल को एकदम आधुनिक बनाया। मुख्य स्टेडियम, स्वीमिंग पूल एवं इंडोर स्पोर्ट्स कांपलेक्स के ऊपर (करीबन 75,000 वर्ग मी. क्षेत्र) में पारदर्शी काँच की छत लगाई गई। इतना ही नहीं, मुख्य स्टेडियम को ताप-नियंत्रित करके बनाया गया, ताकि एथलीट अपना श्रेष्ठ प्रदर्शन कर सकें। कम से कम दूरी को ध्यान में रखकर लगभग सभी खेल-स्थल छः किलोमीटर की परिधि में बनाए गए। इस बार इस खेल का 'शुभंकर' जर्मन जाति के श्वान का बच्चा रखा गया, जिसे 'डाचशुंड वाल्डे' नाम दिया गया।

परंतु म्यूनिख की ये सारी व्यवस्थाएँ और सुविधाएँ उस समय निरर्थक हो गईं, जब रोडेशिया को इन खेलों में आने देने के कारण अश्वेत अफ्रीकी देशों ने बहिष्कार की घोषणा कर दी। इस प्रसंग में आई. ओ. सी. की स्थिति बड़ी दुविधापूर्ण हो गई, क्योंकि रोडेशिया उससे पूर्व अनुमति ले चुका था। इस अनुमति के अनुसार ही वह ब्रिटिश साम्राज्य के एक भाग के नाते 46 मिश्रित खिलाड़ियों का दल लेकर म्यूनिख आया था। परंतु अश्वेत अफ्रीकी देशों ने यह स्वीकार नहीं किया। तब आई. ओ. सी. ने वोटिंग के जरिए निर्णय लिया और 36 : 37 के मत से रोडेशिया को वापस लौट जाने पर मजबूर कर दिया।

इस घटना के पटाक्षेप के पश्चात 26 अगस्त को पश्चिमी जर्मनी के राष्ट्रपति गुस्ताव हीनश्मान ने नपे-तुले शब्दों में इन खेलों के उद्घाटन की घोषणा की। तत्पश्चात् रोइंग में एट्स की स्पर्धा जीतनेवाले सदस्यों ने ओलंपिक-ध्वज फहराया और फिर बेवरियाई नृत्य हुआ। इसके बाद 18 वर्षीय तरुण गुंथर जान ने ओलंपिया से प्रज्वलित ज्योति लेकर स्टेडियम में प्रवेश किया और उसे सीढ़ियों से ऊपर जाकर ज्योति कुंड में झुका दिया। इसके बाद चिकित्सा विज्ञान की 20 वर्षीय छात्रा एथलीट डीडी सुलर ने खेलों की पवित्रता बनाए रखने के लिए सभी प्रतियोगियों की ओर से शपथ ली। उल्लेखनीय है कि ओलंपिक खेलों में पहली बार यहीं एक महिला को शपथ दिलाने का

सौभाग्य मिला। इस बार 122 देशों के 5848 पुरुष एवं 1299 महिला प्रतियोगियों ने भाग लिया। पुरानी परंपरा के अनुसार इस बार भी कुछ नए देश पहली बार ओलंपिक खेल की शोभा बने, जिसमें अल्बानिया, गाबोन, मालावी, उत्तरी कोरिया, सोमालिया, स्वाजीलैंड, टोगो एवं उत्तरी वोल्टा शामिल हैं।

ओलंपिक का वह काला दिन

ओलंपिक खेल हल्की-फुल्की झड़पों के बावजूद नियोजित और सुरुचिपूर्ण ढग से चल रहे थे। लेकिन 5 सितंबर की सुबह ओलंपिक इतिहास की सबसे मनहूस सुबह साबित हुई, जिसने इसके एक उज्ज्वल अध्याय पर कालिख पोत दी। घटना थी—फिलिस्तीन समर्थक ब्लैक सेप्टेंबर नामक आतंकवादी संगठन के पाँच छापामारों द्वारा खेल गाँव में दो इजराइली खिलाड़ियों को मारकर शेष नौ को बंधक बना लेने की। इस संबंध में छापामारों की माँग थी कि इजराइली जेलों में बंद लगभग 200 फिलिस्तीनी बंदियों को रिहा किया जाए। इस घटना से निपटने के लिए उच्चस्तरीय प्रयास किया गया। फिर भी पश्चिमी जर्मनी के चांसलर विली ब्रांट को इसमें कोई सफलता नहीं मिली। तब छापामारों को ऊपरी तौर पर काहिरा भेजने की बात कही गई और उन्हें पर्स्टन पैल्दुक हवाई अड्डे पर लाया गया; जहाँ जर्मन कमांडो दल ने हमला कर उनमें से तीन छापामारों को मार दिया। तब एक छापामार ने हथगोले से उस हैलीकाप्टर को उड़ा दिया, जिसमें इजराइली खिलाड़ी सवार थे। इस घटना से सारा ओलंपिक गाँव शोक में डूब गया और सब जगह स्तब्धता छा गई। इस स्थिति में कुछ लोगों ने इस खेल को यहीं समाप्त करने की बात की, जिनमें आयोजन समिति के अध्यक्ष विली डाम भी थे। परंतु एवेरी ब्रुडेज ने इसका प्रतिवाद किया और अगले दिन सुबह 9 बजे मृत खिलाड़ियों को श्रद्धांजलि देने के बाद स्पर्धाएँ आरंभ हो गईं। इस प्रकार ब्रुडेज ने यह दिखा दिया कि राजनीति के काले कारनामे भी इस ओलंपिक-ज्योति को नहीं बुझा सकते, परंतु इसके बाद स्पर्धाओं में वह रौनक नहीं रही और मात्र खानापूर्ति के लिए ही खिलाड़ियों ने अपने कर्तव्य का पालन किया।

तैराकी का बादशाह स्पित्ज

ओलंपिक पर लगे इस दाग के अलावा यह आयोजन अनेक खिलाड़ियों के श्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए भी याद किया जाएगा। इन्हीं श्रेष्ठ खिलाड़ियों में एक इंडियाना विश्वविद्यालय, अमरीका का दंत चिकित्सा विज्ञान का छात्र मार्क एंड्रयू स्पित्ज भी था, जिसने सात स्वर्ण पदक जीतकर अपने आपको ओलंपिक के इतिहास-पुरुष के रूप में स्थापित कर लिया। इससे पहले एक ही ओलंपिक में इतने ज्यादा स्वर्ण पदक एक ही खिलाड़ी द्वारा नहीं जीते

गए थे, अलबत्ता 1920 में अमरीकी निशानेबाज विलेस ली ने सात टीम स्पर्धाओं में पाँच स्वर्ण, एक रजत एवं एक कांस्य पदक जीता था। यहाँ स्पित्ज ने आठ दिनों में कुल तेरह बार विभिन्न स्पर्धाओं में भाग लिया और चार व्यक्तिगत स्पर्धाओं (100 एवं 200 मी. फ्री स्टाइल तथा 100 एवं 200 मी. बटरफ्लाई) में नया विश्व-रिकार्ड बनाया। इसके। अतिरिक्त वह 4 × 100 एवं 4 × 200 मी. फ्री स्टाइल रिले और 4 × 100 मी. मिडले रिले में भी स्वर्ण विजेता अमरीकी दल का सदस्य था, जिसमें अंतिम दो में उसने अपने साथियों के साथ नया विश्व-रिकार्ड बनाया। 10 फरवरी, 1950 को मोडस्टो (कैलीफोर्निया) मे जन्मे स्पित्ज ने मैक्सिको ओलंपिक में भी भाग लिया था, जहाँ उसने छः स्वर्ण पदक जीतने की घोषणा की थी, परंतु वह मात्र एक रजत एवं एक कांस्य ही जुटा सका। समीक्षकों ने जब उसे बड़बोला कहा तो उसने उसे चुनौती समझा और म्यूनिख के लिए कड़ा परिश्रम किया और सफलताएँ जुटाईं। यहाँ अंतिम स्वर्ण जीतने के पश्चात (4+100 मी. मिडले में) वह तुरंत ही अमरीका वापस आ गया था, क्योंकि यहूदी होने के कारण उसे भी फिलिस्तीनी छापामारों से खतरा था। म्यूनिख की अपनी इस अपार सफलता को भुनाने के लिए सवा छः फुट ऊँचे और 160 पौंड वजन का मालिक स्पित्ज तैराकी एवं पढ़ाई को सलाम ठोककर माडलिंग में घुस गया और खूब पैसा बनाया।

महिलाओं में स्पित्ज-जैसी ख्याति आस्ट्रेलिया की नादान तरुणी शेन गोल्ड को मिली, जिसने तीन स्वर्ण, एक रजत एवं एक कांस्य पदक (सभी व्यक्तिगत मुकाबले में) जीतकर अमरीकी तैराकों की आशाओं पर तुषारापात कर दिया। 4 सितंबर, 1956 को बिस्बेन में जन्मी शेन गोल्ड मात्र 14 वर्ष की उम्र में ही उस समय विश्वस्तरीय तैराकों की श्रेणी में आ गई, जब उसने 100 से 1500 मी. फ्री स्टाइल तक की सभी पाँचो स्पर्धाओं में विश्व-कीर्तिमान भंग किया। म्यूनिख में उसने आठ दिनों में 12 दौड़ों में भाग लिया और वह 200 मी. फ्री स्टाइल (2 : 03.56 सेकेंड), 400 मी. फ्री स्टाइल (4 : 19.44 सेकेंड) एवं 200 मी. व्यक्तिगत मिडले में (2:23.07 सेकेंड) विश्व-रिकार्ड बनाकर तीन व्यक्तिगत स्वर्ण जीतनेवाली पहली महिला तैराक हुई। मगर उसे और स्तरीय तैराक बनने के लिए परिश्रम करना नहीं भाया और उसने अगले ही साल तैराकी को अलविदा कह दी।

शेन की तरह अमरीका की 16 वर्षीया मैलिसा बेलोट ने बैकस्ट्रोक शैली में महारत से तीन स्वर्ण जुटाए। उसने 100 मी. एवं 200 मी. की व्यक्तिगत स्पर्धाओं के अलावा 4 × 100 मी. मिडले रिले में भी सोने का तमगा जीता। 15 वर्ष, 118 दिन आयु की डीना डियरडर्फ भी मिडले टीम की सदस्या थी, जो इस आयोजन की सबसे युवा विजेता बनी। पुरुषों में 200 एवं 400 मी. की व्यक्तिगत मिडले स्वीडन के 21 वर्षीय गुन्नार लार्सन ने अमरीकी प्रतिद्वंद्वियों को पीछे छोड़कर जीती। परंतु इन सफलताओं के पीछे दिल

तोड़नेवाली एक घटना भी घटी। 400 मी. फ्री स्टाइल के स्वर्ण विजेता 16 वर्षीय कैलिफोर्नियाई रिक डीमोंट से दो दिन बाद उसका पदक छीन लिया गया, क्योंकि उसके मूत्र-परीक्षण से प्रतियोगिता के पूर्व प्रतिबंधित दवाई लेने की पुष्टि हो गई। मासूम डीमोंट ने भी स्वीकार किया कि दमा के कारण उसने उक्त दवाई खाई थी। फिर भी आई.ओ.सी. ने कोई रियायत नहीं बरती। इस तरह अमरीकी अधिकारियों की लापरवाही से डीमोंट का उज्ज्वल भविष्य खत्म हो गया।

एथलेटिक्स के पुरुष वर्ग में रूसी एवं अमरीकी एथलीटों ने 24 में से आधी स्पर्धाएँ (दोनों ने छः-छः स्वर्ण) जीतकर अपना दबदबा बनाने का प्रयत्न किया। वैसे इस बार अमरीकी खिलाड़ियों पर भाग्य की कृपादृष्टि नहीं थी, अन्यथा 100 मी. स्प्रिंट, 1600 मी. रिले एवं पोलवाल्ट में भी उतने स्वर्ण जीतने का अच्छा अवसर था। इसमें 4 ×400 मी. रिले का निश्चित स्वर्ण उस समय उनके हाथ से निकल गया, जब टीम के छः में से दो सदस्यों को वापस अमरीका भेज दिया गया और तीसरा एन वक्त पर घायल हो गया। लिहाजा अमरीका को अपना नाम वापस लेना पड़ा। इस रिले दौड़ का स्वर्ण अप्रत्याशित रूप से केन्या ने जीता। 400 मीटर दौड़ में स्वर्ण एवं रजत जीतनेवाले अश्वेत धावक विन्सेंट मैथ्यूज़ एवं वेन कोलेट पदक-वितरण समारोह में अमरीकी ध्वजारोहण के समय चुप रहने की बजाय आपस में बतियाते रहे। बाद में उन दोनों ने 'ब्लैक सेल्यूट' भी दिया। उनकी इस अभद्रता को आई.ओ.सी. ने ओलंपिक भावना के प्रति अशिष्टता माना और उन दोनों को तुरंत आगे की प्रतियोगिता के लिए प्रतिबंधित कर दिया।

100 मीटर में दो अमरीकी धावक एडीहार्ट एवं री रोबिसन समय की गड़बड़ी के कारण क्वार्टर फाइनल में भाग न ले सके। इसी वजह से इसमें स्वर्ण पानेवाले 22 वर्षीय रूसी वलेरी बोरजोव कीजी को ज्यादा महत्त्व नहीं मिल पाया, यद्यपि बोरजोव इस दौड़ में 'फेवरेट' माना गया था। दो दिन बाद नीली आँखोंवाले इस योरोपियन ने 200 मीटर की सपाट दौड़ भी 20.0 सेकेंड से जीतकर लोगों का भ्रम तोड़ा। बोरजोव ने मांट्रियल ओलंपिक के बाद, जिसमें उसने 100 मी. में काँसे का पदक जीता था, अपने ही देश की जिमनास्ट लुडमिला तुरिशेवा से विवाह रचाया, जिसने 1972 एवं 1976 ओलंपिक में तीन स्वर्ण, तीन रजत एवं दो कांस्य पदक जीते थे।

अप्रत्याशित परिणामों का जोर

एक अन्य अमरीकी धावक डेविड वारल ने, जोकि गोल्फ कैप पहनकर दौड़ता था, 800 मीटर में रूसी येवगेनी अरझानेव से मात्र 1 इंच के फासले से पहले टेप छूकर अप्रत्याशित परिणाम दिया। 1500 मीटर की दौड़ में भी अप्रत्याशित परिणाम आया, जबकि दिग्गज कीपचागे कोयने एवं जिम श्यून की उपस्थिति में फिनलैंड के पेक्का वासला ने स्वर्ण

पदक जीतकर स्वयं को भी हतप्रभ कर दिया। ठीक ऐसा ही करिश्मा 400 मी. बाधा दौड़ में भी हुआ, जिसमें यूगांडा के एक अपरिचित पुलिस सिपाही जान अकी-बुआ ने विश्व-रिकार्ड (47.82 सेकेंड) स्थापित कर स्वर्ण जीत लिया। अकी-बुआ को, जिसके पिता की आठ पत्नियाँ एवं 43 बच्चे थे, इदी अमीन सरकार का तख्ता पलटने के बाद केन्याई जेल में डाल दिया गया था, परंतु एक माह बाद उसकी ख्याति के कारण उसे छोड़ दिया गया। मैराथन दौड़ में भी एक नया विजेता सामने आया। यह था अमरीका का फ्रेंक शार्टर, जो म्यूनिख में ही जन्मा था।

परंतु इन सभी धावकों की उपलब्धियाँ फिनलैंड के एक शर्मीले पुलिस सिपाही लासे अरतुरी वीरेन के सामने धूमिल हो गईं। लासे ने 31 अगस्त को 10,000 मी. दौड़ में भाग लेकर रान क्लार्क के सात वर्षों से चले आ रहे विश्वरिकार्ड (27 : 38.4 सेकेंड) को खंडित कर स्वर्ण पदक जीता। फिर दस दिन बाद वह 5,000 मी. की दौड़ में ब्लादिमिर कुट्स के ओलंपिक रिकार्ड को भंग करते हुए 13 मिनट 26.4 सेकेंड के समय के साथ जीता। इस प्रकार वह हेंस कोलेहमैनेन, एमिल जातापेक एवं ब्लादिमिर कुट्स के बाद लंबी दूरी में डबल बनानेवाला चौथा धावक हुआ। परंतु 22 जुलाई, 1949 को छोटे-से गाँव मिरस्कीला में जन्मे वीरेन की भूख अभी शांत नहीं हुई थी। चार वर्ष बाद उसने मांट्रियल ओलंपिक में पुनः यह प्रदर्शन दोहराकर अपने आपको इतिहास-पुरुष के रूप में स्थापित कर लिया। हालाँकि इस जीत के पीछे उस पर 'ब्लड डूपिंग' के नाजायज तरीके का सहारा लेने का आरोप लगाया गया, परंतु उसने इसका खंडन किया। उसने जातापेक के कीर्तिमान की पुनरावृत्ति के लिए मैराथन दौड़ में भी भाग लिया, परंतु चौथे स्थान पर ही रहा। मास्को में उसने पुनः 10.000 मीटर में भाग लिया, किंतु पाँचवें स्थान पर रहा, जबकि मैराथन दौड़ वह तकलीफ के कारण पूरी नहीं कर पाया। फिर भी फ्लाइंग फिन्नो की परंपरा में उसका नाम हमेशा लिया जाएगा।

फील्ड इवेंट में पोलवाल्ट स्पर्धा में बाँस के लिए प्रयुक्त पदार्थ को लेकर काफी विवाद रहा। इन खेलों के ठीक पहले इंटरनेशनल एमेचर एथलेटिक्स फेडरेशन ने 'कारा-पोल' नामक माडलवाले बाँसों के उपयोग पर बंदिश लगा दी। इस वजह से पूर्व विजेता अमरीकी सीग्रेन, जो कि 5.63 मीटर की ऊँचाई नाप चुका था, मात्र 5.40 मी. की ऊँचाई ही लाँघ सका और उसे मजबूरन रजत पदक से संतुष्ट होना पड़ा। यह पहला अवसर था जब ओलंपिक के दौरान अमरीका ने पोलवाल्ट में स्वर्ण खोया। पूर्वी जर्मनी के 29 वर्षीय प्रीसीशन इंजीनियर वाल्फगेंग नार्डविग ने 5.50 मीटर (ओलंपिक-रिकार्ड) ऊँचाई नापकर स्वर्ण जीता। लंबी कूद में 19 वर्षीय घायल अमरीकी रैंडी विलियम्स ने पहली ही कूद से पहला स्थान बना लिया। विलियम्स शगुन के लिए खिलौना भालू का बच्चा सदा अपने पास रखता था।

प्रक्षेपण स्पर्धाओं की चक्का फेंक में अर्लओर्टर युग की समाप्ति के बाद चेक लुडविक डानेक ने अमरीकी जे. सिलवेस्टर को हराकर स्वर्ण पदक जीता। गोला फेंक में 32 वर्षीय बदमिजाज़ पोलिश खिलाड़ी ब्लादीस्लाव कोमार ने 21.18 मी. फेंक (ओलंपिक-रिकार्ड) के साथ सोने का तमगा जीता, जबकि भाला फेंक में मेजबान देश के क्लाज़ वोल्फरमेन एवं पूर्व विजेता जेनिस लुसिज़ में कड़ा मुकाबला देखने को मिला। वोल्फरमेन ने अपने पाँचवें थ्रो में 90.48 मी. दूर भाला फेंककर दर्शकों को रोमांचित कर दिया। लुसिज़ ने भी अपने अंतिम दौर में अच्छा थ्रो फेंका, लेकिन बदकिस्मती से वोल्फरमेन के फेंक से मात्र 2 सेंटीमीटर कम रहा, फलस्वरूप उसे रजत पदक से संतुष्ट होना पड़ा। डेकाथलन के राजपुरुष का खिताब इस बार युक्रेरियन (रूस) के 24 वर्षीय निकोलाई एवीलोव ने जीता। बाद में उसने अपनी महिला साथी वेलेंतिना कोज़ीर से निकाह किया, जिसने मैक्सिको हाई जंप में कांस्य पदक जीता था।

महिला वर्ग में ट्रेक में पूर्व जर्मनी और फील्ड में रूसी एवं मेजबान देश की महिलाओं के वर्चस्व से अमरीकी गढ़ बुरी तरह ध्वस्त हो गया और दौड़-कूद प्रतियोगिता में उसकी टीम पहली बार बगैर स्वर्ण पदक के स्वदेश लौटी। पूर्वी जर्मनी की 22 वर्षीया रिनेट स्टेचर ने 100 मी. (11.0 सेकेंड) एवं 200 मी. (22.40 सेकेंड) फर्राटा दौड़ जीतकर शानदार डबल बनाया। 200 मी. में उसने विश्वरिकार्ड की भी बराबरी की। 400 मीटर में पूर्वी जर्मनी की ही 19 वर्षीया मोनिका जेइर्ट लोकल फेवरेट रीटा विल्डेन को हराकर पहले स्थान पर आई। 100 मीटर बाधा दौड़ में इजराइल की ख्याति प्राप्त धाविका एस्टर शाखामोरोव (जोकि अपनी टीम के सदस्यों की हत्या से शोकग्रस्त थी) की अनुपस्थिति में पूर्वी जर्मनी की एनेली एहरहार्ड ने विश्वरिकार्ड स्थापित करते हुए (12.59 सेकेंड) स्वर्ण पदक जीता।

पेंटाथलन की जबर्दस्त इच्छा-शक्तिवाली स्पर्धा बेलफास्ट (उत्तरी आयरलैंड) की 33 वर्षीया मेरी पीटर्स ने नए विश्व-कीर्तिमान (4801 अंक) के साथ जीती। भाला फेंक में अमरीकी विश्व-रिकार्डधारी रूथ फुच्स बड़ी आसानी से स्वर्ण पदक जीत गई। वह मांट्रियल में भी विजयी रही थी, किंतु इस स्पर्धा का सबसे सनसनीखेज परिणाम 4 सितंबर को आया, जब मेजबान देश की 16 वर्ष, 123 दिन आयु की एक स्कूली छात्रा उलरिका नेफर्थ ने विश्व-कीर्तिमान (1.92 मी.) की बराबरी करते हुए ऊँची कूद में स्वर्ण पदक जीता। 1.93 मीटर कदवाली मेफर्थ ने 12 वर्ष बाद लासएंजिल्स में भी इस स्पर्धा में स्वर्ण जीता। एक और उल्लेखनीय प्रदर्शन पश्चिमी जर्मनी की 25 वर्षीया होडमारी रोसेनडाल का रहा, जिसने लंबी कूद एवं 400 मीटर रिले में स्वर्ण और पेंटाथलन में रजत पदक जीता।

मुक्केबाजी में क्यूबा के रूप में एक नई शक्ति का उदय हुआ, जिनकी चुस्ती एवं

खेल-कौशल ने दर्शकों को बाँधकर रख दिया। उसके पाँच मुक्केबाज सेमीफाइनल तक पहुँचे, जिसमें से तीन ने विजेता का ताज भी पहना। सबसे उल्लेखनीय जीत सुपर हैवीवेट वर्ग में 6 फुट 4 इंच ऊँचे भारी-भरकम शरीर एवं भुजाओं में पाशविक शक्तिवाले रियोफिलो स्टीवंसन की रही, जिसे यह खिताब जीतने के लिए सिर्फ छः राउंड ही लड़ना पड़ा। 'मिस्टर गुल' स्टीवंसन ने अगले दो ओलंपिक में भी इसी वर्ग का खिताब जीता और एक ही वर्ग में लगातार तीन स्वर्ण पदक जीतनेवाला पहला बाक्सर बना। यदि क्यूबा साम्यवादी देशों के साथ 1984 के लासएंजिल्स का बहिष्कार नहीं करता तो वह निश्चित रूप से अपना चौथा स्वर्ण भी जीत जाता। अलबत्ता इस बार उसे सर्वश्रेष्ठ स्टाईलिश बाक्सर के लिए वाल बार्कर ट्राफी दी गई। बाद में वह क्यूबा की संसद में निर्वाचित होकर उपसभापति भी बना। ख्याति उसे इसलिए भी मिली, क्योंकि उसने 20 लाख अमरीकी डालर का लालच दिए जाने के बावजूद पेशेवर मुक्केबाज बनने से इंकार कर दिया। एक अन्य विजेता (लाइट हैवीवेट वर्ग में) यूगोस्लाव मेट पारलोव आगे चलकर पेशेवर बन गया और 1978 में विश्व लाइट हैवीवेट वर्ग का खिताब जीता।

बपौती साम्यवादी देशों की

कुश्ती के अखाड़े में रूसी पहलवानों का कोई सानी नहीं था। उन्होंने दोनों वर्गों के कुल बीस स्वर्ण पदकों में से आधे अकेले ही जीत लिए। ग्रीको-रोमन में तो सभी स्वर्ण पदक कम्युनिस्ट देश के पहलवानों के हाथ लगे, जबकि फ्री स्टाइल में अमरीका ने तीन एवं जापान ने दो टाइटिल जीतकर रूसी प्रभाव को कुछ कम किया। अमरीकी बेन पेटरसन ने रूसी गेनडी स्ट्रारवोव को हराकर लाइट हैवीवेट वर्ग का खिताब जीता, जबकि उसके भाई जान को मिडिलवेट वर्ग में रूसी लेवन तेदियाशविली (जोकि कानून का छात्र था और बाद में उसकी गिनती विश्व के बेहतरीन शौकिया पहलवानों में हुई) के बाद रजत से संतोष करना पड़ा। चार वर्ष बाद मांट्रियल में जान ने इस वर्ग में स्वर्ण पदक जीता, जबकि बेना को तेदियाशविली से हारकर रजत पदक से संतुष्ट होना पड़ा।

1964 के बाद जूडो की वापसी हुई, जिसमें जापान ने छः में से हल्के वर्ग के तीनों टाइटिल जीत लिए। परंतु हालैंड के 32 वर्षीय विलेम रस्क ने हैवीवेट एवं खुले वर्ग (दोनों) में स्वर्ण पदक जीतकर भारी ख्याति प्राप्त की और एक अनूठा कीर्तिमान बनाया। लाइटवेट (63 कि. ग्रा.) वर्ग में रजत पानेवाले मंगोलियाई जुडोको बखावा बुईडा को 'ड्रग टेस्ट' में असफल होने के कारण पदक से वंचित कर दिया गया।

भारोत्तोलन में भी साम्यवादी देशों के लिफ्टरों का बोलबाला रहा और रूस ने नौ में से चार स्वर्ण जीतकर शेर दिल की भूमिका अदा की। सुपर हैवीवेट वर्ग में छः फुट सवा

इंच ऊँचे कद एवं 337 पौंड के रूसी वेसिली अलेक्सीव ने सभी ओलंपिक रिकार्ड भंग करते हुए 30 रिलों के फासले से स्वर्ण पदक जीता। नाश्ते में 26 आमलेट एवं जेली खानेवाले माइनिंग इंजीनियर अलेक्सीव ने मॉंट्रियल में भी अपनी कामयाबी दोहराई। 7 जनवरी, 1952 को जन्मे अलेक्सीव ने 1970 से 1977 तक इस वर्ग में एकछत्र राज्य किया। इस दौरान उसने छः बार विश्व-चैंपियनशिप में भी विश्व में सबसे ताकतवर का सम्मान पाया और 100 से भी ज्यादा बार विश्व-रिकार्ड भंग किया। मास्को ओलंपिक से छः माह पहले मोटर दुर्घटना में घायल हो जाने से वह अपने स्वर्ण का हैट्रिक नहीं कर सका। फिर भी उसकी सेवाओं को याद रख उसे 'आर्डर ऑफ लेनिन' से सम्मानित किया गया। बैंटमवेट वर्ग में हंगरी के जाँबाज़ भारोत्तोलक इमरे फोल्डी ने लगातार दो ओलंपिकों में रजत पाने के बाद विश्व-रिकार्ड बनाते हुए कुल 377.5 कि. ग्रा. के साथ स्वर्ण जीता। फोल्डी के हाथ की एक उँगली नहीं थी, जबकि एक लगभग निष्क्रिय-सी थी।

नादान गुड़िया ओल्गा

जिमनास्टिक में टीम टाइटिल पिछले तीन ओलंपिकों की तरह जापान (पुरुष) एवं रूस (महिला) ने ही जीता। इस बार दर्शकों की चहेती थी रूस की नादान गुड़िया-सी दिखनेवाली ओल्गा कोरबुट। सोवियत-पोलैंड सीमा के नजदीक ग्रोडनो (बायलो रशिया) में 16 मई, 1955 को जन्मी एवं चार बहनों में सबसे छोटी ओल्गा का चुनाव इस ओलंपिक में एक रिज़र्व खिलाड़ी के रूप में हुआ था, परंतु एक सहयोगी के घायल होने पर उसे व्यक्तिगत टाइटिल की होड़ में उतार दिया गया। मात्र 1.49 मीटर कद तथा 38 कि. ग्रा. शरीरवाली ओल्गा ने अनईवन बार्स में अपने उत्कृष्ठ प्रदर्शन से दर्शकों को सम्मोहित कर लिया, किंतु अगले दिन इसी उपकरण पर फिसलकर गिर जाने से उसके व्यक्तिगत खिताब जीतने का अवसर चला गया। फिर भी उसने बगैर हिम्मत हारे बीम, फ्लोर एक्सरसाइज़ तथा टीम-स्पर्धा में स्वर्ण और अनईवन बार्स में रजत जीता। अगले वर्ष उसने रूसी जिमनास्टिक दल के साथ जब अमरीका का दौरा किया तो उसके नयनाभिराम प्रदर्शन ने अमरीकी जनता को अपना फेन बना लिया। उसकी लोकप्रियता से प्रभावित रूसी अधिकारियों को मॉंट्रियल ओलंपिक में उसे लुडमिला तुरिशेवा के स्थान पर टीम का कप्तान बनाना पड़ा, लेकिन मॉंट्रियल में वह सिर्फ एक ही स्वर्ण (टीम स्पर्धा) जीत सकी। बावजूद इसके उसके प्रशंसकों की संख्या में कोई कमी नहीं आई। फिर अगले वर्ष उसने खेलों से संन्यास लेकर ख्याति प्राप्त सोवियत पाप सिंगर लियोनिद वोरकेविच से विवाह रचा लिया।

घुड़सवारी में ग्रेट-ब्रिटेन और पश्चिम् जर्मनी ने दो-दो स्पर्धाओं में श्रेष्ठता दर्शाई।

ड्रेसाज़ का व्यक्तिगत खिताब मेजबान देश की एक महिला घुड़सवार लाइजलोट लिनसेन हाफ ने जीता, जोकि घुड़सवारी में व्यक्तिगत स्वर्ण जीतनेवाली पहली महिला हुई। इसमें दूसरे स्थान पर भी एक रूसी महिला येलेना पेट्रूश्कोवा ही थी, जो बाद में प्रसिद्ध लांग जंपर वलेरी ब्रुमेल के साथ विवाह-बंधन में बँध गई। स्वर्ण विजेता जर्मन टीम का 46 वर्ष, 49 दिन की उम्रवाला घुड़सवार हैंस-गुंथर विकलर शो-जंपिंग में इस आयोजन का सबसे वरिष्ठ स्वर्ण पदकधारी था।

निशानेबाजी के मुकाबले भी काफी प्रतिस्पर्धात्मक रहे। इनमें सिर्फ अमरीका ही दो स्वर्ण जीतने में सफल रहा। स्माल बोर राइफल (प्रोन स्थिति) में उत्तरी कोरिया के होजुनली ने विश्व-रिकार्ड बनाते हुए (599/600) पहला स्थान प्राप्त किया। ओलंपिक खेलों में यह उत्तरी कोरिया की पहली स्वर्णिम सफलता थी। पोलिश सेना में मेजर के पद पर कार्यरत 43 वर्षीय जोज़फ जपेद्ज़की ने रेपिड फायर पिस्टल का खिताब पुनः जीता। माडर्न पेंटाथलन में हंगरी का 34 वर्षीय टाइपराइटर मैकेनिक एंड्रज़ बाल्कज़ो अंततः तीसरे प्रयत्न में व्यक्तिगत स्वर्ण पाने में सफल रहा। इससे पहले वह 1960 एवं 1968 में क्रमशः टीम स्पर्धा में स्वर्ण और व्यक्तिगत में रजत पदक जीता था। लेकिन इस बार वह हंगरी को टीम स्पर्धा में (सोवियत संघ के बाद) दूसरा स्थान ही दिला पाया।

52 वर्षों के बाद तीरंदाजी फिर से ओलंपिक खेल की शोभा बनी। पुरुषों की स्पर्धा पेनसिलवेनिया (अमरीका) के युवा तीरंदाज जान विलियम्स ने विश्व-रिकार्ड बनाते हुए जीती जोकि अभी अपने 19वें जन्मदिन से मात्र 10 दिन दूर था। इसके विपरीत महिला वर्ग की विजेता डोरीन विल्बर (अमरीका) 42 वर्ष, 246 दिन की थी।

केनोइंग में, जहाँ सीधी दौड़ में रूसी नाविकों ने सात में से छः स्पर्धाएँ जीतकर अपना दबदबा बनाया, वहीं स्लालोम (बाधायुक्त दौड़) में पूर्वी जर्मनी ने सभी चारों स्वर्ण अपनी झोली में डालकर मेजबानों की आशाओं पर तुषारपात किया। यद्यपि स्लालोम में सभी स्पर्धाएँ जीतने की आशा से पश्चिमी जर्मनी ने आक्सबर्ग में 40 लाख रुपयों की लागत से कृत्रिम नदी का निर्माण किया था, परंतु पूर्वी जर्मनी ने भी उक्त डिजाइन-जैसा ही निर्माण कर अपने जबरदस्त और सतत अभ्यास से उनकी मंशा पर पानी फेर दिया। रोइंग में न्यूजीलैंड ने 'एट्स' स्पर्धा जीतकर सबको हतप्रभ कर दिया। इस स्पर्धा में भाग लेने के लिए इस दल को लगभग 3 लाख रुपए चंदा मिला था। काक्सडलेस पेयर्स में पूर्वी जर्मनी के 16 वर्षीय दो बालकों—सिग्फ्रीड ब्रित्जके एवं वोल्फगेंग मेगर ने, जिन्हें 'क्वरमेन पेयर' कहा जाता था, स्वर्ण पदक जीता। पाल नौकायन (याटिंग) में, जोकि कील में आयोजित हुई थी, चश्मे सुधारनेवाले 24 वर्षीय खिलाड़ी जान कूनियो के नेतृत्व में ड्रेगन का स्वर्ण आस्ट्रेलिया ने जीता।

और खुशी ग़म में बदल गई

टीम मुकाबलों में भी अंतिम परिणाम खासे चौंका देनेवाले रहे। बास्केटबाल के फाइनल में जब स्कोर 50-49 से अमरीका के पक्ष में था, तभी खेल की अंतिम सीटी बजी, जिससे अमरीकी खिलाड़ी खुशी मनाने लगे। लेकिन तभी अधिकारियों ने कहा कि अभी खेल समाप्ति में तीन सेकेंड शेष हैं। इस पर मैच पुनः खेला गया जिसमें रूसी अलेक्जेंडर बेलोव ने बास्केट करके अपने देश को एक अंक से जिता दिया। अमरीकी खिलाड़ी इस हार का ग़म सह नहीं पाए और बिना रजत पदक लिए ही म्यूनिख छोड़ गए। इस तरह बास्केटबाल में अमरीका की लगातार आठवीं जीत का ख्वाब टूट गया। वालीबाल के पुरुष वर्ग में इस बार पिछली उपविजेता जापानी टीम ने जीत का स्वाद चखा। महिला वर्ग में जापानी महिलाएँ पाँच सेट के कड़े संघर्ष के बाद 11-15, 15-4, 11-15, 15-9, 11-15 से रूस से हार गईं।

हाकी में काफी तनाव भरे माहौल में फाइनल खेला गया, जिसमें मेजबान पश्चिमी जर्मनी ने माइकल क्राउस के एकमात्र गोल से पूर्व विजेता पाकिस्तान को हराया। परंतु पाकिस्तानी खिलाड़ी एवं अधिकारियों ने गलत अंपायरिंग के खिलाफ विरोध प्रकट करने के लिए पदक-वितरण समारोह के दौरान दिए गए रजत पदक को अपने पैरों से रौंद डाला और पश्चिमी जर्मनी के झंडे की ओर से मुँह फेर लिया। उनकी इस हरकत पर आई. ओ. सी. ने सभी 11 खिलाड़ियों पर आजन्म प्रतिबंध लगा दिया। पाकिस्तानी हाकी फेडरेशन की प्रार्थना पर बाद में, दो साल बाद यह प्रतिबंध उठा लिया गया। फुटबाल में भी इस बार उलट-फेर हुआ। पोलैंड ने फाइनल में हंगरी को 2-1 से हराकर हैट्रिक से वंचित कर दिया। वाटरपोलो में रूस एक नए विजेता के रूप में उभरा।

इस तरह ओलंपिक का यह बीसवाँ आयोजन उल्लसित माहौल से आरंभ होकर मायूसी भरे वातावरण में संपन्न हुआ। समापन समारोह पूर्व निर्धारित कार्यक्रम से एक दिन आगे बढ़ाकर 11 सितंबर को रखा गया, परंतु ज्योति की आभा तो पहले ही कम हो चुकी थी। श्रेष्ठता के हिसाब से यह आयोजन रूस के लिए काफी सफल रहा, जिसने 33 स्वर्ण पदकों के मुकाबले 50 स्वर्ण जीतकर अमरीका को काफी पीछे छोड़ दिया। पूर्वी जर्मनी की कामयाबी भी यहाँ नजरंदाज नहीं की जा सकती। उसकी झोली में 20 स्वर्ण, 23 रजत एवं 23 कांस्य पदक आए। इस आयोजन के तुरंत बाद लुसाने में आई. ओ. सी. की बैठक में 84 वर्षीय एवेरी ब्रुडेज ने ओलंपिक अध्यक्षता की कुर्सी ब्रिटेन के 58 वर्षीय लार्ड किलानीन को सौंप दी। नवीनतम तकनीक के सहारे इस बार ओलंपिक खेलों के अंतिम परिणाम समापन समारोह के चंद घंटे बाद ही उपलब्ध हो गए, जो कि इस आयोजन की एक प्रमुख उपलब्धि रही।

पदक-तालिका—1972

देश	स्वर्ण	रजत	कांस्य
रूस	50	27	22
अमरीका	33	31	30
पूर्वी जर्मनी	20	23	23
पश्चिमी जर्मनी	13	11	16
जापान	13	8	8
आस्ट्रेलिया	8	7	2
पोलैंड	7	5	9
हंगरी	6	13	16
बुल्गारिया	6	10	—
इटली	5	3	10
स्वीडन	4	6	6
ग्रेट ब्रिटेन	4	5	9
रूमानिया	3	6	7
क्यूबा	3	1	4
फिनलैंड	3	1	4
नीदरलैंड	3	1	1
फ्रांस	2	4	7
चेकोस्लोवाकिया	2	4	2
केन्या	2	3	4
यूगोस्लाविया	2	1	2
नार्वे	2	1	1
उत्तरी कोरिया	1	1	3
न्यूजीलैंड	1	1	1
यूगांडा	1	1	—
डेनमार्क	1	—	—
स्विट्जरलैंड	—	3	—
कनाडा	—	2	3
ईरान	—	2	1

बेल्जियम	—	2	—
ग्रीस	—	2	—
आस्ट्रिया	—	1	2
कोलंबिया	—	1	2
अर्जेंटाइना	—	1	—
लेबनान	—	1	—
मैक्सिको	—	1	—
मंगोलिया	—	1	—
पाकिस्तान	—	1	—
दक्षिण कोरिया	—	1	—
ट्यूनीशिया	—	1	—
तुर्की	—	1	—
ब्राजील	—	—	2
इथोपिया	—	—	2
घाना	—	—	1
भारत	—	—	1
जमैका	—	—	1
नाईजर	—	—	1
नाईजीरिया	—	—	1
स्पेन	—	—	1

इक्कीसवाँ ओलंपिक : 1976–मांट्रियल

इक्कीसवें ओलंपियाड के लिए अंतर्राष्ट्रीय ओलंपिक समिति ने 1970 में कनाडा के दूसरे सबसे बड़े शहर एवं क्वीवेक राज्य की राजधानी मांट्रियल को चुना। यह सम्मान प्राप्त करने के लिए मांट्रियल 1940, 1944, 1956 एवं 1972 में आजमाईश कर चुका था, लेकिन उसे सफलता 1976 में मिली। इस प्रकार कनाडा, इंगलैंड एवं आस्ट्रेलिया के पश्चात ओलंपिक आयोजित करनेवाला तीसरा राष्ट्रमंडलीय देश बना। उस समय मांट्रियल शहर के मेयर जीन ड्रापीयू ने आई. ओ. सी. से वायदा किया था कि फिजूलखर्जी से बचते हुए इस आयोजन में 400 मिलियन डालर से ज्यादा खर्च नहीं करेंगे और यह

राशि भी रेडियो एवं टेलीविजन के प्रयोगाधिकार और ओलंपिक के खेल टिकटों, सिक्कों, डाक-टिकटों, प्रतीक-चिह्न एवं लाटरी की बिक्री से पूरी करेंगे। परंतु मुद्रा-स्फीति में वृद्धि, भ्रष्टाचार, अत्यधिक महत्त्वाकांक्षी योजनाओं और मजदूरों की बार-बार हड़ताल ने पूर्व निर्धारित बजट की दुर्गति कर दी और इस आयोजन में कुल खर्च एक हजार मिलियन डालर से भी ज्यादा हो गया। इतनी विपुल राशि खर्च करने के बावजूद मुख्य स्टेडियम में 168 मीटर ऊँची मीनार एवं सारे स्टेडियम को छज्जायुक्त करने की योजनाएँ धरी की धरी रह गईं। अलबत्ता, खेलगाँव के लिए पिरामिडनुमा दो विशाल भवन तैयार किए गए थे। 'म्यूनिख हत्याकांड' की पुनरावृत्ति न होने देने के लिए काफी कड़ी सुरक्षा का प्रबंध किया गया। इसके लिए 16,000 सैनिकों के अलावा अमरीकी गुप्तचर विभाग की सेवाएँ ली गईं, जिस पर एक सौ मिलियन अमरीकी डालर से ज्यादा खर्च रहा। परंतु आयोजन समिति एवं सुरक्षा अधिकारियों में परस्पर तालमेल न होने के कारण दर्शकों एवं फोटोग्राफरों को काफी तकलीफें उठानी पड़ीं।

दूसरी ओर आयोजन राजनीतिक थपेड़ों से भी नहीं बच सका। मेजबान कनाडा ने ताईवान को रिपब्लिक ऑफ चाइना के नाम से निमंत्रण पत्र भेजने से इंकार कर दिया। आई. ओ. सी. ने कनाडा के इस रुख पर काफी नाराज़गी दिखाई, परंतु मेजबान देश किसी भी सूरत में ताईवान को उस नाम एवं झंडे में स्वीकारने के लिए तैयार नहीं था, अंततः आई. ओ. सी. को हार माननी पड़ी। इस घटना के पटाक्षेप के बाद काले अफ्रीकी देशों ने न्यूजीलैंड को खेल से बाहर करने के लिए बावेला मचाया, क्योंकि उसकी रग्बी टीम ने दक्षिण अफ्रीका का दौरा किया था। परंतु इस बार आई. ओ. सी. ने झुकने से इंकार कर दिया। फलस्वरूप 28 अफ्रीकी देशों ने, जिनमें तंजानिया, केन्या, युगांडा और नाइजीरिया प्रमुख थे, इस आयोजन का बहिष्कार कर दिया।

इस प्रकार इस कटु माहौल में 17 जुलाई को 75 हजार से भी ज्यादा दर्शकों से भरे ओलंपिक स्टेडियम में ब्रिटेन की सम्राज्ञी एलिजाबेथ ने उद्घाटन की रस्म अदा की। तत्पश्चात पाँच गोल बास्केट से ओलंपिक खेलों के अस्सी वर्ष पूरे होने पर अस्सी श्वेत कबूतर छोड़े गए। फिर ओलंपिया से प्रज्वलित पावन ज्योति को, जिसे एथेंस के पेनाथेलिक स्टेडियम में एक विशेष विधि से लेसर किरणों में परिवर्तित करके इंटलसेट उपग्रह द्वारा ओटावा संप्रेषित किया गया तथा वहाँ पुनः जलाया गया। दो युवा एथलीटों—15 वर्षीय स्टीफन प्रोफेंटेन एवं 16 वर्षीया सांद्रा हेंडरसन—ने स्टेडियम के किनारे बने ज्योतिकलश में समाहित किया। मेजबान देश से भारोत्तोलक पियरे सेंट जीन ने ओलंपिक शपथ उठाई। आखिर अफ्रीकी देशों के बहिष्कार से ग्रस्त इस आयोजन में 92 देशों के 6085 प्रतियोगियों ने हिस्सा लिया, जिसमें 1251 महिलाएँ भी थीं। शामिल देशों में एंडोरा, एंटीगुआ, बहरीन, केमन द्वीप समूह, पापुआ-न्यूगिनी

तथा सऊदी अरब ने ओलंपिक खेलों में पदार्पण किया। शुभंकर के रूप में ऊदबिलाव जाति के एक प्राणी 'बीवर' का चुनाव किया गया, जिसकी मुलायम खाल यूरोपियों को अत्यंत पसंद है। इसे 'अमिक' नाम दिया गया, जबकि पाँच छल्लों के ऊपर अंकित अंग्रेजी वर्णमाला के 'एम' अक्षर को इस बार प्रतीक-चिह्न बनाया गया। इसे कनाडा के प्रसिद्ध चित्रकार जोसेफ ह्यूल ने तैयार किया था।

एथलेटिक्स के पुरुष वर्ग में अफ्रीकी धावकों के बहिष्कार के कारण कुछ स्पर्धाएँ फीकी रहीं। अमरीका ने छः स्वर्ण पदक जीतकर पहला स्थान अवश्य हासिल किया, परंतु स्प्रिंट में उसके धावकों की पराजय ने अमरीकियों को मायूस कर दिया। सबसे तेज दौड़ाक का श्रेय ट्रिनिडाड के अज्ञात खिलाड़ी सवा छः फुट लंबे हेस्ली क्राफोर्ड ने (10.06 सेकेंड) पाया। 200 मीटर में भी कैरेबियन द्वीपसमूह का धावक होनाल्ड क्वैरी (जमैका), जिसने 100 मी. में दूसरा स्थान प्राप्त किया था, सफल रहा। उसने दो अमरीकियों को पीछे छोड़ते हुए स्वर्ण पदक (20.23 सेकेंड) हासिल किया। 110 मी. बाधा दौड़ में भी 1932 से चला आ रहा अमरीकी वर्चस्व टूटा। अंग्रेज माँ एवं फ्रांसिसी पिता की संतान विश्व-रिकार्डधारी 25 वर्षीय गायद्रुत ने, जो फ्रांसिसी प्रधानमंत्री का खेल-कूद सलाहकार भी था, 13.30 सेकेंड के साथ स्वर्ण जीता। लेकिन 400 मीटर बाधा दौड़ में अमरीका ने म्यूनिख में अपना खोया हुआ सम्मान पुनः पा लिया। 20 वर्षीया चश्माधारी अश्वेत एडबिन मोसेस ने विश्व-कीर्तिमान (47.64 सेकेंड) बनाते हुए यह दौड़ जीती। आगे चलकर मोसेस ने इस दौड़ के श्रेष्ठ धावकों में स्थान बनाया। वह 1977 से 1987 तक लगातार विजयी रहा। इसमें लासएंजिल्स का स्वर्ण भी शामिल है। यदि अमरीका मास्को-ओलंपिक का बहिष्कार नहीं करता, तो वह वहाँ भी स्वर्ण जीत जाता।

अफ्रीकी बहिष्कार के बावजूद 3000 मीटर स्टीपल चेस काफी रोमांचकारी सिद्ध हुआ। स्वीडन के विश्व-रिकार्डधारी एंडर्स गादेरुद ने हालाँकि अपना विश्व कीर्तिमान भंग करते हुए (8:08.2 सेकेंड) स्वर्ण पदक जीता, परंतु पोलिश ब्रोनी स्लाव मलिनोवस्की एवं पूर्वी जर्मनी के फ्रेंक बामगार्टल ने उसे कड़ी टक्कर दी। मैराथन दौड़ में पूर्व विजेता फ्रेंक शार्टर पुनः 'फेवरेट' था, परंतु उसे अप्रत्याशित रूप से 26 वर्षीय रूसी वाल्देमिर सीरपिस्की ने हरा दिया। उसका समय 2:09:55.0 सेकेंड ओलंपिक-रिकार्ड बना। मास्को में भी उसने यह दौड़ जीतकर सबको हतप्रभ कर दिया। 20 किलोमीटर पैदल चालन में 23 वर्षीय पुलिस सिपाही डेनियल बातिस्ता रोचे ने विश्व-रिकार्ड बनाते हुए मैक्सिको को ट्रेक एंड फील्ड में पहला स्वर्ण पदक दिलवाया। परंतु उसका यह कीर्तिमान (1:24:60.0) मान्य नहीं हुआ, क्योंकि यह स्पर्धा ट्रेक की बजाय रोड पर आयोजित हुई थी।

'घोड़ा' जुआनतोरेन का अनोखा डबल

लंबी दूरी की दो अन्य दौड़ों में फिनलैंड के लासे वीरेन ने म्यूनिख की सफलता को दोहराया। परंतु ज्यादा नाम 400 एवं 800 मी. की दौड़ जीतकर दोहरी सफलता हासिल करनेवाला 24 वर्षीय क्यूबाई अल्बर्टो जुआनतोरेन ने कमाया। छः फुट दो इंच कद एवं 83 कि. ग्रा. भारवाला जुआनतोरेन अधिकृत ओलंपिक में यह अनोखी कामयाबी हासिल करनेवाला एकमात्र धावक है। इसके पूर्व 1906 के अंतरिम खेलों में अमरीकी पाल पिलग्रिम ने यह कारनामा अंजाम दिया था। 800 मीटर में उसने विश्व-रिकार्ड (1:43:50 सेकेंड) बनाया। 'घोड़ा' के नाम से मशहूर जुआनतोरेन मास्को में चोटिल रहने के कारण अपना प्रदर्शन दोहरा नहीं पाया। 400 मीटर में भाग लेकर वह चौथे स्थान पर रहा।

फील्ड इवेंट में विक्टर सायनेक ही एकमात्र खिलाड़ी रहा जो अपने खिताब की रक्षा कर सका। उसने त्रिकूद में लगातार तीसरी बार स्वर्ण पदक जीता। चक्का फेंक में अमरीकी मैक बिल्कींस ने 67.50 मीटर फेंक के साथ स्वर्ण जीता। लेकिन पदक-वितरण समारोह के समय उसने सिर्फ रजत पानेवाले पूर्वी जर्मनी के वोल्फमेंग श्मिड को बधाई दी, जबकि अपने देशवासी एवं कड़े प्रतिद्वंद्वी कांस्य पदक विजेता जान पेवेल से हाथ तक नहीं मिलाया। इसकी वजह से उसकी काफी आलोचना हुई। भालाफेंक में हंगरी के मिकलोस नेमेथ ने अपने पिता के पदचिह्नों पर चलते हुए विश्व-रिकार्ड (94.58 मीटर) बनाकर स्वर्ण जीता। उसका पिता दूसरे 1948 में हैमर थ्रो का स्वर्ण पदक विजेता था। गोलाफेंक में पूर्वी जर्मनी के 20 वर्षीय छात्र उदो बेयर ने रूसी येकगेनी मिरोनोव से न्यूनतम 2 सेंटीमीटर के अंतर से स्वर्ण जीता। ऊँची कूद में भी 19 वर्षीय पोलिश जासेक विसोला ने जीत दर्ज की। इसमें विश्व चैंपियन अमरीका के 21 वर्षीय ड्वाइर स्टोंस को म्यूनिख की तरह ही काँसे के पदक से संतुष्ट होना पड़ा। हैमर थ्रो में रूस के 21 वर्षीय बलिष्ठ युवक यूरी सेदिख ने 77.52 मीटर फेंक के साथ स्वर्ण पदक जीता। चार वर्ष बाद मास्को में उसने विश्व-रिकार्ड (81.80 मीटर) बनाते हुए इस खिताब की रक्षा की। डेकाथलन में भी विश्व-रिकार्ड कायम हुआ, जिसे 27 वर्षीय अमरीकी ब्रूस जेनर ने 8617 अंकों से स्थापित किया। बाद में जेनर भी अन्य डेकाथलन विजेताओं की भाँति फिल्मों की ओर मुड़ गया।

महिला वर्ग में पूर्वी जर्मनी के एथलीटों की सफलता ने अन्य देशों को काफी पीछे छोड़ दिया। उन्होंने 14 में से 9 स्पर्धाएँ जीतीं। मगर इन सफलताओं में सबसे तेज धाविका का खिताब उसके एथलीट नहीं जीत पाए। यह खिताब अप्रत्याशित रूप से पश्चिम जर्मनी की एनग्रेट रिख्तर ने फेवरेट एवं पूर्ण विजेता रिनेट स्टेयर को पछाड़ते हुए जीता। 400 मीटर दौड़ में पोलैंड की ईरिना स्जेविस्का ने, जो दो बच्चों की माँ बन चुकी

थी, विश्व-रिकार्ड (49.29 सेकेंड) कायम करते हुए स्वर्ण जीता। सोवियत संघ की 25 वर्षीया तात्याना कांजीकीना ने मध्यम दूरी की दोनों दौड़ें जीतकर डबल बनाया। 800 मीटर में तो उसने विश्व-रिकार्ड (1:54.9 सेकेंड) भी कायम किया। मास्को में उसने 1500 मीटर दौड़ जीतकर लंबी दूरी की श्रेष्ठ धाविकाओं में पुनः अपने को स्थापित कर लिया।

दौड़ में पूर्वी जर्मनी ने दोनों रिले के अलावा 200 मीटर एवं 100 मीटर बाधा दौड़ में भी अप्रत्याशित सफलता पाई, हालाँकि 200 मीटर में जीतनेवाली 21 वर्षीया बारबरा एरवर्ट ने मास्को में पुनः यह दौड़ जीतकर अपनी प्रतिभा सिद्ध कर दी। परंतु 100 मीटर बाधा दौड़ की विजेता जोहना शेलर मास्को में दूसरे स्थान पर ही आ सकी। फील्ड मुकाबलों में सिर्फ गोला फेंक की स्पर्धा छोड़कर शेष पाँचों में पूर्वी जर्मनी ने कामयाबी लिखी। ऊँची कूद में रोसमारी एकरमेन ने, चक्का फेंक में ईवलीन श्लाक (69.00 मीटर, ओलंपिक-रिकार्ड) ने एवं पेंटाथलन में सीगुन सीगल (4745 अंक) ने कामयाबी हासिल की। हालाँकि पेंटाथलन में दूसरे स्थान पर रही पूर्वी जर्मन एथलीट क्रिस्टीन लैसर के भी 4745 अंक थे, परंतु सीगल को लैसर से तीन मुकाबलों में आगे रहने के कारण स्वर्ण दिया गया। लेकिन सबसे उल्लेखनीय जीत गोला फेंक में बुल्गारिया की 34 वर्षीया ईवाना खिस्तोवा की रही, जिसने अपने चौथे ओलंपिक प्रयास में आखिरकार स्वर्ण पदक जीतकर ही दम लिया। यह सोना उसने ओलंपिक-रिकार्ड (21.16 मीटर) बनाकर हासिल किया।

तैराकी के परिणाम खासे चौंकानेवाले रहे। इस बार पुरुषों में अमरीकी 'जलमानव' और महिलाओं में पूर्वी जर्मनी की 'जलपरियाँ' पूरी तरह से छाई रहीं। दस दिनों तक चलनेवाली इस प्रतियोगिता में 26 विश्व-रिकार्ड टूटे तथा 2 बराबर रहे। इन मुकाबलों में सिर्फ महिलाओं की 100 मीटर बैक स्ट्रोक, 100 मीटर ब्रीस्ट स्ट्रोक, 200 मी. बटरफ्लाई तथा पुरुष वर्ग में 100 मीटर बटरफ्लाई के ही विश्व-कीर्तिमान अखंडित रहे।

पुरुष वर्ग में अमरीका का साढ़े छः फुट ऊँचा एवं 186 पौंड वजनी नेबर हालाँकि मार्क स्पिट्न-जैसा चमत्कारी प्रदर्शन नहीं दिखला सका, लेकिन चार स्वर्ण एवं एक रजत जीतकर सबसे सफल तैराक बना। मनोविज्ञान के इस 20 वर्षीय छात्र ने दोनों बैक स्ट्रोक स्पर्धाओं में विश्व-रिकार्ड (55.49 सेकेंड एवं 1:59.19 सेकेंड) बनाया और 4 × 100 मीटर मिडले रिले एवं 4 × 200 मीटर फ्री स्टाइल रिले में विश्व-रिकार्ड बनाने में सहयोग दिया। इसके अलावा 200 मीटर फ्री स्टाइल में ब्रूस फरनिस के बाद रजत पदक जीता। नेबर के अलावा 22 वर्षीय जिम मोंटगुमरी ने तीन स्वर्ण (एक, 100 मीटर फ्री स्टाइल तथा दो रिले में) एवं एक कांस्य (200 मीटर फ्री स्टाइल में) जीता। 17 वर्षीय ब्रायन

गुडेल ने 400 मीटर एवं 1500 मीटर फ्री स्टाइल में स्वर्णिम सफलता हासिल कर सबको हतप्रभ कर दिया। ब्रिटेन का 22 वर्षीय डेविड विल्की ही एकमात्र तैराक था, जो अमरीकी वर्चस्व तोड़ने में सफल रहा। उसने 200 मीटर ब्रीस्ट स्ट्रोक में अपने हमउम्र अमरीकी जान हेल्कन को पीछे छोड़कर चार वर्ष पूर्व म्यूनिख और यहाँ 100 मीटर में अपनी पराजय को भुलाया। उल्लेखनीय है कि एडनबर्ग में जन्मे विल्की ने मियामी (अमरीका) में प्रशिक्षण प्राप्त किया था।

जलपरी एंडर बनी सोनपरी

महिलाओं में पूर्वी जर्मनी की जलपरियों ने सफलताओं का ताँता लगा दिया। इसमें पाँच फुट दस इंच कद एवं 154 पौंड भारवाली कोरनेलिया एंडर ने काबिले-तारीफ प्रदर्शन किया। उसने 100 मीटर (55.65 सेकेंड) एवं 200 मीटर फ्री स्टाइल (1:59.26 सेकेंड) में विश्व-रिकार्ड तोड़ा। 100 मीटर बटरफ्लाई में अपने विश्व-कीर्तिमान की बराबरी (1:00.13 सेकेंड) की और अंत में 4 × 100 मीटर मिडले रिले में अपने देश को विश्व-रिकार्ड बनाने में सहयोग देते हुए स्वर्ण जीता। इस प्रकार चार स्वर्ण जीतकर वह जलपरी से पहली 'सोनपरी' बनी। यहाँ वह 400 मीटर फ्री स्टाइल रिले में रजत पदक जीतने में भी सफल रही। 25 अक्तूबर, 1959 को जन्मी कोनी इससे पहले म्यूनिख ओलंपिक में भी शिरकत कर चुकी थी, परंतु वहाँ सिर्फ तीन रजत पदक ही जुटा सकी थी। इन दो ओलंपिक के दौरान वह प्रथम एवं द्वितीय तैराकी विश्व-चैंपियनशिप में चार-चार स्पर्धाएँ जीतकर पहले ही अपनी प्रतिभा का लोहा मनवा चुकी थी। मांट्रियल ओलंपिक के पश्चात उसने अपने ही देशवासी प्रख्यात बैकस्ट्रोक तैराक 'रायल रोल्स' रोलेंड मैथिस से विवाह रचाया।

इस वर्ग में कोनी एंडर के अलावा 17 वर्षीया उलरिका रिख्तर ने भी सराहनीय प्रदर्शन किया। उसने दोनों बैक स्ट्रोक 100 मीटर, (1:01.83) एवं 200 मीटर (2:13.43) तथा 4 × 100 मी.(4:09.89) एवं 800 मीटर फ्री स्टाइल में विश्व-रिकार्ड (8:37.14) बनाते हुए स्वर्णिम सफलता दर्ज कराई। पूर्वी जर्मनी को सिर्फ दो स्पर्धाओं में शिकस्त मिली। 200 मीटर ब्रीस्ट स्ट्रोक में पहले तीनों स्थान पर रूसी तैराक विजयी रहीं। 17 वर्षीया स्कूली छात्रा मरिना कोशेवेया ने 2:33.35 के समय से बाजी मारी। दूसरी पराजय तैराकी की अंतिम स्पर्धा (4 × 100 मीटर फ्री स्टाइल रिले) में मिली, जिसमें अमरीकी चौकड़ी ने विश्व-कीर्तिमान (3:44.82) बनाते हुए अपना एकमात्र स्वर्ण जीता। इस विजयी दल की एक सदस्या शिर्ली बाबशौफ भी थी, जिसे समीक्षकों ने 'इटर्नल लूजर' (कभी न जीत सकनेवाली) की संज्ञा दी, क्योंकि यहाँ वह व्यक्तिगत स्पर्धाओं में तीन एवं म्यूनिख में दो रजत ही जीत सकी थी।

गोताखोरी के प्लेटफार्म में इतालवी कलाज दिबियासी ने लगातार अपना तीसरा स्वर्ण पदक जीता, जबकि स्प्रिंगबोड में अमरीकी फिलिप्स बोग्स ने इस दौरान दिबियासी से पूरे 10 अंक अर्जित किए। वह यह सम्मान पानेवाला पहला खिलाड़ी बना। महिलाओं में प्लेटफार्म वर्ग में रूस की 18 वर्षीया इलेना वेंत्सेखोवस्काया ने पूर्व चैंपियन स्वीडिश उलरिका नैप को पीछे छोड़ा जबकि स्प्रिंगबोर्ड में जेनीफर शैंडीयर ने बिना परेशानी के स्वण जीता। वाटरपोलो में पिछले चैंपियन रूस की काफी दुर्गति हुई और उसे आठवें स्थान से संतुष्ट होना पड़ा। हंगरी ने अपराजित रहते हुए स्वर्ण पदक जीता।

जिमनास्टिक की गुड़िया नादिया

जिमनास्टिक में रूमानिया की 14 वर्षीया स्कूली छात्रा नादिया कोमानची का प्रदर्शन हर किसी के लिए एक आश्चर्य रहा। उसके नयनाभिराम प्रदर्शन ने उसे रातों-रात ओलंपिक की चहेती बना दिया। नादान गुड़िया-सी दिखनेवाली नादिया ने अपने मासूम चेहरे के साथ प्रतिभा एवं अपने कला-कौशल से ऐसा समाँ बाँधा कि स्टेडियम में उपस्थित 18 हजार दर्शकों सहित निर्णायक भी उसके प्रदर्शन में खो गए। निर्णायकों ने उसे सात बार (छः बार एसिमिट्रिकल बार्स तथा एक बार बैलेंस बीम) पूरे अंक (10 अंक) दिए, जो कि एक विश्व-कीर्तिमान बना। लेकिन 4 फुट 11 इंच कद तथा 89 पौंड भारवाली नादिया की बदकिस्मती यह रही कि उसे अपने सहयोगी जिमनास्टों से पर्याप्त सहयोग नहीं मिल सका, जिसके कारण वह प्रतिभासंपन्न रूसियों के विरुद्ध अपनी टीम को स्वर्ण पदक नहीं दिला सकी। लेकिन अपने इस गम को उसने व्यक्तिगत स्पर्धा एसिमिस्ट्रिकल बार्स तथा बैलेंस बीम में स्वर्ण तथा फ्लोर एक्सरसाइज में कांस्य जीतकर जरूर कुछ कम किया। चार वर्ष बाद जब वह मास्को पहुँची तब उससे काफी आशाएँ थीं, लेकिन रूसी निर्णायकों के पक्षपातपूर्ण निर्णय से वह ज्यादा सफल नहीं हो सकी। फिर भी उसने बैलेंस बीम एवं फ्लोर में स्वर्ण तथा टीम एवं व्यक्तिगत में रजत पदक जीतकर अपने चहेतों को निराश नहीं किया। 12 नवंबर, 1961 को वाकू प्रांत के धियोरघी-धियोरध्यू नगरी में जन्मी नादिया को मोटर मैकेनिक पिता एवं जिमनास्ट माता ने बचपन से ही जिमनास्टिक में दक्ष करना आरंभ कर दिया था। 11 वर्ष की उम्र में उसने एक अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता की सभी स्पर्धाएँ जीतकर हतप्रभ कर दिया था। मांट्रियल ओलंपिक के एक वर्ष पूर्व स्कीयन (नार्वे) में आयोजित यूरोपियन प्रतियोगिता में भी वह चार स्वर्ण एवं एक रजत पदक जीतकर मांट्रियल में अपने धमाके का संकेत दे चुकी थी। वैसे एक सर्वेक्षण के आधार पर उसे 1975 का सर्वश्रेष्ठ महिला खिलाड़ी माना गया था। मांट्रियल एवं मास्को ओलंपिक के पश्चात बढ़ती उम्र के कारण उसने लासएंजिल्स ओलंपिक के पूर्व ही संन्यास ले लिया। फिर भी वह लासएंजिल्स गई,

लेकिन रूमानियाई टीम के प्रशिक्षक के रूप में।

19 वर्षीया रूसी नेलीकिम भी सफलता की दृष्टि से नादिया से कोई ज्यादा पीछे नहीं थी। नादिया के बाद वही एक अन्य जिमनास्ट थी जिसने 10 में 10 अंक (वाल्टिग हार्स तथा फ्लोर में) हासिल किए। इन दोनों वर्गों में स्वर्ण के अलावा टीम में भी उसने स्वर्ण पाया। इसके अतिरिक्त कंबाइंड एक्सरसाइज़ में भी उसने रजत पदक प्राप्त किया। चार साल बाद अपने देश में फ्लोर तथा टीम वर्ग में स्वर्ण जीता। लेकिन नादिया के समकक्ष होने के कारण उसकी सफलताएँ दबकर रह गईं।

पुरुषों के वर्ग में रूसी निकोलाई आंद्रियानोव ने श्रेष्ठतम प्रदर्शन किया। साढ़े पाँच फुटे निकोलाई ने न केवल व्यक्तिगत स्पर्धा में दो बार के चैंपियन जापानी सवाओ कातो को अपदस्थ किया, वरन रिंग्स, हार्स वाल्ट एवं फ्लोर एक्सरसाइज़ में स्वर्ण, टीम-स्पर्धा एवं पैरेलल बार्स में रजत और पामेल हार्स में कांस्य पदक जीतकर रूसी प्रभुत्व को स्थापित किया। 14 अक्टूबर, 1952 को ब्लादीमिर में जन्मे आंद्रियानोव ने इससे पहले म्यूनिख में एक स्वर्ण, एक रजत एवं एक कांस्य जीता था। तब से उसने अपनी सफलताओं का सिलसिला मास्को तक बरकरार रखा और टीम-स्पर्धा व हार्स वाल्ट में स्वर्ण, व्यक्तिगत एवं फ्लोर एक्सरसाइज़ में रजत और हारीजेंटल बार में काँसे का तमगा जीता। इस प्रकार 15 पदक जीतकर उसने अपने आपको इस स्पर्धा के इतिहास-पुरुषों में स्थापित कर लिया। टीम-स्पर्धा में जापान लगातार पाँचवीं बार स्वर्ण पदक से विभूषित हुआ। जापान की इस विजय में 26 वर्षीय शुन फुजीमोतो का प्रदर्शन उल्लेखनीय रहा, जिसने घुटने की हड्डी टूटने के बावजूद रिंग्स की अंतिम स्पर्धा में भाग लिया और 9.75 बहुमूल्य अंक अर्जित करके अपने देश को हार से बचाया।

घुड़सवारी में अमरीकी एवं पश्चिम जर्मनी ने दो-दो स्वर्ण पदक जीते। थ्री डे-इवेंट का व्यक्तिगत मुकाबला 21 वर्ष 77 दिन के युवा अमरीकी एडमांड कांफीन ने जीता और इस खेल का सबसे कनिष्ठ विजेता होने का गौरव हासिल किया। इसी स्पर्धा की टीम-प्रतियोगिता में अमरीकी एवं पश्चिमी जर्मनी के बाद आस्ट्रेलिया को तीसरा स्थान प्राप्त हुआ था। आस्ट्रेलियाई टीम में 61 वर्षीय बिल रायक्राफ्ट एवं उसका पुत्र वेन भी शामिल था। इन दोनों ने 1968 में भी कांस्य पदक जीता था। शो जंपिग में व्यक्तिगत स्वर्ण पश्चिमी जर्मनी के एक 39 वर्षीय मिल मालिक एल्विन शाकेमोहले ने 'वारविक रेक्स' नामक घोड़े पर बिना गलती के जीता।.टीम मुकाबले में उसने अपने भाई पाल के साथ रजत जीता। ड्रेसाज में स्वर्ण पदक विजेता पश्चिम जर्मनी दल का एक सदस्य हैरी बोल्ट 46 वर्ष, 49 दिन का था, जो कि इस आयोजन का वरिष्ठ विजेता रहा। माडर्न पेंटाथलन में पोलिश जानुस्ज पिथियाक-पेचीयाक ने व्यक्तिगत स्वर्ण जीता, जबकि ब्रिटेन ने टीम-स्पर्धा का। इससे रूसी दल के एक सदस्य बोरिस ओरिसचेंको को तलवार

के गलत उपयोग के कारण अयोग्य करार दे दिया गया, जिसने कि म्यूनिख में व्यक्तिगत स्पर्धा का रजत पदक जीता था।

रिचर्ड मारिस एरीना में संपन्न बाक्सिंग में, अफ्रीकी देशों के 74 मुक्केबाजों के बहिष्कार से मुकाबला काफी आसान हो गया। म्यूनिख में पिछड़नेवाला अमरीका इस बाद जबरदस्त तैयारी से यहाँ आया और 11 में से 5 स्वर्ण जीतकर पिछला हिसाब चुका लिया। क्यूबा के हिस्से भी तीन स्वर्ण आए। इस खेल-इतिहास में पहली बार दो भाई एक साथ चैंपियन बने। मिडिल वेट वर्ग में माईकल स्पिक्स तथा लाइट हैवीवेट में लियोन स्पिक्स (दोनों अमरीकी) को यह गौरव मिला। बाद में दोनों ही भाई पेशेवर हो गए तथा विश्व हैवीवेट चैंपियन भी बने। लाइट वेल्टरवेट का विजेता 'सुगर' रे लियोनार्ड (अमरीका) भी इन्हीं का अनुसरण करते हुए बाद में विश्व चैंपियन हुआ। मगर सबसे यादगार जीत लाइटवेट वर्ग में अमरीकी होवर्ड डेविस की रही। 'जान-जान' के नाम से मशहूर 20 वर्षीय डेविस की माँ का यहाँ मुकाबले से ठीक एक दिन पहले निधन हो गया था, लेकिन इस दुखद स्थिति के बावजूद उसने न केवल स्वर्ण पदक जीता, वरन प्रतियोगिता का सर्वश्रेष्ठ मुक्केबाज भी घोषित हुआ। वह एक अच्छा गिटार वादक भी था।

कुश्ती में रूसी दबदबा कायम रहा। इस बार उसके अखाड़ेबाजों ने फ्री स्टाइल में 5 स्वर्ण, 3 रजत तथा ग्रीको-रोमन में 7 स्वर्ण, 2 रजत एवं 1 कांस्य पदक जीते। ग्रीको-रोमन शैली में लाइट हैवीवेट वर्ग में बलेरी रेजांतसेव और फ्री स्टाइल के हैवीवेट में 27 वर्षीय इवान यारिजिन ने अपने म्यूनिख के ताज का बचाव किया। अन्य देशों के पहलवानों में पोलैंड के 27 वर्षीय काजीमिराज लिपियन ने जिसने म्यूनिख में कांस्य पदक जीता था, रूसी पहलवान नेल्सन डेनीडियाल को पछाड़कर फीदरवेट वर्ग में स्वर्ण जीता। बाद में मास्को में उसके जुड़वाँ भाई जोजफ ने बेंटमवेट में रजत पदक जीता।

भारोत्तोलन में प्रेस द्वारा भार उठाने के तरीके को अलग कर दिया गया। इस स्पर्धा में भी रूसी लिफ्टरों ने सात स्वर्ण पर कब्जा किया। इस बार उन्हें चुनौती बुल्गारियाई लिफ्टरों से मिली, जिसके हिस्से में दो स्वर्ण आए। फलाईटवेट वर्ग में विश्व-कीर्तिमान की बराबरी करके स्वर्ण पानेवाला रूसी अलैक्जेंडर वोरोतीन मात्र 4 फुट 8.3/4 इंच ऊँचा था। लेकिन इस बार कई भारोत्तोलकों को नशीली दवाइयों के सेवन के कारण 'अयोग्य' घोषित कर उनके पदक वापस ले लिए गए। इसमें लाइटवेट एवं हैवीवेट वर्ग का विजेता जिबगनीव काजमारेक (पोलैंड) एवं केलेंटीन क्रिस्तोव (बुल्गरिया) भी शामिल था।

तीरंदाजी के दोनों मुकाबलों में म्यूनिख की तरह अमरीका इस बार भी 'फेवरेट' रहा। 19 वर्षीय डोरेन पेस (2571 अंक) तथा 23 वर्षीया लुआन रियान (2499 अंक)

दोनों ने विश्व-कीर्तिमान स्थापित करके क्रमशः पुरुष एवं महिला वर्ग के स्वर्ण पर कब्जा किया। जूडो में 6 में से 3 स्वर्ण हालाँकि जापान के कब्जे में आए लेकिन अन्य देशों के खिलाड़ियों ने भी श्रेष्ठ प्रदर्शन करके भविष्य की अनिश्चितता को उजागर कर दिया।

शूटिंग के मुकाबलों में पूर्वी जर्मनी के 21 वर्षीय डवे पाटेक ने फ्री पिस्टल (50 मी.) में नया विश्व-कीर्तिमान (573 अंक) कायम करते हुए इस खेल का पहला स्वर्ण पदक जीता। स्माल बोर रायफल (थ्री पोजिशन) में पहले स्थान पर 1162 अंकों के साथ अमरीकी लैनी बाशेल, जिसने म्यूनिख में रजत पदक जीता था, तथा मारग्रेट मुरडांक रही। किंतु टाई ब्रेकर नियम के अनुसार बाशेम को स्वर्ण पदक दिया गया, क्योंकि मुरडांक के दो परफेक्ट स्कोर के मुकाबले बाशेल ने तीन परफेक्ट स्कोर बनाए। परंतु बाशेम इस निर्णय से खुश नहीं थी, अलबत्ता पदक-वितरण के समय उसने मुरडांक को अपने साथ पहले स्थान पर खींच लिया। 34 वर्षीया नर्स मुरडांक निशानेबाजी में पदक जीतनेवाली पहली महिला है।

मोलसेन स्टेडियम के कृत्रिम 'एस्ट्रो टर्फ' में खेली गई हाकी का परिणाम भी खासा चौंकानेवाला रहा, जिसमें एशियाई देशों—भारत तथा पाकिस्तान—का वर्चस्व पूरी तरह खत्म हो गया। 1928 के बाद पहली बार भारत सेमी फाइनल में पहुँचने से भी वंचित रहा और उसे सातवाँ स्थान मिला। पाकिस्तान भी सेमीफाइनल में आस्ट्रेलिया से 2-1 से पिट गया। सेमीफाइनल में आस्ट्रेलिया के जीतने के पूरे आसार लग रहे थे, लेकिन फाइनल में एक और अप्रत्याशित परिणाम आया। न्यूजीलैंड ने आस्ट्रेलिया को टोनी इनेशन के गोल के जरिए 1-0 से हराकर स्वर्ण जीत लिया। फुटबाल में एक बार फिर योरोपीय साम्यवादी देशों का बोलबाला रहा और अंतिम चार देशों में से तीन देश—पूर्वी जर्मनी, रूस, एवं पोलैंड ही थे। सेमीफाइनल में पूर्वी जर्मनी ने रूस-को 2-1 से तथा पोलैंड ने ब्राजील को 2-0 से हराया। फिर फाइनल में पूर्वी जर्मनी ने पिछले विजेता पोलैंड को 71619 दर्शकों के सम्मुख 3-1 से हराकर सभी को अचंभित कर दिया। पराजित पोलिश टीम में 1974 के विश्वकप में खेलनेवाले दस खिलाड़ी शामिल थे।

बास्केटबाल के नियमों में इस बार भारी फेर-बदल किया गया और पुरुष वर्ग के लिए 12 तथा महिला वर्ग में 6 श्रेष्ठ टीमों के लिए क्वालिफाई मैच इंटरनेशनल फेडरेशन ऑफ बास्केटबाल एसोसियेशन ने करवाए। पुरुष वर्ग में अमरीका ने म्यूनिख का खोया ताज पुनः पाया, जबकि महिला वर्ग में रूसी महिलाओं ने अपने पाँचों मैच जीतकर स्वर्ण पदक जीता। इसमें उसकी सात फुट दो इंच ऊँची एवं 129 किलोग्राम वजनी इलियाना सेमेनोवा का विशेष योगदान रहा।

अन्य टीम-स्पर्धाओं में हैंडबाल में जोकि मांट्रियल से 160 मील दूर क्यूबेक में

संपन्न हुई, इस बार पुरुषों के साथ-साथ महिलाओं की भी प्रतियोगिता हुई। दोनों में खिताब रूस ने जीता। वालीबाल में जापानी महिलाओं ने म्यूनिख में खोया खिताब पुनः जीता, जबकि पुरुष वर्ग में पोलैंड पाँच कड़े सेट के पश्चात् रूस को हराकर स्वर्ण का हकदार बना।

रोइंग के मुकाबलों में पूर्वी जर्मनी के पुरुषों ने आठ में से पाँच और महिलाओं ने छः में से चार स्वर्ण पदक जीतकर एकाधिकार जताया। काक्सडलेस डबल्स जर्मनी के जुड़वाँ भाई योर्ग तथा बंर्डलैंड वाग्ट ने जीता जिसे उन्होंने मास्को में भी दोहराया, जबकि पुरुषों के सिंगल स्कल्स में फिनलैंड का 6 फुट 7 इंच ऊँचा अग्निशामक कर्मचारी पेर्टी कारपिनेन सफल रहा। अपनी इस सफलता को उसने मास्को एवं लासएंलिल्स में भी बरकरार रखा। डबल स्कल्स में नार्वे के हेंसन भाइयों की जोड़ी (फेंक एवं अल्क) विजयी रही। केनोइंग में रूस ने छः एवं पूर्वी जर्मनी ने तीन स्पर्धाओं का स्वर्ण पदक जीता। यार्टिंग में, जोकि मॉंट्रियल से लगभग 300 किलोमीटर दूर किंग्स्टन में संपन्न हुआ था, फ्लाइंग ड्यमेन वर्ग में पश्चिम जर्मनी के डिश्च बंधुओं—योर्ग एवं एखर्ट ने स्वर्ण जीता, जबकि टोरनाडो का स्वर्ण ब्रिटेन के 40 वर्षीय रेजिनाल्ड वाइट एवं 30 वर्षीय जान ओस्बोर्न ने जीता, जोकि उसकी छोटी बहन का पति था।

इस प्रकार प्रतियोगिता के स्तर पर एक श्रेष्ठ आयोजन के रूप में यह 21वाँ ओलंपिक कुंभ संपन्न हुआ। लेकिन इसकी सफलता में खर्च की गई अपार धन राशि से ओलंपिक समिति को काफी नुकसान उठाना पड़ा। भारी व्यय के बावजूद मुख्य ओलंपिक स्टेडियम में हवा के बहाव की व्यवस्था ठीक नहीं थी, जिससे प्रतियोगियों को काफी कठिनाई हुई।

पदक-तालिका—1976

देश	स्वर्ण	रजत	कांस्य
रूस	49	41	35
पूर्वी जर्मनी	40	25	25
अमरीका	34	35	25
पश्चिमी जर्मनी	10	12	17
जापान	9	6	10
पोलैंड	7	6	13
बुल्गारिया	7	9	7
क्यूबा	6	4	3

फिनलैंड	4	1	—
स्वीडन	4	1	—
ग्रेट ब्रिटेन	3	5	5
इटली	2	7	4
फ्रांस	2	3	4
यूगोस्लाविया	2	3	3
चेकोस्लोवाकिया	2	2	4
न्यूजीलैंड	2	1	1
दक्षिण कोरिया	1	1	4
स्विट्जरलैंड	1	1	2
जमैका	1	1	—
उत्तरी कोरिया	1	1	—
नार्वे	1	1	—
डेनमार्क	1	—	2
मैक्सिको	1	—	1
ट्रिनिडाड एवं टोबैको	1	—	—
कनाडा	—	5	6
बेल्जियम	—	3	3
नीदरलैंड	—	2	3
पुर्तगाल	—	2	—
स्पेन	—	1	4
आस्ट्रेलिया	—	2	—
ईरान	—	1	1
मंगोलिया	—	1	—
बेनेजुएला	—	1	—
ब्राजील	—	—	2
आस्ट्रिया	—	—	1
बारमूडा	—	—	1
पाकिस्तान	—	—	1
पोर्टोरिको	—	—	1
थाईलैंड	—	—	1

बाईसवाँ ओलंपिक : 1980–मास्को

ओलंपिक आंदोलन से रूस का ताल्लुक आई.ओ.सी. के गठन के साथ ही स्थापित हो चुका था। कुबरटिन द्वारा मनोनीत आई.ओ.सी. के पहले सदस्यों में एक रूसी प्रतिनिधि जनरल डी बाउटोवस्की भी शामिल था। उस समय रूस में राजवंशी शासन था और जार सम्राट निकोलस के शासनकाल में उसने 1900, 1908 एवं 1912 के आयोजन में भाग लिया, परंतु 1917 में बोलशेविक क्रांति के बाद कम्युनिस्टों के शासनकाल में एक लंबे अर्से तक रूस खेलकूद की दुनिया में गुमनाम रहा। फिर द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद आयोजित पहले ओलंपिक (1948 लंदन) में अपने प्रेक्षक भेजकर उसने अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में पुनः वापस आने की योजना बनाई और अगले आयोजन (हेलसिंकी, 1952) में पहली बार समाजवादी रूस ओलंपिक खेलों में उतरा। अपने प्रवेश के साथ ही उसने अपने आपको खेल-क्षितिज की एक बड़ी शक्ति के रूप में स्थापित किया। इतना ही नहीं, मेलबोर्न (1956), रोम (1960), म्यूनिख (1972), एवं मांट्रियल (1976) में तो वह पदक-तालिका में शीर्ष स्थान पर रहा। लिहाजा 23 अक्टूबर, 1974 को वियना में आई.ओ.सी. ने अपनी 75वीं बैठक में मास्को को ओलंपिक के बाईसवें चरण की जिम्मेदारी सौंपी।

लार्ड किलानिन की इस घोषणा के बाद रूसी आयोजक एवं खेलप्रेमी इसे भव्य बनाने पर तुल गए। इसके लिए 23 करोड़ रूबल का बजट निर्धारित किया गया। मास्को के लुजनिकी क्षेत्र में 21 हेक्टेयर क्षेत्रफल में फैला केंद्रीय लेनिन स्टेडियम मुख्य स्टेडियम बनाया गया, जहाँ एथलेटिक्स के अलावा जिमनास्टिक, फुटबाल का फाइनल, वाटरपोलो, जूडो, वालीबाल एवं घुड़सवारी की क्रास कंट्री प्रतियोगिता का समापन हुआ। लेनिन गाटस्की क्षेत्र में 45 हजार क्षमतावाला इंडोर स्टेडियम बनाया गया, जहाँ मुक्केबाजी, कुश्ती, तलवारबाजी, बास्केटबाल एवं हैंडबाल के मुकाबले हुए। इसके अतिरिक्त फुटबाल के आरंभिक मुकाबले तीन अन्य शहरों–लेनिनग्राद, कीव एवं मिन्स्क में और पाल नौकायन बाल्टिक सागर तटीय तालिन नगर में संपन्न हुए। मास्को के दक्षिण-पश्चिम में भव्य एवं नवीनतम डिजाइन के भवनों का निर्माण किया गया, जहाँ पर खिलाड़ियों एवं अधिकारियों को ठहराया गया।

आयोजन के 15 दिनों का चुनाव मास्को के पिछले सौ वर्षों के मौसम के हिसाब से किया गया। उद्घाटन के लिए 19 जुलाई का दिन तय किया गया। आकाश एकदम साफ था जब 1 लाख से भी ज्यादा दर्शकों की उपस्थिति में रूसी राष्ट्रपति लियोनिद ब्रेझनेव ने इन खेलों का उद्घाटन किया। ओलंपिक ध्वजारोहण के बाद 22वें

ओलंपियाड के अवसर पर 22 श्वेत कपोत छोड़े गए। उसके बाद विख्यात कुदाक विक्टर सायनेव ने ओलंपिक ज्योति लेकर स्टेडियम में प्रवेश किया जिसे ठीक एक माह पूर्व ओलंपिया के पवित्र हेग मंदिर में सूर्य किरणों से प्रज्वलित किया गया था और लगभग 5000 धावकों द्वारा 4820 कि.मी. की दूरी तय करके मास्को लाया गया था। फिर उसने वह ज्योति वरिष्ठ धावक सर्गेई बेलोव को सौंप दी, जिसने इसे ज्योति-कलश में समाहित कर दिया। तत्पश्चात् जिमनास्ट निकोलाई आंद्रियानोव ने तमाम खिलाड़ियों की ओर से सच्ची खेल-भावना की शपथ ली। फिर विभिन्न प्रांतों से आए लोकनर्तकों ने अपना प्रदर्शन किया और फिर जिमनास्टों का मनमोहक प्रदर्शन हुआ।

लेकिन पिछले ओलंपिक की तरह यह आयोजन भी बहिष्कार की कुप्रथा से नहीं बच सका। दिसंबर, 1979 में रूस द्वारा अफगानिस्तान में सैनिक हस्तक्षेप को लेकर अमरीका, जापान, पश्चिमी जर्मनी, कनाडा, केन्या, पाकिस्तान एवं उनके अनेक सहयोगी देशों ने इस खेल का बहिष्कार किया। ब्रिटेन, फ्रांस, डेनमार्क, सोन, आस्ट्रेलिया, इटली, पुर्तगाल, स्विट्जरलैंड, बेल्जियम, हालैंड, सानमारिया, लक्समबर्ग, न्यूजीलैंड, प्यूर्तोरिको, आस्ट्रिया के शासनाध्यक्षों ने भी इस खेल के बहिष्कार की घोषणा की, परंतु इसके बावजूद इन राष्ट्रों के ओलंपिक संघों ने ओलंपिक ध्वज को अपनाते हुए इसमें भाग लिया और एक नई मिसाल पेश की। इस बार आई.ओ.सी. के 146 सदस्य देशों में से 81 देशों ने भाग लिया, जिनके 5326 प्रतियोगियों ने (1088 महिलाएँ) इस आयोजन में अपने फन का प्रदर्शन किया। इन देशों में अंगोला, बेजिन, बोत्सवाना, जोर्डन, लाओस, मोजंबिक, साईप्रस एवं सिचेलस ने पहली बार ओलंपिक में कदम रखा। शुभंकर के रूप में भालू के बच्चे को चुना गया, जिसे 'मीशा' नाम दिया गया। वैसे ताल्लिन में संपन्न यार्टिग मुकाबले के लिए सील के बच्चे को 'विग्री' नाम देकर शुभंकर माना गया। आपसे में जुड़े पाँच छल्लों के ऊपर धावकपथ और उसके ऊपर पाँच कोनेवाली ताराकृति, जिसे ब्लेदीमिर अर्सेंटीव ने डिजाइन किया था, इस खेल का प्रतीक-चिह्न रहा।

दित्यानिन का चमत्कारिक प्रदर्शन

इस बार इस आयोजन का स्टार खिलाड़ी एथलेटिक्स या तैराकी के बजाय जिमनास्टिक से उदय हुआ। पुरुष वर्ग में इस प्रतियोगिता की सभी आठ स्पर्धाओं में कम से कम एक पदक जीतकर रूसी अलेक्जेंडर दित्यानिन ने अपने आपको इतिहास-पुरुषों की श्रेणी में ला खड़ा किया। एक ही ओलंपिक में अब तक कोई भी खिलाड़ी सात से ज्यादा पदक नहीं जीता पाया था, परंतु 7 अगस्त, 1957 को लेनिनग्राद में जन्मे दित्यानिन ने अपने ही देश के दर्शकों की उपस्थिति से उत्साहित होकर अपने जीवन का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कर एक

नया इतिहास रचा। उसने कंबाइंड एक्सरसाइज़ की व्यक्तिगत एवं टीम-स्पर्धा, तथा रिंग्स में स्वर्ण, पामेल्ड हार्स, वाल्टिंग हार्स, पेरेलल बार्स एवं हारीजेंटल बार में रजत और फ्लोर एक्सरसाइज़ में कांस्य पदक जीता। इतना ही नहीं, जिमनास्टिक में आदर्श प्रदर्शन करनेवाला खिलाड़ी भी वही था। उसने वाल्टिंग हार्स में पूरे 10 में से 10 अंक अर्जित किए। पाँच फुट, दस इंच कद एवं आकर्षक व्यक्तित्व का मालिक दित्यानिन मांट्रियल में भी दो रजत (टीम-स्पर्धा एवं रिंग्स में) जीत चुका था। इसी स्पर्धा में दित्यानिन के साथ आंद्रियानोव और 22 वर्षीय अलेक्जेंडर त्काचेव के उत्तम प्रदर्शन से 24 वर्षों बाद रूस पुनः पुरुष वर्ग का विजेता बना। लेकिन यहाँ जापान की अनुपस्थिति को भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।

दूसरी ओर रूसी महिलाओं ने लगातार आठवीं बार टीम खिताब जीता। इस वर्ग की स्पर्धाओं में प्रतिद्वंद्विता कुछ अधिक ही देखने को मिली। व्यक्तिगत खिताब में 18 वर्षीया रूसी इलेना दावीदोवा, पूर्वी जर्मनी की 15 वर्षीया मैक्सी नौक व रूमानिया की नादिया कामोनेव के बीच जोरदार संघर्ष हुआ, जिससे इलेना मैक्सी व नादिया से मात्र 0.075 अंक (कुल 79.1500 अंक) की बढ़त से स्वर्ण जीती। एसिमिट्रिकल बार्स में मात्र 3? किलो भार एवं चार फुट दस इंच कदवाली मैक्सी नौक ने मात्र 0.025 अंक अधिक अर्जित करके रूमानिया की इमिल एबर्ले (19.850) के मुकाबले स्वर्ण जीता। इस बार नादिया के अलावा 19 वर्षीया रूसी नतालिया शेपोशनिकोवा एवं नेली किम से भी उत्कृष्ट प्रदर्शन की आशा थी, परंतु दोनों टीम-स्पर्धा के अलावा एक-एक ही स्पर्धा (साइडहार्स वाल्टिंग एवं फ्लोर एक्सरसाइज़) में स्वर्ण जीत पाईं। इस बार विदेशी जिमनास्टों ने रूसी निर्णायकों पर पक्षपात का आरोप लगाया, जिसकी वजह से रूस एवं रूमानिया के बीच कटुता की स्थिति पैदा हो गई थी।

एथलेटिक्स में अमरीका, केन्या-जैसे देशों की कमी अवश्य महसूस हुई, किंतु रूस, पूर्वी जर्मनी, ग्रेट ब्रिटेन एवं इथोपिया के धावकों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करके उक्त कमी को लगभग पूरी तरह से ढँक दिया। इस बार कुल छः विश्व-कीर्तिमान स्थापित हुए। रूस ने पुरुषों की 24 स्पर्धाओं में एक तिहाई और महिलाओं की 14 स्पर्धाओं में से आधी में अपनी स्वर्णिम कामयाबी लिखी। पिछले दो ओलंपिक में बेहतर प्रदर्शन करनेवाली पूर्वी जर्मनी की महिला टीम सिर्फ पाँच स्वर्ण (पुरुषों से एक कम) ही जुटा सकी। मध्यम दूरी की दौड़ों में बाजी मारकर ब्रिटेन भी चार स्वर्ण जीतने में सफल रहा।

ठिगने यिफ्टर का डबल

इस बार दौड़-कूद का हीरो निर्विवाद रूप से इथोपिया का दुबला-पतला गंजा सिरवाला धावक मिरूरस थिफ्टर था, जिसने लंबी दूरी की दोनों दौड़ें जीतकर सफलता का अफ्रीकी

अध्याय रचा। 15 सितंबर, 1943 को जन्मा साढ़े पाँच फुट कद एवं 116 पौंड भारी शरीरवाला थिफ्टर, जिसने 1972 में 10,000 में कांस्य पदक जीता था, के बारे में समीक्षकों का ख्याल था कि यदि इथोपिया ने मांट्रियल ओलंपिक का बायकाट नहीं किया होता, तो लासे वीरेन लंबी दूरी में शायद ही डबल बना पाता। अलबत्ता धार्मिक परंपरा पर अटूट विश्वास रखनेवाला थिफ्टर जब मास्को पहुँचा, तब वह छः बच्चों का बाप बन चुका था, परंतु अपने जीवट से अफ्रीकी धावकों की तरह सबको पीछे छोड़कर स्वर्ण जीतने में सफल हो गया।

रूस ने भी कुछ अप्रत्याशित कामयाबियाँ हासिल कीं। दोनों रिले दौड़ों में स्वर्ण के अलावा 400 मी. सपाट दौड़ में 23 वर्षीय मेडिकल छात्र विक्टर मारकिन ने अप्रत्याशित रूप से पहला स्थान बनाया। रूसी एथलीटों ने फेंकने की चारों स्पर्धाएँ भी जीतीं। हैमर थ्रो में यूरी सेदिख (81.8 मीटर, विश्व-रिकार्ड), गोला फेंक में ब्लादीमिर किसेलियोन (21.35 मीटर, ओलंपिक-रिकार्ड), चक्का फेंक में विक्टर रासचुपकिन (66.64 मीटर) और भाला फेंक में 21 वर्षीय डेनिस क्वला (91.20 मीटर) सभी की जीत अप्रत्याशित रही। त्रिकूद में विक्टर सायनेव को अपना लगातार चौथा स्वर्ण नहीं मिल सका। उसे अपने हमवतन जाक उदामे (17.35 मीटर) के बाद दूसरा स्थान नसीब हुआ।

पूर्वी जर्मनी को दोनों बाधा दौड़ सहित 110 मीटर हर्डल में टामस मुंकेल्ट (13.39 सेकेंड) एवं 400 मी. वोल्कर बैक (48.69 सेकेंड) के अलावा मैराथन में व्लादीमिर सिरपिस्की एवं 50 किलोमीटर पैदल चालन में हार्टविन गाउटर (3:49:24.0, ओलंपिक-रिकार्ड) ने सफलता दिलाई। लंबी कूद में लुट्ज डोंब्रोस्की (8.54 मीटर) एवं ऊँची कूद में गर्ड वेसिग विश्व-रिकार्ड ऊँचाई (2.36 मीटर) नापकर स्वर्ण विजेता हुआ। ब्रिटेन 800 मी. एवं 1500 मी. में फेवरेट माना जा रहा था और केन्या की अनुपस्थिति में यह स्पर्धा उसके लिए और आसान हो गई थी, लेकिन परिणाम कुछ और ही निकला। 800 मीटर में सेबेस्टिन कोव फेवरेट था, परंतु स्टीव ओवट ने उसे दूसरे स्थान पर धकेल दिया। पाँच दिन बाद 1500 मीटर में फेवरेट ओवट को कोव ने तीसरे स्थान पर धकेलकर अपना हिसाब चुकता किया। अमरीकी धावकों की अनुपस्थिति में 100 मी. फर्राटा दौड़ 28 वर्षीय स्काटिश एलेन वेल्स ने जीती। वेल्स, जिसे उसकी पत्नी ने कोच किया था, ओलंपिक में 100 मीटर का सबसे बूढ़ा चैंपियन बना। उसका समय (10.25 सेकेंड) भी इतना ज्यादा था कि उसे उस समय मांट्रियल में चौथा स्थान भी नहीं मिल पाता। अलबत्ता डेकाथलन में स्वर्ण जीतनेवाला फ्रांसिस मोर्गन 'डेली' थांपसन अपनी जीत के प्रति शुरू से ही आश्वस्त था। पश्चिमी जर्मनी के विश्व-कीर्तिमानधारक गुड्डो क्रट्शमेर के भाग न लेने के कारण कड़ी चुनौती उसे सिर्फ दूसरे दिन की बारिश से ही मिली। 30 जुलाई, 1958 को नाटिंग हिल (लंदन) में स्काटिश माता एवं नाईजीरियन

पिता की संतान के रूप में जन्मे डेलीं ने 1976 मांट्रियल में भी भाग लिया, परंतु अठारहवें स्थान पर रहा । इस असफलता ने उसे बहुत कुछ सिखा दिया । मास्को में स्वर्ण जीतने के बाद उसने विश्व की लगभग हर बड़ी प्रतियोगिता में अपना डंका बजाया है, जिसमें लासएंजिल्स ओलंपिक, प्रथम विश्व कप एथलेटिक्स हेलसिंकी, तथा 1978, 1982 एवं 1986 के राष्ट्रमंडलीय खेल प्रमुख हैं ।

200 मी. दौड़ में इटली का 27 वर्षीय फ्रेयका एजुरा पित्रो मेन्ना, जोकि तीसरी बार ओलंपिक में उतरा था, 20.19 सेकेंड से कामयाब रहा । 20 किलोमीटर पैदल चालन में माउरिजिवो दामीलानो ने ओलंपिक-रिकार्ड (1:23:35.5) बनाते हुए इटली को दूसरा स्वर्ण दिलवाया । इस स्पर्धा में माउरिजिवो का जुड़वाँ भाई जियोर्गियो 11वें स्थान पर रहा । पोल वाल्ट में फ्रांसिसी फिलिए हाउपिथन अथवा थियरे विग्नेरोन के स्वर्ण जीतने की आशा को, पोलिश ब्लादीस्लाव कोज़ाकीविज़ ने नया विश्व-रिकार्ड बनाकर (5.78 मीटर) धूमिल कर दिया । 29 वर्षीय ब्रोनीस्लाव मालीनोवस्की ने 3000 मीटर स्टीपल चेस में पौलेंड को एक स्वर्ण दिलवाया । स्काटिश माँ एवं पोलिश पिता की संतान मालीनोवस्की, जिसने इसी स्पर्धा में 1972 में चौथा एवं 1976 में दूसरा स्थान पाया था, एक साल बाद एक कार-दुर्घटना में चल बसा ।

महिला वर्ग में भी रूस एवं पूर्वी जर्मनी के बीच ही प्रतिद्वंद्विता रही, जिसमें सबसे तेज धाविका का खिताब पहली बार सोवियत संघ के हिस्से में आया । लुडमिला कोंड्रात्येवा (11.06 सेकेंड) ने इंच मात्र के फासले से पूर्वी जर्मनी की विश्व-रिकार्डधारी माइलिस गोहर (11.0 सेकेंड) से पार पाई । 100 मी. हर्डल्स एवं 4 × 400 मी. रिले में भी हैरतअंगेज परिणाम आया । बाधा दौड़ में 27 वर्षीया वेरा कोमीसोवा ने पिछले विजेता जोहना कली (शादी के पूर्व शैलर) को 12.56 सेकेंड से ओलंपिक-रिकार्ड बनाते हुए पीछे छोड़ा, जबकि 4 × 400 मीटर रिले में फेवरेट पूर्वी जर्मनी को मेजबान देश ने दूसरे स्थान पर धकेल दिया । लंबी कूद का परिणाम भी अप्रत्याशित था । 20 वर्षीया शर्मीली एथलीट ततियाना कोलपाकोव ने दिग्गजों की उपस्थिति में 7.06 मी. (ओलंपिक-रिकार्ड) की अंतिम कूद के साथ स्वर्ण पदक हथियाया । इसके मुकाबले 800 मीटर में 26 वर्षीया मिलिट्री आफिस-वर्कर नावेझ्दा ओलीजारेंको की जीत आसान रही । वह आरंभ से ही बढ़त बनाकर एक मिनट 53.42 सेकेंड के समय से विश्व-रिकार्ड बनाने में सफल रही । पेंटाथलन में भी जिसके तीनों ही पदक रूस के हाथ लगे, विश्व-कीर्तिमान (5083 अंक) बना, जिसे 31 वर्षीया नादेझ्दा त्कैचेंको ने बनाया । त्कैचेंको इससे पहले म्यूनिख में नौवें तथा मांट्रियल में चौथे स्थान पर रही थी और उसके बाद प्रतिबंधित औषधि सेवन के कारण डेढ़ वर्ष का निलंबन भी भुगत चुकी थी ।

पूर्वी जर्मनी की महिलाएँ इस बार अपेक्षित सफलता नहीं पा सकीं । फिर भी 200

मी. सपाट दौड़, चक्का फेंक एवं 4 × 100 मी. के मांट्रियल-खिताब का बचाव करने के साथ ही 400 मीटर में विश्व-रिकार्डधारी मारिटा कोच (48.49 सेकेंड, ओलंपिक-रिकार्ड) एवं गोला फेंक में ईलोना स्लुपियानेक (22.41 मी.) ने स्वर्ण जीतकर अपने देश का सम्मान बचाया। ऊँची कूद इतालवी सारा सिमोनी (1.97 मी., ओलंपिक-रिकार्ड) और भालाफेंक क्यूबा मारिया कोलेन रियूनेस (68.40 मी, ओलंपिक-रिकार्ड) ने जीतकर रूस एवं पूर्वी जर्मनी के दबदबे को कम किया।

रूसी एवं जर्मन तैराकों की चाँदी

मीर एवेन्यू इंडोर स्टेडियम में बने तरणताल में अमरीकी अनुपस्थिति से सोवियत संघ एवं पूर्वी जर्मनी के तैराकों की बन आई। रूसी पुरुष एवं जर्मन महिलाएँ जोकि 1978 में पश्चिम बर्लिन में आयोजित तीसरी विश्व तैराकी प्रतियोगिता में अमरीका के सामने बौने हो गए थे, यहाँ क्रमशः सात स्वर्ण, सात रजत एवं तीन कांस्य और बारह स्वर्ण, दस रजत एवं आठ कांस्य पदक जीतकर अपनी श्रेष्ठता स्थापित करने में सफल रहे। फिर भी यहाँ अमरीकी जलमानवों एवं जलपरियों की अनुपस्थिति बराबर खलती रही।

इस बार लेनिनग्राद के 20 वर्षीय छात्र ब्लादीमिर सेलिनकोव ने सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया। उसने 400 मी. (3 मिनट, 51.31 सेकेंड, ओलंपिक-रिकार्ड) एवं 1500 मी. फ्री स्टाइल (14 मिनट, 58.27 सेकेंड, विश्व-रिकार्ड) में तो स्वर्ण जीता ही, 4 × 200 मी. फ्री स्टाइल रिले के विजेता दल का भी वह सदस्य था। अमरीका में प्रशिक्षित सेलिनकोव 1500 मी. में 15 मिनट की बाधा तोड़नेवाला पहला तैराक बना। फ्री स्टाइल रिले विजेता दल के दो अन्य सदस्यों सर्जेई कोपनिकोव एवं अलेक्जेंडर सिपोरेंको ने क्रमशः 200 मी. फ्री स्टाइल (1 मिनट 49.81 सेकेंड, ओलंपिक-रिकार्ड) एवं 400 मीटर व्यक्तिगत मिडले (4 मिनट, 22.89 सेकेंड, ओलंपिक-रिकार्ड) में भी स्वर्ण पदक जुटाया। कुछ अप्रत्याशित विजेताओं में 18 वर्षीय स्वीडिश बेन बोरोन (100 मी. बैक स्ट्रोक), ब्रिटिश डकेन ग्धेव (100 मी. ब्रीस्ट स्ट्रोक), अमरीका में प्रशिक्षित स्वीडिश पार आरविद्सन (100 मी. बटरफ्लाई) एवं आस्ट्रेलियाई दल 4 ×100 मी. मिडले रिले रहा।

महिलाओं में पूर्वी जर्मनी की 21 वर्षीया जलपरी बारबरा क्राउज का प्रदर्शन उल्लेखनीय रहा। छः फुट कदवाली क्राउस मांट्रियल ओलंपिक के ठीक पहले गले में सूजन की शिकार हो गई। फलस्वरूप वह प्रतियोगिताओं में भाग नहीं ले सकी। यहाँ 100 मी. फ्री स्टाइल में 55 मिनट की बाधा दो बार तोड़ते हुए उसने सबसे तेज महिला तैराक का खिताब (54.79 सेकेंड) जीता। तीन दिन बाद वह 200 मी. फ्री स्टाइल (1 मिनट, 58.33 सेकेंड, ओलंपिक-रिकार्ड) और तीन दिन बाद 4 × 100 मी. फ्री स्टाइल

रिले में विजेता जर्मन दल की सदस्या रही। इसी तरह 16 वर्षीया इनेस डारीस की कामयाबी भी काबिले तारीफ रही। दोनों रिले टीमों में उसने स्वर्ण के साथ 400 मी. फ्री स्टाइल में ओलंपिक-कीर्तिमान (4:08.76) बनाते हुए स्वर्ण जीता। इसके अतिरिक्त उसने दो रजत एवं एक कांस्य पदक भी जीता। तीन स्वर्ण जीतनेवाली तैराकों में 16 वर्षीया करेन मेट्शचुक (दो रिले एवं 100 मी. बटरफ्लाई) भी रही, परंतु सबसे जानदार प्रदर्शन तो स्कूली छात्रा रिका रीनिश्ख का रहा। 20 जुलाई को 4 × 100 मी. मिडले रिले की सदस्या के रूप में उसने अपना पहला स्वर्ण पाया। उस समय उसकी उम्र 15 वर्ष, 105 दिन थी और वही इस आयोजन की सर्वाधिक युवा चैंपियन भी थी। बाद में उसने बैक स्ट्रोक की दोनों स्पर्धाओं में विश्व-रिकार्ड बनाते हुए (100मी. 1:00.86 सेकेंड एवं 200 मी. 2:11.77 सेकेंड) भी स्वर्ण जीता। पूर्वी जर्मनी को एकमात्र विफलता 200 मी. ब्रीस्ट स्ट्रोक में नसीब हुई जिसे 17 वर्षीया रूसी लीना केचुशिते ने ओलंपिक-रिकार्ड (2:29.54 सेकेंड) बनाते हुए जीता।

मुक्केबाजी के रिंग में 15 देशों के करीबन पौने तीन सौ मुक्केबाजों ने प्रवेश लिया, परंतु अमरीका की अनुपस्थिति में क्यूबाई मुक्केबाजों की बन आई। इस बार उसने योरोपीय देशों की सारी चुनौती को एक ओर करते हुए 11 वर्गों में 6 स्वर्ण, 2 रजत एवं 2 कांस्य जीते। फ्लाइवेट ही ऐसा वर्ग था जिसमें क्यूबा पदक नहीं जीता सका। उल्लेखनीय सफलताओं में टियोफिलो स्टीवेंसन का नाम प्रमुख है। उसने जहाँ लगातार तीसरी बार हैवीवेट वर्ग में स्वर्ण पदक जीता, वहीं मांट्रियल में फीदरवेट वर्ग में स्वर्ण जीतनेवाले एंजेल हेरेरा ने इस बार लाइटवेट वर्ग में रूसी विक्टर डेमियत्को को हराकर स्वर्ण पदक जीता। क्यूबा का ही 17 वर्षीय मुक्केबाज जुआन हर्नानि डेंज ने बैंटमवेट वर्ग का स्वर्ण जीता। यूँ तो मेजबान देश के भी 7 मुक्केबाज फाइनल में पहुँचे, मगर एक ही हाथ से वार करने की तकनीक के कारण मांट्रियल की भाँति वे यहाँ भी असफल रहे। इसमें सिर्फ शेमिल सेविरोन (लाइट-फ्लाइवेट) ही सफल हो सका। इतालवी पेट्रिजिवो ओलिवा को पूरी प्रतियोगिता का सर्वश्रेष्ठ मुक्केबाज घोषित किया गया, जिसने लाइट वेल्टरवेट में स्वर्ण जीता था।

जूडो के भार-वर्गों में परिवर्तन करके 6 की बजाय 8 स्वर्ण निर्धारित किए गए। जूडो के जन्मदाता देश जापान की अनुपस्थिति में पूरी तरह योरोपीय जूडो खिलाड़ी छाए रहे। फ्रांस के 95 कि.ग्रा. से अधिक भार-वर्ग में स्वर्ण जीतनेवाला एंजेलो पारीसी 1972 में ग्रेट ब्रिटेन का प्रतिनिधित्व करते हुए ओपन वर्ग में कांस्य पदक जीत चुका था। इटली में जन्मे एंजेलो पारीसी ने यहाँ ओपन वर्ग में रजत पदक भी पाया। लांसएंजिल्स में वह जापानी हितोषी हौतो से हारकर अपना खिताब खो बैठा। इसी प्रतियोगिता में पूर्वी जर्मनी के 5 फुट, 11 इंच ऊँचे आर्मी आफिसर डिटमार लारेंजो ने जो कि 95 कि.ग्रा. भार

वर्ग के सेमी फाइनल में हार गया था, बाद में ओपन वर्ग में पारीसी को हराकर स्वर्ण जीता।

मेजबान देश का वर्चस्व

कुश्ती के अखाड़े में भी मेजबान देश ने 12 वर्ग जीतकर अपनी धाक जमाई। सबसे महत्त्वपूर्ण सफलता सोसलन एंडीव (फ्री स्टाइल) व एलेक्जेंडर कोल्यर्स्कि (ग्रीको-रोमन दोनों सुपर हैवीवेट वर्ग) की रही, जिसमें दोनों ने अपने खिताब का बखूबी बचाव किया। ग्रीको-रोमन के सुपर हैवीवेट वर्ग के फाइनल में कोल्यर्स्कि को बुल्गारियाई एलेक्जंड्रे तीमोव का सामना करना पड़ा परंतु यह लगातार तीसरा अवसर रहा, जब फाइनल में पहुँचकर भी तीमोव स्वर्ण से वंचित रहा। रूस के दो जुड़वाँ भाइयों—अनातोली व सर्गेई बेलोग्लाजोव ने फ्री स्टाइल वर्ग में क्रमशः फ्लाईवेट व बैंटमवेट का स्वर्ण पदक एक दिन के अंतराल से जीता।

भारोत्तोलन में पिछले ओलंपिक की तरह इस बार भी सोवियत संघ छाया रहा। इस बार 5 स्वर्ण, 4 रजत उसके हाथ आए। उसके भारोत्तोलक सिर्फ लाइटवेट वर्ग में पदक नहीं जीत पाए। सबसे उल्लेखनीय प्रदर्शन लाइट हैवीवेट में यूरिक वारदानपन का रहा। वारदानपन ने कुल 400 कि. ग्रा. भार उठाकर न केवल नया विश्व-रिकार्ड बनाया, बल्कि उसका यह रिकार्ड अगले दो भारी वर्ग-विजेताओं—मिडिल हैवीवेट पीटर वाक्जाको (हंगरी) तथा 100 कि.ग्रा. स्तर में ओरा जारेंबा (चेक) से क्रमशः 22.5 कि.ग्रा. व 5 कि.ग्रा. अधिक था। सुपर हैवीवेट वर्ग में 30 वर्षीय सुल्तान रेखमानोव ने वेसिली अलेक्सेव को पीछे छोड़ा। फ्लाई वेट में चार भारत्तोलकों—कैनेबैक ओस्मानोलीन (रूस), बोंग-थोई-हो एवं ग्योंग-सिहान (दोनों उत्तरी कोरिया) तथा बेला ओलाह (हंगरी) ने 245.0 कि.ग्रा. का कुल भार उठाया था, परंतु पदक-वितरण शारीरिक भार के आधार पर किया गया, जिसमें कैनेबैक पहले बोंग-थोई-हो दूसरे एवं ग्योंग सिहान तीसरे स्थान पर रहा। यह प्रतियोगिता इजमेंलोवा एरीना में संपन्न हुई थी। मीतीश्यी शूटिंग रेंज में संपन्न निशानेबाजी में रूस ने सात में से तीन स्वर्ण जीते। इनमें फ्री पिस्टल (50 मी.) वर्ग में अलेक्जेंडर मेलेंटीव (581) ने तथा रनिंग गेम टारगेट में इवोर सोकोलोव (589) ने नया विश्व-रिकार्ड स्थापित किया। हंगरी के एकमात्र स्वर्ण विजेता करोली बार्गा ने स्मालबोर राईफल में पूर्वी जर्मनी के हेलफ्रीड हेलफोर्ट के साथ विश्व-रिकार्ड की बराबरी (599) की। उल्लेखनीय है कि दो दिन पूर्व ही बार्गा फुटबाल खेलते-खेलते अपना हाथ तुड़वा बैठा था। 34 वर्षीय इतालियन निशानेबाज लुसियानो गिवानेटूरी ट्रेप शूटिंग में अपनी जीत से इतना अधिक खुश हो गया कि उसने अपनी टोपी

हवा में उछालकर गोलियों से छलनी कर दी। लासएंजिल्स में उसने इस स्पर्धा में पुनः स्वर्ण पदक जीता।

ब्रालास्लोव वेलोड्रोम में संपन्न हुए साईकिलिंग मुकाबलों में मेजबान ने तीन एवं पूर्वी जर्मनी ने दो स्पर्धाएँ जीतीं। 4000 मी. टीम परसूट प्रतियोगिता में प्रथम तीन स्थान प्राप्त करनेवाले देश क्रमशः स्विट्जरलैंड, फ्रांस एवं डेनमार्क थे, जिसके पदक-वितरण समारोह के समय अजीब नजारा देखने को मिला। चूँकि इन तीनों ही देशों ने अपनी सरकार के फैसले के खिलाफ इन खेलों में भाग लिया था, इसलिए उन्हें अपने राष्ट्रीय गीत एवं झंडे के बजाय ओलंपिक गान और ध्वज का सहारा लेना पड़ा।

घुड़सवारी के सभी मुकाबले ओलंपिक में पहली बार एक ही स्थान बित्सापार्क स्थित ट्रेड यूनियन घुड़सवारी कांप्लेक्स पर हुए। रूस ने तीनों स्पर्धाओं की टीम प्रतियोगिता सहित तीन रजत एवं दो कांस्य जीतकर अपना दबदबा बनाया।

तलवारबाजी में सोवियत संघ की बजाय फ्रांसिसी तलवारबाजों की धार ज्यादा तेज रही और उन्होंने कुल 8 स्पर्धाओं में 4 स्वर्ण, 1 रजत एवं एक कांस्य पदक जीते। इसमें महिलाओं की दोनों स्पर्धाएँ भी शामिल रहीं। शेष 4 स्पर्धाओं में मेजबान ने तीन में सफलता पाई। सेब्रे के मुकाबले में रूसी विक्टर क्रोवोपाउस्कोव ने लगातार दूसरी बार व्यक्तिगत व टीम-स्पर्धा में स्वर्ण पदक जीता। माडर्न पेंटाथलन में दोनों स्वर्ण मेजबान देश ने जीते। काडलोस्लाव उपनगर में ही संपन्न धनुर्विधा में अमरीकी चुनौती के अभाव में 18 वर्षीय टामी पायकोलेनेन (फिनलैंड) ने पुरुषों एवं केतोलोसाबेरीदज़े (रूस) ने महिलाओं की स्पर्धा में सफलता पाई।

जुड़वाँ ने जुड़वाँ की चुनौती ध्वस्त की

क्रायलोस्लोव में 2300 मी. लंबी, 125 मी. चौड़ी तथा 2.5 मी. गहरी नहर में केनोइंग तथा रोइंग स्पर्धा आयोजित हुईं। रोइंग में पूर्वी जर्मनी ने रूस को बुरी तरह पछाड़कर दोनों वर्गों के 14 स्वर्ण में से 11 स्वर्ण झटक लिए। इस स्पर्धा में पूर्वी जर्मनी के 29 वर्षीय जुड़वाँ लैंडवोग्ट बंधुओं—बंर्ड एवं योर्ग ने रूसी जुड़वाँ पिमेनोव बंधुओं—यूरी व निकोलाई को फाइनल में परास्त किया। पाल नौकायन में ब्राजील ने टारनेडो व 470 वर्ग में स्वर्ण जीता। रूसी वेलेंटीन मैनकिन ने स्टार वर्ग में स्वर्ण जीतकर इस प्रतियोगिता में तीसरा स्वर्ण प्राप्त किया। इसके पहले उसने 1968 में फिन वर्ग तथा 1972 टेंपेस्ट वर्ग में स्वर्ण जीता था। वही इस आयोजन का सबसे वरिष्ठ चैंपियन (42 वर्ष) भी था।

केनोइंग में रूस एवं पूर्वी जर्मनी ने बराबर सफलता जुटाते हुए 11 में से 8 स्वर्ण आपस में बाँट लिए। 21 वर्षीय रूसी डाक्टर ब्लीदीमिर परफानोविच ने 500 मी. क्याक एकल एवं युगल तथा 1000 मी. क्याक युगल में सफलता पाई। इस तरह वह केनोइंग

की एक ही स्पर्धा में तीन स्वर्ण पानेवाला पहला खिलाड़ी बना। 23 वर्षीय रुडीगर हेल्म (पूर्वी जर्मनी) के हिस्से में दो स्वर्ण (1000 मी. क्याक सिंगल तथा चौकड़ी) तथा एक कांस्य पदक आया। ये दोनों ही स्वर्ण उसने मात्र 2 घंटे के अंतराल में जीते थे। इसके पहले उसने मांट्रियल में 1000 मी. क्याल एकल में स्वर्ण तथा चौकड़ी में कांस्य पदक पाया था। महिला वर्ग में 500 मी. क्याक एकल में स्वर्ण जीतनेवाली बिरगिट फिशर उस समय 18 वर्ष, 158 दिन की थी, जो केनोइंग की आज भी सबसे युवा स्वर्ण विजेता है।

डायनामो स्टेडियम के पालीग्राम में संपन्न हुए हाकी फाइनल में भारतीय टीम ने वासुदेवन भास्कर के नेतृत्व में 16 वर्षों बाद पुनः खोया हुआ स्वर्ण पाया। लेकिन महत्त्वपूर्ण देशों, मसलन पाकिस्तान, प. जर्मनी, आस्ट्रेलिया, हालैंड की अनुपस्थिति में इसका महत्त्व कम रहा। छः देशों के बीच राउंड रोबिन लीग आधार पर स्पेन 9 और भारत 8 अंक अर्जित कर पहले दो स्थान पर रहा। फाइनल में इन्हीं दो देशों के बीच मुकाबला हुआ जिसमें भारत ने उत्तरार्ध के कुछ समय बाद 3-0 की बढ़त हासिल कर ली थी, लेकिन तभी स्पेनिश कप्तान जुआन अमात ने शीघ्र ही दो पेनाल्टी कार्नर को गोल में बदलकर स्थिति को संघर्षमय बना दिया। कुछ ही समय बाद मो. शाहिद ने चौथा गोल किया, मगर शीघ्र ही अमात ने एक और पेनाल्टी कार्नर को गोल में बदलकर मैच की उत्तेजना को चरम स्थिति तक पहुँचा दिया। अंततः इसी स्कोर पर मैच समाप्त हुआ। स्पेनिश कप्तान ने पूरी प्रतियोगिता में सर्वाधिक 16 गोल दागे। पहली बार महिलाओं की हाकी-प्रतियोगिता भी हुई, जिसमें जिम्बाब्वे की टीम पाँचों मैचों में अविजित रहकर स्वर्ण विजेता हुई। चेकोस्लोवाकिया (7 अंक) को रजत व मेजबान रूस (6 अंक) को कांस्य पदक मिला। भारतीय टीम, जिसने अपने पहले दो मैचों में लगातार जीत हासिल की थी, 5 अंक लेकर चौथे स्थान पर रही।

फुटबाल में भी सात क्वालीफाइड टीमों के बहिष्कार के कारण स्पर्धा फीकी रही, अलबत्ता स्वर्ण इस बार भी साम्यवादी देश ने ही जीता। फाइनल में चेकोस्लोवाकिया ने अपने स्थानापन्न खिलाड़ी जिनड्रीच स्वाबोडा के एकमात्र गोल से पूर्वी जर्मनी को परास्त किया। वालीबाल में जापान एवं दक्षिण कोरिया की अनुपस्थिति में दोनों स्वर्ण रूस के हाथ लगे, जबकि हैंडबाल में जहाँ रूसी महिलाओं ने अपने खिताब का बचाव किया, वहीं पुरुष फाइनल में वह पूर्वी जर्मनी के हाथों (20-19 से) हार गया। बास्केटबाल में पिछले उपविजेता यूगोस्लाविया ने इटली को 86-77 से परास्त कर स्वर्ण जीता, जबकि महिलाओं में मेजबान देश ने बुल्गारिया को 104-73 से मात देकर अपना ताज बरकरार रखा। वाटरपोलो में पिछला चैंपियन हंगरी इस बार सिर्फ कांस्य पदक ही पा सका।

फाइनल में मेजबान देश ने यूगोस्लाविया को एक संघर्ष एवं तनावपूर्ण मैच में 8-7 के स्कोर से हराया।

इस तरह बहिष्कार की काली छाया के बावजूद 22वाँ ओलंपिक महोत्सव संपन्न हुआ, जिसमें मेजबान देश एवं पूर्वी जर्मनी इस बहिष्कार का भरपूर लाभ उठाते हुए पदक-तालिका में प्रथम दो स्थानों पर रहे। इस ओलंपिक के साथ ही अंतर्राष्ट्रीय ओलंपिक समिति के अध्यक्ष लार्ड किलानिन का कार्यकाल भी पूरा हुआ और स्पेन के जुआन एंटीरियो समरांच नए अध्यक्ष बने।

पदक-तालिका—1980

देश	स्वर्ण	रजत	कांस्य
सोवियत संघ	80	69	46
पश्चिम जर्मनी	47	37	42
बुल्गारिया	8	16	17
क्यूबा	8	7	5
इटली	8	3	4
हंगरी	7	10	15
रूमानिया	6	6	13
फ्रांस	6	5	3
ग्रेट ब्रिटेन	5	7	9
पोलैंड	3	14	15
स्वीडन	3	3	6
फिनलैंड	3	1	4
चेकोस्लोवाकिया	2	3	9
यूगोस्लाविया	2	3	4
आस्ट्रेलिया	2	2	5
डेनमार्क	2	1	2
ब्राजील	2	—	2
इथोपिया	2	—	2
स्विट्जरलैंड	2	—	—
स्पेन	1	3	2

आस्ट्रिया	1	2	1
ग्रीस	1	—	2
बेल्जियम	1	—	—
भारत	1	—	—
जिम्बाब्वे	1	—	—
उत्तरी कोरिया	—	3	2
मंगोलिया	—	2	2
तंजानिया	—	2	—
मैक्सिको	—	1	3
नीदरलैंड	—	1	2
आयरलैंड	—	1	1
युगांडा	—	1	—
वेनेजुएला	—	1	—
जमैका	—	—	3
गुयाना	—	—	1
लेबनान	—	—	1

तेईसवाँ ओलंपिक : 1984—लासएंजिल्स

म्यूनिख (1972) एवं मांट्रियल (1976) ओलंपिक-आयोजन में विपुल राशि की मितव्ययिता ने ओलंपिक-आयोजन की मेजबानी में रुचि दिखानेवाले अधिकांश देशों के हौसले पस्त कर दिए। इसका प्रमाण इस तथ्य से मिलता है कि 23वें ओलंपिक कुंभ की मेजबानी के लिए आई. ओ. सी. के पास सिर्फ लासएंजिल्स का ही आवेदन आया। लिहाजा अधिकृत रूप से 20 अक्टूबर, 1987 को लासएंजिल्स को (मास्को के बाद) ओलंपिक-आयोजन की जिम्मेदारी सौंपी गई, किंतु इस घोषणा के बाद अमरीकी राष्ट्रपति जिमी कार्टर एवं लासएंजिल्स महापालिका ने किसी भी रूप में वित्तीय सहायता देने से इंकार कर दिया। ऐसे में लासएंजिल्स को एक धनाढ्य व्यवसायी 46 वर्षीय पीटर उबेराथ ने उबारा। उसने लासएंजिल्स ओलंपिक-आयोजन समिति का अध्यक्ष बनकर कुछ ऐसे सुझाव रखे, जिन पर पहले कभी सोचा ही नहीं गया था। उसने प्रस्ताव रखा कि

चूँकि अधिकांश राशि नए स्टेडियम एवं खेलग्राम के निर्माण में खर्च हो जाती है, इसलिए पुराने स्टेडियमों एवं विश्वविद्यालयों के परिसरों को किराए पर लेकर इस खर्च में काफी हद तक कटौती की जा सकती है। इसके अलावा उसने इस आयोजन में प्रयुक्त होनेवाली हर छोटी-बड़ी चीज का व्यवसायीकरण करने का सुझाव दिया, जिससे काफी राशि जमा की जा सकती है। इस आधार पर इस ओलंपिक का बजट 500 मिलियन डालर निर्धारित किया गया।

उबेराथ के ये साहसिक निर्णय ऐतिहासिक बन गए। सिर्फ टेलीविजन अधिकार के बदले उन्हें ए. बी. सी. टेलिविजन कंपनी से 225 मिलियन डालर मिले। इसके अतिरिक्त हर छोटी-मोटी वस्तुओं के प्रायोजन से 150 मिलियन डालर मिला। इतना ही नहीं, ओलंपिक मशाल का भी व्यवसायीकरण किया गया और प्रति किलोमीटर 3000 डालर की दर से किसी को भी दौड़ने का अधिकार दिया गया। इससे भी आयोजन समिति को लाभ ही लाभ हुआ।

मुख्य स्टेडियम के रूप में 1932 में प्रयुक्त लासएंजिल्स मेमोरियल कोलेसियम को चुना गया और इसमें आवश्यक सुधार करके इसे नवीनतम बनाया गया। इसकी क्षमता बढ़ाकर लगभग 92,500 कर दी गई। तैराकी के लिए दक्षिण केलीफोर्निया विश्वविद्यालय में आधुनिकतम तरणताल एवं डोमिंगोहिल्स में वेलोड्रोम का निर्माण किया गया। इस आयोजन के शुभंकर के रूप में अमरीकी राष्ट्रीय पक्षी चील को चुना गया और इसे 'सैम' नाम दिया गया। विश्वप्रसिद्ध वाल्ट डिस्ने के चित्रकला विभाग के 23 कलाकारों ने राबर्ट मूर के निर्देशन में इसे आकर्षक रूप दिया। पाँच छल्लों के ऊपर लाल, सफेद एवं नीले रंग से बना पंचसितारा इस खेल का प्रतीक चिह्न रहा।

अमरीकी राष्ट्रपति रोनाल्ड रीगन ने एक बुलेटप्रुफ पारदर्शी केबिन से 28 जुलाई को 92,000 दर्शकों से भरे कोलेसियम में इस आयोजन का विधिवत उद्घाटन किया। इस अवसर पर हीलियम से भरे एक हजार गुब्बारे एवं दस हजार श्वेत कपोत आकाश में छोड़े गए। उसके बाद एक अनजान अश्वेत चेहरे ने ओलंपिक मशाल लेकर स्टेडियम में प्रवेश किया। वह चेहरा विश्वविख्यात एथलीट जेसी ओवंस की नातिन 26 वर्षीया जीना हैम्पहिल का था। हैम्पहिल ने मशाल एक और अश्वेत खिलाड़ी रेफर जांसर को सौंप दी, जोकि 1960 में डेकाथलन का राजा बना था। कुछ ही देर बाद उसने मशाल ज्योति अग्निकुंड में झुका दी। इसके बाद एक अश्वेत एथलीट एडविन मोजेस ने खिलाड़ियों की और शेरोन बेवर ने निर्णायकों की शपथ की जिम्मेदारी निभाई। इस बार रिकार्ड 140 देशों की 1620 महिलाओं सहित 7078 खिलाड़ियों ने 23 विभिन्न स्पर्धाओं में भाग लिया। बंग्लादेश, भूटान, जिबूती, गाम्बिया, इक्वीटोरियल, गिनी, ग्रेनाडा, ब्रिटिश वर्जिन द्वीप समूह, मारिशस, मारुतेनिया, खांडों, ओमान, पश्चिमी समोआ,

कातार के देशों ने पहली बार अपने खिलाड़ी ओलंपिक में भेजे, किंतु इन सभी की चर्चा सोवियत समर्थक देशों के बहिष्कार के कारण दबकर रह गई। सिर्फ रूमानिया एवं यूगोस्लाविया को छोड़कर शेष कम्युनिस्ट देशों—मसलन रूस, पूर्वी जर्मनी, बुल्गारिया, हंगरी, पोलैंड, चेकोस्लोवाकिया, इथोपिया, क्यूबा, निकारागुआ, उत्तरी कोरिया, अफगानिस्तान, लाओस, मंगोलिया, दक्षिणी यमन, वियतनाम आदि ने सुरक्षा कारणों से इस आयोजन का बहिष्कार करके मास्को ओलंपिक में अमरीकी गुट के बर्ताव का बदला चुका लिया। इसके अलावा बोल्विया, अल्बानिया एवं ईरान ने अन्य कारणों से इस आयोजन में हिस्सा नहीं लिया।

मास्को में अमरीकी समर्थक देशों की अपेक्षा सोवियत समर्थक देशों के बहिष्कार का यहाँ ज्यादा प्रभाव पड़ा और मुकाबलों में कड़ी प्रतिस्पर्धा देखने को नहीं मिली। इसका अंदाज इस बात से लगाया जा सकता है कि यहाँ मास्को के 36 विश्व-रिकार्ड एवं 74 ओलंपिक-रिकार्ड की तुलना में सिर्फ 11 विश्व एवं 44 ओलंपिक-रिकार्ड ही बन सके। यह स्थिति एक और बात से साफ हो जाती है कि मेजबान देश के 83 स्वर्ण के बाद दूसरे स्थान पर आनेवाली रूमानियाई टीम के मात्र 19 स्वर्ण पदक थे।

'सुपरमैन' लुईस का उदय

लासएंजिल्स मेमोरियल कोलेसियम के टारटर ट्रेक में संपन्न दौड़-कूद के मुकाबलों में कम दूरी की स्पर्धाओं में अमरीका का प्रभुत्व रहा। पुरुष वर्ग में 24 में से 9 स्वर्ण तो मेजबान की झोली में गिरे। इनमें से चार तो अकेले अश्वेत एथलीट फ्रेडरिक कार्लटन 'कार्ल' लुईस ने जुटाए और वह 48 वर्ष पूर्व बर्लिन ओलंपिक में महान जेसी ओवंस द्वारा रचित विजयगाथा का सहभागी बना। उसमें और जेसी ओवंस में जन्म के साल की समानता भी है। उसका जन्म भी अल्बामा में हुआ (1 जुलाई, 1961), उसका परिवार भी खेलों को समर्पित रहा, लेकिन 15 वर्ष तक उसका झुकाव अपने पिता की तरह अमरीकन फुटबाल की ओर रहा, परंतु बाद में उसकी कद-काठी में काफी परिवर्तन आया और इसी बदलाव से वह दौड़-कूद की ओर झुका। 1979 में हाउस्टन विश्वविद्यालय में प्रवेश के साथ ही उसका संपर्क टामटेलेज से हुआ, जिसने उसमें अच्छे एथलीट के गुण भरे। 1980 के मास्को ओलंपिक के लिए वह लंबी कूद एवं 4 × 100 मी. रिले टीम में चुना गया था, लेकिन बहिष्कार से उसकी आशाएँ धूमिल हो गईं। फिर 1983 के हेलसिंकी विश्वकप में उसकी अंतर्राष्ट्रीय पहचान बनी, जब उसने 100 मी., लंबी कूद और 400 मीटर रिले रेस में स्वर्ण पदक जीता। लासएंजिल्स में तो वह चार स्वर्ण के लिए 'फेवरेट' हो गया। 5 अगस्त को उसने 100 मीटर की सपाट दौड़ 9.99 सेकेंड में जीतकर अपने विजय-अभियान का श्रीगणेश किया। फिर लंबी कूद में 8.54

मीटर की छलाँग लगाकर उसने अपना दूसरा स्वर्ण जीता। महिला वर्ग की इस स्पर्धा में उसकी छोटी बहन करोल भी उतरी थी, लेकिन कार्ल के विपरीत उसे नवें स्थान से संतुष्ट होना पड़ा। उसके पश्चात उसने 200 मीटर में 19.8 सेकेंड से ओलंपिक-रिकार्ड बनाते हुए तीसरा स्वर्ण जीता। अंतिम स्वर्ण उसने 4 × 100 मीटर रिले में हासिल किया, जिसमें एंकरलेग 8.94 सेकेंड में तय किया और पूरी टीम ने 37.83 सेकेंड का समय लेकर इस आयोजन में एथलेटिक्स का एकमात्र विश्व-रिकार्ड बनाने में सहयोग दिया। छः फुट दो इंच ऊँचे एवं 80 किलो वजन के मालिक लुईस ने बाद में अपने प्रेरणास्रोत जेसी ओवंस के सम्मान में उसकी पत्नी को एक स्वर्ण समर्पित किया।

अमरीका के लिए एक और स्वर्ण 400 मी. बाधा दौड़ में चश्माधारी 'द किलर' एडविन मोजेस ने 47.75 सेकेंड के साथ जीता। कम दूरी की बाधा दौड़ में भी (110 मी.) 21 वर्षीय अश्वेत चश्माधारी रोजर किडम ने (13.20 सेकेंड, ओलंपिक-रिकार्ड) संभावित विजेता रोजर फोस्टर को 0.03 सेकेंड से पछाड़ा। 400 मी. सपाट दौड़ में अमरीकी वायुसेना के दूसरे लेफ्टिनेंट एलंजो बावेर्स ने 44.27 सेकेंड से जीत हासिल की। त्रिकूद में 24 वर्षीय अल जायनर ने 17.20 मी. की छलाँग लगाकर अपने सहयोगी माईक गेनाली को 0.8 मी. से पीछे छोड़ते हुए स्वर्ण पदक जीता। इसी दिन अल की बहन 20 वर्षीया जैकी ने हेप्टाथलन में रजत जीता और बाद में लंबी कूद में पाँचवाँ स्थान पाया।

लंबी दूरी की दौड़ में सारे समीकरण गड़बड़ा गए। 5000 मीटर में मोरक्को के सैद ओयटा ने ब्रिटिश विश्व चैंपियन डेविड मूर काफ्ट को पीछे छोड़ते हुए ओलंपिक-रिकार्ड बनाकर (13 : 05.59 सेकेंड) स्वर्ण जीता। मूर काफ्ट चौदहवें स्थान पर आया। 3000 मीटर स्टीपल चेस में केन्या के जूलियस केरिर (8 : 11.30 सेकेंड) ने अमरीकी संभावना ब्रायन डिमर (8 : 14.06) को तीसरे स्थान पर ढकेल दिया। इससे भी अप्रत्याशित परिणाम मैराथन दौड़ में आया, जिसमें विश्व-चैंपियन राबर्ट डीकेस्टला (आस्ट्रेलिया) एवं विश्व-रिकार्डधारी अल्बर्टो सालाजार (अमरीका) क्रमशः पाँचवें एवं चौदहवें स्थान पर खिसक गए। पुर्तगाल के 37 वर्षीय क्रास कंट्री धावक कालोज लोपेज ने जोकि यहाँ आने से पूर्व कार-दुर्घटना में घायल हो चुका था, ओलंपिक-रिकार्ड समय 2 घंटे, 9 मिनट 21 सेकेंड से स्वर्ण जीता। रजत अमरीका के जान ट्रेसी (2 : 09 : 56) एवं कांस्य ब्रिटिश चार्ली स्पेडिंग (2 : 09 : 58) के हाथ लगा। लेकिन 10,000 मी. दौड़ का परिणाम अपेक्षित था जिसे विश्व चैंपियन इतावली अल्बर्टोकोवा ने 27 : 47.64 सेकेंड से जीता।

मध्यम दूरी में 1500 मी. में दो ब्रिटिश महारथियों सेबकोव एवं 23 वर्षीय स्टीव क्रेम के बीच जबरदस्त संघर्ष देखने को मिला, जिसमें कोव (36 : 32.53 सेकेंड, ओलंपिक-रिकार्ड) ने क्रेम से सिर्फ 0.13 सेकेंड के फासले से पहले टेप छुआ और मास्को

में जीते ताज की रक्षा की। किंतु 800 मी. दौड़ का स्वर्ण विश्व-रिकार्डधारी सेबकोव के लिए मास्को की भाँति मृगमरीचिका साबित हुआ। यहाँ ब्राजील के दुबले-पतले लंबे धावक 21 वर्षीय जोकिम क्रुज ने 1 मिनट, 43.0 सेकेंड समय के साथ ओलंपिक-रिकार्ड बनाते हुए कोव को दूसरे स्थान पर धकेल दिया। पैदल चालन के दोनों स्वर्ण मैक्सिकन चालकों ने ओलंपिक-रिकार्ड बनाते हुए झटके। 20 कि.मी. में अनर्स्टो कांतो (1:23:13 सेकेंड) श्रेष्ठ रहा, तो 50 कि.मी. में 32 वर्षीय राल गोंजालेस (3:57.19)।

विश्व-चैंपियनों की मात

फील्ड स्पर्धाएँ सोवियत गुट के बहिष्कार की वजह से हल्की नजर आईं। ऊँची कूद में 21 वर्षीय विश्व-रिकार्डधारी एवं एशिया-भर की एकमात्र स्वर्ण-आशा चीनी खिलाड़ी झू जियान हुआ। 2.31 मी. उछाल से पश्चिमी जर्मनी के विश्व-चैंपियन 22 वर्षीय डिटमार मोगेनबर्ग (2.35 मी.) एवं स्वीडिश पैट्रिक जोयबर्ग (2.33 मी.) के बाद कांस्य पदक ही जीत सका। बाँस कूद में भी विश्व चैंपियन फ्रांसिसी थियरे बिग्रेनान (5.60 मी.) अपने हमवतन पियरे क्वीनोन (5.75 मी.) एवं अमरीकी माइक टुली (5.65 मी.) के बाद तीसरे स्थान पर खिसक गया। इससे ज्यादा खराब प्रदर्शन तो अमरीकी विश्व चैंपियन थामस पेट्रोनाफ का भाला फेंक में था, जोकि दसवें स्थान पर रहा। इसका स्वर्ण फिन्निश खिलाड़ी आर्टो हेयरकोनेन (86.76 मी.) के हाथ लगा। फिनलैंड ने एक और स्वर्ण हैमर थ्रो में जीता, जिसमें जुडा तियाईनेन ने 78.08 मी. दूर हैमर फेंका। गोला फेंक में इतालवी एडसेडो आंद्रेई (21.26 मी.) एवं चक्का फेंक में पश्चिमी जर्मनी के रोल्फ डेव वर्ग (66.6 मी.) का स्वर्ण विजय थ्रो काफी हल्का रहा। अलबत्ता डेकाथलन में दो महापुरुषों—डेली थांपसन एवं विश्व-रिकार्डधारी जुर्गेन हिंगसेन (पश्चिमी जर्मनी) के बीच कड़ा मुकाबला हुआ, जिसमें थांपसन ने मात्र 1 अंक (8797) से विश्व-रिकार्ड भंग करने से चूकते हुए स्वर्ण हथियाया।

महिला वर्ग में अमरीकी धाविकाओं ने 10 में से सात स्वर्ण जीते। 24 वर्षीय अश्वेत वेलेरी ब्रिस्को हुक्स ने सबसे उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। वह तीन स्वर्ण पदक जीतकर विल्मा रुडोल्फ (1960) के बाद यह सम्मान पानेवाली पहली अमरीकी महिला हुई। एक पेशेवर फुटबालर एल्विन हुक्स की जीवन संगिनी एवं एक पुत्र की माँ वेलेरी ने 200 मी. (21.81 सेकेंड), 400 मी. (48.23 सेकेंड) एवं 4 × 400 मी. रिले (3 : 18.29 सेकेंड) तीनों में ओलंपिक रिकार्ड बनाने के साथ यह कामयाबी पाई। सबसे तेज धाविका का सम्मान भी एक परिचित चेहरे 27 वर्षीया अश्वेत एवलिन एशफोर्ड (वाशिंगटन) ने 10.97 सेकेंड से ओलंपिक रिकार्ड बनाते हुए प्राप्त किया। साढ़े पाँच फुट लंबी एवं 54 किलो वजनवाली 'कैलीफोर्निया कामेट' एशफोर्ड ने बाद में 4 × 100

मी. रिले में भी स्वर्ण जीतने में योगदान दिया। दोनों रिले में स्वर्ण जीतनेवाली एक अश्वेत खिलाड़ी चंद्रा चीसबॉशे थी, जिसने 400 मी. में दूसरा स्थान पाया। 100 मी. बाधा दौड़ में अमरीकी बेनिटा फिटजज़ेराल्ड ब्राउन (12.84 सेकेंड) ने ब्रितानी धाविका शिर्ली स्ट्रांग को मात्र 0.02 सेकेंड से पीछे छोड़कर सोने का तमगा जीता। ओलंपिक खेलों में पहली बार शामिल महिलाओं की मैराथन दौड़ का परिणाम भी मेजबान देश के पक्ष में रहा। इतिहास एवं पर्यावरण में स्नातक 27 वर्षीया जोन बोनॉश ने 2 घंटे 22 मिनट 43 सेकेंड में यह दौड़ पूरी की और नार्वे की 30 वर्षीया ग्रेटा वेट्ज को दूसरे स्थान पर छोड़ दिया।

दो की लड़ाई : तीसरे की भलाई

रूमानिया की 27 वर्षीया डायना मिलींटी ने दिग्गजों की अनुपस्थिति का फायदा उठाकर यह दौड़ (800 मी.) 1 मिनट 57.60 सेकेंड समय में जीती। दो दिन बाद उसने 1500 मी. में इतालवी ग्रेवेएला डोरिया (4 : 03.25 सेकेंड) के बाद रजत पदक जीता। किंतु सबसे चर्चित दौड़ 3000 मी. की रही। इसमें 26 वर्षीया अमरीकी मेरी थेरेसा डेकर जो कि सात वर्षों से इस दौड़ की तैयारी में जुटी थी, और 18 वर्षीया जोला बड जोकि दक्षिण अफ्रीका में जन्मी परंतु एक माह के भीतर ही ब्रिटिश नागरिकता प्राप्त करके एकाएक चर्चित हो गई थी, के बीच काँटे का मुकाबला था। दौड़ की आधी दूरी तक मेरी डेकर आगे थी। तभी लीड लेने के प्रयास में बड डेकर से टकराई और डेकर ट्रेक से दूर जा गिरी। इसके साथ ही उसके जीतने को स्वप्न भी चूर हो गया। इस स्थिति से बड भी अपनी एकाग्रता खो बैठी और सातवें स्थान पर पिछड़ गई। 'दो की लड़ाई में तीसरे की भलाई' वाली उक्ति के आधार पर यह स्वर्ण रूमानिया की मेरेथिका पुड्का को 8 : 35.90 सेकेंड से मिला, जोकि 1500 मी. दौड़ में कांस्य जीत चुकी थी। 400 मीटर बाधा दौड़ को भी पहली बार ओलंपिक में शामिल किया गया, जिसमें मोरक्को की 20 वर्षीया नवल उल माउता वाकेल ने स्वर्ण (54.61 सेकेंड) पाया, जो उस समय आर्सोवा विश्वविद्यालय, अमरीका की छात्रा थी, एवं अमरीकी चैंपियन जूडी ब्राउन ने रजत (52.20 सेकेंड) जीता। कांस्य के लिए रूमानियाई क्रिस्टिना कोजाकेरु एवं भारतीय 'गोल्डन गर्ल' पी. टी. उषा में काँटे की टक्कर हुई, जिसमें कोजाकेरु को सेकेंड के 100वें भाग से उषा से बेहतर माना गया।

कूद स्पर्धाओं में रूमानिया की विश्व-रिकार्डधारी एवं चैंपियन एनीसोज कूसेमिर स्नेन्स्यू ने 6.96 मी. छलाँग लगाकर लंबी कूद का स्वर्ण पाया। ऊँची कूद में मास्को ओलंपिक विजेता सारा सिमोयनी (2.00 मी.) को म्यूनिख-विजेता पश्चिमी जर्मनी की उलरिका मेफर्थ (2.02 मी., ओलंपिक-रिकार्ड) ने दूसरे स्थान पर ढकेल दिया। नेजा

(भाला) प्रक्षेपण में 28 वर्षीया अश्वेत ब्रिटिश ट्रेसा सैंडरसन (69.65 मी., ओलंपिक रिकार्ड) ने विश्व चैंपियन टीना लिलक (फिनलैंड) से 0.65 मीटर दूर भाला फेंककर स्वर्ण हथियाया। गोला फेंक में पश्चिमी जर्मनी की क्लाडिया लोश (20.48 मीटर) एवं चक्का फेंक में डच रिया स्टालमेन (65.36 मीटर) की स्वर्ण विजयी फेंक मास्को की तुलना में निम्नस्तरीय रही। इस बार पेंटाथलन में दो और स्पर्धाएँ जोड़कर इसे हेप्टाथलन बनाया गया, जिसमें आस्ट्रेलियाई ग्लिनीस नन (6390 अंक) ने मात्र पाँच अंकों के फासले से जैकी जायनर के मुकाबले स्वर्ण पदक जीता।

तरणताल में अमरीकी तैराकों की धूम रही। महिलाओं में पूर्वी जर्मनी की अनुपस्थिति से जरूर कड़ी प्रतिस्पर्धा देखने में नहीं आई, परंतु इसके बावजूद मेजबान देश के तैराकों की श्रेष्ठता को झुठलाया नहीं जा सका। अपने घरेलू दर्शकों के प्रोत्साहन के बीच अमरीका ने 29 मुकाबलों में कुल 21 स्वर्ण सहित 36 पदक जीते। पुरुष वर्ग में उसके हिस्से में 9 स्वर्ण, 6 रजत एवं 1 कांस्य और महिला वर्ग में 12 स्वर्ण, 8 रजत एवं 1 कांस्य आया। इस बार पुरुष वर्ग में 10 विश्व-रिकार्ड डूबकर तरोताजा हुए।

हालाँकि यहाँ पुरुषों में मार्कस्पित्ज-जैसा कोई सुपर स्टार नहीं हुआ, लेकिन एलेक्स बोमेन (कनाड़ा), माइकल ग्रास (पश्चिम जर्मनी), राउडी गेंस, रिक कैरी एवं स्टीव लिडक्विट (सभी अमरीका) ने अपनी छाप छोड़ी। प्राग (चेकोस्लोवाकिया) में जन्मा 20 वर्षीय एलेक्स रूसी आक्रमण के कारण पहले अपने माता-पिता के साथ 1967 में न्यूजीलैंड में और फिर दो वर्ष बाद कनाडा में जा बसा। अपनी छाती पर कनाडा के राष्ट्रीय प्रतीक 'घने दार वृक्ष की पत्ती' का गोदना गुदवानेवाले बोमेन ने दोनों ही व्यक्तिगत मिडले में अपने ही विश्व-रिकार्ड को तराशते हुए स्वर्णिम कामयाबी हासिल की। उसने 200 मी. में 2 : 01.42 सेकेंड तथा 400 मी. में 4 : 17.41 सेकेंड का समय लिया। दूसरी ओर 6 फीट 7 इंच लंबे एवं 84 किलो वजनी ग्रास से इस बार पाँच स्वर्ण पदकों की उम्मीद थी। 20 वर्षीय 'एल्बाट्रास' ग्रास ने 200 मीटर फ्री स्टाइल में विश्व-रिकार्ड (1:47.44) बनाते हुए अपने अभियान की शुरूआत की। अगले दिन 100 मी. बटरफ्लाई में पुनः विश्व-रिकार्ड (53.08 सेकेंड) बनाकर उसने अपना दूसरा स्वर्ण जीता। किंतु एक घंटे बाद 4 × 200 मी. रिले (फ्री स्टाइल) में उसकी जर्मन टीम को अमरीका से पिछड़कर दूसरे स्थान से संतोष करना पड़ा। इस पराजय से वह विचलित हो गया, जिससे उसे उसके प्रिय खेल 200 मी. बटरफ्लाई में भी आस्ट्रेलियाई जान सिबेन (1:57.04 सेकेंड, विश्व-रिकार्ड) ने दूसरे स्थान पर ढकेल दिया।

25 वर्षीय एंब्रोज़ 'राउडी' गेंस ने ओलंपिक-रिकार्ड (49.80 सेकेंड) बनाकर सबसे तेज तैराक बनकर अपने सपने को साकार किया। बाद में उसने 4 × 100 मी. फ्री स्टाइल

एव 4 × 100 मी. मिडले रिले में भी विश्व-रिकार्ड (क्रमशः 3:39.30 सेकेंड एवं 3:19.03 सेकेंड) बनाकर अपने देश को स्वर्ण दिलाने में अहम योगदान दिया। 400 मीटर मिडले रिले की विजयी टीम में रिचर्ड कैरी एवं 23 वर्षीय स्टीव लिडक्विट भी शामिल था, जिसने बाद में अपने फेवरेट 'स्ट्रोक' में भी स्वर्ण जीता। केरी ने बैकस्ट्रोक की दोनों स्पर्धाएँ एवं लिडिक्विट ने 100 मी. ब्रीस्ट स्ट्रोक में सफलता पाई, लेकिन सबसे उल्लेखनीय सफलता 200 मी. ब्रीस्ट स्ट्रोक के विजेता कनाडा के विक्टर डेविस की रही। एक वर्ष पहले डेविस के शरीर में खून का दौरा गडबड़ा गया था और वह मरणासन्न अवस्था में पहुँच गया था, परंतु अपने दृढ़ विश्वास एवं अच्छे उपचार के बाद वह पुनः तैरने की स्थिति में आया और अपनी 'फेवरेट' रेस में अपना विश्व-रिकार्ड बेहतर बनाते हुए (3 : 13.34 सेकेंड) 72 वर्ष बाद कनाडा को तैराकी में स्वर्ण पदक दिलाया। डेविस ने बाद में 100 मी. बीस्ट्र स्ट्रोक एवं 4 × 100 मी. मिडले रिले में रजत भी पाया। 400 मीटर फ्री स्टाइल में स्वर्ण जीतनेवाले अमरीकी जार्ज डिकार्लो (3 : 51.23 सेकेंड, ओलंपिक-रिकार्ड) का 1500 मीटर में भी स्वर्ण जीतने का ख्वाब था, 'जिसे' उसके ही देशवासी माइकल ओ ब्रायन ने (15 : 05.20 सेकेंड) तोड़ दिया।

महिला वर्ग में अमरीकी जलपरियों—ट्रेली कार्किस, मेरी मीघर, टिफेनो कोहेन एवं नैंसी हाजशोड का जलजला रहा। 11 जनवरी, 1963 को नाशविले (टेनेस) में जन्मी कार्किस मात्र 15 वर्ष की आयु में विश्व-चैंपियनशिप में पाँच स्वर्ण एवं एक रजत जीतकर विश्वविख्यात हो गई। यदि अमरीका मास्को ओलंपिक का बायकाट नहीं करता तो वह निश्चित रूप से कोरनेलिया एंडर के रिकार्ड की बराबरी कर लेती। अलबत्ता ओलंपिक में स्वर्ण जीतने की लालसा ने उसे लासएंजेल्स तक बाँधे रखा। यहाँ उसने दोनों व्यक्तिगत मिडले (200 मी., 2 : 12.64 सेकेंड ओलंपिक-रिकार्ड एवं 400 मी., 4 : 39 : 24 सेकेंड) में सोने का तमगा जीतने के बाद 400 मी. मिडले रिले में भी स्वर्ण जीता। मेरी मीघर ने भी मिडले रिले में स्वर्ण जीतने के अतिरिक्त निजी तौर पर बटर फ्लाई की दोनों स्पर्धाओं में ओलंपिक-कीर्तिमान बनाते हुए पहला स्थान अर्जित किया। अर्थात 100 मी., (59.26 सेकेंड), 200 मी. (2 : 06.90 सेकेंड) एवं 800 मी. (8 : 24.95 सेकेंड) में नया ओलंपिक-कीर्तिमान गढ़कर स्वर्णिम सफलता प्राप्त की।

सबसे तेज तैराक : एक नहीं, दो

ओलंपिक इतिहास में पहली बार सबसे तेज महिला तैराक का श्रेय एक की बजाय दो तैराकों ने पाया। अमरीकी नैंसी हाजशोड एवं 16 वर्षीया केरीन स्टीन सीफर ने एक ही समय (55.92 सेकेंड) देकर तैराकी की एक ही स्पर्धा में दो स्वर्ण पाने का अनूठा कीर्तिमान रचा। बाद में हाजशोड ने दोनों रिले एवं स्टीन सीफर ने फ्री स्टाइल रिले में भी

स्वर्ण जीता। अमरीकी तूफान में हालैंड की जोलेंडा दी शेवर (200 मी. बैक स्ट्रोक, समय 2 : 12.38 सेकेंड), पेट्रावान स्टावेगेन (100 मी. ब्रीस्ट स्ट्रोक, समय 1 : 09.88 सेकेंड) और कनाडा की एन ओटेनब्राइट (200 मी. ब्रीस्ट स्ट्रोक, समय 2 : 30.38 सेकेंड) ही अपनी पहचान स्थापित कर पाईं। इसमें ओटेन ब्राइट की सफलता इसलिए ज्यादा मायने रखती है, क्योंकि वह कुछ समय पहले ऊँची एड़ी की सेंडल की वजह से फिसलकर बुरी तरह घायल हो चुकी थी।

गोताखोरी में अमरीकी ग्रेग लुगानीस की उत्कृष्ट कलाबाजी ने कमाल दिखाया और वह 1928 में डेस जारडिस के बाद पुरुषों के दोनों खिताब जीतनेवाला पहला खिलाड़ी बना। 29 जनवरी, 1960 में जन्मा ग्रेग फ्रांसिस, पीटर लुगानिस का दत्तक पुत्र है। 16 वर्ष की उम्र में वह प्रसिद्ध गोताखोर सेमी ली से प्रशिक्षण पाकर मांट्रियल में उतरा और हाईबोर्ड में रजत पदक जीतकर उसने अपनी छाप छोड़नी शुरू की। इसके पश्चात् तो उसकी सफलताओं की कड़ी जुड़ती ही चली गई। विश्व-चैंपियनशिप में 1978 में हाईबोर्ड, 1982 एवं 1986 में दोनों वर्ग जीतकर उसने अपना दबदबा बना लिया। यहाँ उसने पाँच बार आदर्श स्कोर प्राप्त किया, जोकि गोताखोरी के इतिहास में इससे पहले कभी नहीं हुआ था। प्लेटफार्म में 700 अंक पार करनेवाला भी वह पहला गोताखोर रहा। उसने 710.91 अंक अर्जित किए। 1985 में उसे अमरीका के प्रतिष्ठित 'सुलीवान एवार्ड' से सम्मानित किया गया। महिला वर्ग के स्प्रिंगबोर्ड में कनाडा की सिल्वीबर्नीट ने केली मैकोर्मिक को पछाड़कर अप्रत्याशित रूप से स्वर्ण जीता। कैली प्रसिद्ध गोताखोर पैट मैकोर्मिक की पुत्री है। प्लेटफार्म में चीनी गोताखोर झाओजिहोंग ने अपने देश का नाम बचाते हुए अमरीकी मिचेल मिरोल को मात्र 0.33 से पीछे छोड़कर स्वर्ण जीता। वाटरपोलो में यूगोस्लाविया ने बेहतर गोल औसत के आधार पर अमरीका से स्वर्ण पदक जीता।

ओलंपिक खेलों में पहली बार सिंक्रोनाईज़्ड स्वीमिंग की भी स्पर्धाएँ हुई। सोलो में स्वर्ण जीतनेवाली अमरीकी ट्रेसी रुजन ने ड्यूट्स (युगल) में भी कैडी कोस्टी के साथ मिलकर पहला स्थान बनाया। जापान की मिवाको मोतोयेशी ने दोनों ही स्पर्धाओं में काँसे का तमगा जीता।

रूसी बहिष्कार ने अमरीकी भाग्य जगाया

जिमनास्टिक में रूस के न आने से जापान एवं चीन को अच्छा अवसर मिला, परंतु मेजबान देश के 22 वर्षीय मिच गेलार्ड, 23 वर्षीय पीटर विदमार, 25 वर्षीय बर्ट कोनो एवं टिम डेमार्ट ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करके पुरुषों का टीम-टाइटिल जीतकर सबको हतप्रभ कर दिया। इसके पहले अमरीका ने यह खिताब 1904 में सेंटलुई में जीता था। चीन के

करतबकारों ने चार स्वर्ण जरूर जीते, परंतु उन्हें यह शिकायत रही कि अमरीकी जिमनास्टिकों को कम डिग्री ऑफ डिफीकल्टी के बावजूद ज्यादा अंक दिए गए। अलबत्ता 21 वर्षीय चीनी ली तिंग सबसे सफल जिमनास्ट सिद्ध हुआ। उसने फ्लोर एक्सरसाइज़, पामेल्ड हार्स एवं रिंग में एक स्वर्ण, दो रजत एवं एक कांस्य पदक जीता। व्यक्तिगत आलराउंड प्रदर्शन का खिताब 27 वर्षीय जापानी कोजी गुशीकेन ने पाया।

महिला वर्ग में नादिया कोमानची द्वारा प्रशिक्षित रूमानिया टीम के जीतने के अच्छे अवसर थे, परंतु उन्हें अमरीकी एवं चीनी जिमनास्टों ने अप्रत्याशित रूप से कड़ी टक्कर दी और प्रतियोगिता को काफी रोमांचक एवं प्रतिस्पर्धात्मक बना दिया। रूमानिया की 17 वर्षीया किशोरी एकत्रीना झाबो ने चार स्वर्ण (टीम स्पर्धा, बैलेंस बीम, फ्लोर एक्सरसाइज़ एवं हार्स वाल्ट) तथा एक रजत जीतकर उत्कृष्ट प्रदर्शन किया, परंतु ख्याति पौने पाँच फुट कद की 16 वर्षीया अमरीकी मेरी लो रेट्टन (79.175 अंक) के हिस्से आई, जिसे नादिया की प्रशिक्षिका वेला कारोनी ने प्रशिक्षित किया था। उसने व्यक्तिगत खिताब में झावो (79.125 अंक) को दूसरे स्थान पर ढकेल दिया। रूमानिया की एक और गुड़िया साइमोना पुईका ने जब टीम-स्पर्धा में स्वर्ण जीता तो उसकी उम्र मात्र 14 वर्ष, 317 दिन थी। वह इस आयोजन की सबसे युवा विजेता थी। पुईका ने इसके अलावा बैलेंस बीम में झाबो के साथ संयुक्त स्वर्ण और व्यक्तिगत खिताब में कांस्य (78.675) भी जीता। पहली बार आयोजित लय-ताल स्पर्धा (रिद्मेटिक जिमनास्टिक) में कनाडा की लोरी फंग (57.95 अंक) ने रूमानिया की डायना स्टेकुलेस्कु (57.90 अंक) एवं पश्चिमी जर्मनी की रेगेना वेनर (57.70 अंक) को पीछे छोड़ते हुए स्वर्ण पदक जीता।

कैलीफोर्निया विश्वविद्यालय परिसर में संपन्न जिमनास्टिक प्रतियोगिताओं में आदर्श प्रदर्शनों की बाढ़-सी आ गई। मांट्रियल में नौ और मास्को में दस की तुलना में इस बार 51 परफेक्ट स्कोर (33 पुरुष एवं 18 महिला स्पर्धाओं में) प्रदान किए गए, जो कि अंकों की निर्धारण-पद्धति में बदलाव की आवश्यकता को दर्शाता है।

लासएंजिल्स स्पोर्ट्स एरीना में दो सप्ताह तक चलनेवाली मुक्केबाजी में क्यूबा की अनुपस्थिति में अमरीकी मुक्केबाज शेर बन गए। सिर्फ बैंटमवेट वर्ग को छोड़कर उसने शेष 11 वर्गों में पदक जीते, जिसमें से नौ सोने के तमगे थे। इस बार ज्यूरी द्वारा रिंग स्थित रेफरी के निर्णय को बदलने के अधिकार के कारण काफी विवाद उत्पन्न हुआ और एक बार तो दक्षिण कोरिया ने 'वाक आउट' तक करने की धमकी दे डाली, जिसे बाद में वापस ले लिया गया। लाइट फ्लाईवेट में विश्व-चैंपियन 20 वर्षीय अमरीकी पाल गोंजालिस एवं लाइट हैवीवेट में यूगोस्लाव एंटोन जोसीपोविक को बिना रिंग में उतरे ही स्वर्ण पदक मिल गया, क्योंकि शौकिया अंतर्राष्ट्रीय मुक्केबाजी के नियमों के तहत उनके

प्रतिद्वंद्वी क्रमशः सल्वायेरे टोडीस्को (इटली) एवं केविन बैरी (न्यूजीलैंड) घायल होने से रिंग में ही नहीं उतर पाए। लाइट वेट में अमरीकी पर्नेल व्हिटेकर ने दूसरे ही राउंड में प्यूर्तोरिको के लुईस फोर्टिस को धराशायी करके स्वर्ण पदक जीता। पाल गोंजालिस को अपनी बेहतर शैली के कारण 'बाल बार्कर कप' मिला। यहाँ मुक्केबाजों को हैडगियर पहनकर उतरना अनिवार्य कर दिया गया।

कैलस्टेट विश्वविद्यालय में संपन्न जूडो में जापान ने आठ में से चार वर्गों में स्वर्ण पदक जीते। ओपन वर्ग में 23 वर्षीय व्याख्याता योसुहिरो यामाशिता ने मिस्र के 28 वर्षीय मोहम्मद राश्वान को पछाड़कर अपनी श्रेष्ठता का परिचय दिया। यामाशिता पिछले सात वर्षों से इस वर्ग में अपराजित था और इस दरम्यान सात विश्व-खिताब एवं आठ राष्ट्रीय-खिताब भी जीत चुका था।

साम्यवादी देशों के बायकाट का स्पष्ट नजारा भारोत्तोलन में देखने को मिला जबकि 57 देशों के 216 प्रतियोगियों के कुछ अच्छे प्रदर्शन के बावजूद यह प्रतियोगिता रंगहीन एवं दोयम दर्जे की प्रतीत हुई, क्योंकि पूरी प्रतियोगिता में सिर्फ दो ही ओलंपिक-रिकार्ड खंडित हुए। मिडिल हैवीवेट वर्ग के विजेता 20 वर्षीय रूमानियाई निकू ब्लाप (392.5 किलो) ने तो 100 किलो वर्ग के विजेता पश्चिम जर्मनी के कोल्फ मिलसर एवं 110 किलो वर्ग के विजेता इतालवी नारबर्टो ओबेरबर्गर से क्रमशः 7.5 एवं 2.5 किलो ज्यादा भार उठाया। सोवियत गुट के बायकाट का सबसे ज्यादा लाभ चीन को मिला, जिसने हल्के वर्ग में चार स्वर्ण जीतकर धमाका किया। फ्लाईवेट वर्ग में 19 वर्षीय छात्र झेंग गाओ कियांग, बैंटमवेट में 25 वर्षीय एशियन चैंपियन वु शुडे, फीदरवेट में 26 वर्षीय चेन वी कियांग और लाइटवेट में 26 वर्षीय शिक्षक याओ जिंगुवान ने स्वर्ण पदक जीता। संसार के सबसे बलशाली पुरुष का खिताब आस्ट्रेलियाई मछुआरे डिक लुफिन के हाथ आया।

उसने कैंसर को भी मात दे दी

कुश्ती भी बहिष्कार की मार से अप्रभावित नहीं रही। फ्री स्टाइल शैली में अमरीका सात स्वर्ण जीतकर 'अंधों में काना राजा' सिद्ध हुआ। इसमें जुड़वाँ भाई—एड बनारद (लाइट हैवीवेट) एवं लौ बनारद (हैवीवेट) तथा शुल्ज़ बंधुओं डेव (बैंटमवेट) एवं मार्क (मिडिलवेट) की सफलता उल्लेखनीय रही। ग्रीको-रोमन में 9 स्वर्ण-पदक जीतनेवाला 27 वर्षीय अमरीकी जेफ ब्लेटिंग रहा, जिसके जीतने की इच्छा-शक्ति को कैंसर भी नहीं रोक सका। उल्लेखनीय है कि 26 माह पूर्व ब्लेटिंग के गले में कैंसर के जीवाणु (होजकिन) अपने पैर जमा चुके थे और डाक्टरों ने उसे भविष्य में खेलने की सोचने तक की मनाही कर दी थी, बावजूद इसके वह खेल में उतरा और स्वर्ण पदक पाया।

साईकिलिंग में पहली बार महिला स्पर्धा हुई। 79.2 कि. मी. की व्यक्तिगत रोड रेस स्पर्धा में चार बार की विश्व-चैंपियन 27 वर्षीया अमरीकी कोनी कारपेंटर फिन्नी ने 2 घंटे, 11 मिनट, 14 सेकेंड के साथ पहला स्थान पाया। साईकिलिंग में 72 वर्षों बाद अमरीका की यह पहली कामयाबी थी। बाद में कोनी के पति डेविस ने टीम रोड रेस में अमरीकी दल के साथ कांस्य पदक जीता। पुरुषों की 190 कि. मी. लंबी रोड रेस में 132 चालकों के बीच ब्रिटिश माँ एवं भारतीय पिता की अमरीकी संतान 23 वर्षीय एलेक्सी ग्रेवाल 4 घंटे, 59 मिनट, 57 सेकेंड के साथ पहले स्थान पर रहा।

एल डोराडो पार्क, लांग बीच में संपन्न 4 दिवसीय तीरंदाजी में पुरुषों का खिताब अमरीकी डारेन पेस ने 2616 अंकों के नए ओलंपिक रिकार्ड के साथ दूसरी बार पाया। अमरीका यदि मास्को ओलंपिक का बहिष्कार नहीं करता तो निश्चित रूप से उसका यह तीसरा स्वर्ण होता। पिछला विजेता टोमी पोसकोलैलेन 2538 अंकों के साथ पाँचवें स्थान पर पिछड़ गया। दूसरी ओर महिलाओं की स्पर्धा में दक्षिण कोरिया की 17 वर्ष 34 दिन की स्कूली छात्रा हुआंग सून सियो ने भी ओलंपिक-रिकार्ड (2568) के साथ स्वर्ण पदक जीतकर एशियाई देशों की प्रभुता की शुरुआत की। रजत (लिंग जुआन-चिन) एवं कांस्य (जिन होकिम) भी दक्षिण कोरिया की झोली में रहा।

निशानेबाजी में 27 वर्षीय स्टोर क्लर्क चीन के झू हेयफ्रेंग ने 50 मी. फ्री पिस्टल की स्पर्धा जीतकर न केवल अपने देश को इस खेल में पहला स्वर्ण दिलाया, बल्कि वह इस आयोजन का पहला विजेता भी बना। उसकी इस जीत पर चीनी प्रधानमंत्री माओ झियांग ने तार भेजकर उसे बधाई दी और अमरीकी सरकार ने 2500 डालर की छात्रवृत्ति देने की घोषणा की। चीनी निशानेबाजों ने इस प्रतियोगिता में कुल तीन स्वर्ण एवं पाँच कांस्य पदक जीते। झू के अलावा 19 वर्षीय सुवई ली ने रनिंग गेम टारगेट और 26 वर्षीया झियो झुआन बू ने महिलाओं के लिए पहली बार आयोजित स्टैंडर्ड राइफ़ल में स्वर्ण जीता। वू ने बाद में एयर राइफल में अमरीकी पेट स्पुरनिक एवं इतालवी एडिथ गुफ्टर के बाद कांस्य भी जीता। महिलाओं की एक और नई स्पर्धा स्पोर्ट्स पिस्तौल में कनाडा की लिडा थाम सफल रही, जो अंतिम समय में खानापूर्ति के लिए टीम में चुनी गई थी।

पुरुष वर्ग में पहली बार शामिल एयर राइफल में फ्रांस के फिलिप हबेले ने दाहिने हाथ का अँगूठा टूटने के बाद भी 589 सही निशाने लगाकर स्वर्ण पदक जीता। ग्रेट ब्रिटेन के 36 वर्षीय शार्पिंग क्लर्क मेलकम कूपर ने स्माल बोर राइफल थ्री पोजिशन में 1173 अंक जुटाकर रूस के विक्टर ब्लासेव के विश्व-रिकार्ड को बराबर किया और 16 वर्ष बाद इस प्रतियोगिता में अपने देश को स्वर्ण नसीब करवाया। मैलकम की पत्नी साराह भी महिलाओं की एयर राइफल मे उतरी, परंतु 25वें स्थान पर रही। शटिंग की

स्पर्धाएँ प्राडो रिक्रियेशन एरिया में संपन्न हुई थीं।

तलवारबाजी में जोकि लांग बीच कन्वर्सेशन सेंटर में हुई, पुरुषों के फॉयल के अंत में इतालवी मारियो नूमा और पश्चिमी जर्मनी के मैथियास बेहर के बीच काँटे का संघर्ष रहा, जिसमें फैसला 'सडन डैथ' के आधार पर 12-11 से नूमा के पक्ष में हुआ। इसके विपरीत सैब्रे में फ्रांसिसी जीन फ्रेंकोले लेमर को इतालवी मोरको मार्टिन ने 12-1 से बड़ी आसानी से मात दी। इस मुकाबले में पेरिस (1900) में जार्जेस डेला फैलैसे के स्वर्ण के बाद फ्रांस का यह पहला स्वर्ण था। महिलाओं में चीन की 26 वर्षीया लुआन जुजी ने पश्चिमी जर्मनी की 32 वर्षीया कोरनिया हेनिश्च को 8-3 से हराकर योरोपीय एकाधिकार को तोड़ा। माडर्न पेंटाथलन में 29 वर्षीय डेनियल मेसला ने व्यक्तिगत एवं टीम दोनों में ही स्वर्ण जीता। उसी का साथी 27 वर्षीय मेडिकल छात्र कार्लोज़ मेसुलो व्यक्तिगत स्पर्धा में स्वीडिश सेवेंटे रेस्मुसन के बाद तीसरे स्थान पर रहा।

करिश्मे पर करिश्मा

घुड़सवारी की प्रतियोगिता सांता एनिता पार्क एवं फेयरवक्स कंठी क्लब में हुई, जिसमें मेजबान टीम ने 6 में से 3 स्वर्ण जीते। जो फार्मिस ने शो जंपिंग में 'टच ऑफ क्लास' पर सवार होकर व्यक्तिगत एवं टीम दोनों में ही स्वर्ण पदक जीता। टीम स्पर्धा में रजत जीतनेवाले ब्रिताजी दल में जॉन एवं माइकल व्हिटेकर बंधु शामिल थे। ड्रेसाज के मुकाबलों में भी पश्चिमी जर्मनी के 48 वर्षीय डाक्टर रिनर क्लिमे ने टीम एवं व्यक्तिगत (अहलेरिच पर सवार होकर) मुकाबले में स्वर्ण पाया। ओलंपिक के 20 वर्षों के कैरियर में यह उसका 5वाँ स्वर्ण (कुल नौवाँ) पदक था। त्रिदिवसीय मुकाबलों में न्यूजीलैंड के मार्क टाड ने 'करिश्मा' पर सवार होकर सचमुच ही करिश्मा कर दिखाया। इससे पहले न्यूजीलैंड का कोई भी घुड़सवार आज तक इन मुकाबलों में कोई भी पदक नहीं जीत सका था।

फुटबाल में कम्युनिस्ट ब्लाक की अनुपस्थिति में फ्रांस ने ब्राजील को 2-0 से परास्त करके सोने का तमगा जीता। बास्केटबाल के दोनों खिताब मेजबान के हाथ लगे। पुरुषों में उसने स्पेन को 96-65 से हराया, जबकि महिलाओं में दक्षिण कोरिया को 85-55 के अंतर से पीटा। हैंडबाल में यही सम्मान यूगोस्लाविया को मिला। पुरुषों के फाइनल में उसने कड़े संघर्ष के बाद पश्चिम जर्मनी को 18-17 स्कोर से हराया, जबकि उसकी महिलाएँ राउंड रोबिल लीग के सभी पाँचों मैच (10 अंक) जीतकर दक्षिण कोरिया (7 अंक) एवं चीन (5 अंक) के मुकाबले स्वर्ण जीती। वालीबाल में महिलाओं का खिताब विश्वचैंपियन चीन को जीतने में कोई विशेष परेशानी नहीं हुई। अलबत्ता पुरुषों के वर्ग में उलट-फेर हुआ। अपने ग्रुप में ब्राजील के हाथों 3-0 से शिकस्त खाने के

बाद अमरीका ने फाइनल में ब्राजील को उसी स्कोर से पीटकर 'स्वर्ण' जीत लिया।

हाकी में परिणाम अप्रत्याशित रहा। आस्ट्रेलिया, जिसके स्वर्ण जीतने की पूरी उम्मीद थी, सेमीफाइनल में पाकिस्तान से (1-0 से) और तीसरे स्थान के लिए ब्रिटेन से (3-2 से) हारकर खाली हाथ वापस लौटा। फाइनल में पाकिस्तान ने पश्चिम जर्मनी को कलिमुल्लाह के विजय सूचक गोल की बदौलत 2-1 से हराकर मैक्सिको शहर में खोया ताज पुनः पा लिया। लासएंजिल्स कालेज ग्राउंड के सुपर एस्ट्रोटर्फ में संपन्न इस प्रतियोगिता में पूर्व चैंपियन भारत को पाँचवाँ स्थान नसीब हुआ।

रोइंग एवं केनोइंग की स्पर्धाएँ खूबसूरत कैसिटास झील में संपन्न हुईं। रोइंग में पुरुष वर्ग के आठों मुकाबले अलग-अलग देशों ने जीते लेकिन महिला वर्ग में रूमानिया ने छः में से पाँच वर्ग जीतकर अपना दबदबा बनाया। प्रतिष्ठापूर्ण 'एट्स' (पुरुषों की) इस बार कनाडा ने जीती। उस विजयी दल में दो सगे इवांस बंधु—मार्क एवं माइक—भी शामिल थे। इटली के लिए स्वर्ण जुटानेवाली काक्सड पेयर्स की टीम भी दो भाइयों—कार्मिन एवं गिलेस्पी एनेगले—से सुसज्जित थी। डोंगी चालन में आर्कलैंड (न्यूजीलैंड) के 32 वर्षीय एकाउटेंट इयान फर्गुसन ने कयाक की 500 मी. एकल एवं युगल तथा 1000 मी. चौकड़ी में स्वर्ण पदक जीतकर रूसी ब्लादीमिर पास्फोनोविच के कीर्तिमान की बराबरी की। उसके ही हमवतन एलन थामसन ने भी कयाक 1000 मी. एकल एवं चौकड़ी में दो स्वर्ण जुटाए। इसके विपरीत स्वीडिश लार्स एरिक मौबर्ग, फर्गुसन के पीछे हर स्पर्धा में रजत पदक से संतुष्ट रहा। महिलाओं में स्वीडन की 23 वर्षीया कालेज छात्रा एंगेता एंडरसन कयाक 500 मी. एकल एवं युगल में स्वर्ण और चौकड़ी में रजत पदक जीतने में सफल रही।

लांग बीच हार्बर में आयोजित पाल नौकायन में अमरीकी बुचन पिता-पुत्र ने एक ही दिन दो भिन्न वर्गों में स्वर्ण जीतने का इतिहास रचा। 49 वर्ष, 97 दिन का पिता विलियम स्टार क्लास में स्वर्ण जीतकर इस आयोजन का वरिष्ठ चैंपियन भी बना, जबकि पुत्र कार्ल ने फ्लांइंग डचमैन वर्ग में जोनाथन मैकी के सहयोगी के रूप में सफलता पाई। टोरनाडो वर्ग में भाग लेकर डेनमार्क जगप्रसिद्ध 'द मास्टर' पाल एल्वास्ट्राम ने सात ओलंपिक खेलों में शिरकत करनेवाले डुरवर्ड नावेल्स (पहले ब्रिटेन, फिर बहामा) के रिकार्ड की बराबरी की।

इस तरह इस बार रूस समर्थक देशों के बहिष्कार ने मेजबान अमरीका को शीर्ष पर बिठा दिया। बहिष्कार की वजह से कई स्पर्धाएँ फीकी रहीं, फिर भी कुल मिलाकर पूरा आयोजन शानदार तरीके से संपन्न हुआ।

पदक-तालिका—1984

देश	स्वर्ण	रजत	कांस्य
अमरीका	83	61	31
रूमानिया	20	16	17
पं. जर्मनी	17	19	23
चीन	15	8	9
इटली	14	6	12
कनाडा	10	18	16
जापान	10	8	14
न्यूजीलैंड	8	1	2
यूगोस्लाविया	7	4	7
कोरिया	6	6	7
ग्रेट ब्रिटेन	5	11	21
फ्रांस	5	7	16
हालैंड	5	2	6
आस्ट्रेलिया	4	8	12
फिनलैंड	4	2	6
स्वीडन	2	10	6
मैक्सिको	2	3	1
मोरक्को	2	—	—
ब्राजील	1	5	2
स्पेन	1	2	2
बेल्जियम	1	1	2
आस्ट्रिया	1	1	1
केन्या	1	—	2
पुर्तगाल	1	—	2
पाकिस्तान	1	—	—
स्विट्जरलैंड	—	4	4
डेनमार्क	—	3	3
जमैका	—	1	2

नार्वे	—	1	2
ग्रीस	—	1	1
नाइजीरिया	—	1	1
प्यूर्तोरिको	—	1	1
कोलंबिया	—	1	—
मिस्र	—	1	—
आयरलैंड	—	1	—
आइवरी कोस्ट	—	1	—
पेरु	—	1	—
सीरिया	—	1	—
थाइलैंड	—	1	—
तुर्की	—	—	3
वेनेजुएला	—	—	3
अल्जीरिया	—	—	2
कैमरुन	—	—	1
डोमिनिकल रिपब्लिक	—	—	1
आइसलैंड	—	—	1
ताईवान (ताइपेई)	—	—	1
जांबिया	—	—	1

चौबीसवाँ ओलंपिक : 1988–सियोल

चौबीसवें ओलंपिक-उत्सव की मेजबानी के लिए सिर्फ सियोल (द.कोरिया) तथा नगोया (जापान) ने ही आवेदन दिया था, जिसमें चूँकि 1964 में जापान इस जिम्मेदारी को निभा चुका था इसलिए दक्षिण कोरिया की तड़क-भड़क भरी राजधानी सियोल को तरजीह दी गई। आई.ओ.सी. के अध्यक्ष जुआन एंतोनियो सामरांच ने 23 सितंबर, 1981 को पश्चिम जर्मनी के नगर बाडेन-बाडेन में इसकी घोषणा की। इस घोषणा के साथ ही जहाँ दक्षिण कोरिया में हर्ष की लहर फैल गई वहीं वह तीसरी दुनिया (विकासशील राष्ट्रों

का) का पहला राष्ट्र बना जिसे यह चुनौतीपूर्ण जिम्मेदारी मिली। फिर दक्षिण कोरियावासियों की खुशी उस समय दुगनी हो गई जब 27 नवंबर 1981 को सियोल में ही दसवें एशियाई खेल-मेले के आयोजन की भी घोषणा की गई।

बहिष्कार की काली छाया यहाँ भी

पिछले तीन ओलंपिक की तरह बहिष्कार का प्रभाव यहाँ भी देखा गया। एक समय का उसका ही एक अंग उत्तरी कोरिया ने उसके लिए कुछ मुश्किलें पैदा अवश्य कीं, परंतु इस बहिष्कार का ज्यादा असर प्रतियोगिता पर नहीं पड़ा। उत्तरी कोरिया ग्रुप के देशों को छोड़कर आई.ओ.सी. के 167 सदस्य देशों में 161 देशों ने इस खेल-मेले में शिरकत करके एक इतिहास रचा। दक्षिणी एवं उत्तरी कोरिया के बीच विवाद खेल-आयोजन की सहभागीदारी को लेकर शुरू हुआ था। उत्तरी कोरिया 24वें ओलंपिक खेल की आधी स्पर्द्धाएँ अपने यहाँ आयोजित करवाना चाहता था। इतना ही नहीं, सियोल की तरह वह वहाँ भी इसका अलग से उद्घाटन एवं समापन चाहता था। उसकी एक ख्वाहिश यह भी थी कि यह खेल-मेला 'ओलंपिक' कहलाने की बजाय 'सियोल प्योगयांग' कहलाए जो आई.ओ.सी. सहित सियोल को भी मंजूर नहीं था। लिहाजा दक्षिण कोरिया पहले तो कोई भी खेल वहाँ आयोजित कराने पर राजी नहीं हुआ, फिर आई.ओ.सी. के अनुरोध पर वह कुछ खेल देने को राजी हुआ लेकिन उत्तरी कोरिया अपनी जिद पर अड़ा रहा। हालाँकि ओलंपिक चार्टर में फेर-बदल करके दोनों राष्ट्रों को संतुष्ट करने का भी प्रयास आई.ओ.सी. ने किया, परंतु परिणाम शून्य रहा।

बातचीत के दौर के बावजूद सियोल अपनी तैयारी में मस्त रहा। एक प्रगतिशील राष्ट्र के रूप में अपनी पहचान बनाने के लिए दक्षिण कोरिया ने इस ओलंपिक कुंभ को सबसे बड़ा अवसर माना। इस लिहाज से आयोजन को श्रेष्ठ सिद्ध करने में उनकी ओर से कोई ढील नहीं दी गई। एशियाई खेल आयोजन के समय बनाए गए स्टेडियमों के अलावा कुछ नए स्टेडियम भी बनाए गए तथा कुछ में सुधार कर उन्हें ओलंपिक स्तरीय बनाया गया। 45,000 वर्ग मीटर क्षेत्रफल में फैले न्यू सियोल स्पोर्ट्स कांपलेक्स में मुख्य ओलंपिक स्टेडियम के अलावा एक इनडोर जिमनेजियम, इनडोर स्वीमिंग पूल बनाया गया। वास्तुविद् किम सूक्वान के डिजाइन के आधार पर लगभग 57 मिलियन डालर की लागत से इसका निर्माण किया गया। स्टेडियम के दक्षिण क्षेत्र में हर पल परिणाम देने के लिए 36 मीटर चौड़ा तथा 14 मीटर ऊँचा एक इलेक्ट्रानिक स्कोरबोर्ड भी लगाया गया था, जिस पर कोई 30 लाख डालर का खर्च आया। इसकी एक विशेषता यह भी थी कि इस स्कोरबोर्ड में 'रिप्ले' देखने की भी व्यवस्था थी। 750 एकड़ क्षेत्र में फैले

ओलंपिक पार्क में, ओलंपिक गाँव सहित साईकिल वेलोड्रम, जिमनेजियम तथा टेनिस कोर्ट बनाया गया था।

सुरक्षा-व्यवस्था पर भी काफी बड़ी राशि खर्च की गई। म्यूनिख ओलंपिक में 11 निर्दोष इज़राइली खिलाड़ियों की नृशंस हत्या ने इसके बाद के हर ओलंपिक आयोजन में पूर्ण सुरक्षा की जिम्मेदारियों को और बढ़ा दिया है। सियोल में सुरक्षा की पूरी जिम्मेदारी सेना की एक विशेष टुकड़ी, जिसे 'ओलंपिक सहयोग कमान' नाम दिया गया था, को सौंपी गई थी। उसने बड़ी ही जिम्मेदारी से अपना काम किया। मानवी सुरक्षा के अलावा पर्यावरण की शुद्धता पर भी विशेष ध्यान दिया गया। खेल प्रारंभ होने के कोई 10 दिन पहले से ही धूल और धुआँ उड़ानेवाली फैक्टरियों का काम रोक दिया गया और कुछ की कार्य-अवधि कम कर दी गई। एड्स की महामारी तथा वेश्यावृत्ति रोकने के भी समुचित प्रबंध किए गए थे, जिसके तहत प्रतियोगिता के दौरान विचरण करती हजारों सुंदरियों के गले में परिचय-पत्र लटके थे। प्रत्येक परिचय-पत्र पर चित्र तथा संबंधित जानकारी संलग्न थी। साथ ही चेतावनी भी, जो अंग्रेजी भाषा में कुछ इस प्रकार थी—'याद रखिए—अगर स्टांप लाल है तो लड़की को बिस्तर पर मत ले जाइए। अगर स्टांप नीला है तो यह आपके ऊपर निर्भर है। फिर भी सचेत रहिए।' इसके अलावा सियोल आनेवाले पर्यटकों से 'एड्स नहीं है' का प्रमाणपत्र भी माँगा गया।

कोरिया की पारंपरिक सांस्कृतिक कृति 'सामटिरगुक' इस आयोजन का प्रतीक चिह्न था। प्रोफेसर यंग सूंग चुन द्वारा निर्मित यह अनुकृति कोरियाई ग्रामीण लोक-कढ़ाई का प्रसिद्ध नमूना था। लाल, नीले तथा पीले रंग के सम्मिश्रण से बनाई गई इस तस्वीर में मनुष्य, धरती एवं स्वर्ग की सामूहिक कल्पना चित्रित थी। शुभंकर के रूप में कोरिया के लोकगीतों एवं लोककथाओं में ख्याति प्राप्त बाघ-शावक को चुना गया था जिसे 'होतोरी' नाम दिया गया। यह कलाकार किमयूब की कल्पना की उपज थी। सियोल के पहले अंग्रेजी अक्षर 'एस' की पृष्ठभूमि में मुस्कुराहट भरा चेहरा लिए होतीरी के सिर पर कोरियाई टोपी तथा गले में पाँच छल्लों की माला थी।

इस बार सियोल खेल-मेले में 23 खेलों में 237 स्वर्ण पदक दाँव पर लगे थे, जो पिछले लासएंजिल्स ओलंपिक से 16 अधिक थे। इस आयोजन से जहाँ लॉन टेनिस का ओलंपिक खेलों में पुनः प्रवेश हुआ, वहीं टेबल टेनिस पहली बार ओलंपिक खेलों की शोभा बनी। इसके अतिरिक्त अमरीकी राष्ट्रीय खेल बेसबॉल तथा कोरियाई देशी खेल ताईकवांडो को प्रदर्शन-खेल के रूप में शामिल किया गया। बालिंग, बेडमिंटन तथा महिला जूडो की नुमाइशी स्पर्द्धाएँ भी इस ओलंपिक में हुईं। इस बार ओलंपिक खेलों में 160 देशों ने शिरकत की जिनमें वनाऊत, यमन अरब रिपब्लिक, गुवाम, ब्रूनेई बुरकिना फासो, माल द्वीप, सेंटविसेट एवं ग्रेनेडीस, आरुबा, अमरीकी सामोया, यमन,

तथा वुक आईलैंड ने पहली बार ओलंपिक खेलों में अपने कदम रखे। कुल मिलाकर 13,600 से अधिक खिलाड़ियों तथा अधिकारियों ने इस आयोजन में हिस्सा लिया जो एक कीर्तिमान रहा।

परंपरा से हटकर आयोजन

इस बार का आयोजन पिछले अन्य आयोजनों की परंपराओं से कुछ हटकर प्रारंभ हुआ। ओलंपिक-इतिहास में पहली बार उद्घाटन-समारोह की शुरुआत मुख्य स्टेडियम के बाहर हुई। दक्षिण कोरिया की 'गंगा' हान नदी के चौड़े पाट पर छोटे-बड़े, नए-पुराने लगभग 460 नावों एवं जहाजों की परेड के साथ उद्घाटन-रस्म की शुरुआत हुई। इन जहाजों के पीछे भाग लेनेवाले देशों के विंड सर्फिंग का जत्था था। फिर 24वें ओलंपियाड के अवसर पर ओलंपिक झंडे में शामिल 6 रंगों से सजे 24 जहाज पानी में उतारे गए। इन जहाजों का अगुवा 480 कि.ग्रा. भारी तथा 4 फुट 11 इंच ऊँचा 'ड्रेगन ड्रम' लिए हुआ था। कोरियाई भाषा में इस ड्रेगन ड्रम को 'यांग को सुन' कहते हैं। पश्चिमी धारणाओं के विपरीत कोरियाई इस ड्रम को जीवन की समृद्धि का प्रतीक मानते हैं। कोरियाई परंपरानुसार इस ड्रम को जहाज से उतारकर मुख्य स्टेडियम में लाया गया। इसके पश्चात मुख्य स्टेडियम में उपस्थित एक लाख से भी अधिक दर्शकों के बीच दक्षिण कोरियाई राष्ट्रपति रोह ते वू ने इस खेल-मेले के उद्घाटन की घोषणा की। उद्घाटन की घोषणा के साथ ही शांति के प्रतीक 2400 श्वेत कपोतों को आकाश में छोड़ा गया। फिर 'प्रोमेथियस फायर' की इलेक्ट्रानिक संगीत धुन के बीच एक चर्चित व्यक्तित्व—76 वर्षीय की-युंग सोन ने, 21 दिन पहले हेरा के प्रसिद्ध पवित्र मंदिर में पुजारिन कैटरिना विकासक्लू द्वारा प्रज्वलित मशाल लेकर मुख्य स्टेडियम में प्रवेश किया। युंग 1936 के बर्लिन ओलंपिक में जापानी नाम कितोई सोन के नाम से हिस्सा ले चुके थे तथा उन्हें मैराथन में स्वर्ण पदक भी प्राप्त हुआ था।

युंग ने 17 वर्षीया धाविका लिम चुन ऐई को मशाल सौंप दी, जिसने 1986 के एशियाई खेलों में तीन स्वर्ण पदक जीतने का श्रेय प्राप्त किया था। स्टेडियम का एक पूरा चक्कर लगाकर लिम ज्योतिपात्र के नीचे आकर खड़ी हो गई, जहाँ से उसने लिफ्ट के सहारे 22 मीटर ऊँचे 5.50 मी. व्यास के वृत पर बने अष्टकोणीय ज्योति-कुंड के पास पहुँचकर ओलंपिक-ज्योति प्रज्वलित की। इसके बाद कोरियाई हैंडबाल खिलाड़ी हो जे एवं जूडो के जज़ ली हाक रेई ने क्रमशः खिलाड़ियों एवं अधिकारियों की ओर से शपथ ली। अब मैदान में आकर्षक नृत्यों का समा बँधा और इसी बीच फूलों से सजे एक वाहन में बैठकर 88 बच्चों का एक दल वहाँ आया। ये सभी बच्चे होतोरी एवं होसुनी मास्क

पहने हुए थे। ये बच्चे और कोई नहीं, सियोल को मिली ओलंपिक खेलों की मेजबानी की घोषणावाले दिन यानी 30 सितंबर, 1981 को पैदा हुए थे।

इस बार आयोजन में 12 वर्ष बाद पूर्व एवं पश्चिम का मिलन हुआ। कुल 9627 खिलाड़ियों ने जिनमें 2477 महिलाएँ भी शामिल थीं, अपने-अपने फन का प्रदर्शन किया। दुनिया के सरताज देश का फैसला भी यहीं हुआ, क्योंकि 1980 में अमरीकी गुट तथा 1984 में सोवियत संघ गुट देशों के बहिष्कार से यह मसला लटका हुआ था। फिर प्रतियोगिता-समापन के बाद 55 स्वर्ण सहित कुल 132 पदक जीतकर सोवियत संघ ने जतला दिया कि उसकी ही खेल-नीति आज सर्वश्रेष्ठ है। दूसरे स्थान के लिए मांट्रियल ओलंपिक की ही भाँति पूर्वी जर्मनी एवं अमरीका के बीच कशमकश हुई, जिसमें पूर्वी जर्मनी ने अमरीका को पीछे छोड़ दिया। संपूर्ण प्रतियोगिता में एक दर्जन से भी अधिक विश्व तथा 50 से भी अधिक ओलंपिक-रिकार्डों में सुधार हुआ, जो इस आयोजन के ऊँचे स्तर को दर्शाता है।

ओटो एवं बियोंडी की धूम

इस 24वें ओलंपिक की सर्वाधिक सफल खिलाड़ी पूर्वी जर्मनी की 22 वर्षीया तैराक क्रिस्टीन ओटो रही। उसने तैराकी में 6 स्वर्ण पदक जीतकर महिलाओं के वर्ग में एक नया आयाम स्थापित किया। 6 फुट 1 इंच ऊँची लिपचिंग विश्वविद्यालय की छात्रा क्रिस्टीन ने तैराकी की तीन विधाओं—फ्री स्टाइल, बेक स्ट्रोक एवं बटर फ्लाई की व्यक्तिगत स्पर्द्धाओं सहित तीनों रिले में स्वर्ण पदक जीतकर अपनी बहुमुखी प्रतिभा का परिचय दिया। 7 फरवरी, 1966 को जन्मी क्रिस्टीन वर्ष 1982 में विश्व-तैराकी चैंपियनशिप में 3 स्वर्ण पदक जीतकर पहली बार सुर्खियों में आई थी। फिर 5 वर्ष बाद स्ट्रासबर्ग में योरोपीय चैंपियनशिप में 5 स्वर्ण पदक जीतकर वह अपने दृढ़ मंसूबों का संकेत दे चुकी थी, परंतु इसी क्रिस्टीन ने एक बार तैराकी छोड़ने की भी ठान ली थी ! तब उसके पिता एवं प्रशिक्षक ने उसमें नए आत्मविश्वास का संचार किया था। इसी की बदौलत आज वह सबसे चपल जलपरी बन बैठी है। संगीत, नृत्य एवं फैशन में रुचि रखनेवाली यह जलपरी खेलकूद एवं पढ़ाई से निवृत्ति के बाद खेल-पत्रकार बनना चाहती है। सियोल ओलंपिक के बाद क्रिस्टीन को लगभग 11 हजार डालर कीमत का 20 कैरेट सोने का मुकुट भेंट किया गया। क्रिस्टीन के अलावा अमरीका की 16 वर्षीया स्कूली छात्रा जैनेट इवांस भी तरणताल में छाई रही। साथियों के बीच 'राजकुमारी' कही जानेवाली केलीफोर्निया की इस तैराक ने जहाँ 400 मी. फ्री स्टाइल में अपने विश्व-कीर्तिमान में 1.6 सेकेंड का सुधार किया, वहीं 800 मी. फ्री स्टाइल तथा 400 मी.

मिडले में भी अपनी कामयाबी दर्ज कराई।

पुरुष वर्ग में केलीफोर्निया विश्वविद्यालय के साढ़े 6 फुट ऊँचे मैट बियोंडी ने नाम कमाया। 23 वर्षीय बियोंडी 1972 में मार्क स्प्रिट्ज़ द्वारा निर्मित 7 स्वर्ण पदक जीतने का कीर्तिमान तो नहीं तोड़ सका, परंतु 5 स्वर्ण, 1 रजत सहित कुल 7 पदक जीतकर उसके काफी करीब आ पहुँचा था। उसे तीनों रिले सहित फ्री स्टाइल के 50 मी. तथा 100 मी. में स्वर्ण मिला। तैराकी में ही हंगरी के 21 वर्षीय थामस दारन्मी ने, जिसकी दाईं आँख कमजोर है, मिडले की दोनों ही स्पर्द्धाओं में अपने विश्व-कीर्तिमान को संशोधित करते हुए स्वर्ण-पदक हासिल किया। परंतु यहाँ माईकल ग्रास की हार चर्चा का विषय रही। 100 मीटर बटर फ्लाई में उसे पाँचवाँ स्थान नसीब हुआ। इस स्पर्द्धा का स्वर्ण पदक दक्षिण अमरीकी महाद्वीप के एक छोटे-से देश सूरीनाम के हिस्से में आया। उसके एंथोनी नेस्टी ने माईकल ग्रास के ओलंपिक-कीर्तिमान 53.08 सेकेंड को तोड़ते हुए 53.00 सेकेंड में यह फासला तय किया। बियोंडी को रजत पदक मिला। गोताखोरी के मुकाबलों में अमरीकी ग्रेग लुगानिस ने इतिहास बनाया। स्प्रिंगबोर्ड में गोताखोरी करते समय सिर में लगी गहरी चोट भी उसे स्वर्ण पदक जीतने के इरादे से नहीं डिगा सकी। हालाँकि सिर में चोट लगने के बाद वह स्वदेश वापसी चाह रहा था, परंतु उसके कोच रॉन ओ ब्राउन ने उसमें आत्मविश्वास का संचार कर डटे रहने का निर्देश दिया। परिणामतः न केवल स्प्रिंगबोर्ड, वरन प्लेटफार्म डाईविंग में भी स्वर्ण पदक जीतकर वह इतिहास-पुरुष बन गया। जीतने के बाद उसका कहना था कि 'अब मुझे अपने उस मूर्खतापूर्ण निर्णय पर हँसी आ रही है।' लास एंजिल्स ओलंपिक में भी उसने इन दोनों स्पर्द्धाओं में स्वर्ण जीता था। वह पहला पुरुष और पैट मैकोर्मिक के बाद दूसरा गोताखोर हुआ, जिसे लगातार दो ओलंपिक में दोनों ही स्पर्द्धाओं का स्वर्ण पदक जीतने का अनूठा गौरव प्राप्त है। पैट 1952 तथा 1956 के ओलंपिक खेलों में दोनों ही स्पर्द्धाओं का स्वर्ण पदक जीती थी। महिला गोताखोरी में चीनी बालाओं का वर्चस्व रहा, जबकि लयबद्ध तैराकी में कनाडा की बालाओं ने दोनों ही स्पर्द्धाओं में बाजी मारी।

ननद-भौजाई का कारनामा

तैराकी की अपेक्षा एथलेटिक्स में अंप्रत्याशित परिणामों का जोर रहा। परंतु अमरीकी ननद-भौजाई की जोड़ी द्वारा 5 स्वर्ण पदक जीतने का दावा अविचलित रहा। ओलंपिक स्टेडियम में 26 वर्षीया ननद जैकी जायनर करसी ने जहाँ हेप्टाथलन एवं लंबी कूद में अपनी कामयाबी लिखीं वहीं 28 वर्षीया भौजाई फ्लोरेंस ग्रिफिथ जायनर 100 मी., 200 मी. स्प्रिंट सहित 4 × 100 मी. रिले में स्वर्ण पदक जीतकर निर्विवाद रूप से 'स्प्रिंट क्वीन'

साबित हुई। फ्लोरेंस ने 100 मी. की दूरी 10.54 सेकेंड में तय करके समीक्षकों को हैरत में डाल दिया। 200 मी. में उसने नया विश्व-कीर्तिमान (21.34 सेकेंड) बनाया। फ्लोरेंस 1984 लास एंजिल्स के ट्रिपल जंप विजेता अल् जायनर से विवाहित है, जबकि अल् एवं जैकी भाई-बहन हैं। ट्रेक पर अपनी तेज गति के अलावा फ्लोरेंस अपने खूबसूरत चेहरे, पोशाक एवं रंगीन नाखूनों के कारण भी चर्चित रही। जैकी हेप्टाथलन में 7 हजार से भी ज्यादा अंक जोड़कर विश्व-कीर्तिमान के साथ स्वर्ण पदक जीत गई। एक समय फ्लोरेंस के कोच रहे बॉब करसी से विवाहित जैकी ने लंबी कूद में 7.40 मी. की दूरी ओलंपिक कीर्तिमान के साथ नापी। लास एंजिल्स में वह क्रमशः दूसरे एवं पाँचवें स्थान पर ही थी। 16 वर्षों से ओलंपिक स्वर्ण पदक के लिए साधनारत अमरीका की ही मैरी डेकर स्लेनी की इच्छा इस बार भी पूरी नहीं हो सकी। 100 मी. स्प्रिंट में वह रजत पदक ही हासिल कर सकी। 30 वर्षीया हल्के शरीर एव साधारण कद-काठीवाली मैरी इस समय एक बच्चे की माँ थी। पूर्वी जर्मनी की 24 वर्षीया हाईक ड्रेश्लर की चुनौती भी 100 मी., 200 मी. स्प्रिंट तथा लंबी कूद में धरी-की-धरी रह गई। महिलाओं की मैराथन दौड़ का स्वर्ण पुर्तगाल की रोजा मोता ने 2 घंटे, 25 मिनट एवं 49 सेकेंड में तय कर अपनी झोली में डाल लिया। लंबी दूरी 3000 मी. तथा 10,000 मी. में क्रमशः तात्याना सामेंलेंको तथा ओल्गा बोंदारेंको (दोनों रूस) ने बाजी मारी।

पुरुष वर्ग में 800 मी. से 10,000 मी. तक की दौड़ों में आशानुरूप अफ्रीकी धावकों का वर्चस्व रहा। परंतु छोटी दूरी की दौड़ में कई अप्रत्याशित एवं सनसनीखेज परिणाम सामने आए। 400 मी. बाधा दौड़ में 33 वर्षीय अमरीकी एडविन मोजेस को उसी के 28 वर्षीय शागिर्द आंद्रे फिलिप ने पछाड़ दिया। इस हार से मोजेस का तीसरा और लगातार दूसरा स्वर्ण पदक जीतने का ख्वाब टूट गया। दौड़ जीतने के बाद आंद्रे ने कहा—'दौड़ जीतने से जितनी मुझे खुशी हो रही है, उससे भी कहीं अधिक दुख इस बात का हो रहा है कि मैंने अपने ही गुरु को पीछे छोड़ दिया।' मोजेस को केवल कांस्य पदक मिला। इसी तरह 200 मी. सपाट दौड़ में पिछले चैंपियन अमरीकी कार्ल लुईस की ख्वाहिश भी धरी-की-धरी रह गई। लुईस को भी उसके ही अभ्यास-साथी 21 वर्षीय जो डेलाच ने 19.75 सेकेंड का समय निकालकर परास्त किया। कार्ल लुईस 19.79 सेकेंड के समय से रजत पदक ही जुटा सका। वैसे लुईस को एक धक्का उस समय लगा जब रिले (4 × 100 मी.) में उनकी टीम को गलत बेटन बदलने के आरोप में अयोग्य घोषित कर दिया गया। 19 वर्षीय विश्व जूनियर चैंपियन स्टीफन लुईस ने 400 मी. सपाट दौड़ में फेवरेट 'बुच' रेनाल्ड्स को 0.06 सेकेंड से पीछे छोड़कर 43.87 सेकेंड के समय से स्वर्ण पदक जीता। ऊँची कूद, त्रिकूद, भाला फेंक एवं डेकाथलन के विश्व-कीर्तिमानधारी खिलाड़ियों को भी यहाँ पराजय का कड़वा घूँट पीना पड़ा। डेकाथलन में फेवरेट डेली थामसन की हार उसकी किस्मत की हार रही, क्योंकि ऐन प्रतियोगिता के दौरान वह

घायल हो गया और उसे चौथे स्थान से संतोष करना पड़ा, जबकि विश्व-कीर्तिमानधारी पश्चिम जर्मनी का जुर्गेन हिग्सन 100 मी. सपाट दौड़ में तीन बार गलत शुरुआत की वजह से अयोग्य घोषित किया गया। डेकाथलन का स्वर्ण-पदक 8488 अंकों के साथ पूर्वी जर्मनी के क्रिश्चियन शिंक ने जीता। लंबी कूद में 8.72 मी. की छलाँग लगाकर कार्ल लुईस ने न केवल अपना खिताब बरकरार रखा, वरन दुबारा यह खिताब जीतनेवाला वह ओलंपिक-इतिहास का पहला खिलाड़ी भी बना। बाँसकूद में सोवियत संघ का सर्जेई बुबका स्वर्ण पदक का अधिकारी हुआ।

परंतु एथलेटिक्स के इन परिणामों से हटकर लोगों की दिलचस्पी 100 मी. फर्राटा दौड़ में थी, जिसमें दो पुराने प्रतिद्वंद्वियों—कनाडा के 27 वर्षीय 'बिग' बेन जानसन तथा अमरीका के कार्ल लुईस के बीच मुकाबला होना था। अंतिम दौड़ प्रारंभ हुई और मात्र 9.79 सेकेंड से दौड़ पूरी कर विश्व-कीर्तिमानधारी बेन जानसन की ओलंपिक खेलों में स्वर्ण पदक जीतने की ख्वाहिश पूरी हो गई। कार्ल को 9.93 सेकेंड का समय लगा। परंतु इस ऐतिहासिक दौड़ का सबसे सनसनीखेज परिणाम दो दिनों बाद आया, जिसे सुनकर बहुतों के होश उड़ गए। समाचार था कि—'जानसन 'ड्रग टेस्ट' में असफल पाया गया।' इस समाचार से सारा विश्व सकते में आ गया। लिहाजा जानसन से स्वर्ण पदक वापस लेकर कार्ल लुईस को दे दिया गया और बेन को तुरंत ही कनाडा वापस भेज दिया गया। बाद में इस पर कई आरोप-प्रत्यारोप होते रहे, परंतु ओलंपिक समिति अपने निर्णय पर अडिग रही।

नशीली दवाइयों का प्रभाव

प्रतिबंधित दवाइयों के सेवन के जुर्म में जब दो बुल्गारियाई भारोत्तोलकों—मितको ग्रेब लेव (वेंटमवेट) तथा एंजेल गुईशेव (लाइटवेट) से स्वर्ण पदक छीन लिया गया तो पूरी बुल्गारियाई टीम स्पर्द्धा से हट गई। उनकी अनुपस्थिति का लाभ रूसी भारोत्तोलकों ने उठाकर भारी वर्ग के सभी 5 स्वर्ण पदकों पर कब्जा जमा लिया। 110 कि. ग्रा. भार वर्ग में जूरी जखारेविच (रूस) ने जहाँ 455 कि. ग्रा. भार उठाया, वहीं 110 कि. ग्रा. से अधिक भार-वर्ग में रूस के ही ए. कुर्लोविच ने 462.5 कि. ग्रा. वजन उठाकर शक्तिमान होने का रुतबा पाया। मुक्केबाजी, जो चैमशील छात्र-जिमनेजियम तथा स्पोर्ट्स कांपलेक्स में हुई थी, दो रिंग एवं कोरियाई अधिकारियों की देशभक्ति के कारण चर्चित रही। वैसे मुकाबलों में क्यूबा की अनुपस्थिति का लाभ अमरीकी मुक्केबाजों ने उठाया और 12 स्वर्ण पदकों में सर्वाधिक स्वर्ण हथिया लिया। पूर्वी जर्मनी तथा द. कोरिया के हिस्से 2-2 स्वर्ण पदक आए।

केंद्रीय सेल खेल-स्टेडियम में संपन्न कुश्ती के मुकाबलों में सोवियत संघ (रूस) ने

शेर का हिस्सा पाया और दोनों वर्गों में 4-4 स्वर्ण पदक अपनी झोली में डाले। मिडिल वेट (फ्री स्टाइल शैली) को छोड़ शेष सभी वर्गों में रूस को एक न एक पदक अवश्य ही मिला। लाइट फ्लाई वेट तथा फ्लाईट वेट वर्ग में जापान के क्रमशः ताकाशी कोबायाशी एवं मित्सुरो सातो ने स्वर्ण जीतकर रूप को कांस्य पदक लेने पर मजबूर कर दिया परंतु अगले वर्ग में रूसी पहलवानों के आगे किसी की नहीं चली। निशानेबाजी की स्पर्द्धा भी, जो कि तेईनुंग ट्रेनिंग सेंटर में हुई थी, कम्युनिस्ट देशों की बपौती रही। 13 स्वर्ण में से 11 स्वर्ण उनकी ही झोली में गिरे। सर्वाधिक 4 स्वर्ण रूस के कब्जे में आए। रैपिड फायर पिस्टल में अफानासी कौजमीन (रूस) ने 698.0 अंक बनाकर विश्व-कीर्तिमान के साथ स्वर्ण पदक पाया। इसी तरह महिला वर्ग की एयर पिस्टल में यूगोस्लाविया की जैसना सेकरिक ने 489.5 अंक के साथ न केवल रूसी नीनो सालुकवेदज़ा (487.9 अंक) को हराया, वरन विश्व-कीर्तिमान भी रचा। साईकिलिंग में भी रूस एवं पूर्वी जर्मनी के साईकिल चालकों का वर्चस्व कायम रहा। परंतु क्वाचोन घुड़सवारी पार्क तथा वानडेंग पशुशाला में संपन्न हुई घुड़सवारी में पश्चिम जर्मनी ने 6 में से 4 स्वर्ण पदक जीतकर अपनी शक्ति का अहसास करा दिया। तलवारबाजी योरोपीय देशों की बपौती रही, जबकि तीरंदाजी के मुकाबलों में, जोकि ह्वारंग तीरंदाजी मैदान में संपन्न हुए थे, मेजबान कोरिया के तीरंदाजों ने मैदान मारा। महिला एवं पुरुष दोनों वर्गों के टीम-खिताब सहित महिला वर्ग में किम सू न्यूंग (344 अंक) ने अपनी ही साथी वांग ही क्यांग को 12 अंक से मात देकर स्वर्ण पदक हासिल किया। इस स्पर्द्धा का एक अन्य स्वर्ण अमरीका के लिए जाय बार्स ने व्यक्तिगत वर्ग में जीता।

ओलंपिक खेलों में 64 साल बाद पुनः शामिल लॉन टेनिस के महिला वर्ग में पश्चिम जर्मनी की 19 वर्षीया स्टेफी ग्राफ ने स्वर्ण पदक जीतकर अपनी 'गोल्डन ग्रेंड स्लैम' पूरी की। स्टेफी इसके पहले इसी वर्ष चारों ग्रेंड स्लैम प्रतियोगिताएँ जीत चुकी थी। अर्जेंटाइना की ग्रेबरिला सबातिनी को रजत पदक तथा जेना गैरिसन (अमरीका) एवं मैनुअला मलीव (बुल्गारिया) को कांस्य पदक दिया गया। पुरुष एकल वर्ग में 'स्वीडिश किलर' मिरोस्लाव मेसिर ने अमरीकी खिलाड़ी टिम मेयोटे को हराकर स्वर्ण पदक हासिल किया। दोनों वर्गों के युगल खिताब अमरीका की झोली में गिरे। ओलंपिक खेलों में पहली बार शामिल टेबल टेनिस में अप्रत्याशित परिणामों के बावजूद चीन तथा मेजबान दक्षिण कोरिया ने 2-2 स्वर्ण आपस में बाँट लिए। हान नदी रेगाट्टा कोर्स में संपन्न रोइंग-मुकाबलों (महिला वर्ग) में पूर्वी जर्मनी की खिलाड़ियों ने जानदार प्रदर्शन करके 6 में से 5 स्वर्ण पदक प्राप्त किए, जबकि पुरुष वर्ग में 8 में से 3 स्वर्ण पदक उसके हिस्से में आए।

दर्शकों की चहेती सिलिवास

सियोल ओलंपिक में आकर्षक मुकाबले देखने को मिले जिमनास्टिक जिमनेजियम तथा ओलंपिक पार्क में संपन्न जिमनास्टिक-मुकाबलों में। हालाँकि महिला वर्ग में टीम एवं व्यक्तिगत आलराउंडर का खिताब रूसी जिमनास्टों के पक्ष में रहा, परंतु सही मायने में दर्शकों की चहेती रूमानिया की 18 वर्षीया डेनियल सिलिवास रही। अनइवन बार, फ्लोर एक्सरसाइज़ तथा बैलेंस बीम में उसने स्वर्ण पदक तथा टीम एवं व्यक्तिगत आलराउंड स्पर्द्धा में रजत और हार्स वाल्ट में कांस्य पदक जीतकर अपनी प्रतिभा का लोहा मनवा लिया। रूसी टीम के लिए एलन शुशुनोवा ने यादगार प्रदर्शन कर अपनी टीम के लिए सफलताएँ लिखीं। पुरुष वर्ग में रूस के 23 वर्षीय ब्लादीमिर आर्टेमोव ने टीम एवं व्यक्तिगत स्पर्द्धा का स्वर्ण जीतने के अलावा हॉरीजेंटल बार्स तथा पैरेलल बार्स में भी पहला स्थान प्राप्त किया। इस प्रतियोगिता में एक विचित्रता पामेल्ड हार्स स्पर्द्धा में देखने को मिली, जब तीन विभिन्न देशों के प्रतियोगियों ने समान 19.950 अंक बनाकर पहला स्थान पाया। तीनों प्रतियोगियों को स्वर्ण पदक दिया गया। रजत तथा कांस्य पदक इस स्पर्द्धा में नहीं दिया गया।

टीम प्रतियोगिताओं के खेल में भी कई उलटफेर हुए। हाकी में जहाँ एशियाई देशों का सफाया हो गया, वहीं पिछली चार प्रतियोगिताओं से ओलंपिक हाकी में स्वर्ण पदक के शक्तिशाली उम्मीदवार आस्ट्रेलिया की ख्वाहिश इस बार भी पूरी नहीं हो सकी। ओलंपिक हाकी के इतिहास में पहली बार तीनों स्थान पर योरोपीय देशों का कब्जा रहा। कांस्य पदक आस्ट्रेलिया को मिला। पाकिस्तान को पाँचवाँ तथा भारत को छठा स्थान ही मिल पाया। फुटबाल में रूसी टीम ने अंतिम मुकाबले के आरंभ में एक गोल से पिछड़ने के बावजूद ब्राजील की टीम पर 2-1 से जीत दर्ज कराकर स्वर्ण पदक पाया। बास्केट बॉल के दोनों ही वर्गों का परिणाम भी आश्चर्यजनक रहा। पुरुष वर्ग में सोवियत संघ तथा महिला वर्ग में अमरीकी टीम उलटफेर करके विजयी रही। वॉली-बॉल में अमरीकी पुरुषों ने अपना स्वर्ण पदक बरकरार रखा, परंतु विश्व विजेता चीनी लड़कियों को रूस तथा पेरु ने पीटकर पीछे धकेल दिया। हैंडबॉल में कोरियाई महिलाओं की रूस (कांस्य पदक) पर जीत से सारा राष्ट्र झूम उठा, लेकिन पुरुष वर्ग का परिणाम ठीक इसके उलट रहा।

कमाई सवा पाँच अरब की

सोलह दिनों तक पूरी दुनिया में धूम मचाने के बाद अंततः यह खेल-मेला समाप्त हुआ। समापन समारोह कोई 100 मिनट का था। समापन की शुरुआत कोरिया के ऐतिहासिक

ऐमिले घंटे की टनटनाहट के साथ हुई। इस घंटे की ध्वनि को बिछुड़ने की पीड़ा का प्रतीक माना जाता है। इसके बाद कई रंगारंग कार्यक्रम हुए और अंत में सियोल ओलंपिक आयोजन समिति के अध्यक्ष पार्क सेह जिक ने समापन भाषण दिया, जबकि समापन की घोषणा अंतर्राष्ट्रीय ओलंपिक समिति के अध्यक्ष जुआन एंटोनियो समारांच ने 1992 के बार्सिलोना-ओलंपिक में मिलने के वायदे के साथ की। इसके पहले समारांच ने पार्क सेह जिक को ओलंपिक आर्डर स्वर्ण से सम्मानित किया। इस साल नए बने ओलंपिक ध्वज को उतारकर समारांच ने बार्सिलोना के मेयर को सौंपा। इस आयोजन में 3.1 अरब डालर (42 अरब रुपए) खर्च हुआ, बावजूद इसके आयोजन समिति को 34 करोड़ 32 लाख डालर (लगभग सवा पाँच अरब रुपए) का शुद्ध मुनाफा हुआ। यह मुनाफा लास एंजिल्स की तुलना में कहीं ज्यादा है। इस बार आय का मुख्य स्रोत रेडियो एवं टेलीविजन का अधिकार बेचना रहा।

सियोल में प्रतियोगिता का सबसे बुजुर्ग एथलीट बहामा का 71 वर्षीय नाविक डुरवुड जोल्स था। 2 नवंबर को उसने अपना 72वाँ जन्मदिन मनाया, जबकि प्रतियोगित्ता शुरू होने से कोई 2 माह पहले अपना 13वाँ जन्मदिन मनानेवाला अंगोलियाई तैराक नादिया कुन सबसे युवा खिलाड़ी रहा। इस ओलंपिक की एक खास बात यह भी रही कि स्प्रिंट साईकिलिंग में स्वर्ण पदक जीतनेवाली पूर्वी जर्मनी की क्रिस्टा लुडिग दोनों ही प्रकार के ओलंपिक (शीत एवं ग्रीष्म) में स्वर्ण पदक जीतनेवाली पहली खिलाड़ी हुई। द. कोरिया सरकार ने अपने हर स्वर्ण पदक विजेता खिलाड़ी को आजीवन एक हजार डालर प्रतिमाह वजीफा देने का फैसला किया।

इस तरह एक जानदार शुरुआत एवं यादगार समापन के साथ यह ओलंपिक मेला समाप्त हुआ। समीक्षकों के अनुसार यह खेल-आयोजन विश्व का सबसे बड़ा खेल-आयोजन रहा। परंतु खिलाड़ियों द्वारा नशीली दवाइयों के सेवन को देखते हुए कुछ लोगों ने इसे 'ड्रग गेम्स' की भी संज्ञा दी है। इस आयोजन के दौरान,सुविधाएँ एवं स्तर को बनाए रखने में दक्षिण कोरिया के प्रयत्नों की सभी ने खुले दिल से सराहना की। कुल मिलाकर यह अत्यंत सफल आयोजन ओलंपिक पितामह कुबरटीन के सपनों को भी साकार करने में सफल रहा।

पदक-तालिका –1988

देश	स्वर्ण	रजत	कांस्य	कुल
सोवियत संघ	55	31	46	132
पूर्वी जर्मनी	37	35	30	102

अमरीका	36	31	27	94
दक्षिणी कोरिया	12	10	11	33
पश्चिमी जर्मनी	11	14	15	40
हंगरी	11	6	6	23
बुल्गारिया	10	12	13	35
रूमानिया	7	11	6	24
फ्रांस	6	4	6	16
इटली	6	4	4	14
चीन	5	11	12	28
ग्रेट ब्रिटेन	5	10	9	24
केन्या	5	2	2	9
जापान	4	3	7	14
आस्ट्रेलिया	3	6	5	14
यूगोस्लाविया	3	4	5	12
चेकोस्लोवाकिया	3	3	2	8
न्यूजीलैंड	3	2	8	13
कनाडा	3	2	5	10
पोलैंड	2	5	9	16
नार्वे	2	3	—	5
हालैंड	2	2	5	9
डेनमार्क	2	1	1	4
ब्राजील	1	2	3	6
फिनलैंड	1	1	2	4
स्पेन	1	1	2	4
तुर्की	1	1	—	2
मोरक्को	1	—	2	3
आस्ट्रिया	1	—	—	1
पुर्तगाल	1	—	—	1
सूरीनाम	1	—	—	1
स्वीडन	—	4	7	11
स्विट्जरलैंड	—	2	2	4
जमैका	—	2	—	2

अर्जेंटाइना	—	1	1	2
चिली	—	1	—	1
कोस्टारिका	—	1	—	1
इंडोनेशिया	—	1	—	1
ईरान	—	1	—	1
डच एंटेल्स	—	1	—	1
पेरू	—	1	—	1
सेनेगल	—	1	—	1
वर्जिन आइलैंड	—	1	—	1
बेल्जियम	—	—	2	2
मैक्सिको	—	—	2	2
कोलंबिया	—	—	1	1
डिजीबूटी	—	—	1	1
ग्रीस	—	—	1	1
मंगोलिया	—	—	1	1
पाकिस्तान	—	—	1	1
फिलीपींस	—	—	1	1
थाईलैंड	—	—	1	1
योग	241	234	264	739

शीतकालीन ओलंपिक : 1924—1988

आज शीतकालीन ओलंपिक का आयोजन ग्रीष्मकालीन ओलंपिक की भाँति ही काफी लोकप्रिय है। इसका प्रमाण इसमें लगातार बढ़ते हुए देशों एवं खिलाड़ियों की संख्या है। पहले 1908 (लंदन) तथा 1920 (एंटबर्ग) के ग्रीष्मकालीन ओलंपिक के साथ ही शरदकालीन ओलंपिक के कुछ खेल संपन्न हुए थे, लेकिन 1924 के बाद से इनका पृथक आयोजन किया जाने लगा, जो आज भी कायम है। आज इस ओलंपिक से कई ऐसे देश भी जुड़ रहे हैं, जिनका पहले इनमें शामिल खेलों से दूर-दूर तक कोई सरोकार नहीं था।

निःसंदेह यह बात इस खेल की लोकप्रियता को दर्शाती है। ग्रीष्म ओलंपिक की भाँति शरदकालीन ओलंपिक भी द्वितीय विश्वयुद्ध की भेंट चढ़े, लेकिन भेंट चढ़े इन आयोजनों को कोई क्रम नहीं दिया गया।

1924 : चामोनिक्स

पहले शीतकालीन ओलंपिक के आयोजन-स्थल के रूप में 1922 में चामोनिक्स का चयन किया गया, जिसे उस समय 'चामोनिक्स अंतर्राष्ट्रीय शीतकालीन खेल सप्ताह' नाम दिया गया। लेकिन अधिकृत रूप से इस खेल को ओलंपिक का दर्जा 1926 में मिल सका।

आयोजन के पूर्व मौसम की अनिश्चितता ने एक बार तो इन खेलों को संकट में ही डाल दिया। अभी प्रतियोगिता आरंभ होने में मात्र 33 दिन ही बाकी थे और बर्फ का कहीं कोई नामोनिशान नहीं था, फिर 24 दिसंबर, 1923 की सुबह जब चामोनिक्स के लोगों ने अपनी आँखें खोलीं तो सहसा उन्हें अपनी आँखों पर विश्वास ही नहीं हुआ। उन्हें लगा कि वे कोई मीठा सपना देख रहे हैं, क्योंकि तब तक 3 फीट, 8 इंच मोटी बर्फ की चादर बिछ चुकी थी और कई जगह तो यह आवश्यकता से भी अधिक थी, जिसे बाद में हटाया गया। फिर फरवरी, 1924 के प्रथम सप्ताह में हुई बारिश ने आईस स्टेडियम को झील में बदल दिया।

फिर 25 जनवरी का वह दिन भी आया, जब फ्रांस के सचिव गास्टन बिडाल ने इन खेलों के उद्घाटन की घोषणा की। मार्चपास्ट में अपने-अपने देश की अगुवाई करनेवाले खिलाड़ियों ने अपने देश के खिलाड़ियों की ओर से ओलंपिक भावना की शपथ ली। इस पहले आयोजन में आस्ट्रिया, बेल्जियम, कनाडा, चेकोस्लोवाकिया, फिनलैंड, ग्रेट ब्रिटेन, हंगरी, इटली, नार्वे, लेटविया, पोलैंड, स्वीडन, यूगोस्लाविया, अमरीका तथा स्विट्जरलैंड ने हिस्सा लिया।

इस पहले आयोजन में नार्वे (4-7-6) कुल 17 पदक लेकर सबसे ऊपर रहा, जबकि इसके बाद फिनलैंड (4-3-3) तथा आस्ट्रिया (2-1-0) ने पदक तालिका में स्थान बनाया। शामिल 16 देशों में 10 देशों ने कोई न कोई पदक अवश्य पाया।

शीतकालीन ओलंपिक खेलों का पहला स्वर्ण अमरीका के चार्ल्स जेब्ट्रा को मिला, जिसने प्रतियोगिता के दूसरे दिन 500 मी. स्पीड स्केटिंग में नार्वे के आस्कर ओल्सन को हराया। यही अमरीका का इन खेलों का एकमात्र स्वर्ण पदक भी रहा। इसी स्पर्धा में फिनलैंड के 30 वर्षीय अर्नाल्ड राबर्ट क्लास थनबर्ट को कांस्य पदक मिला लेकिन बाद में

वही इस प्रतियोगिता का 'हीरो' साबित हुआ। उसने बाद में 5000 मी. तथा 1500 मी. में स्वर्ण तथा 10000 मी. में रजत पदक पाया। इन चारों रेसों के आधार पर उसे कंबाइंड स्पर्धा में रोल्ड लार्सन (9-5 अंक) तथा जुलियस स्कूतनैब (11-0 अंक) के मुकाबले वरीयता मिली तथा एक और स्वर्ण उसके हिस्से में आ गया। चार वर्ष बाद सेंट मोरित्ज में उसने 2 और स्वर्ण अपने खाते में लिखे। वैसे थुनबर्ट के बारे में समीक्षकों का विचार था कि वह भी पावो नूरमी की श्रेणी का जबरदस्त इच्छा-शक्तिवाला खिलाड़ी है। वह साल-भर मेहनत करने में विश्वास रखता था। स्पीड स्केटिंग के इन मुकाबलों में हालाँकि नार्वे के रोल्ड लार्सन को कोई स्वर्ण पदक नहीं मिला, लेकिन हर वर्ग में उसने कोई न कोई पदक जीतकर 2 रजत तथा 3 कांस्य जुटाए।

नार्वे की इस स्वर्ण कमी को नार्डिक स्कीइंग में थोलीफ हागन ने 3 स्वर्ण (15 कि. मी. तथा 50 कि. मी. स्कीइंग एवं नार्डिक कंबाइंड) में जीतकर पूरा किया। 28 सितंबर 1894 को ड्रेमन में जन्मा थोलीफ असाधारण प्रतिभा का मालिक था। ओलंपिक खेलों में उसे 30 वर्ष की उम्र में जौहर दिखाने का मौका मिला। मगर उसने अपनी इस उम्र में किसी को शिकायत का मौका नहीं दिया। इसी खेल में एक अनहोनी घटना भी घटी। पहले स्की जंपिग के मुकाबले में अधिकारियों ने उसे काँसे का पदक दिया था, लेकिन 50 वर्ष बाद यह पता चला कि उसके (17.827) मुकाबले अमरीकी एंड्रेस हागन के अंक अधिक (17.916) थे, लिहाजा थोलीफ की पुत्री ने 83 वर्षीय हागन को औरलो में एक विशेष समारोह के दौरान यह पदक लौटाया। थोलीफ का निधन 12 दिसंबर, 1934 को ही हो चुका था। इस स्पर्धा में नार्वे को एक और स्वर्ण जेकब तुलीन टैक्स ने दिलाया। ये ही चार स्वर्ण इस बार नार्वे की झोली में आए। इन मुकाबलों में कई स्की जंपर अभ्यास के दौरान बर्फ की कठोर सतह से टकराकर घायल भी हो गए।

चार व्यक्तियों की बाब स्लेड स्पर्धा स्विट्जरलैंड के अल्फ्रेड एवं हीनकीच स्कलेपी भाइयों सहित एडवर्ड शटर तथा अल्फ्रेड लेबल ने जीती। फिगर स्केटिंग में (पुरुष वर्ग) स्वीडन के गिलीस ग्राफ स्ट्राम तथा महिलाओं में आस्ट्रिया की हर्मा प्लेंक स्जोबो की जीत सहज रही। उल्लेखनीय है कि हर्मा को सातों जजों ने पहला स्थान दिया। ग्राफ स्ट्राम भी न केवल असाधरण स्केटर था वरन कवि, चित्रकार, वास्तुविद एवं शिक्षक भी था। उसे भी 1920 में सातों जजों ने पहला स्थान दिया था और उसने स्वर्ण जीता था, जबकि यहाँ उसे चार ज़जों ने पहला स्थान दिया। 1928, सेंट मोरित्ज में घुटनों की सूजन के बावजूद उसने हिस्सा लिया और अपना तीसरा स्वर्ण पाया, जबकि 1932 में भी वह इस स्पर्धा में उतरा लेकिन इस बार उसे रजत पदक से संतोष करना पड़ा। पेयर्स के मुकाबलों में आस्ट्रिया की हेलेन एंगलमैन ने अल्फ्रेड बर्गर के साथ फिन्निश पति-पत्नी की जोड़ी लुडो विका तथा वाल्टर जैकबसन को हराकर स्वर्ण पाया।

बर्फ हाकी में कनाडा ने आठ देशों के मुकाबले में लगातार दूसरी बार (1920 सहित) स्वर्ण पदक जीता। इस बार कनाडा का प्रतिनिधित्व टोरंटो ग्रेनीटीस ने किया, जिसने अपने पहले दो मैचों में चेकोस्लोवाकिया व स्वीडन को 30-0 तथा 22-0 से हराया। वैसे अपने पाँच मैचों में कनाडा ने कुल 170 गोल दागे। प्रतियोगिता का समापन बेरन पियरे डि कुवरटिन ने पुरस्कार बाँटकर किया।

1928 : सेंट मोरित्ज

27 मई, 1925 को प्राग में आयोजित बैठक में अंतरार्ष्ट्रीय ओलंपिक समिति ने स्विट्ज़रलैंड के शहर सेंट मोरित्ज को मेजबानी सौंपने के अपने निर्णय को अंजाम दिया। इस बार पिछली बार की तुलना में कई और देशों एवं खिलाड़ियों ने हिस्सा लिया। हालैंड, जापान, कोरिया, इस्तोविया, लिथुनिया, लक्जमबर्ग, मैक्सिको, रूमानिया तथा प. जर्मनी ने पहली बार इन खेलों में अपना कदम रखा।

इस बार भी इन खेलों में नार्वे के खिलाड़ी छाए रहे और वह पदक तालिका में 6 स्वर्ण, 4 रजत तथा 5 कांस्य लेकर चोटी पर रहा। अमरीका (2-2-2), स्वीडन (2-2-1) पदक लेकर तीसरे स्थान पर रहा, जबकि पिछले ओलंपिक में दूसरे स्थान पर रहनेवाले फिनलैंड (2-1-1) के साथ चौथे स्थान पर खिसक गया।

नार्वे का जोहान ग्रोट्म्सोब्रोटेन इस बार सर्वाधिक चर्चित खिलाड़ी रहा। वह स्कीइंग तथा नार्डिक कंबाइंड में स्वर्ण जीतने में सफल रहा। पिछली बार भारी सफलता पानेवाला फिनलैंड का ए. क्लास थुनबर्ग भी दो स्वर्ण जीतने में सफल रहा। पिछली बार 19.2 कि. मी. क्रासकंट्री स्कीइंग में रजत पदक पानेवाला 25 वर्षीय जोहान इस बार 1:37:01.0 सैकेंड से अव्वल रहा। अगले वर्ष भी वह ओलंपिक में उतरा और नार्डिक कंबाइंड का अपना स्वर्ण बचाया। वह अपने 3 ओलंपिक कैरियर में 3 स्वर्ण, 1 रजत तथा 2 कांस्य पदक जीतने में सफल रहा।

फिगर स्केटिंग के पुरुष वर्ग में स्वीडन का गिल्लीस ग्राफ-स्टोन लगातार तीसरी बार (20 से 28 तक) चैंपियन हुआ, जबकि आस्ट्रिया के बिली बौनी को लगातार दूसरी बार रजत पदक से ही संतोष करना पड़ा। इस बार वह गिल्लीस से मात्र 15.75 अंक से पिछड़ गया। महिला वर्ग में नार्वे की गुड़िया सौंजा हेनी की जबरदस्त प्रतिभा उभरकर सामने आई। हालाँकि इसके पहले वह 1924 में भी हिस्सा ले चुकी थी, लेकिन वह 8 स्केटरों में सबसे अंतिम रही। तब शायद उसमें अनुभव की कमी थी, परंतु वह राष्ट्रीय चैंपियन थी। लेकिन यहाँ आने के पहले वह कहीं ज्यादा परिपक्व एवं तेज हो चुकी थी

और यही वजह रही कि सिर्फ अमरीकी जज को छोड़ शेष सभी 6 जजों ने उसे पूरे के पूरे अंक दिए। अपने इस खिताब को उसने 1932 एवं 36 में भी सँभालकर रखा।

8 अप्रैल, 1912 को ओस्ला के एक धनी परिवार में जन्मी हेनी 1936 तक काफी प्रसिद्धि पा चुकी थी। स्थिति यह थी कि वह जहाँ भी प्रतियोगिता में हिस्सा लेने जाती, सुरक्षा के लिए पुलिस की मदद लेनी पड़ती। 1936 ओलंपिक चैंपियनशिप जीतने के पहले तक वह लगातार 10 बार (1927 से) विश्व-चैंपियन भी रही। इसके बाद पेशेवर बन गई। उसकी ख्याति को भुनाने के उद्देश्य से अमरीका की 20वीं सैंचुरी फोंस ने उसे अपनी फिल्मों में लिया और 1938 से 1950 के दरम्यान उस पर 10 मूक फिल्में बनाईं। इस दौरान उसने 1941 में अमरीका की नागरिकता भी हासिल कर ली। दो अमरीकियों से विवाह एवं तलाक के बाद 44 वर्ष की उम्र में उसने अपने बचपन के साथी नील्स ओमस्टाक से तीसरी शादी की। शादी के बाद उसने नार्वे को आधुनिक चित्रों का एक भव्य संग्रह भेंट किया। फिर 12 अक्टूबर, 1969 को ल्यूकेमिनिया की बीमारी से पेरिस से ओस्ला जाते समय उसकी मृत्यु हो गई। मृत्यु के समय वह 8 करोड़, 6 लाख डालर की मालकिन थी।

स्पीड स्केटिंग में अब की बार भी वही 4 स्पर्धाएँ हुईं। लेकिन फिनलैंड का ए. क्लास अपना पूर्व प्रदर्शन दुहरा नहीं सका। यूँ तो उसने इस बार भी दो स्वर्ण क्रमशः 500 मी. तथा 1500 मी. में पाए, लेकिन उसे वैसी ख्याति नहीं मिली, जैसी उसने पिछले ओलंपिक में हासिल की थी। वैसे इन मुकाबलों में नार्वे का बंर्ट एवनसेन सबसे सफल रहा, जिसने 500 मी. में क्लास के साथ संयुक्त स्वर्ण के अलावा 1500 मी. तथा 10,000 मी. में रजत पदक एवं 5000 मी. में कांस्य पदक पाया। चार साल बाद 5000 मी. में उसने रजत पदक जीता। इसी स्पर्धा में हुए एक विवाद का अभी तक कोई अधिकृत फैसला नहीं हुआ है। घटना कुछ इस प्रकार है—

10,000 मी. की स्पर्धा में जब 10 में से 7 प्रतियोगी अपनी हीट्स पूरी कर चुके थे, तभी एकाएक उस स्थल का तापमान बढ़ गया, जिससे शेष बचे तीनों प्रतियोगियों का हीट्स होना मुश्किल हो गया। तब संबंधित अधिकारियों ने तय किया कि प्रतियोगिता अगले दिन पुनः होगी। अब जब तक यह खबर नार्वे के खिलाड़ियों तक पहुँचती वे अमरीकी इर्विन जैकी को विजेता मानकर अपने देश लौट चुके थे। लिहाजा यह स्पर्धा रद्द करनी पड़ी, परंतु विशेषज्ञ आज तक यह तय नहीं कर पाए कि यह स्पर्धा हुई भी थी या नहीं। बहरहाल अगले वर्ष इर्विन ने इस स्पर्धा में स्वंर्ण पाकर लोगों के भ्रम को तोड़ा।

बॉब स्लेड की प्रतियोगिता में पहली व अंतिम बार 4 की बजाय 5 व्यक्ति रखे गए, जिसमें मौसम की खराबी के कारण चार की बजाय दो दौड़ों में ही विजेता का फैसला कर दिया गया। जीत अमरीकी दल की हुई, जिसके एक सदस्य ड्राइवर विलियम फिस्के की उम्र तब मात्र 16 साल 220 दिन थी, जबकि एक अन्य सदस्य विलफोड ग्रे उस समय 36 साल, 21 दिन का था।

नार्डिक स्कीइंग के मुकाबलों में इस बार नार्वे ने 4 में से 3 स्पर्धाएँ जीतीं। 90 मी. स्की जंप स्पर्धा में पिछला चैंपियन जेकब तुलिन एक जंप के दौरान पहाड़ी से टकराकर बुरी तरह घायल हो गया और मौत के मुँह से बाल-बाल बचा। फिर उस दुर्घटना से पूरी तरह उबरने के बाद उसने 1936 में बर्लिन ग्रीष्मकालीन ओलंपिक में 8 मी. यार्टिंग में हिस्सा लेकर रजत पदक प्राप्त किया।

केस्टारन में पहली बार आयोजित स्केलटन की एकमात्र स्पर्धा में फैसला तीन दौड़ों के पश्चात हुआ, जिसमें अमरीकी बंधु जेनिसन हीटन (3:01.8 सेकेंड) व जान हीटन (3:02.8) ने क्रमशः स्वर्ण व रजत पदक जीता। बाद में जेनिसन ने अमरीकी बॉब स्लेड टीम के साथ रजत पदक भी जीता, जबकि जान ने 1932 में बॉब स्लेड मुकाबलों में कांस्य और इसके ठीक 16 वर्ष बाद 39 वर्ष की आयु में स्केलटन मुकाबलों में फिर रजत पदक जीता।

बर्फ हाकी में एक बार फिर कनाडा कामयाब रहा। इस बार 1926 के टोरंटो विश्वविद्यालय ने यह दायित्व सँभाला, जिसे टोरंटो ग्रेजुएट्स का नाम दिया गया था। इसमें 11 देशों ने हिस्सा लिया, जिसमें कनाडा को छोड़कर शेष 10 टीमों को 3 अलग-अलग ग्रुपों में बाँटा गया, जहाँ से विजेता टीमों ने कनाडा के साथ अंतिम दौर में अपनी किस्मत आजमाईश की। कनाडा ने अपने तीनों ही मैच बड़े आसानी (वि. स्वीडन 11-0, वि. ग्रेट ब्रिटेन 14-0 तथा स्वीट्जरलैंड 13-0) से जीतकर स्वर्ण हथियाया।

कनाडा की इस टीम की खास बात यह थी कि इसके पाँच सदस्यों का संबंध दो अलग-अलग परिवारों से था, जिनमें हर्बट, ह्यू, व रोजर प्लेक्सशन तथा फ्रैंक व जोसफ सुलीवान सगे भाई थे।

1932 : लेक प्लेसिड

शरदकालीन ओलंपिक का तीसरा महाकुंभ अमरीका के शहर लेक प्लेसिड में हुआ, जिसमें लंबी दूरी के कारण अधिकांश योरोपीय देशों ने शिरकत नहीं की। इससे खिलाड़ियों की संख्या में भारी कमी रही। योरोपीय देशों की अनुपस्थिति का लाभ

उठाकर मेजबान इस बार 12 पदक (6-4-2) लेकर चोटी पर जा पहुँचा। नार्वे केवल 10 (3-4-3) पदक के साथ दूसरे तथा स्वीडन (1-2-0) के साथ तीसरे स्थान पर रहा।

4 फरवरी की सुबह न्यूयार्क के गवर्नर फ्रैंकलीन डी. रूज़वेल्ट ने इन खेलों का पारंपरिक उद्‌घाटन किया। इससे पहले 21 वर्षीय स्थानीय युवक स्पीड स्केटर जान शी ने 17 देशों के 306 खिलाड़ियों की ओर से शपथ ग्रहण की।

नार्डिक स्कीइंग के मुकाबलों की 70 मी. स्की जंप में नार्वे के बिरगर रूड को कड़ी टक्कर के बाद अपने ही देश के हैंस बेक (227.0) से मात्र 1.10 अंक से विजयश्री मिली। हालाँकि इस स्पर्धा में 3 देशों के मात्र 10 प्रतियोगियों ने ही हिस्सा लिया था, लेकिन अंकों की गणना करते समय स्थिति काफी जटिल हो गई। और एक समय तो यह माना जा रहा था कि बेक इस स्पर्धा को जीत चुका है, लेकिन गणना से परिणाम बिरगर के पक्ष में गया। इसी स्पर्धा में बिरगर के पक्ष में गया। इसी स्पर्धा में बिरगर का बड़ा भाई सिगमुंड, जिसने 1928 में रजत पदक जीता था, इस बार सातवें स्थान पर जा पहुँचा।

23 अगस्त, 1911 को नार्वे के खदानी शहर कोग्संबर्ग में जन्मे बिरगर ने इस ओलंपिक के बाद दो और ओलंपिक में भाग लिया। 1936 में भी वह विजेता बना, मगर अल्पाईन कंबाइंड में डाउनहिल की स्पर्धा जीतने के बाद भी वह चौथे स्थान पर रहा। 1948 सेंट मोरित्ज में वह कोच की हैसियत से गया था, लेकिन स्पर्धा के पूर्व रात्रि में खराब मौसम को देखकर उसने कम अनुभवी जार्ज थेने के बदले स्वयं उतरने का निश्चय किया और अपने अनुभव का पूरा लाभ उठाते हुए 49 प्रतियोगियों के बीच 36 साल, 168 दिन की आयु के बावजूद रजत पदक जीता। इसी स्पर्धा में उसका छोटा भाई ऐस्बजोर्न सातवें स्थान पर आया। ओलंपिक खेलों के अलावा उसने 1931, 35 व 37 में विश्व चैंपियनशिप भी जीती, जबकि 1938 में अमरीकी चैंपियन रहा। अपने कैरियर में उसने दो बार विश्व-कीर्तिमान भी स्थापित किया।

अन्य स्पर्धाओं में भी स्कैंडनेवियन देश के खिलाड़ी छाए रहे। 18 कि. मी. की क्रास कंट्री में 11 देशों के 42 प्रतियोगियों में पहले 11 स्थान पर इन्हीं का कब्जा रहा। पिछला विजेता नार्वे का जोहान ग्रोटुमनोब्रोटेन पिछड़कर छठे स्थान पर पहुँच गया। स्वीडन के स्वेन उटेस्ट्राम ने 1:23:07.0 सेकेंड में स्वर्ण जीता, मगर 50 कि. मी. की स्पर्धा में वह छठे स्थान पर रहा। इस स्पर्धा के लिए कोर्स को लेकर प्रतियोगियों एवं अधिकारियों के बीच दो घंटे तक विवाद चला। इस दौड़ को अंततः फिनलैंड के वेली सेरीनेन ने, जिसने 18 कि. मी. में कांस्य पदक जीता था, 4:28:00.00 समय के साथ जीता।

स्पीड स्केटिंग के चारों मुकाबलों में मेजबान अमरीका को स्वर्ण मिला, जिसे जान शी (500 मी., 1500 मी.) व इर्विन जैफी (5000 मी., 10000 मी.) ने प्राप्त किया। इस

बार दो प्रतियोगियों के हीट्स की बजाय एक साथ 5 प्रतियोगियों की हीट्स कराई गई, जिसे 'नार्थ अमरिकन नियम' कहा गया। 21 वर्षीय शी ने प्रतियोगिता के पहले ही दिन 500 मी. की रेस ओलंपिक-रिकार्ड (43.6) सेकेंड की बराबरी करते हुए जीती। दूसरे

वह 1500 मी. में विजयी हुआ। 5000 मी. की दौड़ में इर्विन जैफी ने अपनी स्थिति का पिछली बार के चौथे स्थान से सुधारकर पहले किया, जबकि पूर्व विजेता इवार बैलेनगुड पाँचवें स्थान पर लुढ़क गया। 10,000 मी. की दौड़ विवादास्पद रही। पहले हीट्स के पश्चात विजेता अलेक्सहर्ड के अलावा एडविन बेज व शोजो इशीहारा को अयोग्य करार दिया गया। फिर दूसरी हीट्स में पिछले उपविजेता बर्ट एवनसन के प्रोटेस्ट पर कैनेडियन फ्रैंक स्टेक को भी अयोग्य करार दिया गया, लेकिन जब यह विवाद और बढ़ गया तथा कई प्रतियोगियों ने अलग होने की धमकी दी तो अगले दिन यह दौड़ पुनः आयोजित हुई और संयोग से पहले दिनवाले 8 प्रतियोगी ही फाइनल के लिए पुनः क्लालीफाई हुए। मगर फाइनल दौड़ में कोई बड़ा उलटफेर नहीं हुआ और इर्विन जैफी 19:13.6 सेकेंड के समय से विजयी हुआ।

फिगर स्केटिंग के मुकाबले पहली बार इंडोर स्टेडियम में हुए। पुरुष वर्ग में आस्ट्रिया के 23 वर्षीय कार्ल शूफर ने असाधारण प्रदर्शन करते हुए, पिछली 3 बार के चैंपियन स्वीडन के गिलीस ग्राफस्ट्राम (2514.5 अंक) को (87.5 अंक ज्यादा बनाकर) दूसरे स्थान पर ठेल दिया। वास्तव में यह ग्राफस्ट्राम के कैरियर का उतार था, क्योंकि पिछली 3 प्रतियोगिताओं की तुलना में उसका यह प्रदर्शन काफी कमजोर था। अपनी जीत के बाद ग्राफस्ट्राम के बारे में प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए उसने कहा—''हाँ मैंने उसे हराया है, लेकिन वह अब भी विश्व का महानतम स्केटर है।'' चार साल बाद शूफर फिर विजेता बना और इस बार उसने पहले से कहीं ज्यादा अच्छा प्रदर्शन किया। वह 'न गिरनेवाले आदमी' के रूप में जाना जाता था। पेयर्स मुकाबलों में फ्रांसिसी एंड्रे जोली व पियरे बूनेट लगातार दूसरी बार चैंपियन हुए, जबकि इसके पहले 1924 में यह जोड़ी कांस्य पदक भी जीत चुकी थी। इस बार जब यह जोड़ी लेक प्लेसिड आई तो वास्तविक जीवन में भी जोड़ी बन चुकी थी।

बर्फ हाकी में इस बार सिर्फ 4 देशों ने शिरकत की, जिसमें चैंपियन कनाडा के अलावा मेजबान अमरीका, जर्मनी एवं पौलैंड की टीमें थीं। कम टीमों की वजह से प्रत्येक देश को एक-दूसरे के विरुद्ध 2-2 बार खेलने का नियम बनाया गया, जिसमें चैंपियन कनाडा आरंभिक 5 मैच जीतकर स्वर्ण का प्रमुख दावेदार हो गया। अब उसे अंतिम मैच अमरीका के विरुद्ध खेलना था, जिसमें ड्रा होने पर भी वह चैंपियन होता, परंतु हारने पर स्वर्ण जाता रहता। इसी कशमकश के माहौल में अंतिम मुकाबला शुरू हुआ और खेल-समापन के 50 सेकेंड पहले तक अमरीका 2-1 से बढ़त लेकर निश्चित

स्वर्ण की ओर गतिशील था, लेकिन अंतिम क्षणों में रोमियो रिवर्स के गोल ने अमरीका की सारी आशाओं पर पानी फेर दिया।

1936 : गार्मिश्च एवं पार्टेनकिचैन

जर्मनी के गार्मिश्च तथा पार्टेनकिचैन नामक शहर में शरद ओलंपिक का चौथा सफर तय हुआ। यह पहली बार ही हुआ, जबकि एक ओलंपिक को दो शहरों में आयोजित किया गया। इसकी लोकप्रियता पिछले तीन ओलंपिक के मुकाबले सर्वाधिक थी, लेकिन सर्वाधिक हैरानी की बात पिछले चैंपियन देश अमरीका का पदक-तालिका में सातवें स्थान पर खिसक जाना रहा। इस बार वह मात्र एक स्वर्ण और तीन कांस्य पदक ही जुटा सका, जबकि नार्वे एक बार फिर 14 पदक (6-5-3) जीतकर पहले स्थान पर रहा। मेजबान जर्मनी 3-3-0 तथा स्वीडन 2-2-3 पदक के साथ क्रमशः दूसरे एवं तीसरे स्थान पर रहे।

इस बार इस खेल को न केवल खिलाड़ियों, बल्कि दर्शकों और मौसम का भी भरपूर सहयोग मिला, जिससे आयोजन और भी मोहक बन गया। एडोल्फ हिटलर ने खेलों के शुभारंभ की घोषणा की, जबकि स्कीयर विल्हेल्म बोगनर ने सभी खिलाड़ियों की ओर से शपथ ग्रहण की। इस बार आस्ट्रेलिया, बुल्गारिया, स्पेन, ग्रीस, लिचेस्टीन तथा तुर्की पहली बार इन खेलों से जुड़े, लेकिन पदक-तालिका में कोई भी स्थान नहीं बना सका। 7 खेलों की 16 स्पर्धाओं के साथ 2 प्रदर्शन-खेल भी इस बार आयोजित हुए।

फिगर स्केटिंग के मुकाबलों में आस्ट्रिया का कार्ल शूफर 2602.0 अंकों के साथ नया चैंपियन बना, जबकि महिला वर्ग में लगातार तीसरी बार नार्वे की 24 वर्षीया सौंजा हेनी चैंपियन रही। इसी वर्ग में रजत पदक पानेवाली जर्मनी की सेसिल कालेज की भी काफी तारीफ हुई। युगल वर्ग में बर्लिन के 30 वर्षीय वास्तुविद अर्नेस्ट बायर ने अपने संरक्षण में पत्नी 15 वर्ष, 128 दिन की मैक्सी हर्बर के साथ 28 वर्ष बाद अपने देश के लिए स्वर्ण जीता। दो दिन बाद बायर ने व्यक्तिगत मुकाबलों में रजत भी जीता। ओलंपिक के बाद बायर एवं हर्बर विवाह-बंधन में बँध गए।

स्केटिंग में नार्वे के इवार वैलग्रुड का कोई सानी नहीं रहा। इस स्पर्धा में नार्वे को प्राप्त चार स्वर्ण में से तीन अकेले उसी ने (500 मी., 5000 मी. तथा 10,000 मी. में) जीते। इतना ही नहीं, 1500 मी. में रजत पदक जीतने में भी वह सफल रहा। इससे पहले दो ओलंपिकों में उसकी सफलता में एक-एक स्वर्ण, एक रजत एव कांस्य पदक ही दर्ज था। इवार अपने इस खेल-जीवन के दौरान 4 बार विश्व तथा 4 बार ही योरोपीय चैंपियन बना। 5 बार नार्वे चैंपियन भी रहा और 1500, 5000 तथा 10,000 मी. में

उसने कुल 5 बार विश्व-रिकार्ड भी बनाया। इसी स्पर्धा में फिनलैंडवासी बिरगर वैसीनियस हालाँकि कोई स्वर्ण नहीं जीत पाया, लेकिन 2 रजत एवं 1 कांस्य जीतकर दूसरा सफल स्केटर बना।

पहली बार शामिल अल्पाइन स्कीइंग में स्लेलम एवं डाउनहिल की व्यक्तिगत रेसों की बजाय दोनों को मिलाकर पदक बाँटा गया; जिसमें जर्मनी के 27 वर्षीय काष्ठकार फ्रैंक प्फनर ने स्वर्ण जीता। जर्मनी के ही गुस्ताव लेटंस्चनर ने रजत पदक जीता, जिसके बारे में न्यूयार्क टाइम्स में एल्बियन रौस ने 'एक आतंकवादी नाजी' शब्द का इस्तेमाल किया। इंसब्रुक (आस्ट्रिया) में जन्मा और पला-बढ़ा 'गुज्जी' बाद में जर्मनी आकर नाजी पार्टी में कैमरामैन का काम करने लगा। द्वितीय विश्वयुद्ध में मरनेवाले लोगों में एक नाम उसका भी था।

नार्डिक स्कीइंग में व्यक्तिगत क्रास कंट्री के साथ ही साथ पहली बार 4 × 10 कि.मी. रिले भी आयोजित हुई, जिसे फिनलैंड की चौकड़ी सुलो नूमैला, क्लोस कार्पेनिन, मैथी लाहोडे तथा कैले जल्कोनन ने जीता। व्यक्तिगत मुकाबलों में 10 मी. स्की जंप में नार्वे के बिरगर रूड ने अपनी सफलता दोहराई, मगर 12 वर्ष बाद वह अपने ही देश के पेटर हाग्स्टीड से हारकर मात्र रजत ही जुटा सका। 18,000 मी. क्रास कंट्री में दूसरा स्थान पानेवाली नार्वे टीम के सदस्य औब्जोर्न हेगर ने नार्डिक कंबाइंड में स्वर्ण जीतकर अपने ग़म को दूर किया। बॉबस्टेल में अमरीका पुनः 2 मैन तथा स्विट्जरलैंड 4 मैन बॉबस्लेड जीतने में सफल रहा।

बर्फ हाकी में इस बार 14 देशों में हिस्सा लिया, जिसमें पिछली चार बार कैनेडियन विजेता टीम, ग्रेट ब्रिटेन के हाथों 2-1 से अप्रत्याशित रूप से हार गई। ग्रेट ब्रिटेन की टीम में कनाडा में जन्मे कई खिलाड़ी थे, जो इस जीत के प्रमुख स्तंभ रहे।

1948 : सेंट मोरित्ज

पाँचवीं प्रतियोगिता (1940) की मेजबानी पहले जापानी शहर सेपोरो को सौंपी गई, लेकिन बाद में स्थान बदलकर सेंट मोरित्ज और फिर जर्मन शहर गारमिश्च एवं पार्टेनकिचैन कर दिया गया, लेकिन द्वितीय विश्वयुद्ध की भयानकता से यह आयोजन नहीं हो सका। यही हाल 1944 में इटली के कोर्टिना डि एंपेजो की प्रतियोगिता का भी हुआ। अलबत्ता 1948 में ओलंपिक खेल पुनः हुए और सेंट मोरित्ज को दूसरी बार मेज़बानी सौंपी गई। इसे पाँचवाँ आयोजन कहा गया। स्विट्ज़रलैंड के राष्ट्रपति एनरिको चेलियो ने प्रतियोगिता का उद्घाटन किया, जबकि इसके पहले बर्फ-हाकी के खिलाड़ी

रिचर्ड टोरेनी ने ओलंपिक शपथ ग्रहण की। नार्वे पदक-तालिका में नार्वे, स्वीडन के साथ (4-3-3) वाले पहले स्थान पर रहा, जबकि स्विट्जरलैंड (3-4-3) एवं अमरीका का क्रम इसके बाद (3-4-2) रहा।

पहली बार अल्पाईन मुकाबलों में डाउनहिल और स्लेलम की अलग-अलग स्पर्धाएँ हुईं और इस खेल ने ही सबसे ज्यादा दर्शकों को लुभाया। पुरुषों के वर्ग में फ्रांस का हेनरी ओरीलेर सबसे कामयाब स्कीयर रहा। उसने डाउनहिल तथा कंबाइंड मुकाबलों में स्वर्ण तथा स्लेलम में कांस्य पदक जीता। मसखरे, धृष्ट ओरीलेर ने स्पर्धा के पूर्व अपने प्रतिद्वंद्वियों को यह चुनौती दे रखी थी कि कोई उसके खिलाफ नहीं जीत सकेगा। महिलाओं के वर्ग में अमरीकी ग्रेचेन फ्रेसर तथा आस्ट्रिया की ट्रुडबीसर ने एक-एक स्वर्ण व रजत पदक जीता, जबकि आस्ट्रिया की ही इरिका मेहरिगर के हिस्से में स्लेलम व कंबाइंड अल्पाईन का कांस्य पदक ही आया।

फिगर स्केटिंग के व्यक्तिगत मुकाबलों में स्कैंडनेवियन खिलाड़ियों का वर्चस्व टूट गया। पुरुष वर्ग में अमरीका के 18 वर्ष, 202 दिन आयु का रिचर्ड 'डिक' बटन सर्वाधिक (1720.6) अंक लेकर नया चैंपियन बना। उसे 9 में से 8 जजों ने पूरे अंक दिए। 18 जुलाई, 1929 को एंगलवुड न्यूजर्सी में जन्मा बटन 14 वर्ष की आयु से ही सफलताओं की सीढ़ियाँ चढ़ने लगा था। 1943 में वह अमरीकी मिड अटलांटिक चैंपियनशिप जीतने में सफल रहा, जबकि इसके बाद 1946 में वह अमरीकी, 1948 में योरोपीय तथा विश्व चैंपियन बना। वैसे उसने कुल मिलाकर 7 बार (1946 से 52 तक) अमरीकी तथा 5 बार (1948 से 52 तक) विश्व चैंपियनशिप पर अपनी जीत की मुहर लगाई। 10 वर्ष के अपने कैरियर में उसे दो बार (1943 एवं 47 में) विश्व-चैंपियनशिप में हार का सामना भी करना पड़ा। उसे स्केटिंग की नई तकनीक ईजाद करनेवाले शख्स के रूप में भी ख्याति मिली। स्केटिंग में फ्री स्केटिंग तथा मल्टी रोटेशन जंप उसी की देन है। 1952 में वह पहली ट्रिपल जंप लगाने के बाद ओलंपिक का अपना दूसरा स्वर्ण जीतकर पेशेवर हो गया और टी. वी. पर स्केटिंग की कामेंट्री भी करने लगा। 44 वर्ष की उम्र में उसने अमरीकी स्लाव्का कोहोउट से विवाह किया। उसकी रुचि लॉन टेनिस, सैलिंग, संगीत, नाटक आदि में भी थी। बाद में उसने अपने संस्मरणों को 'डिक बटन ऑन स्केट्स' में सँजोया।

महिला वर्ग में कनाडा की 19 वर्षीया विश्व-चैंपियन बारबरा एन. स्कॉट 10 देशों के 25 स्केटरों में 163.077 अंक जुटाकर अव्वल रही। उसकी जानदार स्केटिंग के कायल होकर 9 में से 7 जजों ने उसे पूरे अंक दिए। पेयर्स (युगल) में बेल्जियम की जोड़ी मिचेलीन लेनाय तथा पियरे वागनियर पहली बार चैंपियन हुए।

स्पीड स्केटिंग के सभी चारों मुकाबलों में नार्वे, स्वीडन, फिनलैंड के स्केटरों का

दबाब रहा । इनमें 500 मी. की स्पर्धा में जबर्दस्त टक्कर देखने को मिली, जिसमें नार्वे के फिन हेल्गेसन ने 43.1 सेकेंड से स्वर्ण जीता, जबकि अमरीकी केनेथ बार्थलोंपू तथा रोबर्ट फिट्जज़ेराल्ड तथा नार्वे के थामस बायबर्ग ने 43.2 सेकेंड के साथ संयुक्त रूप से दूसरा स्थान पाया । नार्वे के ही 27 वर्षीय कार्टूनिस्ट स्वेरै फर्स्टड ने 1500 मी. और रेडर लियाकलेव ने 5000 मी. की स्केटिंग जीती । 1500 मी. की स्पर्धा के फाइनल दौर में स्वीडन के विश्व-चैंपियन सेफार्थ को जीतने की पूरी आशा थी, लेकिन अंतिम क्षणों में खेल की रोमांचकता को कैद करनेवाले एक फोटोग्राफर से टकराकर वह सातवें स्थान पर पहुँच गया । इस निराशा को उसने दो दिन बाद 10,000 मी. की दौड़ जीतकर दूर किया ।

नार्डिक स्कीइंग में 18 कि.मी. एवं 50 कि.मी. क्रास कंट्री में एक काँसे को छोड़ शेष सभी पदक स्वीडिश स्कीयरों ने जीत लिए । 18 कि.मी. में रजत जीतनेवाले नील्स ओस्टोनशन ने 50 कि.मी. में स्वर्ण जीतकर अपने आपको तसल्ली दी । इसके पहले उसने नील्स टेप, गुन्नार इरिकसन व मार्टिन लंस्ट्राय के साथ मिलकर 4 × 10 कि.मी. की रिले में स्वर्ण पाया था । नार्वे के स्कीयरों ने इसकी अपनी असफलता को स्की जंप के तीनों मुकावले जीतकर धोया ।

बर्फ-हाकी में कनाडा ने पुनः खोया ताज जीता । इस स्पर्धा में अमरीका द्वारा दो टीमें भेजे जाने से काफी बखेड़ा मचा । आखिर अंतर्राष्ट्रीय बर्फ-हाकी संघ के हस्तक्षेप से वह मामला शांत हुआ और इस संघ से संबंधित टीम को प्रवेश दिया गया । इस बार काफी कशमकश के बाद हाकी का स्वर्ण कनाडा को मिला । चेक को रजत तथा स्विट्जरलैंड को कांस्य पदक मिला । इटली की टीम अपने सभी आठों मैच हारी और उसके खिलाफ कुल 156 गोल किए गए ।

1952 : ओस्लो

अब तक संपन्न इन खेलों में नार्वे का प्रदर्शन काफी अच्छा रहा था, लेकिन इसकी मेजबानी उन्हें एक बार भी नहीं मिली थी । इसी बात को ध्यान में रखकर आई.ओ.सी. ने नार्वे के शहर ओस्लो को छठे आयोजन का भार सौंपा । मेजबानी का भरपूर लाभ उठाकर नार्वे ने जहाँ अपनी सर्वोच्चता बरकरार रखते हुए 7 स्वर्ण, 3 रजत एवं 6 कांस्य पदक पाए, वहीं अमरीका (4-6-1) तथा फिनलैंड (3-4-2) तथा जर्मनी (3-2-2) ने इसके बाद स्थान बनाया । इटली की राजकुमारी रिमहिल्ड ने इन खेलों का उद्घाटन किया, जबकि शपथ स्की जंपर टार्बजोर्न फेलंगर ने ली ।

नार्वे को सफलता दिलाने में 24 वर्षीय ट्रक चालक हजालमर एंडरसन का सर्वाधिक योगदान रहा। उसने लगातार तीन दिनों में क्रमशः 1500 मी., 5000 मी. तथा 10,000 मी. स्पीड स्केटिंग में सोने का तमगा जीता। इसमें उसने 5000 मी. में 8:10.6 सेकेंड तथा 10,000 मी. में 16:45.8 सेकेंड का समय जुटाकर ओलंपिक कीर्तिमान भी रचा। इस वर्ग का एक अन्य स्वर्ण अमरीकी केनेथ हेनरी (500 मी.) ने जीता।

फिगर स्केटिंग में रिचर्ड बटन ने अपना ताज बरकरार रखते हुए स्वर्ण जीता, जबकि महिलाओं के वर्ग में ग्रेट ब्रिटेन की जेनेट अल्ट्वेग ने 44 वर्षों में पहली बार महिला वर्ग में अपने देश के लिए स्वर्ण पदक पाया। इसके पहले सेंट मोरित्ज (1948) में उसने कांस्य पदक पाया था। अब तक की वही एकमात्र ब्रितानी महिला है जिसने फिगर स्केटिंग में स्वर्ण पदक जीता है। युगल मुकाबलों में जर्मनी की जोडीरिया फाल्क तथा पाल फाल्क 102.6 अंक पाकर पहले स्थान पर रही। इस मुकाबले की एक खासियत यह भी थी कि पहले आठ स्थानों पर आनेवाली 5 जोड़ियाँ पहले से ही जीवन-साथी बन चुकी थीं। बॉब स्लेड की दोनों स्पर्धाएँ जर्मनी की झोली में गईं। जर्मन टीम ने जीत हासिल करने के लिए बहुत ही चतुराई से काम लिया और स्लेज गाड़ी तेजी से चल सके, इसके लिए उसने भारी-भरकम प्रतियोगियों का चयन किया। यह बात जब अंतर्राष्ट्रीय बॉब स्लेड एवं टोबोगनन संघ की समझ में आई तो उन्होंने भावी प्रतियोगिताओं के लिए निश्चित भार वर्ग तय कर दिया।

ओलंपिक में अल्पाईन स्कीइंग को शामिल किए जाने का जबरदस्त विरोध करनेवाले नार्वे की खुशी उस समय दुगनी हो गई, जब उनके खिलाड़ी स्टीन एरिकसन ने पहली बार आयोजित ज्वाइंट स्लेलम की स्पर्धा जीत ली। फिर चार दिन बाद वह स्लेलम में रजत जीतने में भी सफल रहा। इस मुकाबले में उसी के हमवतन साथी गुटार्म बर्गे ने कांस्य जीता। अल्पाईन मुकाबलों में नार्वे को अब तक यही तीन पदक मिले हैं। महिला वर्ग में 19 वर्षीया अमरीकी एंड्रिया लारेंस मीड ने एक सप्ताह के भीतर स्लेलम तथा ज्वाइंट स्लेलम जीत ली। उस समय वह तीन बच्चों की माँ थी। नार्डिक स्कीइंग में फिनलैंड के स्कीयरों का प्रभुत्व रहा।

बर्फ हाकी में 9 देशों के बीच कनाडा ने एक बार फिर स्वर्ण पदक पाया, लेकिन यह उसकी अंतिम जीत साबित हुई। इसके बाद रूसी एवं अमरीकी टीमों के आगे कनाडा टिक नहीं सका।

1956 : कोर्टिना डि एंपोज

इटली के शहर कोर्टिना डि एंपोज को दूसरी बार मेजबानी मिली। इसके पहले 1944 के शीतकालीन खेल यहीं आयोजित होने तय हुए थे, परंतु द्वितीय विश्वयुद्ध के कारण

ये खेल संपन्न नहीं हो सके। अलबत्ता इस बार बेरोक-टोक अपनी पूरी मस्ती में यहाँ खेल हुए। यह एक यादगार आयोजन था, जिसमें रिकार्ड देशों के रिकार्ड खिलाड़ियों ने हिस्सा लिया। लेकिन इस बार मौसम ने धोखा दिया, जिसकी वजह से बर्फ आल्पस पर्वत से लानी पड़ी।

इटली के राष्ट्रपति जिओवानी ग्रोंची ने 26 जनवरी, 1956 को इन खेलों का उद्घाटन किया, जबकि इसके पहले ओलंपिक इतिहास में पहली बार एक महिला ने ओलंपिक भावना की शपथ ली। यह महिला स्कीयर गुलीना चेनल मिनुज्जो थी। रूस ने पहली बार इस ओलंपिक में प्रवेश करते ही सारे समीकरण बदल डाले और 6 स्वर्ण, 3 रजत, 4 कांस्य जीतकर नार्वे, अमरीका, स्विट्जरलैंड तथा फिनलैंड के एकाधिकार को तोड़ दिया। पिछले 6 ओलंपिक में 31 स्वर्ण पदक जीतनेवाला नार्वे पिछड़कर सातवें स्थान पर पहुँच गया। उसे इस बार केवल 2-1-1 पदक ही नसीब हुए। आस्ट्रिया 4-3-4 तथा फिनलैंड 3-3-1 पदक लेकर क्रमशः दूसरे एवं तीसरे स्थान पर रहे।

इस बार प्रतियोगिता का हीरो आस्ट्रिया का एंटन सेलर रहा, जिसने एल्पाईन स्कीइंग के तीनों ही स्वर्ण पदकों पर कब्जा जमाया। अपनी जीत के बाद पदक लेकर वह सीधे अपने पिता एवं माँ से मिला और पिता को तीनों पदक दिखाते हुए बोला—'एक पदक आपके लिए, एक पदक माँ के लिए तथा एक पदक मेरे लिए है।' सेलर बाद में एक्टर एवं गायक बन गया और फिर अपने होटल तथा कपड़ों के धंधे में रम गया। महिला वर्ग में स्विट्जरलैंड की मेडेलीन बथौड ने अपने 25वें जन्मदिन के ही दिन डाउनहिल स्पर्धा जीती और 1952 की अपनी हार के ग़म को धो डाला। पुरुष वर्ग के स्लेलम में जापानी चिहारु इग्या ने रजत पाकर जापान को पहला पदक दिलाया।

फिगर स्केटिंग के मुकाबले में अमरीकी स्केटरों का बोलबाला रहा। पुरुष वर्ग में हैयस एलन जैनकिंस ने, जो पिछली बार चौथे स्थान पर रहा था, इस बार स्वर्ण जीता। महिला वर्ग में न्यूटन सेंटर मेसाचुसेट्स के सर्जन की बेटी टेनली अल्ब्राइट ने अपनी साथी करौल हेईस से 1.65 अंक लेकर स्वर्ण जीता। 11 वर्ष की आयु में टेनली लकवे से पीड़ित हो गई थी और इस ओलंपिक के 2 सप्ताह पूर्व भी एक अभ्यास के दौरान वह घायल हो गई थी, मगर डाक्टर पिता की देखरेख में वह जल्दी ही ठीक हो गई और यहाँ अपने प्रदर्शन से दर्शकों पर छा गई। उसके जानदार प्रदर्शन से मंत्रमुग्ध होकर 11 में से 10 जजों ने उसे पहला स्थान दिया। ओलंपिक के बाद वह मेडिकल कालेज में प्रवेश लेकर अपने पिता की तरह सर्जन बनकर निकली।

स्पीड स्केटिंग में पहली बार भाग लेते हुए सोवियत स्केटरों ने 4 में से 3 स्वर्ण जीत लिए, जिसमें ग्रिश्चिन ने 500 मी. तथा 1500 मी. में विश्व-कीर्तिमान स्थापित करते हुए शानदार डबल बनाया। अगले ओलंपिक में उसने 500 मी. में अपने विश्व-रिकार्ड

की बराबरी करते हुए पुनः स्वर्ण पदक जीता। इसके पहले वह 1952 के ग्रीष्मकालीन खेलों में सोवियत साईकिलिंग दल के साथ भी आया था। इस तरह उसे दोनों ओलंपिक में शिरकत करने का अनूठा गौरव मिला। अपने 20 वर्षीय स्केटिंग जीवन में उसने कई बार विश्व-कीर्तिमान तथा अन्य कीर्तिमान स्थापित किए।

नार्डिक स्कीइंग में स्वीडन की 26 वर्षीय सिक्सटेन जेनबर्ग एक स्वर्ण, एक रजत एवं एक कांस्य पदक जीतकर सबसे सफल रही, लेकिन इससे कहीं बेहतर प्रदर्शन उसने 1964 इंसब्रुक में किया, जहाँ उसने दो स्वर्ण तथा एक कांस्य पदक पाया। तीन ओलंपिक में वह 4 स्वर्ण, 3 रजत, 2 कांस्य पदक जीतने में सफल रहा, जो किसी भी स्कीयर द्वारा जीते गए पदकों में सर्वाधिक है। फिनलैंड के विक्को हाकुलीनेन (एक स्वर्ण, दो रजत) ने भी जानदार प्रदर्शन किया। 1952 में 50 कि.मी. में स्वर्ण तथा 1964 में उसने तीन पदक (स्वर्ण, रजत एवं कांस्य) जीते। महिला वर्ग में 3 × 5 कि.मी. रिले की नई स्पर्धा जुड़ी, जिसमें फिनलैंड की महिलाओं ने बाजी मारी। इसी स्पर्धा में रजत पानेवाली रूसी ल्यूबोब कांसीरिवा ने 10 कि.मी. में स्वर्ण जीता। बॉबस्लेड में इस बार निश्चित भार वर्ग कर दिया गया। 2 मैन में इटली ने पहले दोनों स्थानों पर कब्जा किया, जबकि 4 मैन में उसे रजत पदक से ही संतुष्ट होना पड़ा। बर्फ हाकी में सोवियत टीम ने पहली बार हिस्सा लेकर स्वर्ण जीत लिया।

कुल मिलाकर कोर्टिना का यह खेल कुंभ काफी सफल रहा। पहली बार इन खेलों का टेलीविजन प्रसारण हुआ, जिससे इस खेल की चर्चा घर-घर में पहुँच गई। समापन भी काफी आकर्षक था।

1960 : स्क्वावेली

इस बार का आयोजन अमरीका में होने के कारण लंबी दूरी ने एक बार फिर खिलाड़ियों का उत्साह तोड़ा और अन्य आयोजनों की तुलना में कम खिलाड़ियों ने हिस्सा लिया। लेकिन रूसी दल अपनी पूरी तैयारी एवं विजेताओं की फौज लेकर यहाँ पहुँचा और 7 स्वर्ण, 5 रजत तथा 9 कांस्य पदक जीतकर इस बार भी चोटी पर रहा। मेजबान अमरीका (3-4-3), नार्वे (3-3-0) तथा स्वीडन (3-2-2) का स्थान उसके बाद रहा। प्रतियोगिता में शामिल होने आए खिलाड़ियों की ओर से मेजबान फिगर स्केटर केरोल हाईस ने शपथ उठाई, जबकि उपराष्ट्रपति रिचर्ड निक्सन ने वाल्ट डिस्नी के निर्देशन में खेलों के उद्घाटन की घोषणा की।

इस बार महिला वर्ग में जहाँ स्पीड स्केटिंग की चार प्रतियोगिताओं सहित बायथलन

(20 कि.मी.) का इजाफा हुआ, वहीं बॉब स्लेड की प्रतियोगिता इस बार आयोजित नहीं की गई। दक्षिण अफ्रीकी टीम ने पहली और अंतिम बार इसी आयोजन में शिरकत की, जबकि पूर्वी एवं पश्चिमी जर्मनी की संयुक्त टीम आई। महिलाओं की शामिल नई प्रतियोगिता स्पीड स्केटिंग में जोर रूसी महिलाओं का रहा; जिसने 4 में से 3 स्पर्धाएँ जीतकर अपना वर्चस्व दिखाया। इसमें लिडिया सकोब्लीकोवा ने 1500 मी. (2:25.2 विश्वरिकार्ड) तथा 3000 मी. का स्वर्ण जुटाया। वह 1000 मी. में चौथे स्थान पर आई, जबकि इस स्पर्धा का स्वर्ण उसकी हमवतन कलारा गुसेवा (1:34.1) ने जीता। लेकिन इससे जानदार प्रदर्शन उसने इंसब्रुक ओलंपिक में दिखाया, जहाँ चारों स्वर्ण उसने अकेले ही जीत लिए। यह गौरव पानेवाली वह पहली महिला रही।

पुरुष वर्ग में भी 4 में से 3 (संयुक्त नार्वे के साथ) स्वर्ण उनके खिलाड़ियों ने जुटाए। 500 मी. में येव्गेनी ग्रीशिन ने विश्व-रिकार्ड की बराबरी (40.2 सेकेंड) करते हुए स्वर्ण पाया। इसके पहले कोर्टिना में भी उसने इसी समय में स्वर्ण जीता था, जबकि अगले दो ओलंपिक में उसने इस स्पर्धा में क्रमशः कांस्य एवं चौथा स्थान पाया। पिछले ओलंपिक की भाँति उसने पुनः 1500 मी. में नार्वे के रोल्ड एश के साथ संयुक्त रूप से पहला स्थान पाया। इसके अलावा वह 1952 में साईकिलिस्ट के रूप में भी रूसी दल का प्रतिनिधित्व कर चुका था। 5000 में क्रमशः विक्टर कोशी चकिन (रूस) तथा कुंट जोहानेर्स (नार्वे) ने पहला तथा दूसरा स्थान पाया, जबकि 10,000 मी. में यही परिणाम उलटा रहा।

फिगर स्केटिंग में अमरीकी डेविड जेनकिंस ने अपने भाई हेयस की तरह पुरुष वर्ग का स्वर्ण जीता। महिला वर्ग में कैरोल हाईस विजयी रही। इस ओलंपिक के 2 माह बाद ये दोनों विजेता आपस में एक हो गए। पेयर्स में कनाडा की बारबरा गरनर एवं राबर्ट पौल की जोड़ी विजयी रही। एल्पाईन स्कीइंग की डाउनहिल स्पर्धा में फ्रांस की जान बर्नेट विजयी रहा। यह प्रतियोगिता भारी हिमपात की वजह से तीन दिनों तक स्थगित रही। स्लेलम आस्ट्रिया के अर्नेस्ट हिंटरसीर (2:08.8) ने जीता, जबकि ज्वाइंट स्लेलम स्विट्जरलैंड के रोजर स्ट्यूब के हिस्से आया। महिला वर्ग के खिताब भी तीन देशों में बँटे। नार्डिक कंबाइंड जार्ज थोमा (जर्मनी) ने 457.952 अंक से जीता। पहली बार शामिल 20 कि.मी. बायथलन स्वीडिश क्लास लेस्टेंडर ने 1 घंटे 33 मिनट, 21.6 सेकेंड से जीता।

क्रास कंट्री में फिनलैंड ने 50 कि.मी. तथा रिले (4 × 100 कि.मी.) में स्वर्ण के साथ-साथ 30 कि.मी. में रजत तथा 15 कि.मी. में कांस्य पाया। स्वीडन इस स्पर्धा में 1-2-1 पदक जीता, जबकि नार्वे ने 1-2-0 पदक पाए। 10 कि.मी. महिला वर्ग के तीनों खिताब रूसी महिलाओं ने जीते, जबकि रिले में स्वीडिश महिलाएँ अव्वल रहीं। बर्फ हाकी का ताज पिछले दो बार के उपविजेता अमरीका ने कनाडा को हराकर जीता।

1964 : इंसब्रुक

आस्ट्रियाई शहर इंसब्रुक को नौवें शीताकालीन ओलंपिक का भार सौंपा गया। इसके पहले कनाडा के शहर कैलगरी के नाम का प्रस्ताव भी आया था जोकि बाद में बदल गया। इस आयोजन ने सफलताओं के नए आयामों को छुआ। पहली बार इस आयोजन में खिलाड़ियों की संख्या हजार के पार पहुँची। इस बार उत्तरी तथा दक्षिणी कोरिया के अलग-अलग भाग लिया, जबकि भारत ने इन खेलों में पहली बार शिरकत की। बाब स्लेडर पाल अस्टे ने ओलंपिक शपथ उठाई, जबकि राष्ट्रपति एडोल्फ शार्फ ने खेलों का उद्घाटन किया।

इस बार रूस एक बड़ी शक्ति के रूप में उभरा और उसने 36 में से 11 स्वर्ण जीत लिए। उसके बाद पदक-तालिका में स्थान बनानेवाला देश आस्ट्रिया मात्र 4 स्वर्ण ही जीत पाया। नार्वे, फिनलैंड, फ्रांस, स्वीडन तथा जर्मनी के हिस्से 3-3 स्वर्ण आए। सर्वाधिक दुर्गति अमरीका की हुई, जो 1-2-4 पदक ही जीत पाया और पदक-तालिका में आठवें स्थान पर रहा।

इस बार सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन रूसी स्कूल शिक्षिका लीडिया स्कोब्लीकोवा का रहा। उसने स्पीड स्केटिंग के चारों स्वर्ण जीतकर अपने स्वर्ण पदकों की संख्या छः कर ली। इस तरह शीतकालीन खेलों में 6 पदक पानेवाली वह पहली खिलाड़ी बनी। इसी तरह एक अन्य रूसी स्कूल टीचर 24 वर्षीया क्लाडिया बायर्सकरब ने महिलाओं की मार्डिक स्कीइंग की 5 कि.मी. (17:50.5), 10 कि.मी. (40:24.3) तथा रिले (59:20.2) में तीन स्वर्ण पाए। पुरुष वर्ग की इसी स्पर्धा में स्वीडिश सिक्सटेन जेनबर्ग तथा फिनलैंड के इरो मंत्यारांता ने 2-2 स्वर्ण जीते, लेकिन अगले ओलंपिक में दोनों अपना खिताब नहीं बचा सके। पहली बार आयोजित 70 मी. स्की जंप में विल्को कान्कोनेने (फिनलैंड) ने 229.9 अंक जुटाकर स्वर्ण हासिल किया। इस बार प्रतियोगियों को 'बेस्ट टू आफ थ्री जंप' की छूट मिली थी। 80 मी. हिल में टोराल्फ इंगेन (नार्वे, 230.7 अंक) अव्वल रहा।

बॉब स्लेड की प्रतियोगिताएँ यहाँ पुनः आयोजित हुई, जिसमें दो सदस्यीय में ग्रेट ब्रिटेन तथा चार सदस्यीय में कनाडा ने स्वर्ण जीता। टोबोगन सिंगल सीटर (पुरुष एवं महिला) में पश्चिम जर्मनी के स्लेडर सफल रहे। एल्पाईन स्कीइंग की महिला वर्ग में स्लेलम का खिताब जीतनेवाली 19 वर्षीया फ्रांसिसी क्रिस्टीन ने अगले ओलंपिक में भी अपने खिताब की रक्षा की, जबकि उसकी छोटी बहन मेरियल गोयस्टचेल ने ज्वाइंट स्लेलम में स्वर्ण पदक जीता। हालैंड की स्जोकजे डिज़्कस्ट्रा ने (फिगर स्केटिंग) अपने

देश के लिए पहला स्वर्ण पदक जीता। बर्फ हाकी में पिछली बार की कांस्य पदक जीतनेवाली रूसी टीम ने इस बार स्वर्ण पाया तथा वह अगले 3 आयोजनों में लगातार स्वर्ण जीतती रही।

1968 : ग्रेनोबल

1924 की सफल मेजबानी के आधार पर 1968 के ओलंपिक खेल पुनः फ्रांस को सौंपे गए, लेकिन इस बार आयोजन-स्थल ग्रेनोबल नामक शहर को रखा गया, जहाँ 12,000 दर्शकों की क्षमतावाला एक नया बर्फ हाकी-स्टेडियम बनाया गया। इसी ओलंपिक में पहली बार महिलाओं का 'सेक्स परीक्षण' किया गया। इस बार नार्वे को तीन ओलंपिक के बाद पदक-तालिका में 6-6-2 के साथ पहला, सोवियत संघ को 5-5-3 से दूसरा तथा फ्रांस को 4-3-2 से तीसरा स्थान मिला। मेजबान देश के स्कीयर लियो लेसरोक्स ने ओलंपिक शपथ उठाई, जबकि राष्ट्रपति चार्ल्स डि गोली ने उद्घाटन की रस्म अदा की।

इस बार फ्रांसिसी जीन क्लाडे किली ने चमत्कारिक प्रदर्शन किया। 24 वर्षीय किली ने एल्पाईन स्कीइंग के तीनों स्वर्ण झटककर एंटोम सेलर (1956) की सफलता की बराबरी की। फिगर स्केटिंग के युगल मुकाबले में सोवियत पति-पत्नी की जोड़ी ओलेग प्रोटोपोपोव व लुडमिला बेलासोल ने लगातार दूसरी बार स्वर्ण जीता। इटली के युवोनियो मोंटी ने बाबस्लेड की दोनों स्पर्धाओं में अपने देश को स्वर्ण दिलाया, जबकि स्वीडिश टोनी गुस्टाफसन ने महिलाओं की नार्डिक स्कीइंग में 5 कि.मी. तथा 10 कि.मी. में यही करिश्मा किया। स्की जंप में चैक जीरी रास्का ने जहाँ 70 मी. में 244.2 अंक लेकर स्वर्ण जीता, वहीं उसने 90 मी. में रूसी ब्लादिमिर वैसोसुसोव के बाद दूसरा स्थान पाया। बर्फ हाकी में रूस विजेता रहा, जबकि पिछले ओलपिक में तीसरे स्थान पर आनेवाली चेकोस्लोवाकिया की टीम ने रजत पदक पाया।

1972 : सैपारो

उगते सूरज के देश जापान में शीतकालीन ओलंपिक का ग्यारहवाँ सफर तय हुआ। सैपारो शहर में संपन्न इस आयोजन में कई विवादपूर्ण स्थितियाँ आईं। बावजूद इसके यह सफलतम आयोजनों में एक माना जाता है। इस बार भी सोवियत संघ 8-5-3 पदकों

के साथ चोटी पर रहा, जबकि पूर्वी जर्मनी ने 4-3-7 पदक जीतकर दूसरा स्थान पाया। स्विट्ज़रलैंड तथा हालैंड क्रमश: तीसरे एवं चौथे स्थान पर रहे। इस खेल में पहली बार एशियाई देश (जापान) को स्वर्ण जीतने का सौभाग्य मिला। स्पीड स्केटर केईची सुजुकी ने शपथ उठाई, जबकि हीरोहितो ने उद्घाटन की रस्म अदा की।

इस बार जबर्दस्त सफलता जुटानेवाला खिलाड़ी हालैंड का 6 फुट 3 इंच ऊँचा स्पीड स्केटर अद्रानुस 'अर्ड' स्नेक रहा, जिसने 1500, 5000 तथा 10,000 मी. में स्वर्ण जीता। इसमें उससे 1500 मी. (2:02.96) तथा 10,000 मी. (15:01.35) में ओलंपिक रिकार्ड भी बनाया। दो सप्ताह बाद उसने नार्वे में संपन्न विश्व-चैंपियनशिप में चारों प्रतियोगिताएँ जीत लीं। ऐसा करनेवाला इसके 60 वर्षों के इतिहास का वह पहला खिलाड़ी बना। 500 मी. वर्ग का स्वर्ण प. जर्मनी के अर्नाल्ड केलर ने लगातार दूसरी बार जीता। महिला वर्ग में अमरीका को 2 स्वर्ण (500 मी. तथा 3000 मी.) मिले।

नार्डिक स्कीइंग में रूसी महिला गेलीना कुलाकोवा ने 5 कि.मी. (17:00.50), 10 कि. मी. (34 : 17.82) तथा 3 × 5 कि. मी. रिले में अपने देश के लिए तीन स्वर्ण जुटाए। इस तरह 29 वर्षीया शारीरिक शिक्षा की अध्यापिका कुलाकोवा 1964 में रूसी क्लाडिया द्वारा इसी वर्ग में जीते पदकों की बराबरी करने में सफल रही। पुरुष वर्ग में भी रूस को दो स्वर्ण वेदेनहिन के जरिए मिले। मेजबान जापान ने भी जानदार प्रदर्शन करते हुए स्माहिल (70 मी.) के तीनों पदकों पर कब्जा जमाया। इसके पहले तक जापान के हिस्से में इन ओलपिक में मात्र एक पदक आया था। उसके लिए 28 वर्षीय यूकियो कासाया ने 244.2 अंक जोड़कर स्वर्ण जुटाया। इस ओलंपिक के पहले यूकियो लगातार तीन योरोपीय चैंपियनशिप जीतने में भी सफल रहा था। 90 मी. हिल में यूकियो सातवें स्थान पर रहा। स्वर्ण पोलैंड के डब्ल्यू फोर्टूना के हिस्से में आया।

स्विट्ज़रलैंड की 17 वर्षीया मैरी थेरेस नाडिग ने एल्पाईन की डाउनहिल तथा ज्वाइंट स्लेलम में स्वर्ण पाया। पुरुष वर्ग के डाउनहिल का भी स्वर्ण स्विट्ज़रलैंड को ही मिला। बर्फ हाकी में सोवियत संघ ने चेकोस्लोवाकिया को फाइनल में 5-2 से हराकर स्वर्ण जीता, लेकिन रजत अमरीका को दिया गया, क्योंकि उन्होंने चेकोस्लोवाकिया को 5-1 से हराया था। ओलंपिक बर्फ हाकी के इतिहास में कनाडा पहली बार नहीं उतरा।

1976 : इंसब्रुक

ओलंपिक का यह 12 वाँ सफर पहले अमरीकी शहर डेनवर (कोलोरेडो) में होना तय था, लेकिन उसकी असमर्थता के कारण आस्ट्रियाई शहर इंसब्रुक को फरवरी, 1973 में दूसरी बार मेजबानी सौंपी गई। रूसी खिलाड़ियों का वर्चस्व यहाँ भी कायम रहा तथा इस बार

उनके खिलाड़ियों ने 13 स्वर्ण पदकों सहित कुल 27 पदक जीते। पूर्वी जर्मनी 7-5-7 तथा अमरीका 3-3-4 पदक के साथ क्रमशः दूसरे एवं तीसरे स्थान पर रहे। बॉब स्लेडर वार्नर डेली बार्थ ने खिलाड़ियों की ओर से शपथ ग्रहण की। तत्पश्चात राष्ट्रपति रूडोल्फ किर्चस्लेगर ने खेलों के उद्घाटन की घोषणा की।

सोवियत संघ की फिगर स्केटर इंरीना रोडनीना ने इस बार एलेक्जेंडर जेंटसेव के साथ जोड़ी बनाकर दूसरी बार स्वर्ण पाया, जबकि इसी मुकाबले में पूर्वी जर्मनी की जोड़ी मैनुअलाग्रास तथा उवे कागेलमैन को लगातार दूसरी बार कांस्य पदक से ही संतोष करना पड़ा। पहली बार शामिल आईस डांस रूसी पति-पत्नी लुदमिला पाखोमोवा तथा एलेक्जेंडर गोर्सगोव की जोड़ी ने जीता। पाँच बार विश्व चैंपियनशिप जीतनेवाली यह जोड़ी 1979 में गार्सकोव के आपरेशन की वजह से भाग नहीं ले सकी थी। पिछली बार नार्डिग स्कीइंग में तीन स्वर्ण जीतकर तहलका मचानेवाली गेलीना कुलाकोवा इस बार मात्र एक स्वर्ण (रिले में) तथा एक रजत ही जीत सकी। लेकिन रूस की ही तात्याना एवेरीना महिलाओं की स्पीड स्केटिंग में 2 स्वर्ण (1000 तथा 3000 मी.) तथा 2 कांस्य जीतने में सफल रही। पुरुषों के वर्ग में नार्वे के स्टेन स्टेनसेन ने 5000 मी. (1 : 24.48 सेकेंड) में स्वर्ण तथा 10.000 मी. में रजत पदक जुटाया।

एल्पाईन स्कीइंग के डाउनहिल में पिछली बार के विजेता स्विट्जरलैंड के बर्नाल्ड रोसी को रजत पदक से संतोष करना पड़ा, जबकि स्लेलम में इटली का गुस्तोव थोइनी लगातार दूसरी बार स्वर्ण पदक से चूका। महिला वर्ग में पश्चिमी जर्मनी की रोसी मिट्टेर मैडर ने डाउनहिल में 1 : 46.16 सेकेंड में स्वर्ण तथा ज्वाइंट स्लेलम में रजत पदक प्राप्त किया। स्की जंपिग की दोनों प्रतियोगिताओं में आस्ट्रिया तथा पूर्वी जर्मनी का दबदबा रहा तथा दोनों ने आपस में पदक बाँट लिए, जबकि बॉब स्लेड का सारा स्वर्ण पूर्वी जर्मनी ने बटोर लिया।

1980 : लेक प्लेसिड

अमरीकी शहर लेक प्लेसिड सेंट मोरित्ज तथा इंसब्रुक की तरह दूसरी बार इन खेलों का आयोजन-स्थल बना। लेकिन इस बार लंबी दूरी का कोई असर प्रतियोगियों पर नहीं हुआ और पिछले ओलंपिक जितने ही देश (37) तथा लगभग उतने ही खिलाड़ियों ने इस बार अपने प्रदर्शन से लाखों लोगों के दिलों में जगह बनाई। रूसी दल इस बार भी अपनी सर्वोच्चता बरकरार रखते हुए 10-6-6 पदकों के साथ चोटी पर रहा। पूर्वी जर्मनी (9-7-7) तथा अमरीका (6-4-2 पदक के साथ) ने क्रमशः दूसरा और तीसरा स्थान बनाया। स्पीड स्केटर एरिक हेटन ने ओलंपिक शपथ उठाई और उपराष्ट्रपति वाल्टर

मंडाले ने इन खेलों का विधिवत उद्घाटन किया।

21 वर्षीय अमरीकी स्पीड स्केटर एरिक हेडन ने अपने जबरदस्त प्रदर्शन से पूर्व के सभी कीर्तिमानों को बिखेरते हुए पाँचों स्वर्ण हथिया लिए। उसने पहली बार स्पर्धाओं का ओलंपिक कीर्तिमान तथा अंतिम 10,000 मी. का विश्व-कीर्तिमान अपने नाम लिखा। अमेरीका को छठवाँ स्वर्ण बर्फ हाकी में मिला; जहाँ उसने सोवियत संघ को हराया।

सोवियत खिलाड़ियों ने बायथलन में 4 स्वर्ण तथा 3 रजत पदक हासिल किए, जिसमें 2 स्वर्ण तथा 1 रजत अकेले अनातोली एलीबियेव ने जीते। 4 × 7.5 कि. मी. रिले में विजयी सोवियत दल के एक सदस्य 33 वर्षीय एलेक्जेंडर दिखोनोव ने लगातार चौथी बार भाग लिया और हर बार स्वर्ण जीता। इसके बाद उसने संन्यास ले लिया। निकोलाई जिम्यातोव ने नार्डिक स्कीइंग के 30 कि. मी.; 50 कि. मी. तथा रिले में केवल नौ दिनों में तीन स्वर्ण जीते। नार्डिक कंबाइंड में 36 वर्षीया गेलीवा कुलाकोवा ने 4 × 5 कि. मी. रिले में रजत पदक जीतकर शीत ओलंपिक में आठवाँ पदक (4-2-2) हासिल किया। आईस डांस तथा फिगर स्केटिंग में भी रूसी जोड़ी ही स्वर्ण विजेता हुई। फिगर स्केटिंग में ईरीना अपने पति जैटसेव के साथ जोड़ी बनाकर दूसरी बार (कुल तीसरी बार) विजेता बनी।

बॉब स्लेड चार सदस्यों का स्वर्ण पुनः पूर्वी जर्मनी के हिस्से में आया; जबकि एक अज्ञात खिलाड़ी 18 वर्षीया स्केटर कारिन इंके ने स्पीड स्केटिंग (500 मी.) में ओलंपिक रिकार्ड (41.78 सेकेंड) तोड़ते हुए पूर्वी जर्मनी के लिए स्वर्ण जुटाया। पूर्वी जर्मनी के ही अलरिच वेहलिंग ने नार्डिक कंबाइंड में लगातार तीसरी बार स्वर्ण पाया; जबकि महिला वर्ग में बारबरा पेटजोल्ड ने 10 कि. मी. तथा रिले में पूर्वी जर्मनी के खाते में दो स्वर्ण पदक और जोड़े।

1984 : सारजेवो

उत्तरी योरोपीय देश यूगोस्लाविया की उद्योग नगरी सारजेवो में शीतकालीन ओलंपिक का 14 वाँ सफर तय हुआ। इस बार रिकार्ड 49 देशों ने प्रतियोगिता में हिस्सा लेकर इन खेलों की लोकप्रियता सिद्ध की। वह तो इस बार मौसम ने उतना साथ नहीं दिया, वरना स्थिति कुछ और ही होती। फिर भी कई कीर्तिमान स्थापित हुए। इस बार श्रेष्ठता की दौड़ में सोवियत संघ पिछड़कर दूसरे स्थान (6-10-9) पर खिसक गया, जबकि पूर्वी जर्मनी 9-9-6 पदक लेकर चोटी पर रहा। अमरीका 4-4-0 पदकों के साथ तीसरे स्थान पर आया। राष्ट्रपति माइका स्पिलजैक ने इन खेलों का उद्घाटन किया, जबकि इसके

पहले स्कीपर बोजन क्रियाज़ ने ओलंपिक शपथ ग्रहण की।

इस प्रतियोगिता में 'ब्लक डोपिंग' किए जाने का काफी विरोध हुआ, लेकिन कार्यवाही किसी पर भी नहीं की जा सकी। इसके अलावा कई विश्वचैंपियन, मसलन मैटी विकेनन (स्की जंपर 70 मी., फिनलैंड), फिलीप महरे (ज्वाइंट स्लेलम, अमरीका), तथा रूस की आईस डांस जोड़ी नतालिया वेस्तमायनोवा तथा अंद्रेई बुकिन की हार भी खासी चर्चा का विषय रही।

पूर्वी जर्मनी की इस जानदार सफलता में इसकी महिला स्केटरों की प्रमुख भूमिका रही, जिन्होंने स्पीड स्केटिंग के चार मुकाबलों के पहले दोनों स्थान जीत लिए। इसमें अकेली केरिन इंके ने 2 स्वर्ण तथा 2 रजत जीते, लेकिन इससे कहीं जानदार प्रदर्शन फिनलैंड की 28 वर्षीया मार्जा लीसा हेमलीनन का रहा, जिसने नार्डिक स्कीइंग की 5 कि. मी., 10 कि. मी. तथा 20 कि. मी. में अपने देश के लिए स्वर्ण तथा रिले में कांस्य पदक जुटाया। यहाँ उल्लेखनीय है कि अपनी असफलताओं से तंग आकर वह दो वर्ष पहले स्कीइंग से संन्यास का फैसला कर चुकी थी। ग्रेट ब्रिटेन की जोड़ी (जायने टोर्विल तथा क्रिस्टोफर डीन) ने आकर्षक प्रदर्शन कर आईस डांस का स्वर्ण हथियाया। उनकी कलात्मक 'बोलेरो' की काफी सराहना हुई। अमरीकी विल जानसन ने डाउनहिल में अमरीका को पहला स्वर्ण दिलाया, जबकि उसका ही साथी जुड़वाँ भाई फिल तथा स्टेव महारे ने स्लेलम में क्रमशः स्वर्ण तथा रजत जीता। स्विट्जरलैंड की 17 वर्ष, 314 दिन की एल्पाईन स्केटर माइकेला फिगनी डाउनहिल में स्वर्ण जीतकर इस स्पर्धा की युवा चैंपियन बनी। सोवियत संघ ने पुनः बर्फ हाकी का ताज जीतकर इस स्पर्धा में कनाडा द्वारा सर्वाधिक 6 स्वर्ण के कीर्तिमान को छुआ।

1988 : केलगरी

बाडेन 1981 में संपन्न अपनी बैठक में आई. ओ. सी. ने कनाडा के शहर केलगरी को 15वें आयोजन की मेजबानी सौंपी। तभी से वे इस आयोजन की तैयारी में जुट गए और फिर जब 13 फरवरी को कनाडा के गवर्नर जनरल ने इन खेलों का उद्घाटन किया तो काफी ठंड (42 डिग्री सेंटीग्रेड) थी। 12 वर्षीय फिगर स्केटर रोबिन पैरी ने खेल-भावना की शपथ उठाई। पदक-तालिका में सोवियत संघ ने 11-9-9 पदक लेकर उच्च स्थान बनाया, जबकि पूर्वी जर्मनी 9-10-6 तथा स्विट्जरलैंड 5-5-5 पदक के साथ क्रमशः दूसरे एवं तीसरे स्थान पर रहे।

इस बार फिनलैंड के स्की जंपर 24 वर्षीय मेटी न्यूकेन ने 70,90 तथा टीम वर्ग का स्वर्ण जीता, जबकि महिला वर्ग में भी हालैंड की 22 वर्षीया यूवोनबेन जैनिथ ने स्पीड

स्केटिंग के 1500, 3000 तथा 5000 मी. स्पर्धा में सर्वाधिक तीन स्वर्ण जुटाए। यह सम्मान पानेवाली वह ओलंपिक की पहली खिलाड़ी थी। पुरुष वर्ग के स्पीड स्केटिंग में स्वीडन के तोमस गुस्तोफसन ने 5 कि. मी. तथा 10 कि. मी. में स्वर्ण पाया। नार्डिक स्कीइंग के 13 स्वर्ण में सोवियत संघ ने 5 स्वर्ण, फिनलैंड ने 4 तथा स्वीडन ने 2 स्वर्ण जीते। बॉब स्लेड में पूरी तरह पूर्वी जर्मनी का वर्चस्व रहा। सभी वर्ग के स्वर्ण सहित रजत एवं कांस्य भी पूर्वी जर्मनी के खिलाड़ियों ने जीते। बायथलन के 10 कि. मी. तथा 20 कि. मी. में भी पूर्वी जर्मनी के विश्व-चैंपियन पीटररोच ने स्वर्ण जीता। फिगर स्केटिंग के पुरुष वर्ग में रूसी विश्व-चैंपियन ब्रायन बोइतोनी ने स्वर्ण जीता, जबकि बर्फ हाकी में रूस लगातार दूसरी बार चैंपियन हुआ।

अगला ओलंपिक : अल्बर्टीविले

सोलहवें शीलकालीन ओलंपिक की मेजबानी फ्रांस के शहर अल्बर्टीबिले को मिली है, परंतु ये खेल आई. ओ. सी. के नए निर्णय के तहत 1992 में न होकर 1994 में आयोजित होंगे।

शीतकालीन ओलंपिक : कब और कहाँ ?

क्रम	तिथि व वर्ष	स्थान	देश	पुरुष खिलाड़ी	महिला खिलाड़ी
1.	25 जनवरी से 4 फरवरी 1924	चोमोनिक्स (फ्रांस)	16	281	13
2.	11 से 19 जनवरी 1928	सेंट मोरित्ज (स्विट्जरलैंड)	25	468	27
3.	4 से 25 जनवरी 1932	लेक प्लेसिड (अमरीका)	17	274	32
4.	6 से फरवरी 1936	गार्मिश्च पार्टेनकिचैन (जर्मनी)	28	675	80
5.	30 जनवरी से 8 फरवरी 1948	सेंट मौरित्ज (स्विट्ज़रलैंड)	28	636	78
6.	14 से 25 फरवरी 1952	ओस्लो (नार्वे)	30	623	109
7.	26 जनवरी से 5 फरवरी 1956	कोर्टिना डि एम्पोज (इटली)	32	686	132
8.	18 से 28 फरवरी 1960	स्वावेली (अमरीका)	30	521	144
9.	29 जनवरी से 9 फरवरी 1964	इंसब्रुक (आस्ट्रिया)	36	986	200
10.	6 से 18 फरवरी 1968	ग्रेनोबल (फ्रांस)	37	1081	212
11.	3 से 13 फरवरी 1972	सैपारो (जापान)	35	1015	217
12.	4 से 25 फरवरी 1976	इंसब्रुक (आस्ट्रिया)	37	900	228
13.	14 से 25 फरवरी 1980	लेक प्लेसिड (अमरीका)	37	833	234
14.	7 से 19 फरवरी 1984	सारजेवो (यूगोस्लाविया)	49	1287	223
15.	13 से 28 फरवरी 1988	केलगरी (कनाडा)	58	—	—

पच्चीसवाँ ओलंपिक : 1992–बार्सिलोना

पच्चीसवें ओलंपिक आयोजन की मेजबानी के लिए छः शहरों–एमस्टरडम, बेलग्रेड, बर्मिंघम, बार्सिलोना, ब्रिस्बेन एवं पेरिस–ने आई.ओ.सी. के सामने अपना आवेदन प्रस्तुत किया था। आई.ओ.सी. ने 17 नवंबर 1986 को अपने मुख्यालय लुसाने में 5 घंटे की लंबी मतदान प्रक्रिया के बाद स्पेनिश शहर बार्सिलोना के पक्ष में अपना फैसला सुनाया। इस तरह बार्सिलोना ओलंपिक खेल आयोजित करनेवाला विश्व का 20वाँ शहर होगा। इसके पहले 1924, 36 एवं 72 में भी इस शहर ने ओलंपिक की मेजबानी हेतु दावेदारी पेश की थी, परंतु उसे सफलता नहीं मिली थी।

स्पेनिशों के लिए वर्ष 1992 दोहरी उपलब्धि का रहेगा, क्योंकि ओलंपिक खेलों के साथ उसी वर्ष उनके महान नाविक कोलंबस द्वारा नई दुनिया की खोज के पाँच सौ वर्ष भी पूरे होने जा रहे हैं। लगभग 18 हजार की आबादीवाला यह बार्सिलोना शहर स्पेन के औद्योगिक एवं आधुनिक शहरों में से एक है। ओलंपिक आयोजन हेतु आयोजन समिति ने 1250 करोड़ पेसेटास (लगभग 100 मिलियन अमरीकी डालर) का बजट तैयार किया है। इस आयोजन में सियोल ओलंपिक के 23 मुख्य खेलों के अलावा बेडमिंटन एवं बेसबॉल को भी मुख्य खेल के रूप में शामिल किया जाएंगा। इसकी घोषणा हो चुकी है। आयोजन-हेतु शुभंकर के रूप में एक कुत्ते के बच्चे 'कोबी' को चुना गया है। इसका डिजाइन हावियर मारिस्कल ने तैयार किया है और 15 मार्च, 1988 को हवान मार्श फाउंडेशन में इस शुभंकर को प्रस्तुत कर आम जनता की सहमति भी ले ली गई है। प्रतीक चिह्न गाढ़े लाल रंग की लकीर के ऊपर पीले रंग की लकीर है। इसमें भूमध्य सागर का प्रतीक गाढ़ा नीला रंग भी बिंदु-रूप में प्रयोग में लाया गया है। इसका डिजाइन योसेफ मारिया ने तैयार किया है

स्टेडियमों एवं खेल गाँव का निर्माण-कार्य आरंभ हो चुका है। मुख्य क्रीड़ा-परिसर मोंटजूस पर्वत पर होगा। इसे ओलंपिक रिंग नाम दिया गया है। इस ओलंपिक रिंग की परिकल्पना चार ख्याति प्राप्त इंजीनियरों ने की है। मुख्य स्टेडियम की क्षमता कोई 70 हजार दर्शकों की रखी गई है। ओलंपिक रिंग के आसपास ही अन्य स्टेडियमों का निर्माण किया जा रहा है। फुटबाल स्टेडियम की क्षमता 1 लाख 20 हजार होगी। ओलंपिक रिंग को भव्य एवं आकर्षक बनाने के उद्देश्य से घने वृक्ष तथा कृत्रिम जल-प्रपात का भी निर्माण किया जा रहा है। शहर के पर्यावरण तथा सफाई-व्यवस्था पर भी विशेष ध्यान दिया जा रहा है। इसके अलावा अगले चार सालों तक के रंगारंग कार्यक्रमों एवं उत्सवों की भी घोषणा की गई है।

ओलंपिक खेलों में भारत

ओलंपिक खेलों में भारतीय खिलाड़ियों का प्रदर्शन इतना सम्माननीय नहीं है, जिसके उल्लेख में हम गर्व महसूस करें। चौरासी साल के लंबे इतिहास में सिर्फ हॉकी के जरिए ही हमारे देश की कुछ पहचान स्थापित हुई, अन्यथा अन्य खेलों, जैसे एथलेटिक्स, कुश्ती, तैराकी, मुक्केबाजी, निशानेबाजी में हमारे खिलाड़ी आज तक स्टेडियम में राष्ट्रीय धुन बजवा पाने में असफल रहे हैं।

ओलंपिक खेलों में भारत का अधिकृत प्रवेश 1924 के पेरिस आयोजन में हुआ। परंतु उसके पूर्व दो बार 'अनधिकृत' रूप में इस देश के एथलीट ओलंपिक की शोभा बन चुके थे। सर्वप्रथम 1900 के पेरिस आयोजन में एक एंग्लो-इंडियन नार्मन प्रिचार्ड ने भाग लिया। यूँ तो प्रिचार्ड उन दिनों लंदन में रहता था, परंतु इसके पहले वह काफी समय तक कलकत्ता में रह चुका था और इस दौरान वह भारतीय फुटबाल एसोसियेशन का अध्यक्ष भी रहा था। लिहाजा उसे भारतीय प्रतिनिधि माना गया। उसने 200 मी. स्प्रिंट में अमरीकी जेम्स वाल्टर टेक्सबरी के बाद 22.8 सेकेंड से तथा 200 मी. हर्डल्स में अमरीकी एल्विन क्रेजलिन के बाद 26.6 सेकेंड का समय लेकर दूसरा स्थान पाया। इसके अलावा 100 मी. स्प्रिंट तथा 110 मी. हर्डल्स में भी वह उतरा, लेकिन पाँचवें स्थान पर रहा। उसके द्वारा जीते गए इन पदकों को कलकत्ता के एक स्पोर्ट्स म्यूजियम में सजाकर रखा गया है।

इसके बाद 1920 में 6 सदस्यीय भारतीय दल (4 एथलीट, 2 पहलवान) ने शिरकत की। इस दल के आने-जाने एवं चयन का सारा जिम्मा प्रसिद्ध उद्योगपति सर दोराब टाटा ने उठाया था। लेकिन इस दल का प्रदर्शन उल्लेखनीय नहीं रहा। बंगाल के पी. सी. बैनर्जी ने 400 मीटर स्प्रिंट में भाग लिया और पहले ही दौर में चौथे स्थान पर आकर अलग हो गया, जबकि बंबई का पी. एफ. चौगुले 10,000 मी. में दसवें स्थान पर रहा तथा मैराथन दौड़ 2 घंटा, 50 मिनट, 45.2 सेकेंड में पूरी कर उन्नीसवें स्थान पर रहा। कुश्ती में कोल्हापुर के गणपत शिंदे एवं पूना के अप्पा जी नवले प्री क्वार्टर फाइनल दौर तक पहुँचने में कामयाब रहे।

सन् 1924 में पहली बार अधिकृत भारतीय दल ओलंपिक में उतरा। 8 सदस्यीय इस भारतीय दल में सभी एथलीट थे। इनमें से केवल दो खिलाड़ी—टी. के. पिट्ट और दिलीप सिंह ही कुछ उल्लेखनीय प्रदर्शन कर सके। पिट्ट ने 400 मी. में हिस्सा लेकर सेमीफाइनल में प्रवेश किया, जहाँ वह तीसरे स्थान पर रहा; जबकि दिलीप सिंह ने लंबी

कूद में बेहतर प्रदर्शन किया। इस बार भी खिलाड़ियों का सभी खर्च दोराब टाटा ने ही वहन किया। इसी वर्ष पेरिस कांग्रेस में भारत की अनधिकृत राष्ट्रीय ओलंपिक कमेटी को अंतर्राष्ट्रीय ओलंपिक समिति के अंतर्गत पंजीकृत किया गया। अधिकृत रूप से भारतीय ओलंपिक समिति का गठन 1927 में सर दोराब टाटा, गुरुदत्त सोढी की मदद से हुआ तथा वे ही इसके पहले अध्यक्ष तथा सचिव नियुक्त हुए, लेकिन अध्यक्ष उसी वर्ष बदल गया था। 1928 में ओलंपिक के दौरान महाराजा पटियाला भारतीय ओलंपिक समिति के नए अध्यक्ष नियुक्त हुए।

पहला स्वर्ण

एमस्टरडम ओलंपिक में हाकी की पुनः वापसी हुई और भारत ने इसमें स्वर्ण पदक जीतकर अपनी शानदार कामयाबी का सिलसिला आरंभ किया। इस बार भारतीय दल में हाकी के 16 खिलाड़ियों सहित एथलेटिक्स का 7 सदस्यीय दल भी शामिल था, जिसमें पिछले ओलंपिक में हिस्सा ले चुके दिलीप सिंह तथा जे. एस. हाल का भी नाम था। इन सात एथलीटों में मात्र हाल ही ऐसा था, जो दूसरे दौर में 400 मी. तक पहुँच सका, जबकि 10,000 मी. दौड़ में हिस्सा लेने गया डी. बी. चह्वाण तो अपनी दौड़ ही पूरी नहीं कर सका। हाकी में जयपाल सिंह एवं पेन्नीगर की संयुक्त कप्तानी में भारत अपने सभी पाँचों मैच जीतकर स्वर्ण का हकदार हुआ। इन पाँच मैचों में भारतीय खिलाड़ियों ने 28 गोल किए, जबकि उसके पक्ष में एक भी गोल नहीं हुआ। सबसे बड़ी जीत बेल्जियम के विरुद्ध 9-0 की रही।

1932 में भारतीय दल तीन प्रतियोगिताओं—हाकी, एथलेटिक्स तथा तैराकी में हिस्सा लेने पहुँचा, जहाँ उसने हाकी का ताज बरकरार रखा। लाल शाह बुखारी के नेतृत्व में 15 सदस्यीय भारतीय टीम ने इस बार भी जमकर प्रदर्शन किया और अपने पहले ही मैच में जापान को 11-1 गोलों से तथा दूसरे और अंतिम मैच में मेजबान अमरीका को 24-1 से परास्त कर किसी भी अंतर्राष्ट्रीय हाकी प्रतियोगिता में सबसे बड़ी जीत का विश्व-कीर्तिमान बनाया। भारत की ओर से ध्यानचंद तथा रूप सिंह दोनों भाइयों ने दोनों मैचों में जानदार प्रदर्शन किया और ध्यानचंद ने 12 तथा रूप सिंह ने 13 गोल स्कोर किए :

लेकिन एथलेटिक्स दल के तीनों ही सदस्य—मर्विन सूटन, आर. ए. वेरेनिक्स तथा एम. सी. धवन, जो नए थे तथा जिन्हें अमरीकी कोच ई. डब्ल्यू. मुमबे ने दौड़ के गुर सिखाए थे, कोई खास प्रदर्शन नहीं कर पाए। सूटन 110 मी. हर्डल्स में पहले ही दौर में बाहर हो गया, जबकि धवन ने त्रिकूद में 14 वाँ स्थान पाया। बाद में सूटन एवं वेरेनिक्स को ब्रिटिश साम्राज्य की टीम में रिजर्व खिलाड़ी के रूप में चुना गया तथा दोनों ने

अमरीका के खिलाफ 'पोस्ट ओलंपिक' में हिस्सा लिया। तैराकी की एकमात्र खिलाड़ी नलिन मलिक ने भी निराश किया।

बर्लिन ओलंपिक (1936) हेतु भारत ने पाँच एथलीट, तीन पहलवान एवं एक भारोत्तोलक सहित 20 सदस्यीय हाकी दल, जिसका नेतृत्व लांस नायक ध्यानचंद के कंधों पर था, भेजा। इस बार भी हाकी में भारतीय प्रदर्शन उम्दा रहा। ध्यानचंद ने चमत्कारिक हाकी का प्रदर्शन करते हुए न केवल हजारों दर्शकों, वरन् अंतिम मुकाबला देखने बैठे नाजी तानाशाह हिटलर को भी अपने खेल से आश्चर्यचकित कर दिया। स्टिक से हर वक्त लगभग चिपकी-सी रहनेवाली गेंद देखकर लोगों को लगा कि ध्यानचंद की स्टिक में शायद चुंबक या गेंद को आकर्षित करनेवाला कोई पदार्थ लगा हुआ है। इसी संदेह में उसकी हाकी भी बदली गई, लेकिन कोई फर्क नहीं पड़ा। वह उसी अदा से गेंद को अपने नियंत्रण में लिए रहा। तब लोगों के मुँह से अनायास निकला—"अरे! यह तो हाकी का जादूगर है।" फाइनल के बाद हिटलर ने, जोकि तब तक ध्यानचंद के खेल का दीवाना हो चुका था, किसी से पूछा कि यह खिलाड़ी भारतीय सेना में किस पद पर है? जब उसे बताया गया कि यह मात्र लांस नायक है तो हिटलर ने तुरंत कहा—"इससे कहो जर्मन आ जाए, मैं इसे फील्ड मार्शल बना दूँगा।"

हाकी में स्वर्ण पदक के अलावा और कोई पदक भारतीय टीम को इस बार भी नहीं मिला।

जब अगला सक्रिय ओलंपिक 1948 लंदन में हुआ, तब तक भारत अंग्रेजों की गुलामी से स्वतंत्र हो चुका था। इस बार भारतीय दल मार्च पास्ट में अपने तिरंगे झंडे के साथ था। स्वतंत्रता के नए जोश के साथ इस बार आठ स्पर्धाओं—हाकी, एथलेटिक्स, कुश्ती, मुक्केबाजी, भारोत्तोलन, साईकिलिंग, फुटबाल तथा तैराकी में भारतीय खिलाड़ियों ने शिरकत की। परंतु जहाँ तक प्रतियोगिता में प्रदर्शन का सवाल है, नतीजा हाकी को छोड़कर शेष प्रतियोगिताओं में शून्य ही रहा। आठ सदस्यीय एथलेटिक्स दल ने जरूर पहले से कुछ बेहतर प्रदर्शन किया और इस दल के दो सदस्यों—हेनरी रेबेलो जोकि बंगलौर विश्वविद्यालय का छात्र था, ने त्रिकूद में तथा बलदेव सिंह ने लंबी कूद में फाइनल में अपना स्थान बनाया, लेकिन पेशी खिंच जाने की वजह से बाद में ये दोनों 'ड्राप' कर दिए गए। तैराकी की 15 सदस्यीय टीम में वाटरपोलो टीम भी शामिल थी। वाटरपोलो में भारतीय टीम अमरीका तथा ब्रिटेन से आगे रहकर 12वें स्थान पर आई। हालाँकि इस स्पर्धा में उसे कोई पदक नहीं मिला, लेकिन एशिया से पहली बार तैराकी में हिस्सा लेने का संतोष जरूर हुआ। पाँच पहलवानों में एक श्वाशब जाधवन ने वेंटमवेट वर्ग में छठा, स्थान पाकर 'ओलंपिक रोल ऑफ आनर' सम्मान हासिल किया। फुटबाल में भी प्रदर्शन साधारण से ऊँचा नहीं रहा। हाकी में किशनलाल की कप्तानी में भारत ने

लगातार चौथी बार 'स्वर्ण पदक' पाया। फाइनल में उसने ब्रिटेन को 4-0 से रौंदा।

महिलाओं का समावेश

हेलसिंकी के 15वें आयोजन में भारतीय दल में एक नए उत्साह का संचार हुआ। पहली (और अब तक एकमात्र) बार भारत दो पदक लेकर स्वदेश लौटा। हाकी में जहाँ के. डी. सिंह बाबू के नेतृत्व में उसने लगातार 5वीं बार स्वर्ण पदक हासिल किया, वहीं कुश्ती के फ्री स्टाईल वेंटमवेट वर्ग में श्वाशब जाधव ने तीसरा स्थान बनाकर कांस्य पदक (हाकी के अलावा तथा 1900 को छोड़ अन्य खेलों का पहला पदक) हासिल किया। समीक्षकों का विचार था कि यदि जाधव अपने भार पर नियंत्रण रखता तो स्वर्ण भी जीत सकता था। एक और पहलवान भंगो श्रीरंग जाधव फ्री स्टाइल फीदरवेट वर्ग में चौथा स्थान पाकर 'ओलंपिक डिप्लोमा' पानेवाला दूसरा खिलाड़ी हुआ। एथलेटिक्स के आठ सदस्यीय दल की खासियत यह थी कि इस दल में पहली बार 2 महिला एथलीट–नीलिमा घोष तथा मेरी डिसूजा का भी चयन हुआ था। मेरी डिसूजा ने 100 मी. (13.6 सेकेंड) तथा 800 मी. में हिस्सा लिया, लेकिन कोई खास प्रदर्शन नहीं कर सकी। फिर भी ओलंपिक खेलों में हिस्सा लेकर उसने एक परंपरा की शुरुआत जरूर कर दी।

पुरुष वर्ग के एथलेटिक्स में लेवी पिंटो ने 100 मी. तथा 200 मी. में अच्छा प्रदर्शन करते हुए सेमीफाइनल दौर में प्रवेश किया, जहाँ वह 100 मी. 10.4 सेकेंड से पहले सेमीफाइनल में चौथा स्थान पाकर बाहर हो गया। यही स्थिति 200 मी. में भी रही। एक अन्य एथलीट सोहन सिंह ने भी सेमीफाइनल में स्थान बनाया। 800 मी. दौड़ के तीसरे सेमी फाइनल में 1:5.9 सेकेंड के समय से उसने छठा स्थान पाया। सूरतसिंह माथुर ने मैराथन में 66 खिलाड़ियों के बीच 52वाँ स्थान पाया। उसका समय रहा–2:58:09.2 सेकेंड। 19 वर्षीय रान नोरिस मुक्केबाजी के वेल्टरवेट वर्ग में क्वार्टर फाइनल दौर तक पहुँचा। तैराकी, भारोत्तोलन, निशानेबाजी, साईकिलिंग एवं फुटबाल में प्रदर्शन निराशाजनक रहा।

मेलबोर्न ओलंपिक 1956 हेतु भारतीय दल ने काफी तैयारियाँ कीं। इसके पहले 1951 में नई दिल्ली में हुए पहले तथा 1954 में मनीला में हुए दूसरे एशियाई खेलों में भारतीय प्रदर्शन ने इस ओलंपिक में पदक की आशाओं को जिंदा रखा। इस बार एथलेटिक्स पर विशेष ध्यान दिया गया। अमरीकी कोच लैरी सैंडर की सेवाएँ ली गईं, जिन्होंने महान जेसी ओवंस को प्रशिक्षण दिया था। इसके अलावा हेलसिंकी ओलंपिक में अमरीकी टीम को कोच करनेवाले ब्रुस हैमिल्टन सहित डा. केनेथ डोहाती, लायड विंटर को भी बुलाया। देश के कोने-कोने में कैंप लगाकर खिलाड़ी चुने गए। फिर

विश्वप्रसिद्ध एथलीट जेसी ओवंस, बाब मैथियांस, बाब रिचर्ड्स, एम. व्हाईटफील्ड (सभी अमरीकी) तथा चेकोस्लोवाकिया के एमिल तथा उनकी पत्नी डाना जातोपेक को भी भारत बुलाकर भारतीय खिलाड़ियों तथा कोचों को प्रशिक्षित करवाया गया। ओलंपिक के पूर्व हुई प्रतियोगिताओं ने इन महान खिलाड़ियों एवं कोच की मेहनत को साकार करते हुए कई बेहतर परिणाम दिए, लेकिन ओलंपिक खेलों में जैसे इनके प्रदर्शन को साँप सूँघ गया। केवल अजीतसिंह ने ऊँची कूद के फाइनल में प्रवेश कर 6 फुट, 5 इंच की ऊँचाई नापी और 14वें स्थान पर रहा। शेष सभी एथलीट प्रारंभिक दौर से आगे नहीं बढ़ पाए। और तो और, एकमात्र महिला एथलीट मेरी लीला राव तो 100 मी. की दौड़ भी पूरा नहीं कर सकी। फुटबाल में शैलेन मन्ना के नेतृत्व में भारतीय दल ने अच्छा प्रदर्शन करते हुए पहले ही मैच में मेजबान आस्ट्रेलिया को 4-2 से पीट दिया। फिर सेमीफाइनल में प्रवेश कर पदक की उम्मीद भी जगाई, लेकिन यहाँ बुलगारिया से 3-0 से हारकर चौथा स्थान ही पा सका। हाकी में इस बार भी भारत चोटी पर रहा। अपने पहले दो मैचों में क्रमशः अफगानिस्तान को 14-0 तथा अमरीका को 16-0 गोलों से रौंदकर उसने अपना मजबूत इरादा जाहिर कर दिया था। फाइनल में उसका मुकाबला पाकिस्तान से हुआ, जिसमें रंधीरसिंह जेंटल के बनाए एकमात्र गोल से भारत लगातार छठी बार ओलंपिक स्वर्ण का हकदार हुआ। इस जीत के उपलक्ष्य में डोमिनिकल रिपब्लिक ने एक डाक टिकट भी जारी किया। सात सदस्यीय पहलवानों के दल ने पूरी तरह निराश किया।

और परंपरा टूट गई

रोम ओलंपिक में भारतीय दल पेरिस (1924) के बाद पहली बार स्वर्ण के बगैर लौटा। हाकी फाइनल में 32 सालों की भारतीय श्रेष्ठता को पाकिस्तान ने 1-0 से हराकर तोड़ दिया, लेकिन धावक मिल्खा सिंह यहाँ अपने चर्मोत्कर्ष पर था। फिर भी भारत का दुर्भाग्य ही रहा कि फोटोफिनिश में वह चौथे स्थान पर रहा। 400 मीटर फाइनल की इस ऐतिहासिक दौड़ में छः धावकों ने हिस्सा लिया था। पहले दो स्थान पर आनेवाले धावकों ने विश्व-कीर्तिमान भंग किया, जबकि बाद के 2 धावकों ने ओलंपिक-कीर्तिमान। मिल्खा सिंह के इस प्रदर्शन पर उसे 'ओलंपिक रोल ऑफ ऑनर' से सम्मानित किया गया। 2 सदस्यीय निशानेबाजी टीम ने भी कुछ सफलता पाई। महाराजा बीकानेर कर्णी सिंह ने क्ले पीजन शूटिंग में 51 खिलाड़ियों के बीच फ्रांस के क्लाउडे फोसियर के साथ 183 अंक पाकर संयुक्त रूप से आठवाँ स्थान पाया। कुश्ती के मिडिलवेट वर्ग में माधो सिंह तीन अन्य पहलवानों के साथ पाँचवें स्थान पर आकर 'ओलंपिक डिप्लोमा' का हकदार बना, जबकि एक अन्य पहलवान सज्जन सिंह लाइट हैवीवेट वर्ग में सातवें स्थान

पर आया। एकमात्र भारोत्तोलक एल. के. दास 12वें स्थान पर रहा।

चार साल बाद ओलंपिक खेल पहली बार एशियाई धरती टोकियो में संपन्न हुए, जिसमें भारत 9 खेलों में उतरा। इस बार इस बात का संतोष जरूर रहा कि चरणजीत सिंह के नेतृत्व में हाकी का खोया ताज यहाँ पुनः पा लिया। अन्यथा अन्य खेलों में कोई खास प्रदर्शन नहीं रहा। 13 सदस्यीय एथलेटिक्स दल में, जिसमें एक महिला स्टीफन डिसूजा भी शामिल थी, केवल गुरुबचन रंधावा सिंह ने ही 110 मी. हर्डल में 11 सेकेंड से 5वाँ स्थान बनाकर ओलंपिक डिप्लोमा पाया। डिसूजा 800 मी. स्प्रिंट में हिस्सा लेकर सेमीफाइनल तक पहुँची और यह श्रेय पानेवाली वह पहली महिला रही। 4 × 100 मी. रिले में भी भारत सेमीफाइनल तक पहुँचा था। भारोत्तोलक एम. एल. घोष ने 22 प्रतियोगियों में 14वाँ स्थान पाया, जबकि पिछली बार शूटिंग में आठवाँ स्थान पानेवाले कर्णी सिंह ने इस बार बेहतर प्रदर्शन के बावजूद 52 खिलाड़ियों में 26वाँ स्थान ही बनाया। जिमनास्ट डी. मंडल ने लांग हार्स इवेंट में इच्छा प्रदर्शन कर 10 में 9 अंक जुटाए, लेकिन अपने पहले प्रयास के बाद वह घायल हो गया। कुश्ती की टीम प्रतियोगिता में भारत 9वें स्थान पर रहा। फ्री स्टाइल वेंटमवेट वर्ग में विशंभर सिंह ने छठा स्थान पाकर ओलंपिक डिप्लोमा पाया।

मैक्सिको ओलंपिक 1968 से भारतीय हाकी की धार भोथरी होने लगी। यह पहला अवसर रहा जबकि भारतीय टीम स्वर्ण एवं रजत के बगैर स्वदेश लौटी। आस्ट्रेलियाई महाद्वीप की दोनों ही टीमों—न्यूजीलैंड तथा आस्ट्रेलिया—ने भारत को 2-1 से हराकर कांस्य पदक लेने पर मजबूर कर दिया। एथलेटिक्स में इस बार केवल 2 एथलीट प्रवीण कुमार तथा भीम सिंह ही गए और दोनों का प्रदर्शन अत्यंत निराशाजनक रहा। कुश्ती दल ने इस बार कुछ बेहतर प्रदर्शन किया। विशंभर सिंह ने अंकों के आधार पर टोकियो के स्वर्ण पदक विजेता वेंटमवेट वर्ग के यूजिरो उताके को हराया। फिर भी वह 7वें स्थान पर रहा। 42 देशों में भारत इस बार नौवाँ रहा। निशानेबाजी में बुजुर्ग कर्णी सिंह 194 अंक के साथ दसवें स्थान पर रहा।

म्यूनिख में भी भारतीय खिलाड़ियों की असफलताओं का दौर जारी रहा। 8 सदस्यीय एथलेटिक्स दल ने पुनः निराशा किया, केवल विजय सिंह चौहान (डेकाथलन) ही कुछ अच्छा प्रदर्शन कर पाया। यदि उसे भारत में और सुविधाएँ मिलतीं तो शायद वह इससे और बेहतर प्रदर्शन करता। अलबत्ता 33 प्रतियोगियों के बीच उसका स्थान 17वाँ था। मोहिंदर सिंह गिल एक भी कूद सही नहीं कूद सका। कुश्ती दल से इस बार पदक की उम्मीद रखी गई थी। सुरेश कुमार तथा प्रेमनाथ तो 4-4 कुश्तियाँ जीतकर पदक के करीब भी पहुँच गए थे, लेकिन अंतिम दो दौर के परास्त होने से भारतीय आशाओं पर पानी फिर गया। प्रधानमंत्री के हस्तक्षेप से भारतीय टीम में स्थान

बनानेवाला मास्टर चंदगीराम शुरू से ही अपना बचाव करता हुआ हारा। कर्णी सिंह इस बार भी भारतीय दस्ते में था, लेकिन इस बार उसे 34वाँ स्थान मिला। एक अन्य निशानेबाज रंधीर सिंह, जो 1968 वाले दल में भी शामिल था, लेकिन स्पर्धा में नहीं उतरा था, यहाँ 44वें स्थान पर रहा। मुक्केबाजी तथा भारोत्तोलक दल ने निराश ही किया। हाकी में उसे सेमीफाइनल में पाकिस्तान के हाथों 2-0 गोल से हार सहनी पड़ी। कांस्य पदक के लिए भी उसने हालैंड को 2-0 से हराकर किसी तरह अपनी नाक बचाई।

एथलीटों का जानदार प्रदर्शन

1976 के मांट्रियल ओलंपिक में जहाँ भारतीय एथलीटों ने व्यक्तिगत सफलताओं के शीर्ष को छुआ, वहीं हाकी में स्थिति बद से बदतर हो गई। ओलंपिक हाकी में हम पहली बार बगैर कोई पदक लिए लौटे। पेनाल्टी कार्नरों को भुना नहीं पाना तथा आपसी तालमेल की कमी ने हमें इस कदर झटका दिया कि हम बमुश्किल सातवाँ स्थान पा सके। 4 सदस्योंवाले एथलेटिक्स दल के तीन सदस्यों, श्रीराम सिंह, हरी सिंह तथा शिवलाल सिंह ने अपने जीवन का श्रेष्ठतम प्रदर्शन कर एशियाई कीर्तिमानों को ध्वस्त किया, लेकिन दुर्भाग्य यहाँ भी भारत के साथ रहा और हमारे एथलीट बगैर किसी पदक के लौटे। 68 से 75 तक के राष्ट्रीय विजेता सेना के 27 वर्षीय श्रीराम सिंह ने, जो 400 मी. तथा 800 मी. दौड़ों में हिस्सा लेता था, ओलंपिक में अपना ध्यान केवल 800 मी. दौड़ पर ही केंद्रित किया। पहली हीट में दूसरे स्थान पर रहकर उसने ओलंपिक-रिकार्ड तोड़ा। फिर सेमीफाइनल में फोटो-फिनिश से फाइनल के लिए अपना स्थान बनाया। लेकिन यहाँ 1:45.77 एशियाई रिकार्ड समय से वह केवल 7वाँ स्थान ही पा सका। सेंट्रल रिजर्व पुलिस के 23 वर्षीय हरी सिंह ने भी 10,000 मी. में नया एशियाई रिकार्ड (28:48.27 सेकेंड) बनाकर 14 धावकों में 8वाँ स्थान पाया। मध्यम दूरी के धावक शिवलाल सिंह ने यहाँ ओलंपिक मैराथन में हिस्सा लिया तथा 72 धावकों में 11वाँ स्थान (2:16:22.0 सेकेंड) पाया। लंबी कूद के एथलीट टी. सी. यौहानन ने निराश किया। वह 7.80 मी. दूरी को क्वालीफाई ही नहीं कर पाया। मुक्केबाजों ने भी घटिया प्रदर्शन किया।

मास्को ओलंपिक में अमरीकी समर्थक देशों के बहिष्कार से भारत को कुश्ती में पदक मिलने की काफी संभावनाएँ थीं। इसी कारण भेजे गए 6 पहलवानों को पटियाला में गहन प्रशिक्षण दिया गया, परंतु तीन पहलवानों के श्रेष्ठतम प्रदर्शन के बाद भी भारत इस मुकाबले में खाली हाथ लौटा ; लाइटवेट वर्ग में जगमिंदर सिंह चौथा, लाइट फ्लाइवेट में 19 वर्षीय छात्र महावीर पाँचवाँ तथा वेल्टरवेट वर्ग में राजेंद्र सिंह छठवाँ स्थान ही बना सके। बहरहाल तीनों पहलवानों को 'रोल ऑफ आनर' प्राप्त हुआ। तीन अन्य पहलवान करतार सिंह, सतपाल सिंह तथा अशोक का प्रदर्शन दयनीय रहा। हाकी

में भी बहिष्कार का भरपूर लाभ उठाकर 16 सालों बाद भारत ने पुनः स्वर्ण पदक हासिल किया, जबकि पहली बार शामिल महिला हाकी में उसे चौथा स्थान नसीब हुआ। बास्केटबाल में हारने के बावजूद प्रदर्शन अच्छा रहा, लेकिन एथलेटिक्स, मुक्केबाजी, भारोत्तोलन तथा निशानेबाजी में स्थिति दयनीय रही।

लास एंजिल्स 1984 में 48 सदस्यीय भारतीय दल में सिवाय महिला एथलीटों तथा पहलवानों के किसी और का उल्लेखनीय प्रदर्शन नहीं रहा। एथलेटिक्स की महिला वर्ग में 800 मी. दौड़ते हुए शाईनी अब्राहिम ने सेमीफाइनल में प्रवेश किया, जबकि पी.टी. उषा ने 400 मी. के फाइनल में प्रवेश किया। इस बार उषा पर हजारों निगाहें थीं और जब वह फाइनल में प्रवेश कर गई तो हमारी उम्मीदें उससे और बढ़ गईं, लेकिन 1960 की घटना (मिल्खासिंहवाली) की यहाँ भी पुनरावृत्ति हुई और सेकेंड के सौवें हिस्से से चूककर उषा केवल चौथे स्थान पर ही आ सकी। उसका समय रहा 55.42 सेकेंड। फिर 4 × 100 मी. रिले में भी भारतीय टीम फाइनल में पहुँची, लेकिन उसे 8वाँ स्थान ही मिल सका। कुश्ती में राजेंद्र सिंह (74 कि. ग्रा.) ने चौथा, महावीर (52 कि. ग्रा.) ने छठा तथा रोहताश (57 कि. ग्रा.) ने छठा स्थान बनाया। भारोत्तोलन में बेंटमवेट वर्ग में देवन 235 कि. ग्रा. भार उठाकर 11वें तथा फीदरवेट में संतारा सिंह 225 कि. ग्रा. भार उठाकर 15वें स्थान पर रहा। आठ निशानेबाजों में कोई भी 17वें स्थान से नीचे नहीं आ सका। ट्रेप शूटिंग में रंधीर सिंह 71 निशानेबाजों में 65वाँ रहा। एकमात्र महिला निशानेबाज सोमादत्ता ही एयर रायफल में 22वाँ तथा स्मालबेर में 17वाँ स्थान बना सकी। नौकायन में भारत अंतिम स्थान पर रहा, जबकि दोनों मुक्केबाज शुरू में ही चित्त हो गए।

सियोल 1988 के लिए 65 खिलाड़ियों का जत्था भेजा गया था और इस बार धाविका पी.टी. उषा तथा तैराक खजान सिंह से पदक की उम्मीद भी की गई थी, परंतु अंतिम परिणाम वही पुराना ही रहा। पी.टी. उषा ने पूरी तरह स्वस्थ न होने के बावजूद प्रतियोगिता में हिस्सा लिया और पहले ही राउंड में सातवें स्थान (अंतिम) पर रही। वह 400 मी. बाधा दौड़ में हिस्सा ले रही थी। खजान सिंह, जो कि आस्ट्रेलियाई प्रशिक्षक एरिक अर्नोल्ड की निगरानी में था, अपने हीट के पाँचवें स्थान पर रहा। परंतु मुक्केबाजों एवं पहलवानों का प्रदर्शन पहले से बेहतर रहा। असैनिक मुक्केबाज मनोज पिंगले ओलंपिक के तीसरे दौर में पहुँचनेवाला दूसरा भारतीय मुक्केबाज बना, जबकि साहू बिराजदार चोटिल होने की वजह से तीसरे राउंड में नहीं आ सका। भारोत्तोलक आर. मुत्थुस्वामी राष्ट्रमंडलीय कीर्तिमान तोड़ने के बावजूद 11वें स्थान पर आया। एकमात्र निशानेबाज प्रतियोगी सोमादत्ता, जो कि एक अमरीकी प्रशिक्षक की देख-रेख में थी, स्टेंडर्ड रायफल में 23वें तथा एयर रायफल में 30वें स्थान पर रही। टेबल टेनिस एवं

लान टेनिस में भारतीय चुनौती निर्मूल साबित हुई। तीरंदाजी में आदिवासी तीरंदाजों लिम्बाराम तथा श्याम लाल ने क्रमशः 39वाँ तथा 72वाँ स्थान पाया। कुश्ती में सिर्फ राजेश कुमार (48 कि. ग्रा. वर्ग) एवं कुलदीप सिह (52 कि. ग्रा. वर्ग) ही अपने चयन की सार्थकता सिद्ध करते हुए 9वें स्थान पर आए। पाल नौकायन के फारुख तारापोर तथा केली राव की जोड़ी शुरू से ही पिछड़ती रही। हाकी में भी पदक की आशा लगाई गई थी, परंतु पहले ही मैच में सोवियत संघ के हाथों 1-0 की पराजय ने टीम का मनोबल गिरा दिया। फिर लीग के अंतिम मैच में ग्रेट ब्रिटेन के हाथों 3-0 की पराजय ने पदक जीतने के सभी रास्ते बंद कर दिए।

इस प्रकार ओलंपिक खेलों में यदि हम भारतीय प्रदर्शन का निचोड़ निकालें तो सिर्फ हाकी एवं कुश्ती से ही कुछ रस-संग्रहण होता है, बाकी सब तो रसहीन, स्वादहीन ही साबित हुआ है।

परिशिष्ट

ओलंपिक कीर्तिमान

एथलेटिक्स (पुरुष वर्ग)

स्पर्धाएँ	नाम (देश)	स्थान	प्रदर्शन
100 मी.	कार्ल लुईस (अमरीका)	सियोल	9.92 से.
200 मी.	जो डेलाच (अमरीका)	सियोल	19.75 से.
400 मी.	ली इंवास (अमरीका)	मैक्सिको	43.83 से.
800 मी.	जोकिम क्रूज (ब्राजील)	लास एंजिल्स	1:43.45 से.
1500 मी.	सेबेस्टियन को (ग्रेट ब्रिटेन)	लास एंजिल्स	3:32.53 से.
5000 मी.	सैद ओयटा (मोरक्को)	लांस एंजिल्स	13:05.59 से.
10,000 मी.	मौले इब्राहीम बौटेब (मोरक्को)	सियोल	27:21.46 से.
मैराथन	कार्लोज लोपेज़ (पुर्तगाल)	लांस एंजिल्स	2:09.21 से.
110 मी. बाधा	रोजर किंगडम (अमरीका)	सियोल	12.98 से.
400 मी. बाधा	आंद्रे फिलीप्स (अमरीका)	सियोल	47.19 से.
3000 मी.	स्टीपल चेस-जूलियस कारुकी (केन्या)	सियोल	8:05.57 से.
4×100 मी. रिले	(अमरीका)	लांस एंजिल्स	37.83 से.
4×400 मी. रिले	(अमरीका)	सियोल	2:56.16 से.
20 कि. मी. पैदलचाल	जेनेफ प्रिविलीनेक (चेको)	सियोल	1:19.57 से.
50 कि. मी. पैदलचाल	रॉल गोंजालेस (मैक्सिको)	लास एंजिल्स	3:37.26 से.
ऊँची कूद	जेनेडी एवडेन्को (अमरीका)	सियोल	2.38 मी.
लंबी कूद	बाब बीमन (अमरीका)	मैक्सिको	8.90 मी.
बाँस कूद	सर्गेई वुबका (सोवियत संघ)	सियोल	5.90 मी.
त्रिकूद	हेरिस्तो मारकोव (बुल्गारिया)	सियोल	17.61 मी.
गोला फेंक	उल्फ टिमरमैन (पूर्वी जर्मनी)	सियोल	22.47 मी.
भाला फेंक	मिकलोंस नेमेथ (हंगरी)	मांट्रियल	94.58 मी.

चक्का फेंक	जुर्गेन रुकॉल्ट (पूर्वी जर्मनी)	सियोल	68.82 मी.
हैमर फेंक	सर्गेई लिटविनोव (सोवियत संघ)	सियोल	84.80 मी.
डेकाथलन	क्रिस्टाइन स्नैक (पूर्वी जर्मनी)	सियोल	8488 अंक

महिला वर्ग

100 मी.	फ्लोरेंस ग्रिफिथ जायेनर (अमरीका)	सियोल	10.54 से.
200 मी.	फ्लोरेंस ग्रिफिथ जायेनर (अमरीका)	सियोल	21.34 से.
400 मी.	ओल्गा ब्राइजिना (सोवियत संघ)	सियोल	48.65 से.
800 मी.	नादीजेदा ओलीजारेक्को (सोवियत संघ)	मास्को	1:53.43 से.
1500 मी.	पाउला इवान (रूमानिया)	सियोल	3:53.96 से.
3000 मी.	सात्याना सेमोलेंको (सोवियत संघ)	सियोल	8:26.53 से.
10,000 मी.	ओल्गा बोंडारेंको (सोवियत संघ)	सियोल	31:05.21 से.
मैराथन	रोसा मोता (पुर्तगाल)	सियोल	2:25.40 से.
100 मी. बाधा	योडीन्का डेन्कोवा (बुल्गारिया)	सियोल	12.38 से.
400 मी. बाधा	डेब्रा फ्लिन्टोफ किंग (आस्ट्रेलिया)	सियोल	53.17 से.
4 × 100 मी. रिले	पूर्वी जर्मनी	मास्को	41.60 से.
4 × 400 मी. रिले	सोवियत संघ	सियोल	3:15.18 से.
ऊँची कूद	लुईस रिट्टर (अमरीका)	सियोल	2.03 मी.
लंबी कूद	जैकी जायेनर करसी (अमरीका)	सियोल	7.40 से.
गोला फेंक	इलोना स्लूपियानेक (पूर्वी जर्मनी)	मास्को	22.41 मी.
चक्का फेंक	मार्टिना हैलमैन (पूर्वी जर्मनी)	सियोल	72.30 मी.
भाला फेंक	पेत्रा फेलके (पूर्वी जर्मनी)	सियोल	74.68 मी.
हेप्टाथलन	जैकी जायेनर करसी (अमरीका)	सियोल	7297 अंक

तैराकी पुरुष वर्ग

50 मी. फ्री स्टाइल	मैट बियोल्डी (अमरीका)	सियोल	22.14 से.
100 मी. फ्री स्टाइल	मैट बियोल्डी (अमरीका)	सियोल	48.63 से.
200 मी. फ्री स्टाइल	डंकन आर्मस्ट्रांग (आस्ट्रेलिया)	सियोल	1:47.25 से.
400 मी. फ्री स्टाइल	उवे ड्रेश्लर (पूर्वी जर्मनी)	सियोल	3:46.95 से.

1500 मी. फ्री स्टाइल	ब्लादीमिर सैल्नीकोव (सोवियतसंघ)	मास्को	14:58.27 से.
100 मी. बैक स्ट्रोक	दैइची सुजुकी (जापान)	सियोल	55.05 से.
200 मी. बैक स्ट्रोक	रिचर्ड कैरी (अमरीका)	लास एंजिल्स	1:58.99 से.
100 मी. ब्रेस्ट स्ट्रोक	स्टीव लिर्डक्विस्ट (अमरीका)	लास एंजिल्स	1:01.65 से.
200 मी. ब्रेस्ट स्ट्रोक	विक्टर डेविस (कनाडा)	लास एंजिल्स	2:13.34 से.
100 मी. बटरफ्लाई	एंथोनी नेस्टी (सूरीनाम)	सियोल	53.0 से.
200 मी. बटरफ्लाई	माईकल ग्रास (पश्चिम जर्मनी)	सियोल	1:56.94 से.
200 मी. मिडले व्यक्तिगत	टामस दारनयी (हंगरी)	सियोल	2:00.17 से.
400 मी. मिडले व्यक्तिगत	टामस दारनयी (हंगरी)	सियोल	4:14.75 से.
4 × 100 मी. रिले फ्री स्टाइल	अमरीका	सियोल	3:16.53 से.
4 × 200 मी. रिले फ्री स्टाइल	अमरीका	सियोल	7:12.57 से.
4 × 100 मी. रिले मिडले	अमरीका	सियोल	3:36.93 से.

महिला वर्ग

50 मी. फ्री स्टाइल	क्रिस्टीन ओटो (पूर्वी जर्मनी)	सियोल	25.49 से.
100 मी. फ्री स्टाइल	बारबरा, क्राउस (पूर्वी जर्मनी)	मास्को	54.70 से.
200 मी. फ्री स्टाइल	हाईक फ्रेड्रिच (पश्चिम जर्मनी)	सियोल	1:57.65 से.
400 मी. फ्री स्टाइल	जैनेट इवांस (अमरीका)	सियोल	4:03.85 से.
800 मी. फ्री स्टाइल	जैनेट इवांस (अमरीका)	सियोल	8:20.20 से.
100 मी. बैक स्ट्रोक	रिका रिनिश्च (पूर्वी जर्मनी)	मास्को	1:00.86 से.
200 मी. बैक स्ट्रोक	क्रिस्टीना इजेरस्जेगी (हंगरी)	सियोल	2:09.29 से.
100 मी. ब्रेस्ट स्ट्रोक	तैन्या डेंगालकोवा (बुल्गारिया)	सियोल	1:07.95 से.
200 मी. ब्रेस्ट स्ट्रोक	सिल्के होर्नर (पूर्वी जर्मनी)	सियोल	2:26.71 से.
100 मी. बटरफ्लाई	क्रिस्टीन ओटो (पूर्वी जर्मनी)	सियोल	59.0 से.
200 मी. बटरफ्लाई	मैरी मीघर (अमरीका)	लास एंजिल्स	2:06.90 से.
200 मी. मिडले			

व्यक्तिगत	दैनीला हंगर (पूर्वी जर्मनी)	सियोल	2:12.59 से.
400 मी. मिडले			
व्यक्तिगत	ट्रेसी कॉकिस (अमरीका)	लास एंजिल्स	4:39.24 से.
4 × 100 मी. रिले मिडले	पूर्वी जर्मनी	सियोल	4:03.74 से.
4 × 400 मी. रिले			
फ्री स्टाइल	पूर्वी जर्मनी	सियोल	3:40.63 से.

ओलंपिक हाकी में भारतीय प्रदर्शन

मैच	स्थान		मैच			गोल		स्थान
		खेले	जीते	हारे	ड्रा	किए	खाए	
1928	एमस्टरडम	5	5	—	—	28	—	पहला
1932	लास एंजिल्स	2	2	—	—	35	2	पहला
1936	बर्लिन	5	5	—	—	38	1	पहला
1948	लंदन	5	5	—	—	25	2	पहला
1952	हेलसिंकी	3	3	—	—	13	2	पहला
1956	मेलबोर्न	5	5	—	—	38	0	पहला
1960	रोम	6	5	1	—	19	2	दूसरा
1964	टोकियो	9	7	—	2	22	5	पहला
1968	मैक्सिको	9	7	2	—	23	7	तीसरा
1972	म्यूनिख	9	6	1	2	27	11	तीसरा
1976	मांट्रियल	8	4	4	—	16	18	सातवाँ
1980	मास्को	6	4	—	2	43	9	पहला
1984	लास एंजिल्स	7	5	1	1	20	11	पाँचवा
1988	सियोल	7	3	3	1	20	18	छटवाँ
	योग	86	66	12	8	367	78	

1928—एमस्टरडम : जयपालसिंह

हराया—आस्ट्रिया	6-0
हराया—बेल्जियम	9-0
हराया—डेनमार्क	5-0
हराया—स्विट्जरलैंड	5-0
हराया—हालैंड	3-0

नोट : फाइनल में कप्तानी पेन्नीगर ने की थी।

1932—लास एंजिल्स : लालशाह बुखारी

हराया—जापान	11-1
हराया—अमरीका	24-1

1936—बर्लिन : ध्यान चंद

हराया—हंगरी	4-0
हराया—अमरीका	7-0
हराया—जापान	9-0
हराया—फ्रांस	10.0
हराया—जर्मनी	8-0

1948—लंदन : किशनलाल

हराया—आस्ट्रिया	8-0
हराया—अर्जेंटाइना	9-1
हराया—स्पेन	2-0
हराया—हालैंड	2-1
हराया—ब्रिटेन	4-0

1952—हेलसिंकी : कुँवर दिग्विजयसिंह 'बाबू'

हराया—आस्ट्रिया	4-0
हराया—ब्रिटेन	3-1
हराया—हालैंड	6-1

1956—मेलबोर्न : बलबीरसिंह

हराया—अफगानिस्तान	14-0
हराया—अमरीका	16-0
हराया—सिंगापुर	6-0
हराया—जर्मनी	1-0
हराया—पाकिस्तान	1-0

1960—रोम : लेस्ली क्लाडियस

हराया—डेनमार्क	10-0
हराया—हालैंड	4-1
हराया—न्यूजीलैंड	3-0
हराया—आस्ट्रेलिया	1-0
हराया—जर्मनी	1-0
हारा—पाकिस्तान	0-9

1964—टोकियो : चरणजीत सिंह

हराया—बेल्जियम	2-0
ड्रा—जर्मनी	1-1
ड्रा—स्पेन	1-1
हराया—हांगकांग	6-0
हराया—मलेशिया	3-1
हराया—कनाडा	3-0
हराया—आस्ट्रेलिया	3-1
हराया—हालैंड	2-1
हराया—पाकिस्तान	1-0

1968—मैक्सिको-पृथ्वीपाल सिंह

हारा-न्यूजीलैंड	1-2
हराया—पश्चिम जर्मनी	2-1
हराया—मैक्सिको	8-0
हराया—स्पेन	1-0
हराया—बेल्जियम	2-1
हराया—जापान	5-0
हराया—पूर्वी जर्मनी	1-0
हारा-आस्ट्रेलिया	1-2

नोट : कप्तानी का दायित्व पृथ्वीपाल सिंह एवं गुरबक्शसिंह ने संयुक्त रूप से निभाया।

1972—म्यूनिख : एम. पी. गणेश

ड्रा—हालैंड	1-1
हराया—ब्रिटेन	5-0
हराया—आस्ट्रेलिया	3-1

ड्रा—पोलैंड	2-2
हराया—केन्या	3-2
हराया—मैक्सिको	8-0
हराया—न्यूजीलैंड	3-2
हारा—पाकिस्तान	0-2
हराया—हालैंड	2-1

1976—मांट्रियल : अजितपाल सिंह

हराया—अर्जेंटाइना	4-0
हारा—हालैंड	1-3
हारा—आस्ट्रेलिया	1-6
हराया—कनाडा	3-0
हराया—मलेशिया	3-0
हारा—आस्ट्रेलिया	5-6
हारा—पश्चिम जर्मनी	2-3
हराया—मलेशिया	2-0

1980—मास्को : वी. भास्करन

हराया—तंजानिया	18-0
ड्रा—पौलैंड	2-2,
हराया—क्यूबा	13-0
हराया—सोवियत संघ	4-2
हराया-स्पेन	4-3

1984—लास एंजिल्स : जफर इकबाल

हराया—अमरीका	5-1
हराया—मलेशिया	3-1
हराया—स्पेन	4-3
हारा—आस्ट्रेलिया	2-4
ड्रा—पश्चिम जर्मनी	0-0
हराया—न्यूजीलैंड	1-0
हराया—हालैंड	5-2

1988—सियोल : एम. एम. सोमाया

हारा—सोवियत संघ	0-1
ड्रा—पश्चिम जर्मनी	1-1
हराया—दक्षिण कोरिया	3-1
हराया—कनाडा	5-1
हारा—ब्रिटेन	0-3
हराया—अर्जेंटाइना	10-9
हारा—पाकिस्तान	1-2

• • •

राजकमल पेपरबैक्स

हरेंद्र नागेश साहू

ओलंपिक सफरनामा

ईस्वी सन् 1896 का एथेंस । पियरे डि कुबरटिन नामक एक व्यक्तित्व और उसके अदम्य संकल्प से जन्म लेता हुआ आधुनिक ओलंपिक का पहला आयोजन । लेकिन यह पुस्तक इस पहले ओलंपिक से ही शुरू नहीं होती, बल्कि हजारों साल पूर्व प्राचीन ओलंपिक खेलों की भी कुछ जानकारी देती है। सुपरिचित खेल-लेखक हरेंद्र-नागेश साहू ने 1896 से 1988 के सियोल ओलंपिक तक हर चार वर्ष बाद आयोजित होते आ रहे इस खेल-महाकुंभ और उसके परिणामों-कीर्तिमानों का विस्तार से वर्णन किया है । उल्लेखनीय है कि ऐसा करते हुए लेखकद्वय का ध्यान प्रत्येक आयोजन की तथ्यात्मकता पर तो रहा ही है, दुनिया-भर के लाखों खिलाड़ियों के विभिन्न जीवन-तथ्यों को भी उसने अनदेखा नहीं किया। उनकी आदतों, रिश्तों, क्षमताओं, सनकों, संकल्पों और प्रेमसंबंधों के बारे में आवश्यक जानकारियाँ देते हुए वे ओलंपिक आयोजनों के ऐतिहासिक उत्थान-पतन के कारणों तक जाते हैं और उनके पीछे बनते-बिगड़ते अंतर्राष्ट्रीय राजनीतिक समीकरणों को भी रेखांकित करते हैं । निस्संदेह, हिंदी में यह पहली ऐसी पुस्तक है जो ओलंपिक खेलों के बारे में एक साथ आधिकारिक जानकारी देती है ।

राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली पटना